॥ श्रीः ॥

अथ

ताजिकनीलकण्ठी ।

ज्योतिर्विद्वरिष्ठश्रीनीलकण्ठविरचिता

पण्डितमहीधरकृतभाषाटीकासमलंकृता ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८८, शके १८५३.

मुद्रक और प्रकाशक—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
मालिक—"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

भूमिका ।

अहो! ईश्वरने ज्योतिषशास्त्र संसारमें कैसा अद्वितीय रत्न दिया है जिसके प्रभावसे मनुष्य पुराकृत और अर्वाक्तन जो अपने कृतकर्म और उनका परिणाम है संपूर्ण जान सकते हैं, इस अपार संसारमें समस्त वस्तुमात्र उद्यमी मनुष्यके हस्तगत है. ऐसा कोई पदार्थ नहीं कि जिससे बुद्धिबलवाला मनुष्य न जान सके वा न करसके, केवल जन्म और मरण मनुष्यके अगोचर है इसीसे ईश्वरकी ईश्वरता विदित होती है; परंतु ज्योतिषशास्त्र ऐसा अनमोलमणि है कि, जिसकी सलाई नेत्रोंमे देनेसे परोक्षीय जन्ममरणभी प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं ब्रह्माजीने जब वेदके चार भाग करदिये तब उसके अंग " शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष" ये छः शास्त्र बनाये इनमेंसे प्रत्यक्ष तात्पर्य और चमत्कृत होनेसे ज्योतिष शिरोमणि गिना जाता है, अब ऐसा समय आया कि, वह ऐसा अद्वितीय रत्न शिरोमणि कैसा गिरता पडता दूर भागता जाता है. कोई इसे पूछताभी नहीं कि,आप कहांके और कौन हैं. कदाचित् किसीने पहचान लिया तो भर्त्सना करता है कि हां ! तू वही है जिसने हमारे पितृपितामहादिकोंको अपने चमत्काररूपी प्रपंचमें लुभाकर समस्त धन तन दान धर्मादि व्यर्थ कार्योंमें व्यय करायके उन्हें अधोगामी और हमारे तिरस्कार योग्य कर दिया, तेरे प्रपंचमें वे नहीं फँसते तो उनका उपार्जित द्रव्य सब हमहींको अनायास मिलना था.हमें अनेक प्रकारके परिश्रम आजीवनार्थ क्यों करने पडते ! अब हम तो तेरा आदर क्या करेंगे; बाप दादे अज्ञान हुए तो हुए अब हम तो कभी न भूलेंगे. जाइये अपनी इज्जत बचाइये "कुछ आगे बढकर" एक और महाशय मिले.देखकर बोल उठे कि,अजी साहब ! अलग ही अलग चले जाइये अपना परछावां हमारे ऊपर न पडने दीजिये तुम अमंगली हो हमने सुना है कि, हमारे माताके विवाहपूर्व तुम्हारे अंजन नेत्रवाले किसीने कहाथा कि, इस कन्याके वैधव्ययोग है अकस्मात् विवाहोत्तर अल्पकालमें वैसाही होगया.उपरांत उसी वैधव्य योग वालीके गर्भसे हम ऐसे हृष्ट पुष्ट और शास्त्रज्ञ पैदा हैं कि,स्त्रीको कभी विधवा नहीं मानते संसारमें सभी पुरुष ईश्वरके अंश हैं स्त्रियोंको पुरुषोंकी कमी

नहीं है. इन अबला विचारियोंका जीवित वैधव्यरूपमें क्यों व्यर्थ करावें. हमारी माताको केवल तेरे दुर्वचनसे कुछ दिनों वैधव्य मानना पडा फिर तो ईश्वर कृपासे ऐसा सौभाग्य हुवा कि, जिसके प्रतापसे हम ऐसे पंडित भंड संसारमें अवतरित हैं. अब कहिये ! हमारी माताके वैधव्ययोग है वा सौभाग्य ! तुम झूठे तुम्हारे पाठक झूठे हाय हायरे कलियुग ! तुझे अपना अधिकार प्रथम क्या इसी अद्भुत रत्नपर करना था. क्या इसीके साथ तेरा मुख्य शत्रुता थी ? हां, तेरा यह प्रयोजन अग्रेसर है कि, प्रथम शिरोमणि शास्त्रको आक्रमण करूं तो और सभी अंतर्गत होजायँगे परंतु यह अनादि शास्त्र सहसा तेरे आक्रमणमें आक्रमित इस दशामेंभी नहीं होनेका; कुछ दिन समय प्रभाव सार्थक करनेके लिये ज्योतिष रत्नराज पक्षसंकोच किये प्रतीक्षु हैं परिणाममें रत्न रत्नही है. इस समयमें ज्योतिषकी प्रभुता न्यून होनेके कारण यह है कि ज्योतिषियोंको कहे फल पूरे ठीक नहीं लगते. क्योंकि कलिराजने प्रथमावेश ज्योतिषियोंसेही आरंभ उठाया. पूर्व ऋषिलोग यमनियमादि तप और मिताहारी और अप्रतिग्राही योगाभ्यासी, सर्व शास्त्रज्ञ, वेदाभ्यासी और नित्य अग्निहोत्री थे । इससे भूत, भविष्य, वर्त्तमान समाधि अर्थात् एकाग्र विचारसे कहते थे अब ज्योतिषी लोग यमनियमादिके स्थानमें दंभलोभादि और मिताहारके स्थानमें आग्निसम और अप्रतिग्राहीके स्थानमें सर्वग्राही योगाभ्यासके स्थानमें द्रव्यार्जन, प्रपंच शास्त्र, वेदाभ्यासके स्थानमें वेदक्रिया,तप और जितेंद्रियताके स्थानमें स्त्रीलोलुपता, अग्निहोत्रके स्थानमें तंबाकू,एवं प्रकारके सांप्रतीय ऋषि होगये तो सर्व शास्त्रज्ञताके योग बुद्धि कहांसे हों ? विना बहुज्ञता और विना दमादिकोंके चमत्कार फल क्योंकर कहसके ? ब्राह्मण सर्वस्व गायत्रीके उपदेश मात्रसे दाक्षिणा निमित्त जप विक्रय और यथेच्छा प्रतिग्रह ग्रहण करने लगे तो बुद्धि निर्मल और कही बात सच्ची क्यों होवे. कदाचित् किसीने कुछ परिश्रम पठनपाठनमें किया और कुछ शास्त्रज्ञता पाईभी तो दंभ और मत्सरमें परिपूर्ण हो जाते हैं. ज्योतिषमें अधिकांश गुरुलक्ष्यस्थान है उन युक्तियोंके दूसरे की प्रभुताका मत्सर

मानकर किसीको नहीं बतलाते पुनः आगे विद्याका प्रचार कैसे बढे ? ऐसे २ आचरणोंसे यह अद्वितीयशास्त्र लोप होता २ इस दशाको प्राप्त होगया सर्वसाधारणको इस अद्भुत रत्नके उन्नतिका यत्न सर्व प्रकारसे करना योग्य है. फिर ऐसा अमूल्यमणि मिलना असंभव है विशेषतः ज्योतिषी लोगोंको इसकी उन्नतिका उद्यम करना चाहिये कि, उनका यह आजीवन पूर्वसे और पश्चात्के लियेभी उपयोगी है. इसमें अतिशयश्रम पठन पाठनसे करना योग्य है जिससे लोक प्रत्ययकारक ठीक फल कह सके देखिये ! पहिलेके माहात्मा आचार्योंने सर्व साधारणके भूति और प्रत्ययके लिये कितना श्रम उठायके यह शास्त्रप्रचार किया कि; जिसे अब बहुधा लोग कहते हैं कि, ज्योतिषशास्त्र कुछ वस्तु नहीं न ग्रहोंकोही शुभाशुभ देनेकी सामर्थ्य है जैसा जिसका कर्म वैसा अवश्य होगा. इस अवसरमें कोई नास्तिक कहते हैं कि, यह तो ब्राह्मणोंने केवल अपनी अज्ञान और अल्पश्रमी संतानके उपकारार्थ यह प्रपंच किया है. अब इसमें वक्तव्य यह है कि पूर्व लिखित दशा जब इस प्रत्यक्ष शास्त्रकी होगई तो जनश्रुतिभी ऐसी होनी आश्चर्य तो नहीं तथापि इस शास्त्रका मूल तात्पर्य उन्हें विदित नहीं है नहीं तो सहसा कभी ऐसा न कह सकते. भोक्तव्य तो कर्मफल है यह बोध नहीं कि, वह क्या है और उसका परिणाम कब और क्या होगा इसका विचारद्वारा पूर्वाचार्योंने जन्मसमय इष्ट मानकर ऐसे हिसाब बनाये कि, जिससे वह अलक्ष्यकर्म फल हित प्रत्यक्ष होजाता है. उन हिसाबोंके नाम सूर्यादि नवग्रह और मेषादि १२ राशि तिथ्यादि पंचांग स्थापन करदिये ग्रह आप न तो कुछ देते न कुछ अशुभ कर सकते जैसा जिसका कर्म उपार्जित होवे वैसा ही फल होगा, परन्तु ग्रहरूपी हिसाबके द्वारा वह अलक्ष्य लक्ष्य हो जाता है. अब इसमें ऐसा आभास हुआ कि ग्रह असमर्थ हैं फल कर्मानुसार भोक्तव्यही हैं तो ग्रहार्चन दानादिभी निष्प्रयोजन हैं परंतु यह स्थूल विचार "शृंगग्राहिन्याय" है. प्रयोजन उसका कैसा उत्तम है कि, हमने पूर्व ऐसा कर्म किया था, कि जिसका परिणाम हमको अरिष्ट धन नाशादि मिलना है यह कर्म और फल तो अदृश्य था परंतु सूर्य वा कोई ग्रहकी दशा कष्टी होनेसे हमको अरिष्ट ज्ञात हुआ. यह कर्मफलबोधक एक हिसाब

सूर्य हुआ अब वह कर्म हमें पहलेही ज्ञात होता तो उसका प्रतीकार करते केवल ज्ञापक यहां सूर्य है तो हमको सूर्यहीके द्वारा कर्मनिर्हारोपाय सूर्यकी वेदबोधित शांत्यादि करनी चाहिये यह शांति सूर्यकी क्या उस उपार्जित दुष्कर्मकी है? जैसे सूर्यद्वारा कर्मफल ज्ञात हुआ ऐसे सूर्यहीके द्वारा प्रतीकार करना योग्य है इसमें दो प्रकार शुभत्व होगा कि एक तो अति प्रयत्नोंसे जो द्रव्य उपार्जन किया है उसके अकस्मात् व्यय हो जानेमें कष्ट अपनेही हाथसे होगया सूर्यदशाबोधित कर्मफल मिल गया और अपने हाथके व्यय करनेसे पश्चात् ताप न होगा. दूसरा लाभ यह है कि वेदबोधित और शास्त्रसंमत विधिसे जो कुछ शांत्यादि करी जाती हैं उनके कर्मनिर्हार और चित्तानंदता और पारितोषिकशुभत्व और सद्व्यय गणनामें होगा. विधिसे न करेंगे तो असद्व्यय (जिसमें फेर कभी काम नहीं आता)और इस समयमें चित्तसंताप करनेवाला होगा जैसे वैद्यको देनेमें वा दंडदेनेमें वा चोरी वा अग्नि जलादिपातमें व्यय हो जानेसे कर्मफल तो मिलेगाही. कर्मसे कर्मनिर्हार होता है इसमें चित्तशुद्धि मुख्य है कमवासना पुनर्जन्म भी फलभोगके लिये देती है सांप्रतमें साधारणकी बुद्धि ऐसी संभ्रम होरही है कि जन्म देहादि न पहिले था न फिर होगा केवल पंचतत्त्व अपने २ स्थानोंमें मिल जायँगे जन्म फिर कौन लेता है मरेमें कोई हटकर किसी प्रकार न आया पहिले जन्म भया था पीछे जन्म होगा यह भ्रांति मिथ्या है प्राण नाम वायुका ह वहभी वायुमें मिलजाता है जन्म लेनेको स्थूल दृष्टिसे तो कुछभी अवशेष नहीं रहता परन्तु मूलज्ञान यह है कि जिस कर्मके अभ्यासमें शरीर रहता ह उसकी वासना बीज मात्र स्थित रहती है उसीके अनुसार कर्मफल भोगनका दूसरा प्रपंच पंचतत्त्वकी वासना बलसे उत्पन्न होजाता है इसके बहुतसे प्रमाण हैं और बहुत कुछ वक्तव्य है विशेष विस्तार इस विषयका पुनः किसी और ग्रंथके अनुवाद व्याजसे लिखनेकी इच्छा है, "ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते । छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पः प्रचक्षते ॥ यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा । तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम् ॥ "प्रथम श्रुतिनेत्र ज्योतिष शास्त्रका एक स्कन्ध जन्मफल

बोधक जातकोत्तम बृहज्जातककी भाषाटीका सर्वसाधारणमें थोडा कुछ ज्योतिषका मार्ग जिन्होंने देखा है और बडे ग्रंथ संहितादिकोंमें गति नहीं है ऐसे बालकोंके सुगम बोध निमित्त और गुरुजनोंके पाठनमें अल्प श्रमके निमित्त मैंने करी. उपरान्त इच्छा हुई कि, जातकके फलस्थलकालीन और बहुश्रमी हैं अर्थात् प्रथम सर्वग्रहोंके षड्बल दृष्टि बलेष्ट कष्टबल निसर्गादि बल गणितसे दशांतर्दशा मिलती है इसमें सिद्धांत मतसे सूक्ष्मविचार किया तो बहुत श्रमसे स्थूलकाल फल मिलता है जैसे माहेश्वरी दशामें शुक्रके २० वर्ष निसर्गदशामें शनिके ५० वर्ष और उच्चादिबल पूर्ण होनेमें चन्द्रमाके १५ वर्ष दशा है ऐसेही अंतर्दशाभी ५।६ वर्षसे कम न होगी तो जातकोक्तफल तो एकही है क्या समस्त अंतर्दशा ५।६ वर्ष पर्यंत एकसाही फल होगा इस निमित्त ब्रह्मादि अष्टादश आचार्योंके उपदेष्टा श्रीसूर्यने ताजिकशास्त्र बनाया जिससे वर्षप्रवेश मासप्रवेश दिनप्रवेश पर्यंत गिननेसे दिन २ पर्यंत फल ज्योतिषी कह सकते हैं अतएव बृहज्जातकके अनुवाद करने उपरान्त ऐसा ही यह कुछ ताजिक ग्रंथका भी अनुवाद करना चाहिये तजिक ग्रंथोंमें मुख्य जीर्णताजिक है उसीकी सारणी नीलकंठ दैवज्ञ विरचित नीलकंठी है. यह ग्रंथ पाठमें थोडा अर्थ बहुत और संमत होनेसे इसकी भाषाटीका सर्व साधारणके बोधन योग खडी बोलीमें परमकारुणिक श्रीबदरीशमूर्ति गढवाल राज्याधीश श्री ५ महाराज कीर्तिशाहसाबकी आज्ञानुसार करता हूं. इस ताजिकशास्त्रमें कोई धर्मशास्त्रके वचन " न वदेद्यावनीं भाषां न गच्छेज्जैनमंदिरम् । हस्तिना पीड्यमानोऽपि प्राणैः कंठगतैरपि॥"इत्यादिसे दोषारोपण करते हैं कि, इसमें इकबाल इस्सराफ,इत्थशालादि बहुतसे फारसीके शब्द हैं इससे ब्राह्मणोंको पाठयोग्य नहीं है किंतु उनका स्थूल विचार है कि, ऐसे अन्य जातिकी भाषा अवाच्य है प्रथम अमरकोश पांडित्यमूल ही दूषित होता है और ज्योतिषके अष्टादश संहिताकारक "पितामह, व्यास, वसिष्ठ, पराशर, कश्यप, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पुलस्त्य, गुरु शौनक इत्यादि हैं" इन्हींसे ज्योतिषशास्त्र प्रवृत्त भया है. यवनाचार्यकृत यवनजातक भी सर्व-

संमत प्रमाण ग्रन्थ है और यवनाचार्यने कुछ अपनी कल्पना नहीं करी किन्तु गुरूपदिष्ट वैसा ही था उक्तं च रोमकेण "ब्रह्मणा गदितं भानोर्भानुना यवनाय तत् । यवनेन च यत्प्रोक्तं ताजिकं तत्प्रचक्षते "इति और टोडरानंद, खत खुत रोमक हिल्लाज विशणा दुर्मुखाचार्य इतने ताजिकाचार्य हैं येभी तो ब्राह्मण ही थे इत्यादि प्रमाणसे ताजिकमें पारसीयशब्दोंका दूषण नहीं है कदाचित् कोई कहै कि " न वदेद्यावनीं भषाम्" इस धर्मशास्त्रोक्त वाक्यका खंडन होगया है तो मैंने खंडन नहीं किया. यह श्लोक तो सत्यही है परंच उसकी घटना काव्यालंकारादि विषयोंमें है पारशीयशब्दपक्षमें यहां तो " फले प्राप्ते मूले किं प्रयोजनम् यह न्याय है, आम खानेसे काम है न कि वृक्षगणनासे, जैसे पंकोद्भव कमल देवपूजाही और विषधर सर्पमस्तकोद्भूतमणि मुकुटयोग्य होता है ऐसाही यहां भी शास्त्रके प्रयोजनसे प्रयोजन है. जातिद्वेष फलित शास्त्रमें क्या ताजिकशास्त्र इस समयमें तात्पर्य फल बतलानेवाला है और गर्ग वचन है कि," म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् । ऋषिवत्तेऽपि पूज्यंते किं पुनर्वेदविद्द्विजाः । " और ग्रन्थांतरीय कथानक है कि किसी कालमें ज्योतिषशास्त्रके अनुसार ज्योतिषी लोग भूत,भविष्य, वर्तमानकी बातें कहकर ईश्वरकी ईश्वरताको स्पर्द्धा करने लगे. यह दशा देख ब्रह्माजीने उन शास्त्रोंसे चमत्काररूपी किरणोंको शापानलसे छादित करदिया इस दशामें श्रीवसिष्ठादि मुनियोंने अपने प्रकाशित शास्त्रोंके द्योतन निमित्त ताजिकशास्त्रापेक्षा औरभी चमत्कृत बनाया । जिसको अष्टादश संहिताकारक आचार्योंने अनेक प्रकारके ग्रंथ उन्हीं पारशीय शब्दोंको संस्कृत शब्द मणियोंमें ग्रथन कर प्रकट करदिया और मूल इसकाभी जन्मसमय प्रथमश्वासा लेनेकाही क्षण है इसका विस्तार बृहज्जातकानुवाद "महीधरी भाषा " के सूतिकाध्याय प्रारंभमें मैंने लिखा है अब इस ग्रंथके सब प्रकारके हक्क हम अपनी प्रसन्नतासे लोकहितार्थ प्रकाशित करनेको सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी"श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षको समर्पण किये हैं ॥

आपका कृपाभिलाषी–टिहरीनिवासी ज्योतिर्विद् पं० महीधर शर्मा.

॥ श्रीः ॥

अथ

ताजिकनीलकण्ठी ।

भाषाटीकासमेता ।

शिवं शिवकरं शिवायुतमजं सुधाप्लावितं समातृगुरुरूपिणं निखिलभैरवैः सेवितम् ॥ प्रणम्य शिरसा मुदा सरभसा परं दैवतं सहस्रदलकर्णिकांतरगतं गभीरं महः ॥ १ ॥ महीधर-धरासुरो विबुधधर्मदत्तात्मजो विधाय खलु जातके बृहति भाषया व्याकृतिम् ॥ तनोति किल ताजिके त्रिगणनीलकं-व्याह्वये शुभां विवृतिमत्र वै नरगिरा हि माहीधरीम् ॥ २ ॥

भाषाकार निर्विघ्नतापूर्वक ग्रंथसमाप्त्यर्थ परब्रह्म गुरुरूपी शिवको प्रणामसहित स्वकर्म प्रकाश करता है । मंगलमूर्ति, सर्वथा श्रेय करने-वाला, सशक्तिक अर्थात् उमासहित शंकर, स्वतःसिद्ध, सहस्रदलकमल-कर्णिकांतर्गत अतिरहस्य अलख अगोचर स्थानमें परमामृतसे प्लावित प्रसन्न-वदन बैठा हुआ, चतुःषष्टि मातृका और समस्त भैरवोंसे समंतात्परिवेष्टित, यद्वा मातृका स्वर, भैरव व्यंजन इनसे सेवित प्रणवरूप परमदेवता गुरुरूपी ईश्वरको (ससंभ्रम) आनन्दपूर्वक सशिरस्क प्रणाम करके विबुध धर्मद-त्तात्मज महीधर नामा ब्राह्मण, बृहज्जातककी भाषाटीका करने उपरांत सांप्रतमें इसी ज्योतिषप्रकरण " ताजिकनीलकंठी " तीनों तंत्रकी सुगम सरल भाषामें माहीधरी टीका विस्तारित करता है ॥ १ ॥ २ ॥

ग्रंथकर्ता आचार्य मुनिश्रेष्ठ गर्गवंशावतंस समस्तविद्वज्जनमुकुटमणि त्रिस्कंध ज्योतिश्शास्त्रनिबंधकर्त्ता चिंतामणि ज्योतिर्विद् पौत्र अनंत ज्योतिर्वित्पुत्र श्रीनीलकंठ ज्योतिर्वित् जीर्ण ताजिकशास्त्रके संज्ञातंत्र, वर्षतंत्र, प्रश्नतंत्र तीनों प्रकरणोंके निर्माणोत्सुक होकर प्रथम संज्ञाविवेक नामक प्रथम तंत्रा-

रंभमें निर्विघ्नता सहित ग्रंथसमाप्त्यर्थ गणेश सूर्य पितृचरणकमलको नमस्कार तथा विषय प्रयोजन संबंध उपजाति छन्दसे कहता है—

उपजातिच्छन्दः--प्रणम्य हेरम्बमथो दिवाकरं गुरोरनंतस्य तथा पदाम्बुजम् ॥ श्रीनीलकंठो विविनक्ति सूक्तिभिस्तत्ताजिकं सूरिमनःप्रसादकृत् ॥ १ ॥

श्रीनीलकंठनामा दैवज्ञ गणेश और सूर्यनारायण तथा अपने पिता अनंतनामा दैवज्ञ गुरुके चरणकमलको प्रणाम करके जीर्ण ताजिकग्रंथको विचारके इंद्रवज्रा रथोद्धतादि सुन्दर छन्दोंमें बडे बडे ताजिक ग्रंथोंके प्रयोजन स्वल्पतर ग्रंथसे बोधननिमित्त विद्वान् ज्योतिषियोंके मन प्रसन्न करनेवाली नीलकंठीनामक ताजिक प्रगट करता है ॥ १ ॥

उपजा०-पुमांश्चरोऽग्निः सुहृढश्चतुष्पाद्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽद्रिरुग्रः। पीतो दिनं प्राग्विषमोदयोऽल्पसंगप्रजो रूक्षनृपः समोऽजः ॥ २॥

संज्ञाप्रकरणमें प्रथम राशिस्वरूप वर्णन करते हैं, यथा—मेष, मेंढाका आकार, पुरुष राशि, चरसंज्ञा, अग्नितत्त्व, बलवान्, चौपाया, रक्तवर्ण, सोष्ण अर्थात् तप्तदेह, पित्तप्रकृति, बडा शब्द करनेवाला, पर्वतचारी, वनचारी वा क्रूरस्वभाव, पीतवर्ण[यहां रक्त पीत दो वर्ण कहनेसे दोनों रंग मिलकर पाटल वर्ण शरीर] दिवा बली, पूर्वदिशा, अल्प स्त्रीसंग करनेवाला और अल्पप्रजा, रूक्षकांति, क्षत्रियजाति और राशिसंख्यागणनामें विषम है किंतु कार्य यह राशि सम काम देती है इस कारण यहां संज्ञा कही है इतने गुण मेषके हैं ॥ २ ॥

उपजा०--वृषः स्थिरः स्त्री क्षितिशीतरूक्षो याम्येट् सुभूर्वायुनिशाचतुष्पात् ॥ श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासंगशुभो हि वैश्यः ॥ ३ ॥

वृष, बैलका आकार, स्थिरसंज्ञा, स्त्रीराशि, भूमितत्त्व, रूक्षकांति, शीतस्वभाव, दक्षिण दिशा, सरलभूमिचारी, वातप्रकृति, रात्रिबली, चार चरण, श्वेत वर्ण, बडा शब्द करनेवाला, विषमलग्न, न तो अतिकामी न अल्पकाम, सौम्य राशि, वैश्यजाति दृढांग, बलवान् शरीर इतने लक्षण वृषराशिके हैं॥ ३॥

इन्द्रवज्रा-प्रत्यक्समीरः शुकभा द्विपान्ना द्वंद्वं द्विमूर्तिर्विषमोदयोष्णः।
मध्यप्रजासंगवनस्थशूद्रो दीर्घस्वनः स्निग्धदिनेड्ढ तथोग्रः ॥ ४ ॥

एक स्त्री एक पुरुषके द्वंद्वको मिथुन कहते हैं ऐसा ही आकार भी है और यह राशि पश्चिमदिशाकी स्वामी, वायुतत्त्व (वायुप्रकृति), शुकपक्षीकासा हरितरंग, दो चरण, सौम्य, पुरुषरूप, द्विस्वभाव, पूर्वार्द्ध स्थिरस्वभाव और उत्तरार्द्धका चरस्वभाव, विषमराशि, उष्ण स्वभाव, स्त्रीसंगमें मध्यम, संतान भी बहुत अल्प, वनचर, शूद्रजाती, दीर्घ शब्दवाला, स्निग्ध (चिकना) शरीर, दिनमें बलवान्, क्रूर संज्ञा, दृढ शरीर इतने लक्षण मिथुन राशिके हैं ॥ ४ ॥

उपेंद्रव०--बहुप्रजासंगपदः कुलीरश्चरोंऽगनापाटलहीनशब्दः ॥
शुभः कफी स्निग्धजलांबुचारी समोदयो विप्रनिशोत्तरेशः॥५॥

कर्कराशि कीटाकार, अतिस्त्रीसंगी, बहुचरण, चरराशि, स्त्रीजाति, पाटल अर्थात् श्वेतरंग, शब्दरहित, सौम्य, कफप्रकृति, स्निग्ध (चिकना) शरीर, जलतत्त्व, जलचारी, समसंज्ञक, ब्राह्मणजाति, रात्रिबली, उत्तरदिशाका स्वामी, दृढशरीर इतने लक्षण कर्कके हैं ॥ ५ ॥

उपजा०-पुमान्स्थिरोऽग्निर्दिनपित्तरूक्षःपीतोष्णपूर्वेशदृढश्चतुष्पात्।
समोदयो दीर्घरवोऽल्पसंगप्रजो हरिः शैलनृपोग्रधूम्रः ॥ ६ ॥

सिंहाकार पुरुष, स्थिरसंज्ञा, अग्नितत्त्व, दिनबली, पित्तप्रकृति, रूक्ष शरीर, पीलारंग, उष्णस्वभाव, पूर्वदिशाका स्वामी, बलवान् अंगप्रत्यंग, चार चरण, समसंज्ञा, दीर्घशब्द, स्वल्पस्त्रीसंगी, अल्पही संतान, पर्वतचारी, नृपति धूम्रवर्ण यहांभी दो रंग कहे गये हैं, प्रयोजन मेषवत् है कि पूर्वार्द्ध इसका पीत उत्तरार्द्ध धूम्र धूँवेंकासा रंग है इतने लक्षण सिंहराशिके हैं ॥ ६ ॥

उपजा०-पांडुर्द्विपात्स्त्री द्वितनुर्यमाशानिशामरुच्छीतसमोदयाक्ष्मा।
कन्याऽर्द्धशब्दा शुभभूमिवैश्या रूक्षाऽल्पसंगप्रसवा शुभा च ॥७॥

कुमारीरूप पांडु (पिंगल)वर्ण, दो चरण, स्त्रीराशि, द्विस्वभाव (मिथुनवत्)

पूर्वार्द्ध स्थिर, उत्तरार्द्ध चर, दक्षिणदिशाका स्वामी, रात्रिबली, वायुतत्त्व, शीतप्रकृति, समलग्न, इसका भूमितत्त्व भी है और आधा शब्दवाली, सरल-भूमिचारी वैश्यजाति, रूक्ष शरीर, अल्प स्त्रीसंगी, अल्प संतति, समराशि इतने लक्षण कन्याराशिके हैं ॥ ७ ॥

उपजा०-पुमांश्चरश्चित्रसमोदयोष्णःप्रत्यङ्मरुत्स्निग्धरवो न वन्यः। स्वल्पप्रजासंगमशूद्र उग्रस्तुलो द्युवीर्यो द्विपदः समानः ॥ ८ ॥

तुला, तराजूकासा रूप, पुरुषराशि, चरसंज्ञा, चित्रवर्ण, समलग्न, गरम, पश्चिमदिशाका स्वामी वायुतत्त्व, स्निग्ध (चिकना) शरीर, शब्दरहित, वनचारी, शूर, अल्पस्त्रीसंगी, अल्पसंतान, शूद्रजाति, दिवाबली, दो चरण, बलवान् अंग इतने लक्षण तुलाराशिके हैं ॥ ८ ॥

उपजा०--स्थिरःसितःस्त्रीजलमुत्तरेशनिशारवोनो बहुपात्कफी च ॥ समोदयो वारिचरोऽतिसंगप्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः ॥ ९ ॥

बिच्छूकासा रूप,स्थिरसंज्ञा, श्वेतरंग, स्त्रीराशि, जलतत्त्व, उत्तरदिशाका पति, रात्रिचर, शब्दरहित, बहुपाद, कफप्रकृति, समलग्न, जलचारी, अति स्त्रीसंगी, बहुसंतति, शुभराशि, स्निग्ध (चिकना) शरीर, ब्राह्मण जाति, स्थूल अंग ये लक्षण वृश्चिक राशिके हैं ॥ ९ ॥

उपजा०-ना स्वर्णभाःशैलसमोदयोऽतिशब्दो दिनंप्राग्दृढरूक्षपीतः॥ राजोष्णपित्तो धनुरल्पसूतिसंगो द्विमूर्तिर्द्विपदोऽग्निरुग्रः ॥ १० ॥

धनुषाकार, पुरुष, सुवर्णसमानकान्ति, पर्वतचारी, समलग्न, अतिशब्द-वान्, दिनबली, पूर्वदिशाका स्वामी, बलवान् शरीर, रूक्षतनु, पीला रंग, क्षात्रियजाति, गरम, पित्तप्रकृति, अल्पसंतान, अल्पस्त्रीसंगी, द्विस्वभावराशि पूर्वार्ध स्थिर, उत्तरार्ध चर, दो चरण, अग्नितत्त्व, क्रूरसंज्ञा इसके भी दो रंग और दो रूप हैं जैसे पूर्वार्ध सुवर्णवर्ण और उत्तरार्ध पीतवर्ण और कटि ऊपर मनुष्य और नीचे घोडा ये लक्षण धनुराशिके हैं ॥ १० ॥

उपजा०--मृगश्चरः क्ष्मार्धरवो यमाशा स्त्रीपिंगरूक्षः शुभभूमिशीतः ॥ स्वल्पप्रजासंगसमीररात्रिरादौ चतुष्पाद्विषमोदयो विट् ॥ ११ ॥

आकार तो नाकुका परंतु मुख मृगकासा, चरसंज्ञा भूमितत्त्व, अर्द्धस्वरवान्, दक्षिणदिशापति, स्त्रीराशि, पिंगल वर्ण, रूक्षशरीर, सौम्य, भूमिचारी, शीतप्रकृति, अल्पस्त्रीसंगी, अल्पप्रजावान्, वायुतत्त्व, रात्रि बली, पूर्वार्द्ध (चतुष्पाद) पशु और उत्तरार्द्ध जलचर, पादरहित, विषम लग्न और वैश्यजाति ये लक्षण मकरके हैं ॥ ११ ॥

उपजा०--कुंभोऽपदो ना दिनमध्यसंगप्रसूः स्थिरः कर्बुरवन्यवायुः ॥ स्निग्धोष्णखण्डस्वरतुल्यधातुःशूद्रः प्रतीची विषमोदयोग्रः ॥ १२ ॥

कुंभ, कलशका आकार, पादरहित, पुरुष, दिवाबली अल्पस्त्रीसंगी, अल्पसंतान, स्थिरसंज्ञा, विचित्ररंग, वनचारी, वायुतत्त्व, चिकना शरीर, संतप्त देह, अर्द्धस्वरवान्, तुल्यधातु (वात पित्त कफ तीनों प्रकृति), शूद्रजाति पश्चिमदिशापति, विषमलग्न, दृढ अंगप्रत्यंग इतने लक्षण कुंभके हैं ॥ १२ ॥

उपजा०--मीनोऽपदः स्त्री कफवारिरात्रिनिःशब्दबभ्रुर्द्वितनुर्जलस्थः ॥ स्निग्धोऽतिसंगप्रसवोऽपि विप्रः शुभोत्तराशेट् विषमोदयश्च ॥ १३ ॥

मीन राशिका आकार परस्पर एकके मुखपर दूसरीका पुच्छ ऐसी दो मछली स्त्रीराशि, कफप्रकृति, जलतत्त्व, रात्रिबली, शब्दरहित, पिंगल भूरा रंग, द्विस्वभाव, पूर्वार्द्ध स्थिरवत्, उत्तरार्द्ध चरतुल्य, जलचारी, चिकना शरीर, अति स्त्रीसंगी, बहु संतति, ब्राह्मणजाति, शुभराशि, उत्तरदिशापति और समलग्न इतने इसके लक्षण हैं ॥ १३ ॥

उपजा०--धरांबुनोरग्निसमीरयोश्च वर्गे सुहृत्त्वं परतोऽरिभावः॥ चापांत्यभागस्य चतुष्पदत्वं ज्ञेयं मृगांत्यस्य जलेचरत्वम् ॥ १४ ॥

पूर्व जो तत्त्व कहे गये हैं उनके प्रयोजन कहे जाते हैं,कि–तत्त्व और वर्गोंकी प्रीति स्त्रीपुरुषमेलमें स्वामिसेवकमें और गुरुशिष्यादिमें विचारनी चाहिये; जैसे पृथ्वीतत्त्व और जलतत्त्वकी तथा अग्निवायुकी परस्पर प्रीति है, भूमि अग्नि और जल वायुकी परस्पर शत्रुता है, पूर्वोक्त स्त्री पुरुषादिकोंके राशि एकही तत्त्व होनेमें अधिक प्रीति है धनुराशिका उत्तरार्द्ध चौपाया है पूर्वार्द्ध द्विपद है, मकर उत्तरार्द्ध जलचारी पादरहित और पूर्वार्द्ध द्विपद स्थलचारी है ॥ १४ ॥

इंद्रवज्रा--पित्तानिलौ धातुसमः कफश्च त्रिर्मेषतः सूरिभिरूहनीयाः॥ राजन्यविट्शूद्रधरासुराश्च सर्वं फलं राश्यनुसारतः स्यात् ॥ १५ ॥

धातु और जाति गिननेकी युक्ति सुगम प्रकारसे कहते हैं,कि–पित्तवायु सम धातु अर्थात् तीनों धातु और कफ इतने मेषादि राशि तीन आवृत्ति करके जानने. जैसे मेष सिंह और धनका पित्त धातु,वृष कन्या मकरका वायु, मिथुन तुला कुंभका समधातु अर्थात् वात पित्त कफ तीनों मिलकर होता है, एवं कर्क वृश्चिक मीनका कफ धातु है,इसी क्रमसे जाति भी जानी जाती है,जैसे मेष सिंह और धन क्षत्रियजाति, वृष, कन्या व मकर वैश्य जाति मिथुन तुला व कुंभ शूद्रजाति,कर्क वृश्चिक व मीन ब्राह्मणजाति है. राशियोंके गुण जाति धात्वादि जितने कहे हैं जन्म वर्षप्रवेश और प्रश्नादि विचारोंमें जैसे जिनके नाम हैं वैसे ही फल विचारके कहना,जैसे क्रूर राशिसे क्रूरस्वभाव, सौम्यसे सौम्य और चरराशिसे चरता, स्थिरसे स्थिरता, द्विस्वभावसे दोनों मिलकर. ऐसे ही संपूर्ण राशिगुणोंका फल जन्मवर्ष और प्रश्नादिकोंमें बुद्धिसे कहना; शास्त्र बुद्धिका सहायक है. विशेष विस्तार राशिगुणोंका बृहज्जातककी महीधरीभाषाटीकामें स्पष्टतर लिखा है ॥ १५ ॥

राशि गुणादि चक्र.

संज्ञा.	मेष.	वृष.	मिथुन	कर्क.	सिंह.	कन्या.	तुला.	वृश्चिक.	धन.	मकर.	कुंभ.	मीन.	०
पुंस्त्री	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री.	पुरुष.	स्त्री	पुरुष.	स्त्री.	१
चरस्थिरादि	चर.	स्थिर.	द्विस्व भाव.	चर.	स्थिर.	द्विस्व-भाव.	चर.	स्थिर.	द्विस्व भाव.	चर.	स्थिर.	द्विस्व भाव.	२
तत्व.	अग्नि	पृथ्वी.	वायु	जल.	अग्नि.	पृथ्वी.	वायु.	जल.	अग्नि.	पृथ्वी.	वायु.	जल.	३
पुष्टकृश	दृढ.	दृढ.	मृदु.	मृदु.	दृढ.	कृश.	दृढ.	कृश.	दृढ.	दृढ.	दृढ.	दृढ.	४
पाद संज्ञा.	चतुष्प.	चतुष्प.	द्विपद.	वक्रपद.	चतु.	द्विपद,	द्विपद.	वक्रपद	द्विपद.	चतुष्प.	द्विपद.	अपद.	५
वर्ण.	पाटल रक्त.	[illegible]	हरित.	पाटल.	धूम्र.	पांडुर.	विचित्र	श्वेत.	वर्णः२	पीत.	कर्बुर.	धूम्र.	६
गुण.	तप्तदेह.	शीत	तप्त	शीत.	उष्ण.	वायु.	उष्ण.	वायु.	उष्ण.	शीत.	उष्ण.	शीत.	७
धातु.	पित्त.	वायु.	वायु.	कफ.	पित्त.	जल.	पित्त.	कफ.	पित्त.	वायु.	वायु.	कफ.	८
शब्द.	अतिरव	अतिरव	दीर्घश.	हीनश.	दीर्घश	अर्द्ध.	शब्द रहित.	शब्दर.	अति शब्द.	अति शब्द.	खंड रहित.	शब्द हीन.	९
चार स्थान.	पर्वत.	सम भूमि.	वनचर.	जलचर	पर्वत चर.	शुभ भूमि.	वन चारी.	जलचर	पर्वत चर.	वन चर.	भुमि.	जलचर	१०
क्रूरादि.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	उग्र.	सौम्य.	११
दिनादि बल.	दिवा. बली.	रात्रि.	दिवा.	संध्या.	दिवा.	रात्रि.	दिवा.	रात्रि.	दिन.	रात्रि.	दिन.	रात्रि.	१२
समविषम.	विषम	सम.	विषम.	सम.	विषम.	सम.	विषम.	सत्र.	विषम.	सम.	विषम.	सम.	१३
दिशा	पूर्व.	दक्षिण	पश्चिम.	उत्तर.	पूर्व.	दक्षिण	पश्चिम.	उत्तर.	पूर्व.	दक्षिण.	पश्चिम	उत्तर.	१४
स्त्रीसंग मत.	अल्प.	मध्य.	मध्य.	बहु.	अल्प.	अल्प.	अल्प.	अति.	अल्प.	अल्प.	मध्य.	अति.	१५
कांति.	रूक्ष.	रूक्ष.	स्निग्ध.	स्निग्ध.	रूक्ष.	रूक्ष.	स्निग्ध.	स्निग्ध.	रूक्ष.	रूक्ष.	स्निग्ध.	स्निग्ध.	१६
जाति.	क्षत्रि.	वैश्य.	शूद्र.	ब्राह्मण.	क्षत्रि.	वैश्य.	शूद्र.	ब्राह्मण.	क्षात्र.	वैश्य.	शूद्र.	ब्राह्मण.	१७
समादि.	सम.	विषम.	विषम.	सम.	सम.	सम.	सम.	सम.	सम.	विषम.	विषम.	विषम.	१८

अनुष्टुप्छं०--गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्नसमागणात् ॥ खवेदाप्तघटीयुक्ता जन्मवारादिसंयुताः ॥ अब्दप्रवेशे वारादि सप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ॥ १६ ॥

ग्रहोंके चालन और ग्रहगणितैक्य स्थापनमें प्रथम वर्षेष्टकाल आवश्यक है. यह गणित आचार्योंने वर्षतन्त्रमें लिखा है. यहांभी अपेक्षित होनेसे वही यह श्लोक है कि--जन्मशककाल, वर्षशककालमें घटायके शेष गतवर्ष होते हैं उनमें उन्हींका चतुर्थांश जोड देना पुनः वही गतवर्ष २१ से गुनकर चाली-

सासे भाग देकर लब्धि स्वचतुर्थांश युक्त राशिके दूसरे स्थानमें स्थापन करना. शेष६०से गुनकर४०से भाग देना लब्धि तीसरे स्थानमें स्थापन करना. ये तीन अंक वार, घटी, पल इनमें जन्मके वार इष्ट घटी पला यथाक्रमसे जोडने, घटी पल ६० से अधिक हों तो६०से शेषित करके लब्धि ऊपरकी राशिमें जोडदेना. वारकी राशि ऊपरका अंक जो गतवर्ष चतुर्थांश युक्त है वह७से ऊपर हो तो ७ ही से तष्ट करदेने. यही प्रयोजन दूसरे प्रकारसे यह है कि 'सपदा दलिता सदला' अथवा (वर्ष सवाया आधा ड्योढा) अर्थात् गतवर्ष 'सपदा' उसकी चौथाई उसीमें जोडके वार हुआ, फिर 'दलिता' उसका आधा करके घटिका हुई फिर उसका आधा उसीमें जोडके पला हुई, जन्मवार इष्ट घटीपल क्रमसे जोड दिया तो वर्षका ध्रुवक वार घटी पल होते हैं. उदाहरण—इसका प्रथम श्लोकोक्तप्रकार तो यह है कि जैसे जन्म संवत् १९०६ वर्षप्रवेश संवत् १९४३ में घटाया, शेष ३७ वह जन्मशक १७७१ वर्षशक १८०८घटाया शेष ३७ गतवर्ष हुआ, इसमें इसीका चतुर्थांश ९ । १५ जोडदिया तो वार४६घटी १५ हुई, उपरांत गतवर्ष ३७ गुणक २१ से गुणा किया तो ७७७ हुए, इसमें ४० से भाग लिया लब्धि १९ घटी मिली वार राशि ४६ के नीचे घटिकाकी राशि १५ में जोड दिया ३४ घटी हुई शेष अंक ६० से गुणकर ४० से भाग दिया लब्धि२५पला और ३० विपला मिली, इनमें जन्म वारादि २ । ३९ । २९ जोडदिया तो वर्षवारादि होगया, दूसरा प्रकार यह है कि गतवर्ष सवाया ४६ दि. १५ घ. गतवर्ष आधा घ. १८ प. ३० तीसरे गतवर्ष ड्योढा प.५५वि.३० सबको यथाक्रम स्वस्वजातियोंमें मिलाय दिया. जैसे विपल तो ३० रहे पल ३० और ५५ जोडके ८५ यह ६० से उद्धृत कर दिया तो पल २५ रही लब्धि १ घटी १८ । १५ तीनों जोडके ६४ घटी मिली वह ४६ ही हैं इन वारादि ४६।३४।२५।३० में जन्मवार२घटी ३९ पल २९ जोडदिये तो वार ७ घटी १३ पल ५४।३० यह वर्षेष्ट हुआ । अन्यप्रकार १।१५। ३१।३० को गतवर्षसे पृथक् २ गुणदिया. यथाक्रम वारादि ध्रुवक होजाता है इसके और प्रकारभी बहुत हैं इसकी उपपत्ति यह है कि सूर्यके पूरी १२

राशिमें एक सौरवर्ष होता है, जन्मसमयमें सूर्य स्पष्ट जितना राश्यादि है उतनाही पूरा पूरा जिस समयपर हो वह काल पुनर्वर्ष प्रवेशका है। सावनमाससे दिन ३६५ घटी १५ पल ३१ विपल ३० में सूर्य उसी स्पष्टपर आजाता है इससे यह क्षेपक नियत है इस क्षेपकको पृथक् २ चारों स्थानोंमें गतवर्षसे गुनकर स्वस्वजातिके पूर्ण अंकोंसे ऊपर ऊपर चढायके आयुके सावन वर्षादि होते हैं; जैसे १ । १५ । ३१ । ३० गतवर्ष ३७ से गुनादिये ३७ । ५५५ । ११४७ । १११० इनको घटी पल विपल ६० से उद्धृत करदिये ३७ वर्ष ४६ दिन ३४ घटी २५ पल ३० विपल ० सावन माससे गत हुए. यही रीति सर्वत्र जाननी. यहां वही ४६ आदिकोंमें जन्म वारादि जोडनेसे वर्ष प्रवेश वारादि होगा ॥ १६ ॥

अनु०--शिवघ्नोऽब्दः स्वखाद्रींदुलवाढ्यः खाग्निशेषितः ॥
जन्मतिथ्यन्वितस्तत्र तिथावब्दप्रवेशनम् ॥ १७ ॥

पूर्वोक्त विधिसे वर्षप्रवेश वारादि ज्ञात हुएमें यह वर्षप्रवेश किस तिथिको होगा इस निमित्त तिथ्यानयन प्रकार यह है कि गतवर्ष ११ ग्यारहसे गुन दिया दो स्थानोंमें स्थापन करके एकमें १७० का भाग देकर लब्धि दूसरे स्थानकी राशिमें जोडादिया उपरांत ३० तीससे भाग देकर जो शेष रहे उससे जन्मतिथि शुक्लप्रतिपदादिक्रमसे जोडनेसे वर्षप्रवेश तिथि मिलती है. उदाहरण गतवर्ष ३७।११ से गुनदिये ४०७ दो स्थानोंमें स्थापन करके एक जगह १७० से भाग लिया लब्धि २ दूसरेमें जोडदिया ४०९ इसमें जन्मतिथि ९ जोडदी तौ ४१८ हुए ३० से तष्ट करके शेष २८ कृष्ण त्रयोदशीको दिन वर्षप्रवेश हुआ. इसमें भी तिथि एक दिन आगे पीछे हो जाती है. गणितागत तिथिके पहिले वा पिछले वा उसी दिन वर्षगत वार जिस दिन मिले वही ठीक होती है यहां वारकी मुख्यता है तिथिकी आवश्यकता वारको निश्चय करने निमित्त है कि एक महीनेमें एक वार ४।५ आवृत्ति करता है तो उनमेंसे तिथि एकको निश्चय कर देती है. जैसे इस उदाहरणमें २८ कृष्णत्रयोदशी मिली है और वर्षप्रवेश द्वादशीके दिन शनिवार

होनेसे वर्षप्रवेश होगया. अथवा जन्मके (सूर्यांशतुल्य) सूर्यांशदिन वह वार मिलनेपर वर्षप्रवेश दिन निश्चय होता है, किसी किसी देशोंमें संक्रांतिदिन गिनती मानते हैं उन्हें गत प्रविष्टा और पैठ कहते हैं उस प्रविष्टाके दिन अथवा एक दिन आगे पीछे उक्त वार मिलनेसेभी दिन निश्चय होता है ॥ १७ ॥

अनु०–गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हृता ॥
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥ १८ ॥

फल स्पष्ट ग्रहाधीन है, वह गणित सिद्धांत और ग्रहलाघवादि लघुकरणोंसे साधन करनेमें श्रम बाहुल्य है, यहां आचार्यने सुगमोपाय ग्रहस्पष्टका इस प्रकार कहा है कि, पंचांगस्थित अवधिकी गति इष्ट समयसे स्पष्टावधिपर्यंत दिनोंसे गुनकर अवधि स्पष्टमें संस्कार करना तात्कालिक स्पष्ट सिद्ध होजाता है. उदाहरण–संवत् १९४३ वैशाख वदि द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३ । ५४ में वर्षप्रवेश है. और वैशाख वदि अष्टमी सोमवारके दिन ग्रहलाघवीय प्रातःकालीन स्पष्टावधि पंचांगमें स्थापित है, अब स्पष्टावधि प्रातःकालसे ५ दिन १३ घटी ५४ पल इष्टकालपर्यंत अधिक है. ऐष्यदिन हुए उस अवधिके सूर्य स्पष्ट० । १३ । ३७ । ५२ राश्यादि और गति ५८ । १४ है. ऐष्यदिनादि ५ । १३ । ५३ से गति गोमूत्रिका क्रमसे वा भिन्न गुणनविधिसे गुनदिया ५ । ४ । ३९ अंशादि हुए. अवधि स्पष्टमें ०।१३।३७।५२। अवधिसे उत्तरदिन होनेसे ऐष्य हुआ. जोड देनेसे० । १८ । ४२ । ३१ यह तत्काल सूर्य स्पष्ट होगया. यही रीति भौमादि सभी ग्रहोंकी जाननी. दूसरा प्रकार विना ही अवधि स्पष्ट केवल पंचांगीय ग्रह चालकसे ग्रह स्पष्ट करनेका यह है कि वर्षप्रवेश दिनसे पहला जो नक्षत्र चरणपर ग्रह चालक है और इष्टदिनसे जो पुनः अंत्यचरण पर चालक है इनका अन्तर करके त्रैराशिक करना कि अन्तरीय अमुक संख्यांक दिनोंमें ३ । २० अंशकला स्पष्ट होता है तो पूर्वचालकसे इष्टसमय पर्यन्त अन्तरांकमें कितना होगा. जो उत्तर मिले उसमें राशिसंबंधि नक्षत्रोंके जितने चरण ग्रहके भुक्त करलिये उतने ३ । २० जोडते जाना

जहांतक इष्टदिन समयका पूर्व चालक मिलता है. जितना समय हो उसमें त्रैराशिकका गत फल जोडदेना ग्रह स्पष्ट हो जाता है.

इतना स्मरण इसमें मुख्य चाहिये कि ९ चरण नक्षत्रोंसे एक राशि होती है एक चरण नक्षत्र भोगमें ३ अंश २० कला स्पष्ट होता है, एवं ६ । ४० में दो चरण १० । ० में तीन चरण १३ । २० में चार चरण १६ । ४० में पांच चरण २० । ० में छः चरण २३ । २० में सात चरण । २६ । ४०में आठ चरण३०।०में नौ चरण पूरे होजाते हैं यही नवांशकक्रमभी है, एक चरण अर्थात् ३ । २० अंशकी २०० कला होती हैं ये सभी अंक त्रैराशिकमें काम आते हैं, उदाहरण—संवत् १९४३वैशाखवदि द्वादशी शनिवार १३ घटी ५४ पलमें वर्षप्रवेश है इसके पूर्व दिन शुक्रवार४१ घटी ४६ पलोंमें रेवतीके तीसरे चरणपर चालक है, और चतुर्दशी सोमवारको ५३ घटी ३ पलोंमें रेवतीके चौथे चरणपर चालक है. इनका अंतर ३ दिन ११ घ० १७ पल हुवा.प्रथम चालकसे इष्ट समयपर्यंत० दिन ।३२ घटी ८ पल अंतर हुवा अब त्रैराशिक है कि३।११।१७ से दिनादि अंतरमें ३ अंश २० कला स्पष्ट हुवा तो अंतर दिनादि० ।३२।८ में कितना होगा ३। २० से ० ।३२।८ गुनना है ३।११।१७ से भाग देना है गुणन भाजनक्रम गोमूत्रिका और भिन्नकी रीतिसे है, सुगमतासे समझनेके लिये वह विधि ऐसी भी है कि ३ अंशको ६० से गुनदिया २० कला जोड दी २०० कला पिंड गुणक हुवा, दूसरी राशि० ।३२। ८ शून्यके स्थानमें कुछ अंक होता तो ६० से गुनकर ३२ जोडाना था यहां शून्यहीमें ३२ जुडगये अब ३२ का ६० से गुनकर १९२० में आठ जोडदिया १९२८ गुणक हुवा. गुण्यगुणकको परस्पर गुण देनेसे ३८५६०० हुवा इसमें ३। ११ । १७ के पिंड ११४७७से भाग दिया. ३३ कला मिलीं शेष अंकको ६० से गुणकर भाग हारसे भाग देकर लब्धि उसके ऊपर अंश होते शेष कला रहती यहां ३३ साठसे न्यून है तो यही कला रही अंश ०। इसमें अब विचार है कि रेवतीके तीसरे चरणमें ० । ३३ । ३६ अंशादि

स्पष्ट बुधका हुवा इसके पूर्व एक चरण पूर्वाभाद्रपदका ४ चरण उत्तराभाद्रपदके दो चरण रेवतीके यह सब सात चरण भुक्त हुएमें २३ अंश २० कला स्पष्ट भुक्त हुवा अब शेष रेवती तृतीय चरणके अनुपातागत अंशादि० ।३३।३६ जोडदिये २३। ५३ । ३६ अंशादि स्पष्ट हुवा बुध मीनका होनेसे राशिके स्थानमें ११ लिखना योग्य है ११। २३ । ५३ । ३६ राश्यादि बुधका तत्काल स्पष्ट होगया यही रीति और कीभी जानना यह दोनों प्रकार सुगमता निमित्त स्थूलतर कहे हैं । स्थूल कार्य इनमें साधन करते ही हैं सूक्ष्म विचार तो ग्रहलाघव महादेवी मकरंद रामविनोदादि करणसारणियोंके होते हैं और इनसे भी सूक्ष्म सिद्धांतोंसे होता है ऐसी ही विधि चंद्रस्पष्टकी भी है सो आगे है ॥१८॥

भुजंगप्रयातम्--खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत्खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ॥ नवाप्तं शशी भागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥ १९ ॥

जिस दिनका चंद्र स्पष्ट करना हो उस दिन नक्षत्रका इष्ट कालमें भुक्तभोग्य सर्वभोग्य करलेना रीति यह है कि इष्टसमयपर्यंत उक्त नक्षत्र जितनी घटी पल भुक्त हुवा उसे भुक्त कहते हैं,जितना बाकी रहा उसे भोग्य और दोनोंको मिलाकर सर्व भोग्य होता है. भुक्तको६०से गुनकर सर्व भोग्यके भाग लेनेसे जो मिले उसे षष्टि प्रमाण भुक्त कहते हैं वर्तमान नक्षत्रसे पूर्व अश्विन्यादि जितने नक्षत्र व्यतीत हुए उतनी संख्याको ६० साठसे गुणकर वर्तमान नक्षत्रकी भभोगके भागसे मिली हुई घट्यादि जोड देनी सभी अतीत घटिका हुई उपरांत दोसे गुणकर नौ ९से भाग लेना लब्धि अंश होते हैं,शेष साठसे गुनकर नौसे भाग देना लाभ कला होती हैं. पुनः शेष साठसे गुणकर नौसे भाग देना लाभ विकला मिलती हैं. अंश ३० तीससे अधिक हो तो तीसहीसे भाग देना लाभ राशि शेष अंश होते हैं यह चन्द्रमा स्पष्ट सिद्धि होजाती है । उदाहरण—संवत् १९४३ वैशाख वदि द्वादशी शनिवार इष्ट घटी १३ पल ५४ इस समय पर उत्तराभाद्र नक्षत्रका भुक्तघटी ५४ पल १३

भोग्यघटी १० पल ४१ सर्व भोग्यघटी ६४ पल ५४ षष्टिप्रमाण भुक्त घटी ५० प० ८ अश्विनीसे पूर्वाभाद्रपर्यंत २५ नक्षत्र भुक्त हुए, इस अंकको ६० साठसे गुना किया १५०० हुए वर्तमान उत्तराभाद्र षष्टिमान भुक्त ५०।८ जोडदिया १५५०।८ इसको दुगुना किया ३१००।१६ नौसे भाग लिया लाभ ३४४ अंश शेष ४ साठसे गुणाकर अवशिष्ट १६ जोडदिया २५६ नौसे भाग लिया लाभ २८ कला हुई शेष ४ पुनः साठसे गुनाकर २४० नौसे भाग लिया; लाभ २६ विकला हुई. अंशादिचंद्र स्पष्ट ३४४।२८।२६ हुआ अंशस्थानमें अंक तीससे अधिक होनेसे ३० से भागलिया लाभ ११ राशिशेष १४ अंक हुए, ११।१४।२८।२६ यह चन्द्र स्पष्ट होगया. दूसरे प्रकार उदाहरण यह है कि, अश्विनीसे पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरणपर्यंत ग्यारह राशि पूरी भुक्त होगयीं, शेष पूर्वाभाद्रपदाका चतुर्थ चरण और उत्तराभाद्रपदाके ४५ घटी षष्टिमान भुक्त पर्यन्त तीन चरण भुक्त होजानेसे १३ अंश २० कला भुक्त होगयीं, अर्थात् उत्तराभाद्रपदाके ४५ घटी भुक्त पर्यन्त चन्द्रस्पष्ट ११।१३।२०।० होगया, अब उत्तराभाद्रके ५ घटी ८ पल अवशेष भुक्तमें हैं इसका त्रैराशिक यह है कि १५ घटी भुक्तमें ३।२० अंश स्पष्ट होता है तो ५ घ. ८ प. में कितना होगा ? ५।८। घटीके पिंड ३०८ को ३।२० के पिंड २०० से गुना किया ६१६०० उसमें १५ घटीके पलात्मक पिंड ९०० से भागदिया, लाभ ६८ कला हुई शेष ४०० को साठसे गुनाकर २४००० भाग हार ९०० से भाग लिया लाभ २६ विकला हुई. यहां कला ६० से ऊपर होनेसे साठहीसे भागदिया लाभ १ अंश शेष ८ कला रहीं, १।८।२६ इस समलग्न लाभको पूर्वागत ११।१३।२०।० में जोडदिया ११।१४।२८।२६ यह चन्द्र स्पष्ट होगया, दोनहूं प्रकारसे एकही स्पष्ट मिलता है। यहां दूसरा उदाहरण पूर्व लिखा है (अब चन्द्रमाकी गति बनानेकी रीति) एक नक्षत्रका स्पष्ट १३ अंश २० कला हैं इसकी कला ८०० को साठसे गुनाकर ४८००० विकलापिंड होता है, इसमें नक्षत्रके सर्व भोग्यसे

भागलेना जो मिले वह चंद्रमाकी स्पष्टगति होती है. उदाहरण—४८००० में उत्तराभाद्रके सर्वभोग्य ६४ । ५४ का पलात्मक पिंड ३८९४ से भाग देनेके लिये, इसको ६० से गुनाकर पला पिंड किया तो भाज्य भी ६० से गुणदिया २८८०००० भागहार ३८९४ से भाग लेकर ७३९ लब्धि+शेष २३३४ को ६० से गुनाकर भागहारसे भागलिया लब्धि ३५ यह ७३९।३५ चंद्रमा गति होगई ॥ १९ ॥

उपजा०--पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखंडं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ॥ दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखंडं त्वपरं नतं स्यात् ॥ २० ॥

ग्रहस्पष्टके उपरांत भाव स्पष्टके फलके निमित्त आवश्यकता है, लग्न दशम स्पष्टसे भाव स्पष्ट होते हैं प्रथम दशम स्पष्टसाधनार्थ नतसाधन कहते हैं कि अर्द्ध-रात्रिसे उपरांत दिनार्द्धपर्यंत पूर्वनत और मध्याह्नसे उपरांत सायंकालपर्यंत दिवा पश्चिमनत होता है. सूर्यास्तसे अर्द्धरात्र पर्यन्त रात्रिका पूर्वनत होता है अर्द्ध रात्रिके बाद सूर्योदय पर्यन्त रात्रिका पश्चिमनत होता है (मध्याह्नके भीतरका इष्टकाल हो तो दिनार्धमें इष्टकाल घटा देना,) शेष दिवा पूर्वनत होगा मध्याह्नके बाद सूर्यास्ततक इष्टकाल हो तौ इष्टकालमें दिनार्द्ध घटा देना, शेष दिवा पश्चिमनत होगा.(सूर्यास्तके बाद अर्द्धरात्र तक इष्टकाल हो तो रात्र्य-र्द्धमें इष्टकालको घटा देना शेष रात्रिका पूर्वनत होता है,) और (अर्द्धरात्रके बाद सूर्योदयतक इष्टकाल हो) तो इष्टकालमें रात्र्यर्द्ध घटा देना,) शेष रात्रिका पश्चिमनत होगा. यहाँ १५ में नत घटानेसे उन्नत होता है परंच उन्नतका कोई प्रयोजन नहीं है इस लिये उन्नतका नाम नहीं लिखा है. इन नतोंका प्रयोजन दशम स्पष्टमें लगेगा. उदाहरण—यहां इष्टकाल घ. १३ पं. ५४ हैं. दिनार्द्ध घ. १६ प. ३१ हैं दिनार्द्धमें इष्टकाल घटाया तो शेष रहा घ. २ प. ३७ यह दिनका पूर्वनत हुआ ॥ २० ॥

अनु०--तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसंगुणात् । स्वोदया-त्खाग्निलब्धं यद्भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ॥ २१ ॥ इष्टनाडीपले-

भ्यश्च गतगम्यान्निजोदयात् ॥ शेषं खत्र्याहतं भक्तमशुद्धेन लवादिकम् ॥२२॥ अशुद्धशुद्धभे हीनं युक्तनुर्व्ययनांशकम्॥ एवं लंकोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ॥ २३ ॥

तात्कालिक सूर्यस्पष्टमें अयनांश जोडना जो अंक राशिका है, उसके आगेकी राशि स्वोदय हुआ शेष अंशादि भुक्त हुए,तीसमें घटायके भोग्यांश होते हैं इन भोग्यांशादिकोंको वा भुक्तांशादिकोंको स्वोदय अर्थात् जिस राशिका अंशादि था उसी संख्याका स्वदेशीय लग्नखंडसे तीनों स्थानोंमें पृथक् २गुनाकर तीससे भाग लेना,लब्धिपलादि सूर्यके भुक्त वा भोग्य होते हैं अर्थात् भुक्तांशादिकोंसे स्वोदयको गुनते हैं तो ३० तीसका लाभ भुक्तसंज्ञक होता है और भोग्यसे किये हैं तो भोग्यसंज्ञक होता है. इन पलादिकोंको इष्ट घटीकी पलाओंमें घटाय देना जो शेष रहे उसमें स्वोदयकी राशिसे नीचे अथवा उपरांत जितने लग्नखंड घटें एक एक करके घटाते जाना,जो लग्नखंड न घटे उसकी अशुद्ध संज्ञा हुई घटानेसे जो शेष रहा उसे ३० तीससे गुणदेना अशुद्ध संज्ञक लग्नखंडसे भाग लेना लाभ अंशादि हुए स्वोदयसे लेकर जितने लग्नखंड पूर्व घटाये उतनी संख्याकी राशि उन लब्ध अंशादिकोंको पूर्वमें स्थापन करनी यह भोग्य रीतिका क्रम है,और भुक्त रीतिमें अशुद्धमें घटादेना उपरांत अयनांश घटाय देना यह लग्न स्पष्ट होजाता है.उदाहरण-संवत् १९४३ वैशाख कृष्ण द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३ पला ५४ सूर्य स्पष्ट ०। १८। ४२। ३१ अयनांश २२।४४ जोडदिया. १।११।२६।३१ यह सायन सूर्य हुआ इसमें १ राशि है यह वृषस्वोदय हुआ शेष अंशादि११।२६।३१भुक्त हुए ३०तीसमें घटायके १८।३३।२९ ये भोग्यांशादि हुए । अब इनको स्वोदय खंडोंसे गुनदेना है,लग्नखंडोंकी रीति यह है कि लंकोदय २७८।२९९।३२३ क्रमसे और यही उत्क्रमसे ३२३।२९९।२७८ हैं इनमें अभीष्ट देशके चरखंडोंको एक आवृत्ति तीनोंमें जोडदेना, दूसरी आवृत्ति तीनोंमें घटाय देना लग्नखंड होते हैं, जैसे श्रीनगरके पलभा ७।० (त्रिष्ठा हताः स्युर्दशभिर्भुजंगे-

दिग्भिश्वरार्द्धानि गुणोद्धृतांत्या) इस विधिकरके ७० । ५६ । २३ चर खंड हैं इनको एक आवृत्तिमें घटाय दिया तो मीन मेषके २०८, वृषकुंभके २४३, मिथुन मकरके ३०० और दूसरी आवृत्तिमें चरखंड जोडदिया तो कर्क धनके ३४६ सिंह वृश्चिकके ३५५ कन्यातुलाके ३४८ ये श्रीनगरके लग्नखंड हुए यहां स्वोदय वृष २४३ से भोग्यांश गुनदिये ४३७४।८०१९। ७०४७नीचेके दो अंक ६० से चढाय दिये तो ४५०९ । ३६ । २७ हुए ३० से भागलिया लाभ १५०।१९।१२ भोग्य काल हुआ ऐसी ही रीति भुक्तांशादिसे भी होती है,अब इष्ट घटी १३।५४ की पलाओंमें ८३४ भोग्यांश १५० । १९ । १२ घटाय दिये ६८३ । ४० । ४८ हुए अब इसमें स्वोदय वृषसे उपरांत मिथुन ३०० घटाया३८३इसमें भी कर्क ३४६ घटाया तो ३७।४०।४८ इसमें सिंह ३५५ घटाना था नहीं घटता तो इसकी अशुद्ध संज्ञा हुई शेष ३७ । ४०।४८ को पृथक् तीससे गुन-दिया ११३१२४।० इसमें अशुद्ध ३५५ से भाग लिया लाभ ३।११।३। अंशादि हुए कर्क पर्यंत घटगये इससे ४ राशिके स्थानमें स्थापन कर दिया ० । ४ । ३।११ । ३ इसमें अयनांश २२ । ४४ घटादिया तो३। १० । २७ । ३ यह लग्न स्पष्ट होगया, जब स्वोदय न घटे तो इष्टको ३० से गुनाकर सायन सूर्यके लग्नखंडसे भाग लेना तो अंशादि मिले वह सूर्योदयसे पूर्वका होय तो सायन सूर्यमें घटायके और परका होय तो जोडके अयनांश घटायके लग्न स्पष्ट होजाता है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

अनुष्टुप्--पूर्वपश्चान्नतादन्यत्प्राग्वत्तद्दशमं भवेत् । सषड्भे लग्नखे जायातुर्यौ लग्नो न तुर्यतः ॥ २४ ॥ षष्ठांशयुक्ततनुः संधिरग्रे षष्ठांशयोजनात् ॥ त्रयः ससंधयो भावाः षष्ठांशोनैक-युक्सुखात् ॥ २५ ॥ अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्द्धयुक्ताः परेऽपि षट् ॥ खेटे भावसमे पूर्णं फलं संधिसमे तु खम् ॥ २६ ॥

अब दशम लग्न स्पष्टकी विधि कहते हैं, कि पूर्वोक्त प्रकारसे नतोन्नत

सूर्य तात्कालिक स्पष्ट सायन स्वोदयगुणित भुक्त भोग्यांश ऋणसंज्ञकलग्न क्रमसे करके भोग्य भुक्तका पलात्मक सूर्य स्पष्ट करके लग्नस्पष्टमें इष्टकालकी पलाओंमें घटाया, यहां नत वा उन्नतको इष्ट मानकर उसकी घटिकाकी पलाओंमें घटाना और विधि सभी लग्न स्पष्टोक्तवत् करनेसे दशम लग्न स्पष्ट होता है. जैसे—पूर्व लग्न स्पष्ट करनेमें तात्कालिक सूर्य स्पष्ट लिया गया, वही यहांभी लिया जाता है. उनका भुक्तांशादिकोंसे उसीके राशिसंख्यक लग्नखंड गुनके तीससे भाग लेनेसे लाभ पलादि सूर्यकी होंगी, पश्चात् उन्नत पलाओंको घटाना इष्टकाल मानकर इनमें सूर्यके पलादि घटाय देना, उपरांत सूर्यराशि लग्नखंड घटाना यदि न घटे तो शेष पलादिकोंको तीससे गुनकर पूर्व अशुद्ध लग्नखंडसे भाग देना, लब्धि अंशादिहुए. अशुद्ध लग्न राशिमें घटायके अयनांश घटाय देना वह लग्नस्पष्ट राश्यादि हो जायगा. इस प्रकार दशम होता है यह ऋणसंज्ञक विधि है यहां वही तत्काल सूर्य स्पष्टके अंशादि ३० में घटायके स्वोदयमें गुनना ३० से भाग लेकर लब्धि पलादि सूर्यका भोग्य हुआ इसे पश्चिम नत जो इष्ट माना है उसको पलाओंमें घटाय देना. जो न घटे तो शेष ३० से गुणा कर अशुद्ध लग्नखंडसे भाग लेना लाभ अंशादि राश्यादि यथाक्रमसे योजित करके अयनांश घटाय देना, राश्यादि दशम लग्न स्पष्ट हो जाता है यह धन संज्ञक विधि है इस प्रकार लग्न दशम स्पष्ट करके लग्न स्पष्टमें छः राशि जोडके सप्तम भाव स्पष्ट होता है. ये ४ भावोंके स्पष्ट होगये. और भाव संधियोंकी रीति इस प्रकार है कि चतुर्थ भावस्पष्टमें लग्नस्पष्ट घटाय देना. शेषमें छःसे भाग लेनेसे लाभ षष्ठांश हुआ. यह लग्नमें जोडनेसे तनुधनकी संधि होती है इस संधिमें जोडनेसे द्वितीय भाव होता है. ऐसे ही द्वितीयभावमें जोडनेसे २।३की संधि होगी इसमें जोडनेसे तृतीय भाव और इसमें भी जोडनेसे ३।४ की संधि होगी इस संधिमें जोडनेसे सुखभाव जो दशमें ६ राशि जोडके बना है वही मिल जायगा. उपरांत पूर्वानीत षष्ठांशको एक राशिमें घटायके जो क्षेपक हो वह चतुर्थभावमें जोडनेसे ४।५की संधि होगी. संधिमें जोडनेसे पंचमभाव और इस भावमें जोडनेसे ५।६की संधिमें जोडनेसे षष्ठभाव.

इसमें जोडनेसे सप्तमभाव जो लग्नमें ६ राशि जोडकर हुई वही मिलजायगी. अब सप्तमभावसे उपरांत लग्नादिकोंमें ६ राशि जोडते जाना. सप्तमादि स्पष्ट हो जायँगे जैसे लग्नमें ६ जोडनेसे सप्तमभाव हुआ है. लग्न धनसंधिमें जोडनेसे सप्तमाष्टमभावकी संधि होगी, एवं द्वितीयभावसे अष्टमभाव, संधिमें सन्धि तृतीयसे नवम संधिसे संधि, चतुर्थसे दशम संधिसे सन्धि. पंचम भावसे लाभभाव संधिसे संधि छठेमें बारहवां संधिसे संधि इस प्रकार बारह भावोंके स्पष्ट संधियोंसहित होते हैं, अति सुगम होनेसे उदाहरण न लिखा इन भावस्पष्टोंका प्रयोजन यह है कि ग्रहस्पष्ट जिस भावस्पष्टपर मिलें वह ग्रह उसी भावका फल देता है सन्धिगत यह मिश्रित फल दोनों भावोंका देता है परंतु यह फल युक्तिसिद्ध है ग्रंथकर्त्ताकी उक्ति तो यह है कि जो ग्रह स्पष्ट जिस भावस्पष्टके तुल्य है वह उस भावका फल पूर्ण देता है. सन्धिगत ग्रह फल नहीं देता इनके फल अगले तंत्रमें हैं ॥ २४ ॥ २५॥२६ ॥

शालिनी०--भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालान्न शुद्धयेत्त्रिंशन्निघ्नात्स्वोदयात्तं लवाद्यम् ॥ हीनं युक्तं भास्करे तत्तनुः स्याद्रात्रौ लग्नं भार्द्धयुक्ताद्रवेस्तु ॥ २७ ॥

जब इष्टकाल सूर्योदयसे पूर्व वा पश्चात् दो घटी हो अर्थात् लग्न और सूर्य एक राशिमें हों तो पूर्वोक्त विधिसे सूर्यके भुक्त वा भोग्य पला बनाकर इष्टकाल पलाओंमें घटे तो घटाय देना. न घटे तो अल्पेष्टकाल पलाओंको तीससे गुनाकर स्वोदयसे भाग लेना, फल अंशादि तत्काल सूर्य स्पष्टमें पूर्वोक्त ऋण धन क्रमसे हीन वा युक्त जैसा संभव हो करना, उपरांत अयनांश घटायके लग्नस्पष्ट होता है. ऐसे ही दशम लग्नके लिये नतेष्टकाल पलाओंसे करना रात्रिका इष्टकाल हो तो सूर्य स्पष्टमें ६ राशि जोडके पूर्वोक्त विधि करनी. हेतु इसका यह है कि उदयकालिक सूर्यसे रात्रि इष्टकालपर्यंत बहुत लग्नखंड घटाये जाते हैं इसमें कुछ न कुछ अंतर हो जाता है छः राशि जोडनेसे बहुत लग्नखंड न घटेंगे अंतर भी नहीं पडेगा सुगमता भी है ॥ २७ ॥

अनुष्टुप्--खेटे संधिद्वयांतःस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ॥
हीनेऽधिके द्विसंधिभ्यां भावे पूर्वापरे फलम् ॥ २८ ॥

दो सांधियोंके अन्तर्गत जो ग्रह हैं वह उसी भावका फल देता है और भावकी पूर्वसंधिमें ग्रह घटे तो पूर्वभावका फल देता है और ग्रह स्पष्टमें परसंधिस्पष्ट घटे तो परभावका फल देता है ॥ २८ ॥

अनु०--ग्रहसंध्यंतरं कार्यं विंशत्या गुणितं भजेत् ॥
भावसंध्यन्तरेणाप्तं फलं विंशोपकाः स्मृताः ॥ २९ ॥

ग्रहस्पष्ट जिस भावमें या उसके परसंधिमें हो तो उसी संधि और ग्रहसे अंशादि अंतर करना. उस अंतरको २० से गुनकर भाव और संधिके अंतर-को भाग देकर जो मिले वह विंशोपका बल होता है, बलशून्य होनमें फल शून्य, बलमध्यममें मध्यम और पूर्णबलमें पूर्णफल ग्रह भावका देता है ॥ २९ ॥

उपजा०—भौमोशनःसौम्यशशीनवित्सितारेज्यार्किमंदांगिरसो गृहेश्वराः ॥ आद्याः कुजाद्या रवितोऽपि मध्यमाः सितात्तृतीयाः क्रियतो दृकाणपाः ॥ ३० ॥

वर्षेशके निमित्त बलाबल विचारना चाहिये इसलिये स्वगृह उच्च हद्दा त्रैराशि मुशल्लह पंचवर्गी बलगणनामें प्रथम राशिस्वामी दृक्काणस्वामी कहते हैं कि, मषका स्वामी मंगल, वृषका उशना (शुक्र), मिथुनका बुध, कर्कका चन्द्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलका शुक्र, वृश्चिका का मंगल, धनका बृहस्पति, मकरका शनि, कुंभका शनि और मनिक बृहस्पति ये राशिस्वामी हैं. द्रेष्काण त्रिभागको कहते हैं. एकराशिके ३० अंश होते हैं दश दश अंशका एक द्रेष्काण होता है. एकराशिके ३० अंश होते हैं १०अंशके भीतर हो तो मंगलसे गिनना, १०अंश ऊपर २० के भीतर दूसरा द्रेष्काण हो तो मंगलसे छठा सूर्यसे और २० अंश ऊपर ३० के भीतर तसिरा द्रेष्काण हो तो सूर्यसे छठा शुक्रसे गिनना प्रगट चक्रमें लिखा है॥ ३०॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	अंश
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	र	चं	मं	बु	बृ	अंश
शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं	अंश

इन्द्रवज्रा–सूर्यादितुंगर्क्षमजोक्षनक्रकन्याकुलिरांत्यतुला लवैः स्युः ॥ दिग्भिर्गुणैरष्टयमैः शरैकैर्भूतैर्भसंख्यैर्नखसंमितैश्च ॥३१॥

सूर्यका उच्च मेषके दश अंशपर, चंद्रमाका वृषके ३ अंशपर एवं मंगलका मकरके२८ पर, बुधका कन्याके १५ अंशपर, बृहस्पतिका कर्कके५ अंशपर, शुक्रका मीनके २७ अंशपर, शनिका तुलाके२०अंशपर परमोच्च है ॥३१॥

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्च.	० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०
नीच.	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	० २०

उपजा०–तत्सप्तमं नीचमनेन हीनो ग्रहोऽधिकश्चेद्रसभाद्विशोध्यः॥चक्रात्तदंशांकलवो बलं स्यात्त्रियेण तौलींदुभतो नवांशाः ॥ ३२ ॥

उच्चराश्यंशक पूर्व श्लोकमें कहे गये उससे सप्तम नीच होता है उच्चराश्यंशकमें६ राशि जोडनेसे नीचराश्यंश परम होता है.उच्च बलकी विधि कहते हैं कि ग्रहके नीच स्पष्टको तत्काल स्पष्ट ग्रहमें घटा देना न घटे तो ग्रहस्पष्टमें १२ जोडके घटाना, शेष ६ राशिसे ऊपर हो तो २ में घटाके षड्भाल्प कर लेना फिर उसका अंशादि करके९ का भाग देना, लब्धि उच्चबल होता है.उदाहरण–संवत् १९४३ वैशाखकृष्ण द्वादशी शनिवारका इष्टघटी १३ पल५४ सूर्यस्य ०० । १८ । ४२ । ३१ । सूर्यका उच्चस्पष्ट १० । ० । ० । नीच स्पष्ट ६ । १० । ० । ०। को रविस्पष्टमें घटाया शेष ६ । ८ । ४२ । ३१ इनको १२ में घटाके षड्भाल्प किया ५ । २१ । १७ । २९

अब यही ५।२१।१७।२९ के राशिको ३० से गुनाकर १५० अंश इसमें २१ जोडदिये १७१ । १७ । २९ हुए इसमें ९ से भाग लेकर १९ । १। ५६।३३।२० यह उच्चबल हुआ ऐसे ही सभी ग्रहोंके उच्चबलकी रीति है । मुशल्लहू नवांशको कहते हैं. एक राशि ३० अंशके नौ भाग ये हैं.

१		२		३		४		५		६		७		८		९	
३	२०	६	४०	१०	०	१३	२०	१६	४०	२०	०	२३	२०	२६	४०	३०	०

मेष सिंह धनके नवांश मेषसे गिनना, वृष कन्या मकरके मकरसे, मिथुन तुला कुम्भके तुलासे, और कर्क वृश्चिक मीनके कर्कसे यह नवांशक 'मुश-ल्लह' की रीति है ॥ ३२ ॥

उपजा०--मेषेऽगतर्काष्टशरेषु भागा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम्॥
वृषेऽष्टषणनागशरानलांशाः शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः ॥ ३३ ॥

हद्दाके स्वामी कहते हैं-मेषके ६ अंश पर्यन्त बृहस्पतिकी हद्दा ६ से १२ लौं शुक्रकी १२ से बीस २० लौं बुधकी २० से २५ तक मंगलकी २५ से ३० लौं शनैश्चरकी वृषके ८ अंशपर्यन्त शुक्रकी ८ से १४ लौं बुधकी १४ से २२ लौं बृहपतिकी २२ से २७ लौं शनिकी २७ से ३० तक मंगलकी 'हद्दा' होती है ॥ ३३ ॥

उपजा०--युग्मे षडंगेषुनगांगभागाःसौम्यास्फुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः।
कर्केऽद्रितर्कांगनगाब्धिभागाःकुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम्॥३४॥

मिथुनके ६ अंश पर्यंत बुधकी ६ से १२ लौं शुक्रकी १२ से १७ लौं बृहस्पतिकी १७ से २४ लौं मंगलकी २४ से ३० लौं शनिकी, कर्कके ७ अंश पर्यन्त मंगलकी ७ से १३ लौं शुक्रकी १३ से १९ लौं बुधकी १९ से २६ लौं बृहस्पतिकी २६ से ३० लौं शनिकी 'हद्दा' होती है ॥ ३४ ॥

उपजा०--सिंहेंऽगभूताद्रिरसांगभागा देवेज्यशुक्रार्किबुधारहद्दाः॥
स्त्रिया नगाशाब्धिनगाक्षिभागाःसौम्योशनोजीवकुजार्किनाथाः॥३५

सिंहके ६ अंश पर्यन्त बृहस्पतिकी ६से ११ लौं शुक्रकी ११से१८ लौं शनिकी १८ से २४ लौं बुधकी २४ से ३० लौं मंगलकी और कन्याके ७ अंश पर्यन्त बुधकी ७ से १७ लौं शुक्रकी १७ से २१ लौं बृहस्पतिकी २१ से २८ लौं मंगलकी २८ से ३० लौं शनिकी 'हद्दा' होती है ॥३५॥

उपजा०-तुलेरसाष्टाद्रिनगाक्षिभागाःकोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः॥ कीटे नगाब्ध्यष्टशरांगभागा भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम्॥३६॥

तुलाके ६ अंश पर्यन्त शनिकी ६ से १४ लौं बुधकी १४ से २१ लौं बृहस्पतिकी २१ से २८ तक शुक्रकी २८ से ३० तक मंगलकी; और वृश्चिकके ७ अंश पयन्त मंगलकी ७ से ११ लौं शुक्रकी ११ से १९ लौं बुधकी १९ से २४ लौं बृहस्पतिकी २४ से ३० लौं शनिकी ॥ ३६ ॥

उपजा०--चापे रवीष्वंबुधिपंचवेदा जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम्॥ मृगे नगाद्यष्टयुगश्रुतीनां सौम्येज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ॥ ३७ ॥

धनके १२ अंश पर्यंत बृहस्पतिकी १२ से १७ लौं शुक्रकी १७से२१ लौं बुधकी २१ से २६ लौं मंगलकी २६ से ३० लौं शनिकी और मकरके ७ अंश पर्यंत बुधकी ७ से १४ लौं बृहस्पतिकी १४ से २२ लौं शुक्रकी २२ से २६ पर्यंत शनिकी २६ से ३० तक मंगलकी 'हद्दा' होती है ॥ ३७ ॥

उपजा०--कुम्भे नगांगाद्रिशरेषुभागा ज्ञशुक्रजीवारशनैश्चराणाम्॥ मीनेऽर्कवेदानलनंदपक्षाः सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणाम् ॥ ३८ ॥

कुंभके ७ अंश पर्यंत बुधकी ७ से १३ लौं शुक्रकी १३ से २० लौं बृहस्पतिकी २० से २५ लौं मंगलकी २५ से ३० लौं शनिकी; और मीनके १२ अंश पर्यंत शुक्रकी १२ से १६ लौं बृहस्पतिकी १६ से १९ लौं बुधकी १९ से २८ लौं मंगलकी २८ से ३० लौं शनिकी 'हद्दा' होती है ॥ ३८ ॥

उपजा०--त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुंगे हद्देऽक्षचंद्रा दशकं दृकाणे ॥ मुशल्लहे पञ्चलवाः प्रदिष्टा विंशोपका वेदलवैः प्रकल्प्याः ॥ ३९ ॥

पंचवर्गी बलके न्यास इस प्रकार हैं, कि,गृहबलमें ३० विश्वेबल पाता है उच्चबलमें २० विश्वे, हद्दामें १५ विश्वे, द्रेष्काणमें १० विश्वे और मुशल्लहमें ५ विश्वे इन सबमें मिले हुए जोडके ४ भाग देनेसे लब्ध विंशोपक बल होता है ॥ ३९ ॥

हद्दाचक्रम्।

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृं	ध	म	कुं	मी	राशयः
बृ ६	शु ८	बु ६	मं ७	बृ ६	बु ७	श ६	मं ७	बृ १२	बु ७	बु ७	शु १२	ग्रहाः अंशाः
शु ६	बु ६	शु ६	शु ६	शु ५	शु १०	बु ८	शु ४	शु ५	बृ ७	शु ६	बृ ४	तथा
बु ८	बृ ८	बृ ५	बु ६	श ७	बृ ४	बृ ७	बु ८	बु ४	शु ८	बृ ७	बु ३	तथा
मं ५	श ५	मं ७	बृ ७	बु ६	म ७	शु ७	बृ ५	मं ५	श ४	मं ५	मं ९	तथा
श ५	मं ३	श ६	श ४	मं ६	श २	मं २	श ६	श ४	मं ४	श ५	श २	तथा

इन्द्रवज्रा--स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे पादोनमर्द्धं समभेऽरिभेंऽघ्रिः॥
एवं समानीय बलं तदैक्ये वेदोद्धृते हीनबलः शरोनः ॥ ४० ॥

पूर्वश्लोकोक्त पंचवर्गी बलका नियम है कि,ग्रह अपने गृहादि अधिकारोंमें पूर्ण बल और मित्रकेमें चौथाई कम, समग्रहकेमें आधा, शत्रुके अधिकारमें चतुर्थांश बल पाता है जैसे–पहिले स्थानमें अपनी राशिका ग्रह पूरे ३०।० बल और मित्रराशिमें पादोन २२। ३० समकी राशिमें आधा १५। ० शत्रुराशिमें चौथाई ७। ३० पाता है. दूसरे उच्चबलमें परमोच्चपर पूरे २०। ० और परम नीचमें ०।० बीचके राशियोंमें अंतर करनेसे मिलता है. उसकी विधि (३२) श्लोक (तत्सप्तमं नीचमनेन हीनेत्यादि) में कहा गया है (तीसरे) हद्दाबलमें अपनी हद्दाका ग्रह १५।० पूरा और मित्रहद्दामें पादोन ११।१५ सममें आधा ७।३० शत्रुमें चौथाई ३।४५ बल पाता है. चौथे द्रेष्काण बलमें अपने द्रेष्काणका ग्रह पूरे १०।०

और मित्रद्रेष्काणमें पादोन ७ । ३० सममें आधा ५।० शत्रुमें चौथाई २ । ३० पांचवाँ (मुशल्लह) नवांश अपने नवांशका पूरे ५।० बल मित्र का पादोन ३ । ४५ सममें आधा २ । ३० शत्रुनवांशमें चौथाई १ । १५ बल पाता है इस प्रकार पांचों बल लेकर सबका ऐक्य एक जुदे कोष्ठमें

०	गृह	उच्च	हद्दा	द्रेष्या	नवांश	
स्व०	३० ०	२० ०	१५ ०	१० ०	५ ०	०
मित्र	२२ ३०	उप- रांत	११ १५	७ ३०	३ ४५	०
सम	१५ ०	अनु-	७ ३०	५ ०	२ ३०	०
शत्रु	७ ३०	पातसे	३ ४५	२ ३०	१ १५	०

स्थापन करना. उसमें चारसे भाग लेकर लाभ विंशोपकका बल होता है. उसे भी जुदे २ स्थानोंमें स्थापन करना ग्रह ५ अंक पर्यंत निकृष्ट बल ५ से १० पर्यंत हीनबल १० से १५ प० मध्य बल १५ से २० लौं पूर्ण बली कहाता है; जैसा जिसका बल वैसा ही फलभी देता है ॥ ४० ॥

शालिनी--क्षेत्रं होरात्र्यब्धिपंचांगसप्तवस्वंकाशेशार्कभागास्सुधीभिः विज्ञातव्या लग्नसंस्थाः शुभानां वर्गाःश्रेष्ठाःपापवर्गास्त्वनिष्टाः॥४१॥

अब द्वादशवर्गी बल कहते हैं. राशि १ होरा २ द्रेष्काण ३ चतुर्थांश ४ पंचमांश ५ षष्ठांश६ सप्तमांश७अष्टमांश ८ नवमांश९ दशमांश१०एकादशांश ११ द्वादशांश १२ ये द्वादश वर्ग हैं. पापवर्ग और शुभवर्ग अलग करके देखना. शुभवर्ग अधिक पापवर्ग हीन हो तो वह वर्ष शुभ होगा. विपरीत होनेमें फलभी विपरीत होता है ॥ ४१ ॥

इन्द्रव०--ओजे रवींद्वोः सम इंदुरव्योर्होरे गृहार्द्धप्रमिते विचिन्त्ये ॥ द्रेष्काणपाः स्वेषुनवर्क्षनाथास्तुर्यांशपाः स्वर्क्षजकेंद्रनाथाः ॥४२॥

प्रथमवर्ग राशीश हैं. यहां आचार्यने पंचवर्गी प्रकरण३०वें श्लोकमें कह दिया है. ग्रन्थांतरोंमें "भौमशुक्रज्ञचंद्रार्कबुशुक्रारमंत्रिणः ॥ सौरिश्शनिस्तथा जीवो मेषादीनामधीश्वराः" ऐसा है. प्रयोजन वही है १. दूसरा बल होरा विषम राशिके १५ अंश पर्यंत सूर्यकी १५ उपरांत चन्द्रमाकी समराशिमें १५ अंश पर्यंत चन्द्रमाकी १५ से ३० पर्यंत सूर्यकी होरा

होती है. तीसरा, द्रेष्काण प्रथम १० अंश पर्यंत उस राशिसे नववीं राशिका स्वामीका द्रेष्काण होता है. इसीको त्रिभाग भी कहते हैं. चौथा, चतुर्थांश १ राशिके ४ चारों भागोंमें ४ केंद्रोंके स्वामी जैसे ७।३० अंशपर्यंत उसी राशि-के स्वामीका ७।३०से १५ अंश पर्यंत उस राशिसे चौथी राशिके स्वामीका १५ से २२।३० लौं उससे सातवीं राशिके स्वामीका २२।३० से ३०।० पर्यंत उससे दशवीं राशिके स्वामीका चतुर्थांश होता है ॥ ४२ ॥

अनु०--ओजर्क्षे पंचमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः ॥
समभे व्यत्ययाज्ज्ञेया द्वादशांशाः स्वभात्स्मृताः ॥ ४३ ॥

पाँचवां; पंचमांश विषम राशिमें ६ अंश पर्यंत मंगलका ६से १२ पर्यंत शनिका १२से १८ लौं बृहस्पतिका १८ से २४ लौं बुधका २४से३० लौं शुक्रका, और समराशिमें विपरीत ६ अंशपर्यंत शुक्रका ६से १२लौं बुधका १२ से १८ लौं बृहस्पतिका १८ से २४ पर्यंत शनिका २४ से ३० लौं मंगलका पंचमांश होता है. बारहवां (द्वादशांश) १ राशिका बारह विभाग २अंश ३० कला होते हैं. जितने भागमें स्पष्ट हों स्वराशिसे उतने संख्यक राशिस्वामीका द्वादशांश होता है ॥ ४३ ॥

उपजा०--लवीकृतो व्योमचरोऽगशैलवस्वंकदिग्रुद्रगुणाः खरामैः॥
भक्तो गतास्तर्कनगाष्टनंददिग्रुद्रभागाःकुयुताः क्रियात्स्युः ॥४४॥

पूर्वश्लोकोंमें ६।७।८।९।१०।११ अंश छोडकर द्वादशांश कह दिया अब इनके लिये यह रीति है कि लग्नादिभाव वा ग्रहस्पष्टकी राशिको ३० से गुनाकर अंश जोडदिया. सभी अंश होगये उपरांत षष्ठांशको ६ से सप्तमांशको ७से अष्टमांशको ८से नवमांशको ९से दशमांशको १०से एकादशांशको ११से गुणाकर ३० से भाग लिया लब्धि छोडदेना शेषमें १ जोडके वर्त्तमान अंशेश होता है १२से अधिक रहे तो १२से शेष कर देना यह श्लोकार्थ है. प्रकट यह है

कि षष्ठांशको ३० अंशसे गुनकर ६ से भाग लिया लब्धि ५ एक भाग भया. विषम राशि हो तो मेषसे गिनना, सम राशि होतो तुलासे गिनना. जैसे-विषम राशिमें ५ अंशपर्यंत मेषके स्वामी मंगलका ५ से १० लौं वृषेश शुक्रका इत्यादि. समराशिमें ५ अंशलौं तुलेश शुक्रका ५ से १० लौं वृश्चिकके मंगलका इसी प्रकार सब राशियोंके षष्ठांशेश जानना सातवां सप्तमांश ३० अंशमें ७ से भाग देके ४ । १७।८।३४ यह अंशादि सप्तमांश हुआ. विषम राशि हो तो अपनी राशिसे गिनना सम-राशि हो तो उससे सातवीं राशिसे गिनना जैसे—विषमराशिमें ४।१७। ८ । ३४ अंशादि पर्यंत उसी राशिके स्वामीका ८।३४।१७।८ अंशादि हो तो उससे दूसरी राशिके स्वामीका और सम राशि हो तो ४ ।१७।८। ३४ अंशादि पर्यंत उस राशिसे सप्तमराशिके स्वामीका इससे ८।३४।१७। ८ पर्यंत. इससे दूसरी अर्थात् स्पष्ट राशिसे अष्टम राशिके स्वामीका सप्तमांश होता है. ऐसेही सभीको जानना । आठवां अष्टमांश ३० अंशमें ८ से भाग लेकर ३ अंश ४५ कला होती हैं चर राशिमें मेषसे गिनना. स्थिरमें धनसे और द्विस्वभावमें सिंहसे. जैसे—चर राशि १।४।७।१०में ३।४५ अंशपर्यंत मेषका ७।३० लौं वृषका और स्थिरमें ३।४५ लौं धनका७।३० लौं मकरका और द्विस्वभावमें ३।४५ लौं सिंहका७।३०लौं कन्याका इत्यादि सभी अष्टमांश जानना. नववें नवमांश ३० अंशमें९से भाग लेकर ३ अंश २० कला हुई; मेष, सिंह, धनका मेषसे, वृष, कन्या मकरका मकरसे, मिथुन, तुला कुंभका तुलासे, कर्क, वृश्चिक, मीनका कर्कसे, अर्थात् त्रिकोण राशि विभागमें प्रथम चरसंज्ञकसे गिनना जैसे-मेष सिंह धनके ३।२० ला मेषका६।४०लौं वृषका और वृष कन्या मकरके ३।२०लौं मकरका,६ ४० लौं कुंभका नवमांश होता है. ऐसे ही सब राशियोंके नवमांश जानना. दशवां दशमांश ३० में १० का भाग देनेसे ३ अंश दशमांश हुआ. मेष और तुलाका मेषसे, वृष वृश्चिकका कुंभसे, मिथुन धनका तुलासे, कर्क मकरका सिंहसे' सिंह कुंभका कुंभसे, कन्या मीनका मिथुनसे गिनना. जैसे—मेष और

तुलाके ३ अंश लौं मेषका, ६ लौं वृषका, वृश्चिकके ३ लौं कुंभका, ६लौं मीनका इत्यादि जानना. ग्यारहवां एकादशांश ३० अंशमें ११ से भाग लेकर २ अंश ४३ कला३८विकला होती हैं, गणना सब राशियोंमें प्रथम मेषका,दूसरा मीनका,तीसरा धनका,चौथा मकरका पांचवां मिथुनका,छठा वृश्चिकका,सातवां तुलाका,आठवां कन्याका, नववां सिंहका, दशवां कर्कका, ग्यारहवाँ वृषका एकादशांश होता है. बारहवां द्वादशांश ३० अंशमें १२ से भाग देनेसे २ अंश ३० कला हो,जिस राशिका द्वादशांश करना हो प्रथम उसीसे गिनकर बारह राशिपर्यंत अढाई अढाई अंश प्रत्येक राशिस्वामीका द्वादशांश होता है.कोई कोई अंश गणनाके मूलवाक्य स्पष्टतर हैं,यहाँ आचार्योंने ग्रंथभूयस्त्वके कारण न लिखे ग्रंथांतरोंमें ये है,-(भौमशुक्रज्ञचंद्रार्कबुधशुक्रारमंत्रिणः। सौरी शनिस्तथा जीवो मेषादीनामधीश्वराः ॥ १ ॥ लग्नार्द्धं जायते होरा सर्वलग्नेषु सर्वदा ॥ ओजराशिभवार्केन्द्वोः समे चंद्रार्कजा मताः ॥ २ ॥ मेषादिसर्वराशीनां त्रिभागेषु यथाक्रमम् । आद्यं पंचनवेशानां द्रेष्काणा भणिता बुधैः ॥ ३॥ एकद्वित्रिचतुर्थेषु लग्नपादिषु च क्रमात् ॥ स्वस्वराश्यादिकेन्द्रेशाः पादांशनायका मताः ॥४॥ कुजार्कीज्यबुधाः शुक्रः पंचमांशेषु नायका ॥ ओजराशिषु युग्मेषु ग्रहा व्यत्ययतः स्मृताः ॥ ५ ॥ मेषाद्या विषमे राशौ समराशौ तुलादिकाः ॥विज्ञेया विबुधैरेवं राशिषष्ठांशनायकाः ॥६॥ ओजराशौ स्वराश्याद्याः सप्तमसप्तमराशितः ॥ सप्तांशनायकाः सर्वे विज्ञेया विबुधैः स्फुटाः॥७॥मेषाद्याश्चरराशीनां चापाद्याः स्थिरराशिषु ॥ द्विस्वभावेषु सिंहाद्या ज्ञेयाश्चाष्टांशनायकाः॥८॥मेषमृगतुलाकर्कमुखाः स्युर्नवमांशकाः॥मेषकेसारिधन्वादिराशिचक्रे व्यवस्थिताः ॥९॥ अजकुंभधनुस्तौलिसिंहयुग्मक्रमेण तु ॥ दशांशभावका लग्ने ग्रहानेवं विदुर्बुधाः॥१०॥मेषमीनघटा नक्रचापालितुलकन्यकाः॥सिंहकर्कटका मोक्षादिकारुद्रांशनायकाः ॥ ११ ॥ स्वस्वराश्यादिका ज्ञेया द्वादशांशकनायकाः॥ एवं लग्नेऽत्र विज्ञेया बुधैर्द्वादशवार्षिकाः ॥ १२ ॥ 'ये वामनोक्त श्लोक हैं.)' प्रयोजन इनका पूर्व लिखा गया है इस प्रकार द्वादशवर्गी जानना ॥ ४४ ॥

अनु०--एवं द्वादशवर्गी स्याद्ग्रहाणां बलसिद्धये ॥
स्वोच्चमित्रशुभाः श्रेष्ठा नीचारिक्रूरतोऽशुभाः ॥ ४५ ॥

इस प्रकार ग्रहोंके बल साधनके लिये द्वादशवर्गी है शुभग्रह और अपने उच्चगत ग्रह मित्र राशिस्थ ग्रह शुभ होता है, पापग्रह और नीचराशिगत ग्रह अशुभ होता है. उच्च वा मित्र क्षेत्रगत ग्रह पाप भी शुभपंक्तिमें और नीच राशिगत शुभ भी पापपंक्तिमें गिना जाता है. शुभपंक्ति अधिक होनेमें शुभ, अशुभ पंक्ति आधिक होनेमें अशुभ द्वादशवर्गी कहाती है.ऐसे ही फल भी जानना ॥ ४५ ॥

उपजा०--एवं ग्रहाणां शुभपापवर्गपंक्तिद्वयं वीक्ष्य शुभाधिकत्वे॥
दशाफलं भावफलं च वाच्यं शुभं त्वनिष्टं त्वशुभाधिकत्वे॥४६॥

इस प्रकार ग्रह होरादि द्वादश वर्ग स्थापन करके शुभ पंक्ति जुदी पाप पंक्ति जुदी स्थापन करनी;शुभपंक्ति अधिक हो तो वह ग्रह दशाफल और भाव फल शुभ देगा,पापपंक्ति अधिक हो तो अनिष्ट फल देगा यही विचार द्वादशवर्गोंमें है ॥ ४६ ॥

उपजा०--क्रूरोऽपि सौम्याधिकवर्गशाली शुभोऽतिसौम्यःशुभखेच-
रश्चेत्।सौम्योऽपि पापाधिकवर्गयोगान्नेष्टोऽतिनिंद्यःखलुपापखेटः४७

शुभग्रह शुभ वर्गाधिक हो तो अति शुभ होता है.पापवर्गाधिक होनेसे सौम्यभी निंद्य होता है.ऐसे ही पापग्रह शुभ वर्गाधिक होनेसे शुभ और पाप वर्गाधिक होनेसे अति निंद्य होता है.द्वादशवर्गमें भी यही विचार मुख्य है४७॥

उपजा०-राशीशमित्रोच्चरिपुक्रमेण चिंत्यस्तनोस्तच्च तथैव युक्त्या॥
भावेषु सर्वेष्वपि वर्गचक्रं विलोक्य तत्तत्फलमूहनीयम् ॥ ४८ ॥

ग्रहोंकी द्वादशवर्गी २ पंक्ति करके भावोंके साथ उनका सम्बंध देखना चाहिये. जैसे–लग्नेश शुभग्रह शुभ राशिमें मित्रराशि वा उच्चराशिमें स्थित हो तो लग्न शुभवर्गाधिक भया. इससे लग्नसम्बन्धी सभी शुभ फल होंगे,जो लग्न पापाधिकवर्ग हो और उसका स्वामी पाप या पापराशिगत वा शत्रु राशि वा नीचराशिमें हो तो लग्नसम्बन्धी अनिष्ट फल अधिक होगा

जहां एक प्रकार शुभ एक प्रकार अशुभ होंगे; जैसे—लग्नेश शुभ शुभराशिमें नीच वा शत्रुराशिस्थ हो अथवा लग्नेश पाप मित्रोच्च राशिस्थित हो तो मिश्र फल कहना. ऐसे ही द्वितीय तृतीय भावादिकोंसे भावबंसंधी फल विचारना. किस भावमें कौन २ विचार चाहिये यह आगे कहते हैं ॥ ४८ ॥

अनु०–शरीरवर्णचिह्नायुर्वयोमानं सुखासुखम् ॥
जातिः शीलं च मतिमाँल्लग्नात्सर्वं विचिंतयेत् ॥ ४९ ॥

तनु १ धन २ सहज ३ सुहृत् ४ सुत ५ रिपु ६ जाया ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ ये द्वादश भावोंके नाम हैं. लग्नमें शरीरका शुभाशुभ कृशता वा पुष्टता वर्ण रक्तश्वेतादि (रंग) मशक तिलादि चिह्न आयु बाल यौवनादि अवस्था लघुदीर्घादि मान बल (पराक्रम) सुख दुःख, ब्राह्मणादि जाति और आचरण इतने विचार करना यहां लक्षणमात्र कहा है. बुद्धिसे विशेष इन्हींमें जानलेना ॥ ४९ ॥

अनु०–सुवर्णरौप्यरत्नानि धातुर्द्रव्यं सखा धने ॥
विक्रमे भ्रातृभृत्याध्वपित्र्यस्खलितसाहसम् ॥ ५० ॥

सुवर्ण, चांदी, रत्नजात, लोहा, शीशकादि धातु, धनादि और मित्र उपलक्षणसे वस्त्र, मोती, पशु, आदि धनसंज्ञक वस्तु इतनोंका विचार धनभावसे करना और भाई, भगिनी, नोकर, मार्ग, पैत्रिक कर्मकी हानि, साहस, उपलक्षणसे व्यापार पराक्रम, उद्यमादि इतनोंका विचार सहजभावसे करना ॥ ५० ॥

अनु०–पितृवित्तं निधिं क्षेत्रं गृहं भूमिं च तुर्यतः ॥
पुत्र मंत्रधनोपायगर्भविद्यात्मजेक्षणम् ॥ ५१ ॥

पितृसंबंधी वित्त शेवधी (हंडेडा) खेती आदि भूमि कर्म, घर उपलक्षणसे जलज कर्म भूमिशोधनादि, पाताल कर्म, माता, सौख्य, मित्र, बांधव, वाहन (यानादि) चतुर्थभावसे विचारना और पुत्र मंत्र धन उपाय गर्भस्थिति विद्या संतान वृद्धिसंबंध उदरकर्म विनयादि पंचमभावसे विचारना. यह पुत्र आत्मज जो वाक्य एकही अर्थके लिखे इसका हेतु यह है कि दत्तकादि बारह प्रकारके पुत्र होते हैं आत्मज औरसही होता है ॥ ५१ ॥

अनु०—रिपौ मातुलमांद्यारिचतुष्पाद्वंधभीर्व्रणान् ॥
द्यूने कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा ॥ ५२ ॥

छठे भावमें मातुल (माताके भाई,) रोग, शत्रु, चौपाया, पराश्रय, भय, (व्रण) विस्फोटकादिसे घावका दाग और सप्तम भावमें स्त्री व्यापार (नष्टता) कुछ वस्तु खोये जानेका विषय, विस्मरण, भूलका विचार करना. लग्नमें शरीरके तुल्य सप्तममें स्त्रीके शरीरका विचार है ऐसेही चतुर्थसे मातृ-शरीर, दशमसे पिता, पंचमसे पुत्रका इत्यादि जानना ॥ ५२ ॥

अनु०—हृताध्वकलिमार्गादि चिंत्यं द्यूने ग्रहोऽशुभः ॥
मृत्यौ चिरंतनं द्रव्यं मृतवित्तं रणो रिपुः ॥
दुर्गस्थानं मृतिर्नष्टं परीवारो मनोव्यथा ॥ ५३ ॥

सप्तमस्थानमें और भी विचार विशेष है कि चोरीकी वस्तु, कलह, मार्ग-काभी विचार इस भावसे होता है और ७ में सभी ग्रह अशुभ हैं अष्टमभावमें पूर्वसंचित द्रव्य, आयु, धन, ऋण, संग्राम, शत्रु, कोट दुर्गादि (कठिन स्थान) मृत्यु द्रव्यादि नष्ट, मानसी व्यथा इतना विचार है ॥ ५३ ॥

अनुष्टु०—धर्मे रतिस्तथापन्थाधर्मोपायं च चिंतयेत् ॥
व्योम्नि मुद्रां परं पुण्यं राज्यं वृद्धिं च पैतृकम् ॥५४॥

नवम भावमें धर्मकार्यमें प्रीति अप्रीति मार्ग पुण्य पाप भाग्य ऐश्वर्यका विचार और दशम स्थानमें मुद्रा (मोहर) पुण्यकर्म, राज्यवृद्धि, पितृ-द्रव्य और पितृशरीर इतने विचार करने ॥ ५४ ॥

अनु०—आये सर्वार्थधान्यार्घकन्यामित्रचतुष्पदाः ॥ ५५ ॥
राज्ञो वित्तं परीवारलाभोपायांश्च भूरिशः ॥
व्यये वैरिनिरोधार्तिव्ययादि परिचिंतयेत् ॥ ५६ ॥

गुप्त प्रगट धन, सुवर्ण, मणि, मुक्तादिकोंका लाभ, चतुष्पद राजद्रव्य, मित्र परिवार, कन्या, भूषण, वस्त्रादि अनेक वस्तुओंका लाभ, हानि ग्यार-हवें भावसे विचारना. बारहवें भावमें शत्रुका निरोध, पीडा, धनव्यय, नेत्र कर्ण रोगादि और नीचकर्म इत्यादि विचार करना ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

अनु०--लग्नांबुद्यूनकर्माणि केंद्रमुक्तं च कंटकम् ॥
चतुष्टयं चात्र खेटो बली लग्ने विशेषतः ॥ ५७ ॥

लग्न १ चतुर्थ४ दशम १० । ७ इन भावोंकी संज्ञा केंद्रकंटक और चतुष्टय है चकारसे अनुक्त यह भी भास होता है, कि, कद्रोंसे द्वितीयस्थान२। ५।८।११ पणफर और इनसे भी दूसरे ३।६।९।१२ ये आपोक्लिम कहाते हैं केंद्रमें जो ग्रह है वह बली होता है केंद्रोंमें भी लग्नका विशेष बलवान् होता है जन्म वर्ष प्रश्न मुहूर्त्तादिकोंमें ऐसे ही सर्वत्र विचार करना चाहिये ॥ ५७॥

अनु०--लग्नकर्मास्ततुर्यायसुतांकस्थो बली ग्रहः ॥
यथादिमं विशेषेण सत्रिवित्तेषु चंद्रमाः ॥ ५८ ॥

बलवान् ग्रह लग्न १ कर्म १० अस्त ७ तुर्य ४ आय ११ सुत ५ अंक ९ इन स्थानमें अधिक बली होकर शुभफल अधिक देता है इसमें भी विशेष यह है कि, नवमकी अपेक्षा पंचम इससे ग्यारहवाँ ग्यारहवेंसे चतुर्थ चतुर्थसे सप्तम सप्तमसे दशम दशमसे लग्नका क्रमसे अधिक बली होता है यह नैसर्गिक बल है चन्द्रमा नववें द्वितीय भावोंमें भी पूर्वोक्तभावोंमें तुल्य बली होता है इसमें भी द्वितीयसे नवम विशेष है ॥ ५८ ॥

अनु०--कुजः सत्रिषु पृच्छायां सूतौ चान्यत्र चिंतयेत् ॥
भावा नवेत्थं शस्ताः स्युः स्वामिसौम्यैर्युतेक्षिताः ॥५९॥

पूर्वोक्तभावोंसे विशेष मंगल नवम भावमें भी बलाधिक होता है यह विचार प्रश्न जन्म और वर्षमुहूर्त्तादिकोंमें सवत्र करना ये भाव शुभ हैं इनमें ग्रह बली होकर शुभ फल अधिक देता है. और अपने स्वामी व शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट जो भाव है वह अपने संबंधी फलको अच्छा देता है. स्वामी और शुभ ग्रह युक्त वा दृष्ट न हो तो अपना (फल) मध्यम न अतिशुभ न अति नेष्ट देता है जब पापग्रह और स्वामीके शत्रु ग्रहसे भावयुक्त वा दृष्ट हो तो अपने फ-

लोंको (अनिष्ट) बुरा करदेता है, जब स्वामीसे अन्य ग्रह कुछ शुभ और कुछ अशुभ हो तो मिश्र फल देता है जब भले या बुरे किसी ग्रहसे युक्त वा दृष्ट न हो मध्यम फल देता है ॥ ५९ ॥

अनु०--दीप्तांशातिक्रमेशस्ताइमेऽपीति विचिन्तयेत् ॥ ६० ॥

पूर्वोक्त स्वामी शुभग्रह योगदृष्टिमें बुध बृहस्पतिके योगदृष्टिमें चन्द्रमा शुक्रकी अपेक्षासे विशेष शुभ होता है. रिष्फ१२अष्ट ८ रिपु ६ ये स्थान नेष्ट हैं इनको त्रिक भी कहते हैं इसमें ग्रहबल हीन होकर अशुभ फल विशेष देता है इनमें ग्रह अपने दीप्तांशोंके भीतर उक्त फल देता है जब दीप्तांशसे अधिक अंशपर पहुँच जाय तो अशुभ फल नहीं देता दीप्तांश सूर्यके १५ चन्द्रमाके १२ मंगलके ८ बुधके ७ बृहस्पतिके ९ शुक्रके ७ शनिके ९ इस प्रकार सर्वत्र भाव तथा ग्रहका प्रीति विचारनी ॥ ६० ॥

उपजाति--त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा दिनेनिशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ॥ मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्वर्किकुजज्यचंद्राः ॥ ६१ ॥

अब त्रिराशीश कहते हैं, मेषसे कर्कलौं सिंहसे वृश्चिकलौं धनसे मीन पर्यंत राशिचक्रके ३ भाग हुए इससे त्रिराशीश नाम हुआ इनके स्वामी ऐसे हैं कि दिनके वर्षप्रवेशमें मेषका सूर्य, वृषका शुक्र, मिथुनका शनि, कर्कका शुक्र और रात्रिवर्षप्रवेशमें मेषका बृहस्पति, वृषका चन्द्रमा, मिथुनका बुध, कर्कका मंगल अब सिंहसे विपरीत अर्थात् मेषादिकोंके जो दिनके वे सिंहादिकोंके रात्रिके और रात्रिवाले दिनके जैसे दिनके सिंहका गुरु, कन्याका चंद्रमा, तुलाका बुध, वृश्चिकका मंगल, उपरांत धनका शनि, मकरका मंगल, कुंभका बृहस्पति, मीनका चंद्रमा ये दिन रात्रिके वही स्वामी हैं जिसका विस्तार चक्रमें भी लिखा है ॥ ६१ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि.
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	भौ	श	कु.	बृ	चं	दिनमें.
बृ	चं	बु	भौ	सू	शु	श	शु	श	भौ	गु	चं	रात्रिमें.

अनु०–वर्षेशार्थं दिननिशाविभागोक्तास्त्रिराशिपाः ॥
पंचवर्गीबलाद्यर्थं द्रेष्काणेशान्विचिंतयेत् ॥ ६२ ॥

एक तो त्रिराशीश, द्रेष्काणको कहते हैं. दूसरे मेषादि दिनरात्रिविभागकोभी त्रिराशीश कहते हैं। इस में कौनसा लेना इस लिये यह श्लोक है कि, दिनरात्रि विभागका त्रिराशीश तो वर्षेश निर्णयको लेना, क्योंकि पंचवर्गीमें अधिकबली वर्षेश होता है, परंतु पंचाधिकारियोंमें नहीं होगा तो वर्षेश नहीं होता. पंचाधिकारी जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश मुन्थेश त्रिराशीश दिनमें सूर्य राशिपति रात्रिवर्ष प्रवेशमें चंद्रमाके राशीश ये ५ होते हैं, इन्हींके बीचका कोई जिसकी लग्नपर दृष्टि अधिक होवे वह वर्षेश होताहै, पंचवर्गी वर्गमें बली हो तो विशेष है हीनबली मध्यबली हो तोभी पंचाधिकारियोंमेंसे लग्नपर दृष्टिवाला वर्षेश होता है. कहीं चंद्रमा वर्षेश नहीं होता है ऐसाभी लिखा है जहां सर्वथा चंद्रमाहीकी प्राप्ति वर्षेश होनेकी हो तो कैसे करना. इसकी व्यवस्था ऐसी है कि चंद्रमा जिसके साथ इत्थशाल करता हो वह वर्षेश होगा फल चद्रमाके तुल्य देगा. स्वयं वर्षेश तोभी नहीं होता. दूसरे त्रिराशीश द्रेष्काणकोभी कहते हैं वह पंचवर्गीबलमें लेना यहां पंचाधिकारियोंमें त्रिराशीश इत्यादि यही लेना ॥ ६२ ॥

शार्दूलविक्रीडित–श्रीगर्गान्वयभूषणं गणितविच्चिंतामणिस्त-
त्सुतोऽनंतोऽनंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् ॥
तत्सूनुः खलु नीलकंठविबुधो विद्वच्छिवानुज्ञया संतुष्ट्यै
व्यदधाद्ग्रहप्रकरणं संज्ञाविवेकेऽमलम् ॥ ६३ ॥

ग्रंथकर्त्ता अध्यायके स्थानमें अपने नामादि श्लोकसे प्रकाश करताहै कि श्रीशोभा विद्याविलासयुक्त गर्गाचार्यके वंशका भूषण स्वरूप और गणितशा-

वज्ञ चिंतामणि नाम आचार्यका पुत्र, अनंत नामा दैवज्ञ जिसकी ज्योतिष शास्त्रमें अनंतबुद्धि थी और जिसने जनुःपद्धति (जातक ग्रंथ) दुष्टजनोंके मत काटने निमित्त रचे. इनका पुत्र नीलकंठ नामा पंडित महाभाष्यादि शास्त्र-पारंगमने वेदशास्त्र और श्रौतस्मार्त्तकर्मानुष्ठान शील दाक्षिणात्य शिव-नामा ब्राह्मणके आज्ञानुसार समरसिंहोक्त ताजिक शास्त्रके आर्य्याछंदोंको दुर्योजक समझकर इंद्रवंशा प्रभृति अनेक छंदोंमें और ताजिक ग्रंथोंका प्रकारसहित, इस संज्ञाप्रकरणमें ग्रह प्रकरण बारह भाव पंचवर्गी द्वादश-वर्गी प्रभृति सविस्तर कहे हैं ॥ ६३ ॥

इति महीधरकृतायां ताजिकनीलकण्ठीभाषायां राशिस्वभावनिर्माण-पंचवर्गीभावकृत्यप्रकरणग्रहाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

उपजाति–सूर्योनृपोनाचतुरस्रमध्यंदिनेन्द्रदिक् स्वर्णचतुष्पदोग्रः ॥ सत्त्वं स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिश्च पित्तंजरन्पाटलमूलवन्यः ॥ १ ॥

अब ग्रहस्वरूप प्रकरणमें प्रथम सूर्यका स्वरूप कहते हैं कि जातिमें राजा (क्षत्रिय) पुरुष, चतुरस्र, मध्याह्नबली, पूर्वदिशाका स्वामी, सुवर्ण धातु स्वामी, अश्वादि चतुष्पदोंका स्वामी, पाप (क्रूर) सत्त्वप्रधान, सद्गुण वान् स्थिर प्रकृति तिक्त (तीता) रसको प्रिय माननेवाला पशु भूमिचारी पित्तप्रकृति, वृद्धावस्था, श्वेतरक्तवर्ण, मूलवस्तु, वनचारी ॥ १ ॥

उपजातिच्छन्दः–वैश्यः शशी स्त्रीजलभूस्तपस्वी गौरोऽपराह्णा-म्बुगधातुसत्त्वम् ॥ वायव्यदिक्श्लेष्मभुजंगरूप्यस्थूलो युवा क्षारशुभः सिताभः ॥ २ ॥

चंद्रमाका स्वरूप, वैश्यजाति वणिग्वृत्ति स्त्रीग्रह, जल भूमिचारी, तप कर-नेवाला, उज्ज्वल वर्ण (गौररंग) अपराह्णबली, जलचारी, गैरिकादि धातु-स्वामी सत्त्वप्रधान. वायव्यादिशाका स्वामी, श्लेष्म (कफप्रधान) भुजंग (सर्पों) का स्वामी, रौप्य द्रव्यका पति, स्थूल तरुणावस्था, लवणादिक्षार रसप्रधान, सौम्यग्रह, शुभवर्ण इतने रूपादि चंद्रमाके हैं ॥ २ ॥

उप०--भौमस्तमः पित्तयुवोग्रवन्योमध्याह्नधातुर्यमदिक्चतुष्पात् ॥
नाराट्चतुष्कोणसुवर्णकारोदग्धावनीव्यंगकटुश्च रक्तः ॥ ३ ॥

मंगल तमोगुणी, पित्त प्रकृति, युवावस्था, उग्र, पापग्रह, वनचारी, मध्याह्नबली. धातु प्रधान, दक्षिण दिशाका स्वामी, चौपाया, पुरुष ग्रह, राजा यद्वा क्षत्रियजाति, चौकोण रूप, स्वर्णकारादियोंका स्वामी, दग्ध-भूमिचारी, अंगहीन, कडवारसप्रिय, ताम्रादिद्रव्यका स्वामी इतने रूपादि मंगलके हैं ॥ ३ ॥

उप०--ग्राम्यःशुभोनीलसुवर्णवृक्षःशिश्विष्टकोच्चःसमधातुजीवः ॥
श्मशानयोषोत्तरदिक्प्रभातं शूद्रः खगः सर्वरसो रजोज्ञः ॥ ४ ॥

बुध ग्राम्य सौम्यग्रह नीलरंग सुवर्णधातुका स्वामी, (वर्तुल) वृत्ताकार बाल्यावस्था ईटोंसे ऊंची भूमिका चारी, सम धातुजीव वात पित्त कफ तीनों बराबर जीवरक्षा करनेवाला श्मशानवासी स्त्रीग्रह उत्तरदिशाका स्वामी प्रातःकालबली शूद्रवर्ण पक्षिजाति कटुकादि सर्व रसप्रधान रजोगुणी है ॥ ४ ॥

उप०--गुरुः प्रभाते नृशुभेशदिग्द्विजःपीतो द्विपाद्ग्राम्यसुवृत्तजीवः ॥
वाणिज्यमाधुर्यसुरालयेशो वृद्धः सुरत्नं समधातुसत्त्वम् ॥ ५ ॥

बृहस्पति प्रातःकाल बली, पुरुष, सौम्यग्रह, ईशान दिशाका स्वामी, ब्राह्मणवर्ण, पीतरंग, दोपैया, ग्रामांतरचारी, सुवृत्ताकृति, जीवप्रधान, वाणि-ज्यका स्वामी, मधुर, रसप्रिय, देवतालय स्वामी, वृद्धावस्था, पुष्परागादि सुरत्न स्वामी, समधातु (वातपित्तकफात्मक) सत्त्वगुण प्रधान है ॥ ५ ॥

उप०-शुक्रः शुभः स्त्रीजलगोऽपराह्णः श्वेतःकफी रूप्यरजोम्लमूलम्॥
विप्रोऽग्निदिङ्मध्यवयोरतीशोजलावनिः स्निग्धरुचिर्द्विपाच्च ॥६॥

शुक्र सौम्यग्रह स्त्री जलचारी अपराह्णबली श्वेतवर्ण कफप्रकृति रूपा धातु रजोगुणी खट्टा रसप्रिय. मूल वस्तुस्वामी ब्राह्मण वर्ण आग्नेय दिशाका

स्वामी, युवावस्था, रति क्रीडारसप्रिय, जलमयभूमिवासी, कोमल वपु द्विपाद मनुष्यजाति है ॥ ६ ॥

उपजाति–शनिर्विहंगोऽनिलवन्यसंध्या शूद्रांगनाधातुसमःस्थिरश्च॥ क्रूरः प्रतीचीतुवरोऽतिवृद्धोत्करक्षितीड् दीर्घसुनीललोहम् ॥ ७ ॥

शनि पक्षिजाति, वायु प्रकृति, वनवासी, सन्ध्याबली, शूद्रजाति, स्त्रीग्रह समधातु, स्थिर, क्रूर, पश्चिम दिशाका स्वामी; कषाय (क्वाथ कांजिक आदि)रसप्रिय, अतिवृद्धावस्था उत्कर भूमिका स्वामी, दीर्घाकृति सुन्दरनीलवर्ण लोहधातु, ऐसा रूप शनिका है ॥ ७ ॥

उपजाति–राहुस्वरूपंशनिवन्निषादजातिर्भुजंगोऽस्थिपनैर्ऋतीशः॥ केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात्फलमित्थमूह्यम् ॥ ८ ॥

राहुका स्वरूप शनिके तुल्य है. परन्तु निषाद जाति, सर्पाकार, मृत हड्डियोंका स्वामी. नैर्ऋत्यादिशाका स्वामी इतना विशेष है, और केतुका रूप शनि यद्वा राहुके तुल्य है. परन्तु शिखावान् और तुल्य बहुस्वरूपवाला है इतना विशेष है, ग्रहस्वरूपका प्रयोजन जैसे राशि स्वरूपादि बतलानेमें ब्राह्मणादि जाति, बाल्यादि अवस्था, ग्रामारण्यादि स्थानज्ञान, वाय्वादि प्रकृति, चतुरस्रादि आकृति पाटलादि वर्ण विचार कहते हैं अथवा कैसा शत्रू वा मित्र मिलेगा इत्यादि प्रश्नमेंभी यही विचार कहते हैं बलवान् ग्रहके सदृश मूर्ति और ताम्रादि धातु जन्म वर्ष यात्राप्रश्नआदिमें कहते हैं ॥८॥

वर्षलेखनक्रम, शक मास तिथ्यादिके उपरांत ग्रहतात्कालस्पष्ट, भावस्पष्ट ग्रहकुंडली, तदनंतर मुन्था कुंडली, नवांश अर्थात् मुशल्लह द्रेष्काण अर्थात् द्रिकाण हद्दा और जन्मकुंडी स्थापन करके, पंचवर्गी द्वादवर्गी चक्र स्थापन करना, तदनंतर पंचाधिकारी और षोडश योग विचारार्थ स्पष्ट दृष्टिचक्र स्थापन करना, उपरान्त सहम और दशा अन्तर दशाका न्यास होता है, यह सूक्ष्म न्यास है, विशेष वर्षपत्रमें बहुत प्रकार चक्र और दशा लिखी जाती हैं.

अथ ग्रहाणां वर्णादिचक्रम् ।

ग्रह	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद
पुस्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	पुरुष	पुरुष
आकार	चतुरस्र	वर्तुल स्थूल	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
समय	मध्याह्न	अपराह्ण	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्ण	अपराह्ण	अपराह्ण	अपराह्ण
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य
धातु	सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्यादि मि. धा.	हीरसुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह
पाद	चतुष्पाद	बहुपाद	चतुष्पाद	द्विपाद	द्विपाद	द्विपाद	भुजंग अपाद	अपाद	अपाद
सौम्यादि	उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
गुण	सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम
चरादि	स्थिर	चर	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	पक्षी स्थिर	चर	पक्षी
रस	तिक्त	क्षार	कटुक	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय क्वाथ	कषाय	कषाय
भूमि	पशुप्राय	जलभू	दग्ध	श्मशान	वांण. सुराल.	जलभू	उत्कर	ऊषर	ऊषर
पित्तादि धातु	पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधा.	समधा.	कफ शुक्र	वायु	वायु अस्थिप	वायु
अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अति वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
वर्ण	पाटल	गौर श्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	नील	धूम्र
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर

शार्दूलवि० दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा
पादोनाऽखिलकार्यसाधनकरी मेलापकाख्योच्यते ॥
गुप्तस्नेहकरी तृतीयभवभे कार्यस्य संसिद्धिदा
त्र्यंशोना कथिता तृतीयभवने,षड्भागदृष्टिर्भवे ॥ ९ ॥

अब दृष्टिका विचार कहते हैं. कि ग्रह अपनी आक्रांत राशिसे नवम और पंचमस्थ ग्रह अथवा भावको पादोन ४५ । ० दृष्टिसे देखता है, यह बलवान् दृष्टि है. मेलापका इसका नाम है परस्पर प्रीति देती है. मित्रस्वजनादियोंका सुख और धनसंपत्ति देती है. यह प्रत्यक्ष स्नेहदृष्टि हुई संपूर्ण कार्य यह भावजन्य साधन करती है । द्वितीय स्वकीय स्थानसे तृतीय ३ स्थानमें और ११ एकादशस्थानमें क्रमसे तृतीयांशान ४० । ० तथा षड्भाग १० । ० दृष्टि होती है इसका नाम गुप्तस्नेहा. और सर्वत्र कार्यसिद्धि देनेवाली दृष्टि होती है ॥ ये दोनोंहू ३ । ११ दृष्टि स्नेह बढानेवाली पुत्रसुख और आयु धनको बढाती है ॥ ९ ॥

शार्दूल-दृष्टिः पादमिता चतुर्थदशमे गुप्तारिभावा स्मृताऽन्योन्यं सप्तमभे तथैकभवने प्रत्यक्षवैराखिला ॥ दुष्टं दृक्त्रितयं क्षुताह्वयमिदं कार्यस्य विध्वंसकृत्संग्रामादिकलिप्रदं दृशइमाः स्युर्द्वादशांशांतरे १०

यह अपनी आक्रांत राशिसे चतुर्थ ४ दशम १० स्थानमें चतुर्थांश १५ कलादृष्टि देखता है. इसका नाम गुप्तारि दृष्टि है, और परस्पर सप्तम ७ भावमें पूर्णदृष्टि ६० कला देखता है, इसका नाम प्रत्यक्षवैरा है. और ऐसेही एक भावस्थ ग्रहोंमेंभी प्रत्यक्षवैरादृष्टि होती है, ये तीनों दृष्टि क्षुत संज्ञक हैं अनिष्टफल देती हैं, कार्यका नाश करनेवाली संग्राम कलह आदि क्लेशफल करती हैं. यह प्रत्यक्षस्नेहा १ गुप्तस्नेहा २ गुप्तवैरा ३ प्रत्यक्षवैरा ४ और एकस्थानस्थिता अत्यंत वैरा ५ पांच प्रकार दृष्टि कही हैं. परंतु बारह अंशके भीतर अर्थात् जो देखनेवाला है उसके स्पष्ट अंशोंसे जिसे देखता है इसके स्पष्ट अंश बारह १२ अंशके भीतर हो तो दृष्टिका उक्तफल पूर्ण देता है. बारह अंशके उपरांत कुछ क्षणमात्र उक्तफलको देता है. पूरा फल नहीं देता है इसका गणित उदाहरणसहित आगे कहते हैं ॥ १० ॥

उपजाति०--अपास्यपश्यन्निजदृश्यखेटादेकादिशेषे ध्रुवलिप्तिकाः स्युः ॥ पूर्णंखवेदाः स्थितयोऽक्षवेदाः खंषष्टिरभ्रंशरवेदसंख्या ॥ ११ ॥ तिथ्यः खचंद्रावियदभ्रतर्काःशेषांकयातैष्यविशेषघातात् ॥ लब्धं खरामैरधिकोनकेष्येस्वर्णंध्रुवेताःस्फुटदृष्टिलिप्ताः ॥ १२ ॥

इन दो श्लोकोंका युग्म होनसे अर्थ दोनोंका इकट्ठ लिखते हैं कि, जो ग्रह देखता है वह द्रष्टा और जिसे देखता है वह दृश्य कहाता है. दृश्य ग्रह राश्यादिमें द्रष्टा ग्रह राश्यादि स्पष्ट घटाय देना. शेष एक आदिक राशिमें शून्यादि कलात्मक दृष्टि ध्रुवक होता है. जैसे एक शेष हो तो दृष्टि ध्रुवक शून्य हुआ दो शेष रहनेमें ४० तीन शेषमें १५ चारमें ४५ पांच शेषमें ० छः में ६० सातमें ० आठमें ४५ नौमें १५ दशमें १० ग्यारहमें ० बारहमें ६० जहां शून्य रहे, जैसे १।५।७।११ में है तो दृष्टि साधन प्रकार ऐसा है कि, दोनो

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
०	४०	१५	४५	०	६०	०	४५	१५	१०	०	६०

स्पष्टोंके अंतरमें शेष अंशादिका शेषांक नाम है तथा प्राप्त ध्रुवक और ध्रुवकको अंतयातैष्य विशेष नामक है शेषांकको यातैष्य विशेषसे गुणना तीससे भाग लेना लब्धि, पूर्वोक्त ध्रुवकोंमें जैसा गत गम्य है आगेका अधिक होतो धन करना आगेका ध्रुवक पूर्व ध्रुवकसे न्यून हो तो ऋण करना. इस प्रकार दृष्टिकला सिद्ध होती है,(उदारण)भौमस्पष्ट४।१३।३७। ९ शुक्र १।२४।५२।४५ इनकी आपसमें चतुर्थ दशम दृष्टि है यहां द्रष्टा शुक्र और दृश्य मंगल है भौमस्पष्टमें शुक्रस्पष्ट घटाया शेष२।१८।४४।२४ राशि शेष रही तो २ का ध्रुवक ४० गत ध्रुवक हुआ. एष्य ध्रुवक ३ के नीचेका १५ है. इनका अंतर २५ शेष अंशादि१८।४४।२४।गुन दिये ४६८।३०।९अंशके स्थानमें विधिसे३०से भाग दिया लब्धि कलादिफल १५।३७।०अग्रिम ध्रुवक अधिक होता तो यह गत ध्रुवकमें जोड देना था. यहां अग्रिम १५ गत ४० से न्यून है तो ४० में लब्धि घटाय दिया शेष २४।२३।० यह कलादि दृष्टि हुई जब मंगलकी दृष्टि शुक्रपर गिननी है तो द्रष्टा मंगल दृश्य शुक्र हुआ पूर्ववत् दृष्टि१३।७।२४होती है ऐसे ही सभीका जानना ॥ ११ ॥ १२ ॥

शार्दूलवि०--पश्यन्मित्रदृशा सुहृद्रिपुदृशा शत्रुःसमास्त्वन्यथा
तिथ्यर्काष्टनगांकशैलखचराः सूर्यादिदीप्तांशकाः ॥
चक्रेवामदृगुच्यते बलवती मध्याद्यथावेश्मनी-
त्येकर्क्षेऽपिदृगुच्यतेऽर्थजननीत्येके विदुः सूरयः ॥ १३ ॥

नवम पंचमकी प्रत्यक्ष स्नेहदृष्टि जो ग्रह देखता है. वह तत्काल अधिमित्र होता है और जो तीसरे ग्यारहवेंमें गुप्त स्नेह दृष्टि देखता है. वह तात्कालमें मित्र है, जो ग्रह चतुर्थ दशमें गुप्त शत्रु दृष्टि देखता है वह तात्कालमें शत्रु होता है और जो १।७ स्थानोंमें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि देखता है वह अधिशत्रु होता है इनसे उपरांत २।६।८।१२ स्थानोंमें दृष्टि तो गणितसे कियद्भागमात्र जैसे कही०।०भी हो जाती हैं, परंतु तत्कालमें पूर्णभाग दृष्टि न होनेसे वह सम कहाता है यह तात्काल मैत्री हुई और नैसर्गिक मैत्री ताजिकांतरोंसे यह है कि, "मित्राण्यारशशांकशक्रसचिवाः सौम्यार्कदेवार्चिता जीवार्कक्षणदाधिपाः शनिसितौ मंदज्ञशुक्रा इमे ॥ सूर्यात्स्यू रिपवश्च ताजिकमते शेषा बुधैश्चोदिताः" इति १ इसका अर्थ चक्रसे समझना ये नियत मित्रशत्रु हैं.

नैसर्गिकमैत्रीचक्र ।

ग्रहाः	सू.	चं	मं	बु.	बृ.	शु	श	रा
मित्राणि	चं मं बृ	बु सू बृ	सू चं बृ	शु श	शु बु श	बु शु	बु शु	बु शु स
शत्रवः	सू बु शु श	मं बु शु श	मं बु शु श	सू चं मं बृ	सू चं मं	सू चं मं बृ	सू चं मं बृ	सू चं मं बृ

प्रयोजन कहते हैं कि जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तत्कालमें भी मित्र है वह अधिमित्र होता है, जो नैसर्गिकमें शत्रु और तत्काल भी शत्रु है वह अधिशत्रु होता है. वह जो एक चक्रमें मित्र दूसरेमें शत्रु है वह सम कहाता है. परंतु यह मत जातकोंका मुख्य है. मित्रामित्रका विचार पूर्वोक्त पंचवर्ग्यादि विचारमें काम आता है. लग्नादि द्वादशभाव चक्रमें वाम दक्षिण दो प्रकार दृष्टि होतीहै. जैसे लग्नसे सप्तमपर्यंत दक्षिण दृष्टि और सप्तमसे लग्नपर्यंत वामदृष्टि होती है. प्रयोजन यह है कि, एकभावस्थदृष्टि निर्बल और वामदृष्टिकी अपेक्षा दक्षिण दृष्टि बलवती

होती है इसमें इनमेंसे दशमस्थ ग्रहपर सप्तमस्थके चतुर्थ होनेसे अतिबलवती दृष्टि होती है और किसी२आचार्योंका मत है कि एक स्थान स्थित ग्रहोंकी परस्पर दृष्टिभी अति बलवती अर्थात् कार्य साधन करनेवाली होती है विशेषतः शुभफल देती है अब दीप्तांश कहते हैं—सूर्यके १५ अंश एवं चन्द्रमाके १२ मंगलके ८ बुधके ७ गुरुके ९ शुक्रके ७ शनिके ९ राहु केतु शनिवत् ९ । ९ दीप्तांश हैं, मतान्तरसे सभी ग्रहोंके दीप्तांश बारह मात्र हैं, दृश्यग्रह द्रष्टाग्रहके दीप्तांशके भीतर होवे तो इत्थशाल तथा सम्बन्ध योगादिफल शुभ वा अशुभ पूरा देता है, दीप्तांशसे ऊपर होजानेमें फल पूरा नहीं देता. यही दीप्तांशोंका तात्पर्य है, आगे षोडश विशेष योगमें काम आवेगा ॥ १३ ॥

अनु०--पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं ग्रहः ॥
दद्यादतिक्रमे तेषां मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥ १४ ॥

इति नीलकंठ्यां ग्रहचारदृष्टिविचाराऽध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

दीप्तांशोंका प्रयोजन विशेष कहते हैं कि जो ग्रह नवम पंचमादि दृष्टि देखता है और जिसे देखता है ये दोनहूं अपने दीप्तांशके भीतर हो तो इत्थशाल और दृष्टि आदिका नियत फल विशेष देते हैं. जो दीप्तांशोंसे अधिक अंशपर द्रष्टा दृश्यग्रह हो तो उक्त फल साधारण देत हैं ॥ १४ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां ग्रहचारदृष्टिविचारो द्वितीयोऽध्यायः।२॥

अथ षोडशयोगाध्यायः ।

उपजाति०—प्रागिक्कवालोऽपरइंदुवारस्तथेत्थशालोऽपरईशराफः ॥
नक्तंततःस्याद्यमयामणूऊकंबूलतोगैरिकंबूलमुक्तम् १॥
इंद्रवज्राछं—खल्लासरं रद्दमथो दुफालिकुत्थं च दुत्थोत्थदिवीरनामा॥
तंवीर कुत्थौ दुरफश्च योगाः स्युः षोडशैषां कथ-
यामि लक्ष्म ॥ २ ॥

अब षोडश योगाध्यायमें प्रथम इनके नाम कहते हैं पहिला इक्कवाल १, दूसरा इंदुवार२एवं इत्थशाल ३ ईशराफ ४ नक्त ५ यमया ६ मणूऊ ७

कबूस्ल ८ गैरिकंबूल ९ खल्लासर १० रद्द ११ दुफालिकुत्थ १२ दुत्थोत्थदिबीर १३ तंबीर १४ कुत्थ १५ दुरफ १६ ये संज्ञा हैं इनके लक्षण आगे कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥

वसन्तति०--चेत्कंटकेपणफरेचखगाःसमस्ताःस्यादिक्कवाल इतिराज्यसुखाप्तिहेतुः ॥ आपोक्लिमे यदि खगाः सकिलेंदुवारो न स्याच्छुभः क्वचन ताजिकशास्त्रगीतः ॥ ३ ॥

जो सभी ग्रह कंटक १।४।७।१० और पणफर २।५।८।११ स्थानोंमें हो अर्थात् आपोक्लिम ३।६।९।१२ में कोई ग्रह न हो तो इस योगका नाम इक्कवाल है, इसका फल राज्य सुख है, वह मनुष्यको कुलानुमान होता है, अथवा जिसके वर्षमें अरिष्ट योग हो, वह अरिष्टही इक्कवाल योगके फलसे भंग होजायगा, दूसरे ये भी ग्रह आपोक्लिम ३।६।९।१२ में हों अर्थात् इक्कवालोक्त कंटक १।४।७।१० पणफर २।५।८।११ में कोई ग्रह न हो तो इस योगका नाम इंदुवार है, इसका फल अनिष्ट है, इन्दुवारनामहीका अर्थ शुभका विपरीत अर्थात् अशुभ है ऐसाही फलभी है, इनका उदाहरण कुण्डलियोंमें लिखा है ॥ ३ ॥

इक्कवालयोग ।



कुंडली.

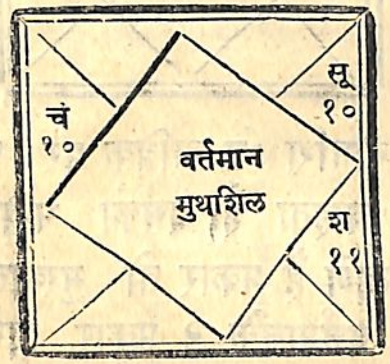
इन्दुवारयोग ।



इं०व०--शीघ्रोऽल्पभागैर्घनभागमंदेऽग्रस्तेनिजंतेजउपाददीत ॥ स्यादित्थशालोऽयमथोविलिप्तालिप्तार्द्धहीनोयदिपूर्णमेतत् ॥ ४ ॥

मंदगतिग्रह बहुत अंश होके आगे बैठा हो और शीघ्र गति अल्पअंशपर हो और दृष्टि दोनोंकी दीप्तांशके भीतर हो तो शीघ्र ग्रह अपना तेज अग्रगत मंदग्रहको दे देता है इसको मुथशिलयोग कहते हैं. यह योग चार प्रकारका

होता है. प्रथम वर्त्तमान मुथशिल १ परिपूर्ण मुथशिल २ राश्यन्त राश्यादि स्थित शीघ्र मंद ग्रहोंसे वर्त्तमान मुथशिल ३ भविष्यन्मुथशील ४ शीघ्र और मंद गति स्पष्टसे जाननी, यहां मंदगतिका प्रयोजन नहीं है. तत्काल स्पष्टकी गतिसे शीघ्र वा मंदग्रह समझना मुथशील नाम इत्थशालका है. यहां प्रथम वर्त्तमान मुथशील योगका उदाहरण कहते हैं, शीघ्रगतिवाला ग्रह मंदगतिवालेसे न्यून अंशपर हो, वस्तुतः शीघ्रके दीप्तांश संख्याके भीतर हो और दोनोंकी परस्पर. नवम पंचमादि उक्त दृष्टि हो तो इसका नाम वर्त्तमान इत्थशाल हुआ फल है कि शीघ्र अर्थात् पृष्ठगत ग्रह अपना तेज (सामर्थ्य) मंद गति ग्रहको दे देता है इसका फल पूर्ण मुथशीलसे न्यून होता है. अब पूर्ण मुथशीलयोगका उदाहरण कहतेहैं. वर्त्तमान इत्थशालकी तरह दृष्टि और शीघ्र और अल्प भाग मंदग्रह बहुत अंश पर हो परंतु शीघ्र ग्रह मंदग्रहके बराबर



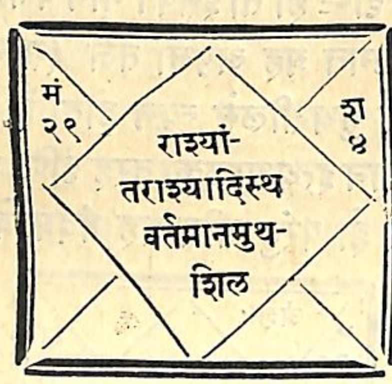


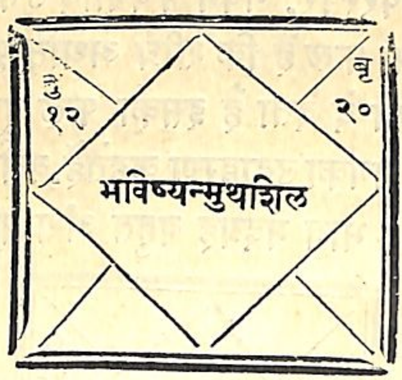
अंशके पर हो केवल कला अथवा विकला मात्र न्यून हो तो इसको पूर्ण इत्थशाल कहते हैं फलभी इसका पूर्ण होता है; ५ में दो प्रकारके हुए ॥४॥

इंद्रवज्रा–शीघ्रोयदाभांत्यलवस्थितःसन्मंदेऽन्यभस्थेनिदधाति तेजः॥स्यादित्थशालोऽयमथैषशीघ्रदीप्तांशकांशैरिहमंदपृष्ठ ॥५॥ तदाभविष्यद्गणनीयमित्थशालं त्रिधैवं मुथशीलमाहुः ॥ लग्नेशकार्याधिपयोर्यथैष योगस्तथा कार्यमुशंति संतः ॥ ६ ॥

शीघ्र ग्रह २९ अंश राश्यंतमें हो अर्थात् जिस जिस राशिसे मंद ग्रहपर पूर्ण दृष्टि होती है उसमें जाता हो और मंदग्रह स्वल्प अंशपर हो जैसे मंगल २९ अंश धनस्थानमें है. तीसरे स्थानमें जाना चाहता है. दूसरा मंदग्रह शनि

ग्यारहवें भावमें ४ अंशपर है यहभी वर्त्तमान मुथशील योग है. राश्यंत राश्यादिस्थ वर्त्तमान. इसे कहते हैं अर्थात् मंगल तीसरे भावमें जानेको तैयार है वहां पहुँचकर शनिसे इत्थशाल करनेवाला है ३ चौथा शीघ्रग्रह मंदग्रहसे न्यून अंशपर और पूर्ण दृष्टि परस्पर हो परंतु शीघ्र ग्रहके उक्त दीप्तांशोंके अंतर्गत मंद न हो किंतु शीघ्र स्वदीप्तांशोंके अंतर मंदग्रहको लेना चाहता हो, जैसे तीसरे भावमें बुध १२ अंशपर और ग्यारहवेंमें





बृहस्पति २० अंशपर है तो बुधके दीप्तांश ७से अधिक पर परंतु बुध बृहस्पतिको स्वदीप्तांशांतर्गत करना चाहता है; इसको भविष्य मुथशील योग कहते हैं ये ४ चार उदारहण हैं प्रकार तो मुख्यतः तीनही हैं वर्त्तमान, पूर्ण और भविष्य, परंतु वर्त्तमानके २ प्रकार होनेसे यहां उदाहरणमें चार भेद करदिये और मुत्थशिल मुथशील मूत्थशिल मूथशील ये चार प्रकारके नाम एक इत्थशालकेही हैं. अब इनके फल कहते हैं कि जिस भावसंबंधी कार्य है उसके स्वामी और लग्नेशका इत्थशाल होनेसे उस कार्यकी सिद्धि होती है कार्य भाइयोंके निमित्त तृतीयश संतानार्थ पंचमेश राज्यार्थ दशमेश और जायार्थ सप्तमेश इत्यादि पूर्वोक्त भाव कर्मोंसे कार्येश जानना जैसे संतान प्रश्नमें लग्नेश पंचमेशका इत्थशाल योग और स्त्री प्रश्नमें लग्नेश सप्तमेशका, एवं राज्यप्रश्नमें लग्नेश दशमेशका योग विचारना. और इन ४ प्रकारके इत्थशालोंमें यह विचारभी मुख्य चाहिये कि ३ । ११ और ५ । ९ भावसंबंधी इत्थशाल तद्भावजन्य शुभफल करते हैं क्योंकि ये मित्रदृष्टिसे हैं और १।७ तथा ४।१० इन भाव

संबंधी इत्थशाल तद्भावोक्त फलको अनिष्ट कर देते हैं. अर्थात् तद्भावोत्थ कार्यको नाश करदेते हैं. यह शत्रुदृष्टिका प्रभाव है यह फलका शुभाशुभ, पूर्व दृष्टि विचार दशवें श्लोकमें कहा है, इत्थशाल कर्त्ता लग्नेश कार्येशके अंशोंका अंतर करके जो शेष रहे उसे बारह १२ से गुनदेना, इतने दिनोंमें उस इत्थशालका फल होगा ऐसे सर्वत्र जानना ॥ ५ ॥ ६ ॥

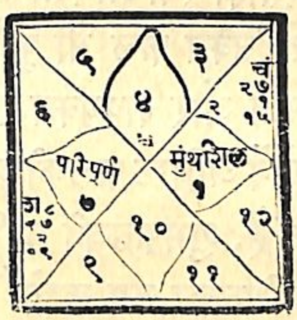
उपजा०--लग्नेशकार्याधिपतत्सहायायत्रस्युरस्मिन्पतिसौम्यदृष्टे ॥ तदाबलाढ्यंकथयंतियोगं विशेषतः स्नेहदृशापिसंतः ॥ ७ ॥

लग्नेश और कार्येशके मित्र ग्रहभी उन्हींके सदृश फल देते हैं परंतु लग्नेशादियुक्त ग्रह जिस भावमें है वह अपने स्वामी और शुभग्रहोंसे दृष्ट हों तो पूर्वोक्त योग बलवान् होता है उक्तग्रह इत्थशालके फलोंका (उत्कृष्ट) विशेष करदेते हैं, पण्डित लोग स्नेहदृष्टिसे फलकी विशेषता कहते हैं, इत्थशाल हुएमें इतना विचार और भी चाहिये कि इत्थशाली मन्दग्रह वक्र हो तो उक्तफल अधिक होगा, यह विचार युक्ति सिद्ध है ॥ ७ ॥

स्त्रीप्राप्तिप्रश्ने.



स्त्रीलाभप्रश्ने.



धनलाभप्रश्ने,



केवलार्थ प्रश्ने.



उपजाति०--स्वर्क्षादिसत्स्थानगतः शुभैश्चेद्युतक्षितोभूद्भविताऽथवास्ते ॥ तदाशुभंप्रागभवत्सुपूर्णमग्रे भविष्यत्यथ वर्त्तते च ॥ ८ ॥

इत्थशाल योग कर्ता लग्नेश और कार्याधीश वा दोनहूं ग्रह उच्च वा मित्र राशि, वा स्वहद्दा, स्वत्रिंशांश, स्वमुशल्लहादि सत्स्थानमें प्राप्त हों और

शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो इत्थशालोक्त शुभफल तत्कालही होगा. जो स्वराश्यादि शुभस्थानमें प्राप्त होनेवाला हो और शुभग्रह युक्त वा दृष्ट होनेवाला हो तो उक्त फल पीछे होगा, यदि स्वर्क्षादि शुभ स्थानसे दूसरे स्थानमें प्राप्त हुए, थोडाही काल बीता हो तो पूर्वोक्त फल होगया है, कहना ये विचार वर्ष और प्रश्नादियोंमें सर्वत्र बुद्धिबलसे करना ॥ ८ ॥

उपजा०--व्यत्यस्तमस्माद्विपरीतभावे स्वेष्टर्क्षतोऽनिष्टगृहं प्रपन्नः ॥
अभूच्छुभंप्रागशुभंत्विदानीं संयातुकामेनचभाविवाच्यम् ॥९॥

पूर्वश्लोकमें जो स्वर्क्षादिस्थ इत्थशाली ग्रहोंसे भूत भविष्य वर्त्तमान कालिक शुभफल कहेहैं, तैसेही शत्रुराश्यादि अनिष्टस्थान और पापग्रह योगदृष्टिसे अशुभ फलभी होता है, जैसे लग्नेश कार्येश वा दोनहूं शत्रु वा नीच राशिमें वा शत्रुके हद्दा, मुशल्लहादि दुष्ट स्थानोंमें हों, और पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो इत्थशालोक्त अनिष्ट फल तत्कालही होगा, आगे पीछे शुभ होगा जो ऐसाही स्वोच्चादिराशिगत पापयुक्त दृष्ट होकर वर्त्तमान राशिमें आया हो तो उक्त फल भी पूर्वही देदेवेगा, पीछे शुभ फल देगा, जो स्वोच्चादि राशि प्राप्त और पापयुक्त दृष्ट होनेवाला हो तो उक्त फल भी आगे होगा इन योगोंमें अनिष्ट फलकी प्राप्ति होनेमें शुभाशुभ दोनों यथोक्त कालपर दोनहूं होते हैं, शुभफलकी प्राप्तिमें सर्वदा शुभही होता है, उदाहरणके वास्ते तीसरे मुथशिलका रूप कहते हैं कि चन्द्रमा राश्यंत२९ अंशपर है और सूर्य राश्यादि १० अंशपर हैं चन्द्रमाके दीप्तांश १२ के भीतर होनेसे इत्थशाल हुआ, अब इसमें यह विचारना चाहिये कि चन्द्रमा वर्तमान कुम्भराशिमें होनेसे शत्रुराशि गत है, आगे १२ राशि मित्रराशिमें जाता है तो प्रथम अशुभ फल पीछे शुभफल होगा, इसी प्रकार सर्वत्र गतागत वर्त्तमान कालिक फल कहना ॥ ९ ॥

इं०व०--शीघ्रो यदा मंदगतेरथैकमप्यंशमभ्येतितदेशराफः ॥
कार्यर्क्षयोर्मूशरिफःखलोऽत्थेसौम्येनहिल्लाजमतेनचिंत्यम्॥ १० ॥

पूर्वोक्त इत्थशाल योगका विपरीत ईशराफ योग कहते हैं कि शीघ्रगति

ग्रह जो मंदगति ग्रहके एक अंश भी आगे बढ जाय तो इसराफ योग होता है. इसको मूशरिफ भी कहते हैं. यह कार्यका नाश अर्थात् इत्थशाल होनेमें जो कार्यसिद्धि होनी थी उसको विपरीत करदेता है. इसमें हिल्लाजमतसे इतना विचार है कि यह मूशरिफ पापग्रहोंका हो तो कार्य विपरीत अर्थात् शुभके बदले अशुभ करेगा. जो उक्त योग शुभग्रहोंसे हो



तो कार्यको विपरीत तो नहीं करेगा, किंतु शुभफल जो इत्थशालसे होना था उसे न होने देगा उदाहरण ९ लग्नमें बृहस्पति १६ अंश लग्नमें व सप्तमेश बुध मिथुनमें १७ अंश पर है तो मंदगति बृहस्पतिसे शीघ्रगति बुध एक अंश अधिक बढगया इसका नाम इसराफ वा मुशरीफ हुआ, स्त्रीप्राप्ति कार्य था यह सिद्ध नहीं होगा यह दोनों पापग्रह होते तो स्त्रीप्राप्तिके बदले स्त्रीसंबन्धी कर्मसे अनिष्ट होता,ऐसा ही सर्वत्र जानना॥ १०॥

उपजा०-लग्नेशकार्याधिपयोर्नदृष्टिर्मिथोऽथतन्मध्यगतोऽपिशीघ्रः॥
आदाय तेजोयदिपृष्ठसंस्थान्न्यसेदथान्ये यदि नक्तमेतत्॥ ११॥

लग्नेश और कार्याधीशकी परस्पर दृष्टि न हो किंतु इन दोनोंके बीच किसी भावमें उन दोनोंसे शीघ्र ग्रह लग्नेश और कार्येशको भी देखता हो तो अपने पीछेवाले स्वल्पांश ग्रहका तेज लेकर आगेवाले बृहदंशको देदेता है, परंतु यह शीघ्रगति अल्पांश ग्रहसे अधिक और मंदगति, बृहदंश ग्रहसे न्यून अंशपर होवे यह योग अन्यद्वारा कार्यसिद्धि करता है, इसका नाम नक्तयोग है, उदाहरण आगे कहते हैं ॥ ११ ॥

उपजा०--स्त्रीलाभपृच्छातनुरस्तिकन्या स्वामीबुधः सिंहगतो दशांशैः॥सूर्यांशकैर्देवगुरुः कलत्रे दृष्टिस्तयोर्नास्तिमिथोऽथचंद्रः॥
॥१२॥ चापेवृषेचोभयदृश्यमूर्तिः शीघ्रोऽर्कभागैरथवाभवांशैः ॥
आदायतेजो बुधतोददौयज्जीवायलाभःपरतःस्त्रियाःस्यात्॥ १३॥



नक्तयोग उदाहरण जैसे स्त्रीलाभ प्रश्नमें कन्या लग्न, लग्नेश शीघ्रगति बुध सिंहके दश अंशपर कार्येश स्त्री प्रश्न होनेसे सप्तमेश मंदगति बृहस्पति मीनराशिके बारह अंशपर है इनकी परस्पर दृष्टि होती तो, शीघ्राल्पभागेत्यादि इत्थशाल हो तो यहां इनकी ६।८स्थानोंमें होनेसे दृष्टि नहीं है, परंतु इनके बीच धनराशिमें वा वृषराशिमें लग्नेश और कार्येशके अंशोंके मध्यवर्ती बारह वा ग्यारह अंशपर चन्द्रमा दोनोंसे शीघ्रगती है और दोनोंको नवम चतुर्थ वा लाभ चतुर्थ पूर्णदृष्टिसे देखता है, इस व्यवस्थामें चंद्रमा अपने पीछेवाले शीघ्र बुधका तेज लेकर अपने अग्रवर्ती मंदगति बृहस्पतिको देदेता है. प्रयोजन है कि बुध गुरुकी दृष्टि होती तो इत्थशाल योगसे अपनेही हाथसे स्त्रीप्राप्ति होती यहां नक्तयोग चन्द्रमा तीसरे ग्रहसे है तो स्त्रीप्राप्ति भी तीसरे किसी मध्यस्थ मनुष्यके हाथसे होगी. ऐसाही सर्वत्र जानना यहां तेरहवें श्लोकमें (शीघ्रोर्कभागैः) के स्थानमें (शीघ्रोष्टभागैः) ऐसा पाठ है, प्रयोजन यह है कि, चन्द्रमा८अंशपर होनेसे लग्नेश कार्येशके बीच तो न हुआ परंतु अति शीघ्र है, बुध १० अंशवालेको लांघकर बारह अंशवाले बृहस्पतिको पहुँच सकता है, इस कारण नक्तयोग संभावना होती है, यह ताजिकांतर मत है और यहां १०।११।१२ अंश इन तीनोंके उपलक्षणार्थ लिखे हैं दीप्तांशोंके भीतर किसी अंशपर क्रमसे हो तो नक्तयोग होजाता है, आगे बुद्धिके बलसे विचारना ॥ १२ ॥ १३ ॥

इंद्रवज्रा--अंतःस्थितोमंदगतिस्तुपश्येद्दीप्तांशकैर्द्वावथशीघ्रतस्तु ॥
नीत्वामहोयच्छति मंदगाय कार्यस्यसिद्ध्यैयमया प्रदिष्टः॥ १४॥

लग्नेश और कार्येश किसी भावोंमें हों उनकी परस्पर दृष्टि न हो किंतु एक शीघ्रगति एक मंदगति हो और दीप्तांशोंके भीतर हो मध्यस्थ स्थानगत दोनोंसे मंदगतिको ही ग्रह उक्त ग्रहको देखता हो तो ग्रहसे तेज लेकर

मंदग्रहको दे देता है. इस योगका नाम यमया है. कार्यकी सिद्धि दूसरेके द्वारा करता है ॥ १४ ॥

इं०व०--राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथोमेषेसितस्त्वष्टलवैर्वृषस्थः॥ चंद्रोदशांशैर्यदिराज्यनाथोदृष्टिस्तयोर्नास्ति गुरुस्तु मंदः॥१५॥ उ०व०--दिगंशगःकर्कगतस्तुपश्यन्नुभौ महोदीप्तलवैःसचांद्रम्॥ ददौसितायेतिपदस्यलाभोऽमात्येनभावीतिविमृश्यवाच्यम् १६



यमया योगका उदाहरण, जैसे राज्यप्राप्ति प्रश्नमें तुलालग्नका स्वामी शुक्र सप्तम भावमें मेषके ८ अंशपर और कार्य दशम स्थानसम्बन्धी होनेसे दशमेश चन्द्रमा वृषके १० अंशपर अष्टम स्थानमें है, इन लग्नेश कार्येशोंकी परस्पर दृष्टि नहीं है. दीप्तांशोंके अन्तर्गत है. योग होनेमें केवल दृष्टिकी न्यूनता रही यह कार्य तीसरा ग्रह अर्थात् बृहस्पति सम्पादन कर्त्ता है कि, यह स्थान दृष्टिसे १०।११ स्थानमें शुक्र चन्द्र० दोनहूंको देखता है तो शीघ्र चन्द्रमासे तेज लेकर, उससे मन्द शुक्रको देता है इस योगका नाम यमया है. फल यह है कि, लग्नेश कार्येशका इत्थशाल होता तो आपही राज्यप्राप्ति होनी थी, यहां बृहस्पतिसे योग पूर्ण हुआ तो दूसरेके द्वारा राज्यप्राप्ति होगी, बृहस्पति देवगुरु यद्वा देवमन्त्री है इससे फल (राज्यप्राप्ति) पुरोहित वा अमात्यके द्वारा होगी ऐसे सभी संबंधी फल अपनी बुद्धिसे विचारके कहना, यहां राज्यप्राप्ति प्रश्न केवल उपलक्षण मात्र है ॥१५॥१६॥

इन्द्रवज्रा--वक्रः शनिर्वा यदि शीघ्रखेटात्पश्चात्पुरस्तिष्ठति तुर्यदृष्ट्या ॥ एकर्क्षसप्तर्क्षभुवादृशावा पश्यंस्तथांशैरधिकोनकैश्चेत् ॥ १७ ॥ उपजातिपूर्वार्द्ध--तेजोहरेत्कार्यपदेत्थशाली स्थितोऽपिवासौमणउः शुभो न ॥

मणउ योगका लक्षण कहते हैं, यह नक्तयोगके तरह है परन्तु शनि वा मंगलकी ऐसी प्राप्तिमें फल विपरीत हो जाता है,इस कारण यह मणऊ नाम

योग पृथक् है, मणऊ पारशीय(मनै)पदका पर्याय है. प्रयोजन है कि, कार्य करनेमें (मनै) अर्थात् विघ्न करदेताहै. लक्षण यह कि, लग्नेश और कार्येश इत्थशाली अर्थात् शीघ्रोल्पभाग मन्द घनभाग और परस्पर दृष्टियुक्त हो परन्तु इनके बीचमंगल वा शनि शीघ्रगति ग्रहके समीप उसके दीप्तांशोंके भीतर आगे वा पीछे हो और चतुर्थ सप्तम वा एकर्क्ष दृष्टिसे उसे देखे मन्द-ग्रहको भी किसी दृष्टिसे देखे और इसके दीप्तांशोंके अंतर वह मंदग्रह होवे जो कि लग्नेश वा कार्येश है तो शीघ्र ग्रहका तेज हरलेता है, मन्दग्रहको वह तेज नहीं देता यह मंगल शनिकी प्रकृति और शत्रुदृष्टिका फल है, इसको मणऊ योग कहते हैं इत्थशालका विरुद्धफल अर्थात् कार्यनाश कर्त्ता है ॥ १७ ॥

उपजा०--स्त्रीलाभपृच्छातनुरस्तिकन्यात्रज्ञोदिगंशेस्तिथिभिः सुरेज्यः ॥१८॥ कलत्रगःखेऽवनिजो भवांशैःपूर्णंबुधोभौमहृतस्वतेजाः ॥ जीवेनपश्चान्मिलतीतिलाभोनार्यास्तु नो पृष्ठगतेऽथवास्मिन् ॥ १९ ॥

मणउं मणउं मणउं



मणउं योगका उदाहरण स्त्रीलाभ प्रश्नमें कन्या लग्न लग्नेश बुध लग्नके दश अंशपर स्त्रीलाभ कार्य होनेसे सप्तमेश सप्तम बृहस्पति मीनके १५ अंशमें है इनका इत्थशाल स्त्रीलाभकारी था परन्तु मंगल मणउं अर्थात् मनै करता है कि यह दशम स्थानमें मिथुनके ग्यारह अंशपर स्थित होकर लग्नेश बुधको तुर्यदृष्टि अर्थात् शत्रुदृष्टिसे देखता है, और बुधका अंश समीपवर्ती है इस हेतु बुधका तेज मंगलने हरण किया, बुध निस्तेज हो गया, अर्थात् फल देनेको सामर्थ्य इसको न रहा, मंगलने हानि अर्थात् मणउं मनै करली है

लग्नेश कार्येश बु० बृ० के इत्थशालसे स्त्रीप्राप्ति होनी थी, मंगलके मणउं करनेसे यह कार्य नहीं होगा. प्रत्यक्षतः स्त्रीसम्बन्धी हानि होगी ऐसे ही शनिसेभी मणउं योग होता है, दूसरा उदाहरण—मीनलग्न मन्द लग्नेश बृहस्पति ८ अंश सप्तमेश बुध ८ अंश सप्तम स्थानमें शनि मीनके ९ अंशपर यह एक अंश अधिक होनेपरभी मणउं योग हुआ तीसरा उदाहरण—लाभ प्रश्नमें कर्क लग्नसे चंद्रमा वृषके दश अंशपर लाभेश शुक्रलग्नमें कर्कके ११ अंशपर इनके इत्थशाल होनेसे धनलाभ होना था, परंतु वृषके १६ अंशपर चन्द्रमाके साथ एक भावगत शत्रुदृष्टि देखनेवाला मंगल वा शनि होनेसे मणउं योग होगया शीघ्र चन्द्रमाके तेज मंगलने शुक्रको नदेने दिया. आपही नाशकरदिया फल इत्थशाल होना था नहीं होगा प्रत्युत हानि होगी, यहां इस योगके मूलवाक्यमें "अंशैराधिकोनकैश्चेत्" अर्थात् मणउं करनेवाला ग्रह शीघ्रसे पीछे वा आगे अंशोंमें समीप हो कहाहै युक्तिसे यह भी विचार चाहिये कि, जो शीघ्र ग्रहसे आगे हो तो इससे भी आगे कार्येश जो ग्रह है वह मणउं करनेवाले ग्रहसे मन्दगति हो. क्योंकि यह उसको अपनी गतिसे आक्रमण करसके तो मणउं योग होगा जब मणउं करनेवालेसे आगेका लग्नेश शीघ्रसे मन्दग्रह मणउंवालेसे शीघ्र हो तो मणउं करनेवालेसे; क्योंकि इसमें उसको आक्रमण नहीं कर्ता है दूसरा जब शीघ्र ग्रहसे पीछे मणउं करनेवाला मंगल वा शनि हो तो यह इतना शीघ्रगति होना चाहिये कि कार्येश वा लग्नेश पूर्वोक्त शीघ्रगति ग्रहको आक्रमण करके आगेवाले योगकारक मन्दग्रहको पहुँचसके तो मणउं ठीक होगा. जब इसकी इतनी शीघ्र गति नहीं है कि पीछेवाले शीघ्र ग्रहोंको उल्लंघन कर आगेवाले मन्दगति तीसरे ग्रहको न पहुँच सके तो मणउँ योग नहीं होगा लग्नेश कार्येशका पूर्वोक्त इत्थशालही रहजायगा ऐसे विचार और भी स्वबुद्धिसे करने चाहिये यहां शनि और मंगलके मणउं योग तीनतीन प्रकारके होनेसे छः भेद हुए, उपरान्त शीघ्रग्रहके पीछे और आगे मणउंवाला ग्रह होनेसे बारह भेद हैं शेष बुद्धिसे विचारना भाषाबहुत बढजानेके कारण मैंने सूक्ष्म ही लिखा है ॥ १८ ॥ १९ ॥

उपजा०–यदीत्थशालोऽस्त्युभयोः स्वदीप्तहीनाधिकांशैः शनिभू-
सुतौचेत्॥एकर्क्षगौलग्नपकार्यपौस्तस्तेजोहरौकार्यहरौनिरुक्तौ॥२०॥

नक्तयोगका भेद औरभी है कि, जब लग्नेश कार्येशका पूर्वोक्त प्रकारसे इत्थशाल हो और इनके दीप्तांशोंके भीतर आगे वा पीछे शनि मंगल दोनहूं वा एक ग्रह उन दोनोंके समीप दीप्तांश भीतर आगे वा पीछे हो अथवा लग्नेश कार्येशमें एकके साथ शनि वा मंगल उसके दीप्तांश भीतर आगे वा पीछे हो तो यह भी मणउं योग कार्यनाश करनेवाला होता है ॥ २० ॥

उपजा०–राज्याप्तिपृच्छातुललग्ननाथः कर्के सितोंऽशैस्तिथिभि-
र्दिगंशैः ॥ वृषेशशीभूपलवैःकुजश्चहरेद्यचोभांहरतेचराज्यम् ॥२१॥



इस मणउं योगका उदाहरण राज्यप्राप्ति प्रश्नमें तुला लग्न लग्नेश शुक्र दशम कर्कके पंद्रह अंशपर राज्येश चंद्रमा अष्टम वृषके दश अंशपर उच्चवर्ती तथा मंगल भी अष्टम वृषके १६ अंशपर है और शनि भी अष्टमवृषके दश अंश पर है मंगल शनिमेंसेएकके होनेसेभी योग होजाता है, यहां उपलक्षणार्थ दोनहूं लिखे हैं. प्रयोजन यह है कि, लग्नेश कार्येशमेंसे एकके भी दीप्तांशभीतर आगेवा पीछे भौम शनिमेंसे एकभी होनेसे योग सम्पन्न होता है, यहां लग्नेश कार्येशके शुक्र चन्द्रके इत्थशालमें राज्यप्राप्ति होनी थी मंगल शनि कार्येशके साथ उसके दीप्तांशोंके समीप होनेसे इन्होंनें उसका तेज नाश कर दिया इसका नामभी मणउं योग है, राज्यप्राप्ति नहीं होने देगा प्रत्युत राज्यहानि करेगा, यहभी मणउंका भेद है ॥ २१ ॥

अनुष्टुप्–लग्नकार्येशयोरीत्थशालेऽत्रेंद्वित्थशालतः ॥
कंबूलंश्रेष्ठमध्यादिभेदैर्नानाविधं स्मृतम् ॥ २२ ॥

लग्नेश कार्येशको पूर्वोक्त प्रकारसे इत्थशाल हो और चन्द्रमा लग्नेश वा कार्येश वा दोनोंके साथ इत्थशाली रहे तो इसका नाम कंबूल योग

होता है, कंबूल पारशीय पद कबूलका पर्याय है इसके श्रेष्ठ मध्य अधम भेदोंसे अनेक प्रकार हैं. उच्च स्वगृहसे उत्तमाधिकार स्वहद्दा द्रेष्काण नवांशकसे दूसरा मध्यम अधिकार शत्रु नीचगृहावस्थितिसे तीसरा अधमाधिकार जहाँ इन तीनोंमेंसे एक भी अधिकारी न हो तो यह चौथा समाधिकार है, इससे भी चन्द्रमा उत्तमाधिकारी हो और लग्नेश कार्येशमेंसे कोई प्रत्येक भेद करके चार अधिकारोंमें होनेसे चार भेद, ऐसे ही चन्द्रमा मध्यमाधिकारी और अधम तथा समाधिकारी होनेमें उनके प्रत्येक अधिकारों करके ४ । ४ भेद होते हैं. समस्त सोलह १६ भेद हुए; पुनः १६ भेद लग्नेशके १६ कार्येशके होनेसे सम्पूर्ण ३२ बत्तीस भेद होते हैं, इनके नाम उत्तमोत्तम १ उत्तम मध्यम २ उत्तम सम ३ उत्तमाधम ४ मध्यमोत्तम ५ मध्यम मध्यम ६ मध्यमाधम ७ मध्यम सम ८ समोत्तम ९ सम मध्यम १० सम सम ११ समाधम १२ अधमोत्तम १३ अधममध्यम १४ अधमसम १५ अधमाधम १६ ये सोलह विकल्पोंके नाम हैं, लग्नेश कार्येशके प्रत्येक करके ३२ बत्तीस होते हैं, उनमें उत्तम सम और समोत्तम ये दोनों मध्यमहीके हैं. ४ । ४ भेद सभीके होते तो ३२ से भी अधिक विकल्प होने थे किंतु यहाँ लग्नेश कार्येशकी उच्चादिकल्पना आवश्यक नहीं है. इत्थशालमात्र चाहिये, केवल चन्द्रमाके उच्चादिभेद आवश्यक होनेसे यहां १६ ही भेद होते हैं लग्नेश कार्येशके पृथक् गणनासे ३२ बत्तीस होते हैं ॥ २२ ॥

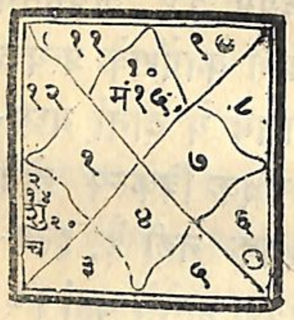
अनु०–यदीन्दुः स्वगृहोच्चस्थस्तादृशौ लग्नकार्यपौ ॥
इत्थशाली कबूलं तदुत्तमोत्तममुच्यते ॥ २३ ॥



चन्द्रमा स्वराशि ४ में अथवा अपने उच्च राशि २ में ऐसे ही स्वराशि वा स्वोच्चराशिगत लग्नेश और कार्येशभी हो. लग्नेश कार्येशका इत्थशाल हो चन्द्रमा दोनोंके इत्थशाली हो तो इसका नाम उत्तमोत्तम कम्बूल होता है यहाँ ग्रन्थकर्त्ताने केवल उत्तमोत्तम उत्तमाधम दोनों आद्यन्तवालोंके उदाहरण

कहे हैं. पूरे ग्रन्थ बढजानेके भयसे न लिखे, अपनी बुद्धिसे समझलेना कहा है इस भाषामें और ग्रन्थसे ग्रन्थकर्त्ता अभिप्राय पुष्ट करनेको मैं उदाहरण लिखताहुं कि, "मेषेरविःकुजवापि वृषेकर्केऽथवाशशी॥तत्रेत्थशालात्कंबूलमुत्तमोत्तमकार्यकृत्॥ १॥अर्थ--सन्तति होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें मेष लग्न लग्नेशमें २० अंशपर सन्तानप्रश्न होनेसे पंचमेश आवश्यक है सोही पंचमेश सूर्य लग्नमें मेषके १७अंशपर होनेसे एकराशिस्थ दृष्टि और दीप्तांशाभ्यंतर होनेसे इत्थशाल हुआ. अब कम्बूल करनेवाला चन्द्रमा स्वगृही चतुर्थ स्थानमें कर्क १४अंशपर है लग्नेश कार्येश मं० शु० दोनहूंके साथ इत्थशाल करता है, यह उत्तमोत्तम कंबूल हुआ कार्य भी उत्तमोत्तम करेगा, इस विषयके

उत्तमोत्तम कंबूल २



उ० त्त० कंबूल ३



उ० त्त० कंबूल ४



उदाहरण तीन कुंडलियोंमें और भी लिखे हैं और लग्नेश कार्येशमेंसे एक ग्रहके साथ भी चन्द्रमा मुथशील करे तो यह भी कंबूल होता है ॥२३॥

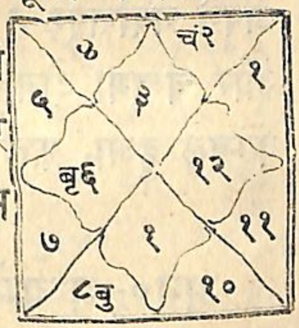
अनु०--स्वीयहद्दाद्रिकाणांकभागस्थेनेत्थशालतः ॥
मध्यमोत्तमकंबूलंहीनाधिकृतिनोत्तमम् ॥ २४ ॥

लग्नेश कार्येश अपने हद्दा स्वद्रेष्काण वा स्वनवांशकमें परस्पर मुथशिलकारी हो और चन्द्रमा स्वराशि वा उच्चराशिमें बैठकर उनके साथ इत्थकाल करे तो उत्तम मध्यम संज्ञक कंबूलयोग होता है. यहां ग्रन्थकर्तानें श्लोकमें छन्दोभंगके भयसे मध्यमोत्तम लिखा है. संज्ञा इसकी उत्तम मध्यम है इसका उदाहरण भाग्यवृद्धिमें तुलालग्न लग्नेश शुक्र दशम स्थानमें कर्कका

अपनी हद्दामें और भाग्यभावाधीश बुध सप्तमस्था—उत्तममध्यम कंबूल १



नमें अपने हद्दामें १४अंश पर है इनका परस्पर मुथशिलयोग है अब कंबूली चन्द्रमा स्वराशिगत कर्कके८ अंशमें लग्नेश कार्येश दोनहूंके साथ मुथशिल करता है,योग पूर्ण हुआ.यह लग्नेश कार्येशके स्वहद्दामें और चन्द्रमाके स्वोच्च वा स्वराशिगत होनेसे उत्तम मध्यम कम्बूल हुआ।.ऐसे लग्नेश कार्येशके स्वद्रेष्काण वा स्वनवांशगत और चन्द्रमा स्वोच्च वा स्वराशिगत होनेमें उत्तम मध्यम कम्बूल होते हैं,जब लग्नेश कार्येश समगृहेश हद्दाद्रेष्काण नवांशमें स्थित होकर परस्पर मुथशिल करे और चन्द्रमा स्वगृह वा स्वोच्च गत होकर मुथशिली हो तो उत्तम सम कम्बूल होता है,इसका उदाहरण राज्यप्राप्तिप्रश्नमें मिथुनलग्न लग्नेश बुध समग्रह मंगलकी राशि८ में और राज्यभावेश बृहस्पति समगृह बुधके ६ राशिमें हैं,कम्बूली चन्द्रमा अपने

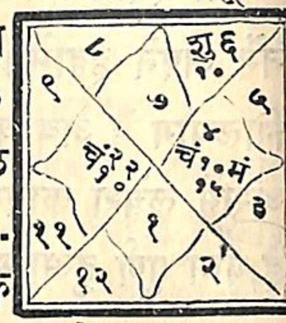


उच्चराशि वृषमें है स्वराशि कर्कमें होनेसे भी यही होता है यहां अंश कन्यांश दीप्तांशोंका अंतर मुथशिल योग होनेके योग्य चाहिये. यह उत्तम सम कंबूल हुआ, राज्यप्राप्ति उत्तम होगी ॥ २४ ॥

अनुष्टु०--उत्तमाधमता नीचरिपुगेहस्थितेन चेत् ॥
स्वद्रेष्काणांशगश्चंद्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत् ॥ २५ ॥

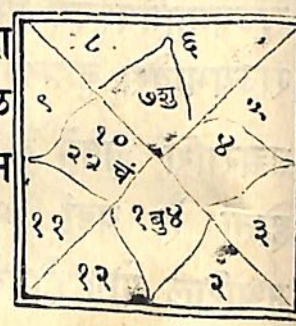
नीचराशि वा शत्रुराशिमें लग्नेश वा कार्येश परस्पर मुथशिली हों और चन्द्रमा अपने उच्च वा अपनी राशिमें बैठा दोनहूंके साथ इत्थशाल करे तो उत्तमाधम कम्बूल होता है,यह योग चन्द्रमाके उच्चमाधिकारी और लग्नेश कार्येशके निकृष्टाधिकारी होनेसे है.उदाहरण स्त्रीप्राप्तिप्रश्नमें तुलालग्न लग्नेश शुक्र कन्यांक१०अंशपर नीच राशिगत और सप्तमेश मंगल नीच राशिगत

उत्तमाधम कंबूल



कर्कके १५अंशपर शुक्रके साथ इत्थशाली है. चन्द्रमा स्वराशि ४ गत कर्कके १०अंशपर बैठकर शु० मं० के साथ मुथशिली है.इस हेतु यह उत्तमाधम कंबूल हुआ, स्त्री प्राप्ति थोडे प्रयाससे होगी यह फल है. यह पचीसवें श्लोकके पूर्वार्द्धका अर्थ हुआ इसके उत्तरार्द्ध और छब्बिसवेंके पूर्वार्द्ध मध्यमोत्तम इसमें मध्यमोत्तमकंबूल इस प्रकारका है कि चन्द्रमा अपने द्रेष्काण वा अपने नवांशमें स्थित हो और लग्नेश कार्येश अपने२स्थानोंमें बैठ परस्पर इत्थशाली मध्यमकंबूलके तरह यह भी है;उदाहरण स्त्रीप्राप्तिप्रश्नमें तुलालग्न लग्नेश शुक्र लग्नमें सप्तमेशक

मध्यमोत्तम कंबूल



मंगल मेषका और चन्द्रमा मकरराशिमें २२ अंश अपने नवांशपर है शुक्र मंगलका परस्पर मुथशिल और चन्द्रमा दोनहूंसे मुथशिली हैं, यह मध्यमोत्तम कम्बूल हुआ; फल पूर्ववत् है ॥ २५ ॥

अनु०--मध्यमोत्तममेतच्च पूर्वस्मान्न विशिष्यते ॥
स्वहद्दादिपदस्थेन कंबूलं मध्यमध्यमम् ॥ २६ ॥

इस श्लोकके पूर्वार्द्धका अर्थ पूर्व२५श्लोकार्थके साथ सम्बन्धवशसे लिख दिया है,उत्तरार्द्धसे मध्यम कम्बूल इस प्रकार है कि स्वहद्दा द्रेष्काण वा नवांशकमें स्थित लग्नेश वा कार्येश हो दोनहूं परस्पर मुथशिली हों और चंद्रमाभी स्वद्रेष्काण वा स्वनवांशमें बैठकर इनके साथ मुथशिली हो तो मध्यममध्यम कम्बूल होता है,यहां तीनहूंकी स्वगृह स्वोच्चराशि छोडकर स्वहद्दादि मध्यमाधिकारोंकी आवश्यकता है, उदाहरण स्त्रीलाभ प्रश्नमें मिथुन लग्न लग्नेश बुध धनके १८ अंशपर अपने हद्दामें सप्तमेश बृहस्पति

मध्यम मध्यम कंबूल



मिथुनके १६ अंशपर अपने हद्दामें और चन्द्रमा मीनके दूसरे द्रेष्काणमें १२ अंशपर अपने द्वादशांशपर है. यहां तीनहूंकी परस्पर स्थान दृष्टि होनेसे एवं मुथशिल परस्पर होनेसे मध्य मध्यम कंबूल हुआ. स्त्रीप्राप्ति अति यत्नसे होगी यह फल है ॥ २६ ॥

अनु० मध्यममध्यमकंबूलं हीनाधिकृतखेटजम् ॥
मध्यमाधमकंबूलं नीचारिभगखेटजम् ॥ २७ ॥

स्वगृह स्वोच्च हद्दा द्रेष्काण नवांश और शत्रु नीचाधिकाररहित अर्थात् समगृह हद्दा द्रेष्काण नवांशमेंसे किसीमें लग्नेश कार्येश हों और चन्द्रमा मध्यमाधिकार अर्थात् स्वनवांश वा स्वद्रेष्काणमें हो परस्पर इत्थशाली हो तो मध्यमसम कंबूल होता है. उदाहरण, संतान प्रश्नमें वृषलग्न लग्नेश शुक्र मकरके

मध्यम सम कंबूल



चार अंशपर सम बुधकी हद्दामें और पंचमेश बुध तुलाके पांच अंशपर समहद्दामें और तुलाका चन्द्रमा २ अंशपर है अपने द्रेष्काणमें है. यह मध्यमसम कंबूल हुआ. संतति प्राप्ति यत्नसे होगी और लग्नेश कार्येश नीच वा शत्रुराशिमें परस्पर मुथशिल हों, चंद्रमा अपने द्रेष्काण वा नवांशकमें बैठकर दोनोंके साथ मुथशिली हों तो मध्यमाधम कंबूल होता है, उदाहरण, मेषलग्न लग्नेश मंगल कर्कका नीच राशिमें और भाग्याधीश बृहस्पति मकर अपने नीचराशिमें चन्द्रमा तुलाके पांच अंशपर है, मंगल

मध्यमाधम कंबूल



बृहस्पतिके अंश मुथशिलयोग्य लिखने चाहिये. जैसे यहां उदाहरण कुंडलीमें मंगल ९ अंश बृहस्पति १० अंश लिखा है इनका परस्पर मुथशिल हुआ और चंद्रमा दोनहूंके साथ मुथशिली अपने त्रिभागमें है यह अधमाधम कंबूल हुआ, भाग्य प्राप्ति अतिकष्टसे होगी॥ २७॥

अनु०--इन्दुः पदोनः स्वर्क्षोच्चयुतेनाप्युत्तमं तु तत् ॥
स्वहद्दादिगतेनापि पूर्ववन्मध्यमुच्यते ॥ २८ ॥

चंद्रमा अधिकाररहित होनेसे पदोन होता है. यह दो प्रकारका है, पहिला समग्रहका हद्दा द्रेष्काण नवांशमें, और दूसरा सूक्ष्म है. कि समग्रह हद्दा द्रेष्काण नवांशके आदि वा अंतमें संधिगत होनेमें यह दो प्रकार पदोन कहाता है लग्नेश वा कार्येश अपनी राशि वा अपने उच्च राशिमें हो परस्पर इत्थशाली लग्नेश कार्येश हों और पदोन चंद्रमा इनसे मुथशिली हो तो समोत्तम कंबूल होता है, उदाहरण—धन लाभ प्रश्नमें तुला लग्न लग्नेश शुक्र लग्नमें अपने घरका धनेश मंगल अपने उच्च राशि मकरका और चंद्रमा मिथुनका समके हद्दामें है, यहां अंश कल्पना इत्थशाल योग्य करनी चाहिये. यह समोत्तम कंबूल योग हुआ. फल धनप्राप्ति उत्तम होगी और



श्लोकोत्तरार्धसे दूसरा योग यह है कि चंद्रमा पूर्ववत् पदोन हो और लग्नेश कार्येशमेंसे एक अथवा दोनहूं अपने हद्दा द्रेष्काण नवांशकमें हो परस्पर लग्नेश कार्येशका इत्थशाल हो. चंद्रमा भी इत्थशाली हो तो यह सममध्यम कंबूल होता है. उदाहरण, धनलाभ प्रश्नमें तुलालग्न लग्नेश यह शुक्र ग्यारहवां सिंहके दश अंशपर अपने हद्दामें और धनेश दश अंशपर तीसरा और चंद्रमा मिथुनके दश अंशपर समकी हद्दामें है, इनका परस्पर मुथशिल योग होनेसे यह सम कंबूल हुआ, धनलाभ यत्नसे होगा यह इसका फल भया ॥ २८ ॥

सममध्यम कंबूल



अनुष्टु०--पदोनेनापि मध्यं स्यादिति युक्तं प्रतीयते ॥
नीचारिस्थेनेत्थशालोऽधमं कंबूलमुच्यते ॥ २९ ॥

लग्नेश और कार्येश पदोन होकर परस्पर इत्थशाली हों और चन्द्रमा भी पदोन होकर लग्नेश और कार्येशके साथ इत्थशाली हो तो समसमाख्य मध्यम कंबूल प्रतीत होता है "उदाहरण" धनलाभ प्रश्न मेषलग्न लग्नेश मंगल सिंहके दश अंशपर धनाधिश शुक्र कुंभके दश अंशपर और चन्द्रमा तुलाके दश अंशपर तीनहू द्रेष्काणोंके संधियोंमें पूर्वोक्त दूसरा प्रकार सूक्ष्म पदोनता हुई इन तीनहूंका परस्पर मुथशिल है, यह

समसमाख्य मध्यम कं०



समसमाख्य मध्यम कंबूल हुआ फल धनलाभ मध्यम अर्थात् न बहुत अधिक न अत्यंत अल्प होगा अथवा वही लग्न लग्नेश भौम सम और सूक्ष्मके २६ अंशपर धनेश शुक्रसम शनि हद्दामें २६ अंशमें और चंद्रमा सम बृहस्पतिके द्रेष्काणमें २० अंशपर है ये तीन परस्पर मुथशिली हैं यह भी प्रकारांतरसे समसमाख्य मध्यम कंबूल है. फलभी पूर्वोक्त ही होगा. यह श्लोक पूर्वार्द्धका है अब उत्तरार्धसे समाधम कंबूलका लक्षण कहते हैं कि लग्नेश वा कार्येश नीचराशि वा शत्रुराशिमें होकर परस्पर मुथशिली हों और पूर्ववत् पदोन चंद्रमा उनसे इत्थशाली हो तो समसमाख्य कंबूल होता है.

समसमाख्य मध्य कं०



समासमाख्य कंबूल



उदाहरण, पुत्र प्रश्नमें मिथुनलग्न लग्नेश बुध नीचका मीनमें पुत्रभावेश शुक्र नीचका कन्यामें चंद्रमा बृहस्पतिके द्रेष्काणमें है, यहां भी अंश कल्पना इत्थशालयोग चाहिये. यह तीनोंके परस्पर मुथशिल होनेसे समाधम कंबूल हुआ फल संतानप्राप्ति अल्पयत्नसे होगी॥२९॥

समाधमाख्य कंबूल



अनुष्टु०--नीचशत्रुभगश्चंद्रः स्वभोच्चस्थेत्थशालकृत् ॥
अधमोत्तमकंबूलं स्वहद्दादिगतेन चेत् ॥ ३० ॥

चंद्रमा नीच राशि वा शत्रुराशिमें हो और लग्नेश वा कार्येश अपनी राशि वा अपने उच्च राशिमें दोनहूं वा एक भी हो तो चंद्रमाके अधम और लग्नेश कार्येशके उत्तमाधिकार होनेसे यह अधमोत्तम कंबूल योग होता है. इसका फल पूर्वोक्त अधमोत्तम कंबूलके सदृश जानना उदाहरण;सुखप्राप्ति प्रश्नमें सिंह लग्न लग्नेश सूर्य अपने उच्च मेषका और अधमोत्तम कंबूल चंद्रमा अपने नीच वृश्चिकका है.यहां अंश इत्थशाल योग्य रखने चाहिये जिनसे परस्पर तीनहूंका मुथशिल होजाय.फल इसका सुख थोडा प्रयत्नसे प्राप्त होगा यह श्लोकके तीन चरणोंका अर्थ हुआ.अब चौथे चरण



और दूसरे श्लोक पूर्वार्द्धके अर्थसे अधममध्यम कंबूल इस प्रकारका है कि जब चंद्रमा नीच वा शत्रुराशिमें हो और लग्नेश वा कार्येश वा दोऊ अपने हद्दा द्रेष्काण नवांशकमेंसे किसीमें हों परस्पर तीनहूं इत्थशाली हों तो चंद्रमाके निकृष्टाधिकार और लग्नेश कार्येशके मध्यमाधिकारी होनेसे यह मध्यममध्य कंबूल होता है. उदाहरण—पुत्रप्राप्ति प्रश्नमें कन्यालग्न लग्नेश बुध मकरके तीन मध्यममध्य कंबूल अंशपर अपनी हद्दामें पुत्रभावेश शनि मीनके ५ अंश अपने द्रेष्काणमें और चंद्रमा वृश्चिकके तीन अंशपर है. इनका परस्पर मुथशिल है यह अधममध्यम कंबूल हुआ.फल इसका संततिप्राप्ति अति कष्टसे



होगी. इसीमें अधमसम कंबूली है कि चन्द्रमा नीच वा शत्रुराशिमें हो और लग्नेश कार्येश दोनहूं वा एक पदोन हो (पदोनका अर्थ पूर्वोक्त जानना) तो अधमसम कंबूल होता है. उदाहरण, राज्यप्राप्ति

प्रश्नमें वृष लग्न लग्नेश शुक्र सिंहके ६ अंशमें सूर्य एक राशिमें है और राज्यभावेश शनि वृषके १० अंशमें और चन्द्रमाः नीच वृश्चिकके ३ अंशमें है सबकी परस्पर दृष्टि होनेसे इत्थशाल भी है, यह अधमसम कम्बूल है, फल राज्यप्राप्ति कठिन उपायसे होगी ३०॥

अधमसम कंबूल.



अनु०--नीचारिभस्थखेटेन नीचारिभगतः शशी ॥
इत्थशालीकंबूलं तदधमाधममुच्यते ॥ ३१ ॥

अधमाधम कम्बूलका लक्षण कहते हैं कि चन्द्रमा नीच वा शत्रुराशिमें हो और लग्नेश कार्येश भी नीच वा शत्रुराशिमें हो तो यह अधमाधम कम्बूल होता है, उदाहरण--पुत्रलाभ प्रश्नमें धन लग्न लग्नेश बृहस्पति अपने नीच मकर राशिमें पुत्रभावेश मंगल अपने नीच कर्कका और चंद्रमाभी अपने नीच वृश्चिकका है, यहां अंश कल्पना इत्थशाल योग्य चाहिये यहां इन तीनहूंके परस्पर मुथशिल हैं, अधमाधिकार होनेसे यह अधमाधम कंबूल हुआ पुत्रलाभ नहीं होगा यह फल है, ऐसेही इनके शत्रुराशिगत होनेमें भी निकृष्टाधिकारसे यह योग्य है ॥ ३१ ॥

अधमाधम कंबूल.



अनु०--मेषे रविः कुजे वापि वृषे कर्केऽथवा शशी ॥
तत्रेत्थशालात्कंबूलमुत्तमोत्तमकार्यकृत् ॥ ३२ ॥

प्रथम भेद उत्तमोत्तम और अंतिम भेद अधमाधम उपलक्षणार्थ पुनः प्रकारांतर सुगमार्थ अन्योक्तिसे कहते हैं कि किसी लग्नसे मेषका सूर्य अथवा मंगल हो और चंद्रमा उच्च वृषका वा स्वराशि कर्कका हो इनकी परस्पर दृष्टि और दीप्तांश इससे इत्थशाल हो तो यह उत्तमोत्तम कंबूल कार्य कर्त्ता होता है यह हेतु लग्नेश कार्येश और चंद्रमाके उत्तमाधिकार होनेका है ॥ ३२ ॥

अनुष्टु०--वृश्चिकस्थः शशी भौमः कर्के तत्रेत्थशालतः ॥
अधमाधमकंबूलं कार्यविध्वंसदुःखदम् ॥ ३३ ॥

जो चंद्रमा वृश्चिकका और मंगल कर्कका हो परस्पर इत्थशाली हो तो अधमाधम कंबूल कार्यनाशक होता है, इसका हेतु इनके अधमाधिकारी होनेसे है ॥ ३३ ॥

अनुष्टु०--एवं पूर्वोक्तभेदानामुदाहरणयोजना ॥
उक्तलक्षणसंबंधादूहनीयाविचक्षणैः ॥ ३४ ॥

ये भेद आदि अंतमें मुख्य हैं, इनके बीचमें चौदह भेद उक्त लक्षण संबंधसे जानने एवं प्रकार सोलह भेद जो प्रकट हैं, इनके तो पृथक् २ उदाहरण कहदिये हैं, उपरांत इनके बहुत भेद होते हैं बुद्धिमानोंने अपने बुद्धिबलसे उक्त लक्षणोंके आधारसे जानलेने ॥ ३४ ॥

अनुष्टु०--मेषस्थेऽब्जेशनीत्यादि दृष्टांतौ मंदशीघ्रयोः ॥
एकर्क्षावस्थितावित्थशालादीनपरेजगुः ॥ ३५ ॥

प्रकारांतरसे एक राशिस्थ शीघ्रमंद ग्रहोंके मुथशिल कहते हैं, कविता, "मेषस्थेऽब्जे शनिना कर्कस्थे भूभुवा स्त्रिया । मकरस्थेन गुरुणा सहमनिस्थज्ञं न शुभं च॥१॥" यह आर्याछंदका भेद समरसिंहकृत है । जिसका प्रतीक मेषस्थेऽब्जे शनीत्यादि. आचार्यने कहा है,अर्थ इसका यह है कि, मेषके चंद्रमा और शनि परस्पर अंशोंसे मुथशिल हो तो मध्यमाधम कंबूल अशुभ फल कर्त्ता होता है यहां चंद्रमा मेषमें स्वगृहोच्चाधिकारी भाव है, परंतु स्वीय नवांशमें है और शनि नीचका हुआ ऐसे इस योगकी प्राप्ति हुई १ और चन्द्रमा मंगल कर्कमें इत्थशाली हो तो एक स्वगृह एक नीचका होनेमें उत्तमाधम कंबूल होता है २ तथा चंद्रमा शुक्र कन्यामें परस्पर इत्थशाली हो तो शुक्र नीचका और चंद्रमा कन्यामें अपने अंशपर होनेसे यह मध्यमाधमकंबूल होता है ३ तथा चन्द्रमा बृहस्पति मकरमें परस्पर मुथशिली हों तो बृहस्पति नीचका चन्द्रमा स्वनवांशक होनेसे मध्यमाधमकंबूल होता है ४ तथा चन्द्रमा बुध मीनमें इत्थशाली हो तो बुध नीचका और चन्द्रमा स्वनवांशक होनेसे मध्यम मध्यम

कंबूल होता है,५ये पाचों उदाहरण अशुभफल देनेवाले होते हैं,आचार्यने मेषस्थेऽब्जेत्यादि समरसिंहवाक्यके दृष्टांतसे शीघ्र मंदगतिग्रहोंके एकराशिस्थ होनेमें कहा इत्यादि भेद औरभी होते हैं यह अभिप्राय प्रकट किया है॥ ३५॥

अनु०--तद्युक्तं नीचगस्थनीचेन रिपुणा रिपोः ॥
इत्थशालकार्यनाशीत्युक्तं तत्र यतः स्फुटम् ॥ ३६ ॥

लग्नेश कार्येश और चन्द्रमा नीच वा शत्रुराशिमें हो तो इत्थशाल कार्यनाशक कंबूल होता है यह पूर्वोक्त वाक्य और आचार्यंतरोक्ति है और यहां कार्यनाशक एक राशिस्थ इत्थशाल भेदभी कहा है तो इसमें अतिव्याप्ति होता है. इसके शंकानिवृत्त्यर्थ आचार्यकृत यह श्लोक है, प्रयोजन है कि, नीचराशिगतग्रह नीचस्थ ग्रहसे और शत्रुराशिस्थ ग्रहसे इत्थशाली हो और चन्द्रमा नीचशत्रुगत इत्थशाली हो तो यह अन्यत्र तो संभव है, परंतु एक राशिस्थ जो होकर अशुभफलकी कंबूल भेद कहे हैं उनमें अयुक्त हैं क्योंकि नीचराशि दो ग्रहकी एक नहीं होती तथा शत्रु-राशि दोकी एकभी यहां असंभव है,जहां शत्रुता होगी तहां दृष्टि न होगी दृष्टि विना इत्थशालही नहीं होता है,यद्वा लग्नेशकार्येशकी परस्पर दृष्टिहोनेमें बीचवाले किसीग्रहके दोनहूंके समीपांशवर्ती होनेसे इत्थशाल संभावना मानी जाय तो इस प्रकार होनेमें नक्तयोग ही होगया, यद्वा दोनहूंके बीच तीसरा एकसे तेज लेकर दूसरेको देता है, यह माना जाय तो यमया योग होजाता है, ऐसी ही शनि मंगलसे मणउं योगभी संभव है तो प्रथम भिन्न राशिगत चतुर्थ सप्तम दृष्टेत्यादि स्पष्टही कहा है अब मेषस्थेऽब्जेत्यादि दृष्टांतको अंगीकार नहीं करते तो उक्तनक्तादि योगोंमें व्यत्यास पडता है तस्मात् सभी योगोंमें मुथशिल विचार भिन्न राशि वा एक राशिस्थ ग्रहोंका होता ही है यह सिद्धांत हुआ ॥ ३६ ॥

अनु०--लग्नकार्यपयोरित्थशालेऽत्रैकोऽस्तिनीचगः ॥
स्वर्क्षादिपदहीनोऽन्योऽत्रेन्दुःकंबूलयोगकृत् ॥ ३७ ॥

कंबूल योगका भेद और प्रकारभी है कि प्रथम लग्नेश कार्येशमेंसे एकभी अपने अधिकारमें होकर मुथशिली होनेसे सम कहा, जो लग्ना-

धीश वा कार्येश एक नीच राशिमें हो और दूसरा स्वक्षादि पदहीन अर्थात् समद्रेष्काणादिकोंमें हो और चन्द्रमाभी पदहीन हो इन तीनहूंका परस्पर मुथशिल हो तोभी कंबूल योग होता है ॥ ३७ ॥

अनुष्टु०--तत्र कार्याल्पता ज्ञेयायथा जात्यन्यमर्थयन् ॥
अन्यजातिपुमानर्थं तथैतत्कवयो विदुः ॥ ३८ ॥

इस कंबूल भेदका फल दृष्टांतसहित कहते हैं कि जैसे एक जाति दूसरे जातिवालेसे याचना करके स्वल्पलाभी होता है. तैसेही यह कंबूलभी स्वल्पलाभ देता है प्रकट यह है जो यजमान ब्राह्मणको आपही बुलायकर देगा, तो उसकी इच्छानुकूल देगा जो ब्राह्मण आपही जायकर मांगेगा तो यजमान स्वल्प ही देगा, ऐसा फल इस कंबूलका कविजन कहते हैं ॥३८॥

अनुष्टु०--यस्याधिकारः स्वर्क्षादिशुभो वाऽप्यशुभोऽपि वा ॥
केनाप्यदृश्यमूर्तिश्च स शून्याध्वग इष्यते ॥ ३९ ॥

अब गैरिकंबूलके लक्षणके लिये प्रथम शून्य मार्गगत ग्रह लक्षण कहते हैं कि, जो ग्रह स्वगृह वा स्वोच्च वा स्वद्रेष्काण स्वनवांशमें कोई भी शुभाधिकारी नहीं है तथा नीच शत्रु राश्यादि अशुभाधिकारी भी नहीं है, तथा (पदहीन) समद्रेष्काण हद्दा नवांशाधिकारीभी नहीं है और उसपर पाप वा शुभ किसी ग्रहकी दृष्टि नहीं हो तो वह ग्रह शून्याध्वग कहाता है॥३९॥

अनुष्टु०--लग्नकार्येशयोरित्थशालेशून्याध्वगःशशी॥उच्चादिपदशून्यत्वान्नेत्थशालोऽस्यकेनचित्॥४०॥यद्यन्यर्क्षप्रविश्यैषस्वक्षोंच्चस्थेत्थशालवान् ॥ गैरिकंबूलमेतत्तुपदोनेनाशुभंस्मृतम् ॥४१॥

चन्द्रमा शून्य मार्ग हो और लग्नेश कार्येश एक वा दोनहूं ऐसेही शून्याध्वग हो चन्द्रमा इनसे इत्थशाली तो न हो किंतु चन्द्रमा राश्यंतर अर्थात् दूसरी ऐसी राशिमें प्राप्त होनेवाला हो कि वहराशि जिसका स्वगृह वा जिसका उच्च हो वह ग्रह उसीमें बैठा हो. अंशोंमें ऐसा हो कि चंद्रमा प्रवेश करतेही उस ग्रहसे इत्थशाली होजाय, इस प्रकार होनेमें गैरिकंबूल योग होता है यहभी कंबूल भेदके तुल्य फल देता है, दूसरे जो अन्य राशिस्थ

शून्याध्वग चंद्रमा उसी राशिस्थित शून्याध्वग ग्रहसे इत्थशाली हो तो यह गैरिकम्बूल अशुभ फल देता है. यह गैरिकम्बूल पारसीय पद (गैरकबूल) अंगीकार न करनेका अर्थ कबूलका विपरीत अशुभ ही है यहां जो कम्बूल भेदके तुल्य फलदेना एक पक्षका है इसमें राश्यंत राश्यादिवर्तमान इत्थशाल भाव प्राप्त होनेसे तद्वत् हुआ, अगैरिकलम्बू गैरकम्बूलही है, यह ताजिकवेत्ता आचार्योंका सम्मत है ॥ ४० ॥ ४१ ॥

अनुष्टु०--लप्स्ये सुखमिति प्रश्ने सिंहलग्नेऽरविः क्रिये॥ अष्टांशैः सुखपः कुंभे भौमोंऽशै रविभिस्तयोः ॥ ४२ ॥ इत्थशालोऽस्ति तत्रेन्दुः कन्यायां चरमेंऽशके॥स्वर्क्षादिपदहीनस्य नेत्थशालोऽस्य केनचित् ॥ ४३ ॥ स्वस्वोच्चगेन शनिनाऽन्यर्क्षस्थेनेत्थशालकृत् ॥ गैरिकंबूलमन्येन सहायाल्लाभदायकम् ॥ ४४ ॥

गैरकम्बूलका उदाहरण,सुखप्राप्ति प्रश्नमें सिंह लग्न लग्नेश सूर्य मेषके आठ अंशपर नवम स्थानमें, कार्येश मंगल सप्तम कुम्भके १२ अंशपर है, इनका परस्पर मुथशिल है, अब इस योगमें चन्द्रमा द्वितियभावमें, कन्याके अन्त्य२९ अंशपर पूर्वोक्त प्रकारसे शून्यमार्ग है इसका लग्नेश गैरकम्बूल

गैरिकंबूलम्.



वा कार्येशसे मुथशिल नहीं है परन्तु चंद्रमा तुलाका होनेवाला है, यह राशि शनिका उच्च है शनि यहां तुलाके इत्थशाल योग्य अंशपर है कि, लग्नेश कार्येश सू०मं०के साथ इत्थशाली हो सकता है, अब चन्द्रमा तुलाके होनेपर शनिके साथ इत्थशाली होना चाहता है ऐसा होनेमें शनिका दोनहूंके साथ इत्थशालीका प्रयोजन चन्द्रमाने ग्रहण किया.यह गैरिकम्बूल योग चन्द्रमाके प्रभावसे शनिने किया अर्थात् सुखप्राप्ति फल तीसरे मनुष्यकी सहायतासे होगा, यह प्रथम प्रकार हुआ पुनः लग्न और सभी यथावत् हैं. और तुलामें जैसा शनि पूर्व कहा था वैसा बुधादिकोही ग्रह शून्याध्वग होतो यह गैरिकम्बूल अशुभ फल देता है अर्थात् सुखप्राप्ति नहीं होगी इस उदाहरणमें तुलाके शनिके स्थानमें बुध जानना ॥ ४२-४४ ॥

गैरिकं.



अनुष्टु०--शून्येऽध्वनींदुरुभयो नेत्थशालो न वा युतिः ॥
खल्लासरो न शुभदः कंबूलफलनाशनः ॥ ४५ ॥

चन्द्रमा शून्य मार्गमें हो और लग्नेश कार्येशके साथ इत्थशाली न हो अथवा उनसे युक्तभी न हो तो यह खल्लासर कंबूलके फलका नाशक है, यद्वा अशुभ फल देता है, खल्लासर पारसीय खल्लासर शब्द बलवाची है, "खल्लासरयोगोदाहरण" सिंह लग्न लग्नेश सूर्य मेषर्क तीन अंशपर, पुत्रभावेश बृहस्पति कुंभके पांच अंश-



पर, परस्पर इनका मुथशिल है, चन्द्रमा कन्याके २० अंशमें है यह किसीके साथ इत्थशाल नहीं करता लग्नेश कार्येशके युक्तभी नहीं है यह खल्लासर योग पुत्रप्राप्तिमें बाधा करेगा यह इसका फल है ॥ ४५ ॥

रथोद्ध०--अस्तनीचरिपुवक्रहीनभादुर्बलोमुथशिलं करोति चेत् ॥
नेतुमेषनविभुर्यतोमहोऽतेमुखेऽपि न स कार्यसाधकः॥४६॥

रद्दयोगका लक्षण कहते हैं—रद्द शब्द पारसीय (निकम्मा) निर्बलका पर्याय है जो ग्रह अस्त वा नीच राशिगत वा शत्रुराशिस्थ वा वक्र गति वा (हीनभा) अस्त होनेवाला समीपही उदय हुआ अर्थात् बाल वा वृद्ध हो और उपलक्षणसे (खलस्थान) तत्काल शत्रुस्थान वा पापयुक्त वा क्रूराक्रांत हो यह दुर्बल कहता है, ऐसा निस्तेज ग्रह जब किसीके साथ इत्थशाल करे तो आदि वा अन्तमें इत्थशालका तद्भावजन्यफल नहीं दे सकता, क्योंकि यह निर्बल होनेसे न किसीका तेज आप ले सकता न आपना तेज किसीको दे सकता, इस योगका नाम रद्द योग है ॥४६॥

उपजाति०-केन्द्रस्थआपोक्लिमगंयुनक्तिभूत्वादितोनश्यतिकार्यमंते॥
आपोक्लिमस्थोयदिकेंद्रयातं विनश्य पूर्वं भवतीहपश्चात्॥४७॥

रद्दयोगका लक्षण फलसहित प्रकारांतरसे यह भी है कि जब पूर्वोक्त दुर्बल ग्रहके साथ इत्थशाल कर्त्ता कार्येश ग्रह केंद्रमें हो और लग्नेश दुर्बल कार्येशसे आपोक्लिममें हो तो यह समस्त फल सर्वदा रद्दही न होगा किन्तु प्रथम वह कार्य सिद्ध होकर अन्तमें नष्ट हो जायगा यहां आपोक्लिम कहेसे तीसरा और नवमस्थान लिये जाते हैं६।१२स्थानोंमें दृष्टि न होनेसे इत्थशाल योगकी सम्भावना ही नहीं जो कार्येश दुर्बल होकर आपोक्लिम स्थानमें बैठा केन्द्रस्थानगत लग्नेशके साथ मुथशिल कर्त्ता हो तो उक्त भावोत्थ कार्योंको प्रथम नष्ट करके पश्चात् उस कार्यकी सिद्धि करदेगा, रद्दयोग का

प्राक्शुभपश्चादशुभरद्द.



प्रथमोदाहरण, मेषलग्न लग्नेश मंगल भाग्येश बृहस्पति और सूर्य शनि छठे स्थानमें कन्याके १०।१० अंशमें है यहां लग्नेश कार्येश अस्तंगत और पापयुक्त तथा छठे स्थानमें होनेसे यह रद्द योग हुआ, फल भाग्यप्रश्न था भाग्यनाश होगा यद्वा दूसरा उदाहरण, यही मेषलग्न लग्नेश बारहवां मंगल दुर्बल और भाग्येश बृहस्पति मकर नीचका

प्राक्शुभपश्चाच्छुभरद्द.



दश अंशमें है यहां शीघ्र मंगल आपोक्लिममें बैठकर केन्द्रस्थ मन्दगति गुरुके साथ इत्थशाली होनेसे यह रद्दयोग प्रथम अशुभ पश्चात् शुभ फल कार्त्ता है यद्वा तीसरा उदाहरण शीघ्र ग्रह निर्बली केन्द्रमें कर्कके दश अंशपर नीचका मंगल और कार्येश बृहस्पति आपोक्लिम बारहवें स्थानमें है मंगल बृहस्पतिसे इत्थशाली है यह रद्दयोग पूर्व शुभ फल पश्चात् अशुभ फल करता है ॥ ४७ ॥

रद्दोदाहरणम्.



उपजाति--मंदःस्वभोच्चादिपदेस्थितश्चेत्पदोनशीघ्रेणकृतेत्थशालः ॥
तत्रापिकार्यंभवतीतिवाच्यंवक्रादिनिर्वीर्यपदेनचेत्स्यात् ॥ ४८ ॥

दुष्फाली कुत्थयोगका लक्षण कहते हैं--जब मन्दगति ग्रह अपनी नीच राशि वा उच्च स्वद्रेष्काण स्वहद्दा नवांशकमें हो और शीघ्रग्रह पदोन अर्थात् स्वभोच्चादि शुभाधिकाररहित इत्थशाली हो तो भी कार्यसिद्धि कठिनसे होजायगी कहना किंतु शीघ्रग्रह अस्त नीच शत्रु वक्र और बाल वृद्ध निर्बल स्थानस्थित होकर इत्थशाली हो तो अनिष्ट फल कहना यह दुष्फाली कुत्थयोग है, पारसीय दुष्फालीशब्द दुःसाध्य और कुत्थशब्द शुभवाची है, दुष्फालीकुत्थ दुःसाध्य शुभवाचक है, उदाहरण, सौख्य प्रश्नमें मेषलग्न लग्नेश मंगल लग्नमें मेषके बारह अंशपर सुखभावेश ग्यारहवाँ कुम्भके दश अंशपर चन्द्रमा इत्थशाली है, मंगल पदयुक्त और चन्द्रमा पदहीन है, ऐसा दुष्फालीकुत्थयोग हुआ सुखप्राप्ति यत्नसे करता है ॥ ४८ ॥

दुःफालिकुत्थयोग.



इंद्रव०--वीर्योनितौकार्यविलग्ननाथौस्वर्क्षादिगैर्नान्यतरोयुनक्ति॥
अन्यौयदाद्वौबलिनौतदान्यसाहाय्यतःकार्यमुशंतिसंतः ॥४९॥

दुत्थोत्थदिवीरयोगका लक्षण कहते हैं--लग्नेश कार्येश दोनहूं बलहीन (अस्तनीचरिपुवक्रहीनभा) इत्यादिसे हों परस्पर इत्थशाली भी हों और इनमेंसे शीघ्रग्रह अपनेसे मन्दगतिवाले किसी अन्य तीसरे स्वक्षादि बलयुक्त ग्रहसे युक्त हो, विशेषतः मुथशिली भी हो तो अन्यद्वारा कार्य

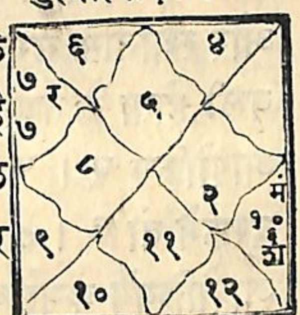
सिद्धि होगी, अथवा अन्य कोई स्वर्क्षादि पदयुक्त हो ग्रह शीघ्रगति हों और लग्नेश वा कार्येश हीनबलीसे युक्त हो वा मुथशिल करें तोभी किसी औरकी सहायतासे कार्य सिद्ध होगा. यह सज्जनोक्ति है, " उदाहरण " स्त्रीलाभ प्रश्नमें सिंहलग्न लग्नेश सूर्यं नीचराशी तुलामें,कार्येश सप्तम भावका स्वामी शनि नीच राशि मेषका है, अथवा राश्यंतरमें वक्री है तात्पर्य यह है कि

डुत्थोत्थदिवीरयोग.



दोनहूं निर्बल हैं इनमेंसे शनि मंगलसे युक्त है यह स्वगृही होनेसे बलवान् है,लग्नेश कार्येशके निर्बल होनेसे कार्यसिद्धि नहीं होनी थी. परंतु बलवान् मंगल तीसरे ग्रहसे भी युक्त होनेसे दूसरेकी सहायतासे स्त्रीप्राप्ति होगी कहना १ अथवा दो शीघ्र ग्रह सूर्य मंगल मेषमें

डुत्थोत्थदिवीरयोग.



अपने २ उच्च स्वगृह होनेसे बलवान् हुए शनिके साथ दोनहूंके इत्थशाल करनेसे योग होजाता है पूर्वोक्तही फल देता है. यह अंश कल्पना मुथशिल योग्य करनी. इस योगका नाम दुत्थोत्थदिवीर पारसीय शब्द है ॥ ४९ ॥

अनु०--बलीराश्यंतगोऽन्यर्क्षगामीदीप्तांशकैर्ग्रहः ॥
दत्तेऽन्यस्मै कार्यकरस्तंबीरोलग्नकार्यपोः ॥ ५ ॥

तंबीरयोगके लक्षण कहते हैं.जब लग्नेश कार्येश किसी स्थानोंमें हों इनका परस्पर इत्थशाल न हो.परंतु इनमेंसे कोई राश्यंतगत हो और जिस राशिको गंतव्य है उसमेंसे कोई अन्यग्रह बलवान् और इत्थशाल संबंधी अंशोंपर हों. वस्तुतः इसके साथ वह भविष्य इत्थशालकारी हो तो वह तीसरेको तेज देता है यह तंबीरयोग हुआ. फल इसका कार्यसाधक है,

तंबीरयोग.



"उदाहरण" सुखप्राप्ति प्रश्नमें तुला लग्न लग्नेश शुक्र कर्कके दश अंशमें सुखभावेश शनि कुम्भके उनतीस अंशपर है. इनका इत्थशाल नहीं है, परंतु बृहस्पति मीनके पाँच अंशपर है इसको शीघ्रगति शनि कुम्भके २९ अंशपर मीनको गंतव्य होनेसे और बृहस्पतिके साथ भविष्य मुथशिल करनेसे अपना तेज बृहस्पतिको देता है यह भी कार्यसाधक योग है. सुखप्राप्ति करेगा ॥ ५० ॥

उपजा०--लग्नेऽथकेन्द्रेनिकटेऽपिवास्यविलग्नदर्शीस्वगृहोच्चहक्के॥
मुशल्लहेस्वेनिजहद्दगो वा बलीग्रहोमन्दगतिस्त्वशीघ्रः ॥ ५१ ॥

पन्द्रहवां कुत्थयोगका लक्षण, कुत्थ पारसीय शब्दसे बली ग्रह लिया जाता है वह बहुत प्रकारका है. इस कारण प्रथम बलवत्ता कहते हैं कि और स्थानोंसे लग्नगत ग्रह बली तदभावमें अन्य केंद्रगत ४ । ७ । १० बली होता है तथापि लग्नकी अपेक्षा न्यून ही होता है इससे भी पणफर आपोक्लिम २ । ५ । ८ । ११ । ३ । ६ । ९ । १२ । में न्यून होता है दुरफमें तो ६ । ८ । १२ स्थानोंमें निर्बली कह दिया है. केंद्र पणफर आपोक्लिममें क्रमसे बल न्यून होता है और लग्नदर्शी तथा स्वोच्च स्वद्रेष्काण स्वनवांश स्वहद्दामें ग्रह बली होता है तथा मध्यगति (नंदाक्षा भुजगारवेः) इत्यादि पूर्वोक्त मध्यगतिपर जो ग्रह हो वह बलवान् और अल्पगति उससे न्यूनबली विशेष गति अधिक बली होता है. इसमें युक्ति यह है कि लग्नगत ग्रह पूर्ण (६०) बली, पणफरमें आधा (३०) आपोक्लिममें चरण (१५) वीर्य होता है, संधिमें अनुपात करना तब लग्नदर्शी ग्रह "अपास्य पश्यन्निजदृश्यखेटेत्यादि" से पूर्ण पापदृष्टिसे पादोन इत्यादि. तथा स्वगृही ग्रह पूर्णवीर्य स्वगृहसे सप्तममें निर्वीर्य और अंतरमें त्रैराशिक विधिसे बल लेना. दुरफमें स्वगृही ७ भाव बल पावै इत्यादि अतरका त्रैराशिक उच्चबल विधिवत् करना. सूर्य चंन्द्रमाके एक गृह होनेसे

यही हो गया भौमादियोंके दो राशि गृह होनेसे अपने गृहसे सप्तम गृह शोधके ६ से न्यून हो तो वही रखना, ६ से अधिक हो तो बारहमें शुद्ध करलेना उपरांत उसके अंशादिमें ३० का भाग लेना लब्धिकलादि फल होगा, यह संप्रदाय युक्त है, यहभी स्मरण चाहिये कि स्वगृहारंभमें पूर्ण बल (६०) और उसके सप्तम भावारंभमें० अंतरमें अनुपात जैसे १ राशि षष्ट्यंश १८० से पूर्ण ६० बल मिलता है तो असुक इष्टराशिसे कितना मिलेगा, यहां ६० से अपवर्त्तन करदिया तो गुणक १ भाजक ३० हुआ इत्यादि १ उच्चबल पूर्वोक्त ही है २ द्रेष्काणारंभमें ५ बल और समाप्तिमें पूर्ण १० और समाप्त होही गया तो० शून्यबल होता है. जैसे द्रेष्काण भुक्त भोग्यांशोंका अंतर अंशादि बारहसे गुनकर बल मिलता है पांच अंशसे ६० है तो शेषसे कितना इत्यादि ३ ऐसाही मुशल्लहमें और हद्दामें भी जानना. गतिबलके निमित्त सूर्य चन्द्रमा नित्य शीघ्र होनेसे गति बल तुल्य है, भौमादियोंके ५ होता है इति ॥ ५१ ॥

उ०जा०--कृतोदयोमार्गगतिःशुभेनयुतेक्षितःक्रूरखगस्यदृष्ट्या॥
क्षुताख्ययानाधिगतोनयुक्तःक्रूरेणसायंचसितेंदुभौमाः ५२॥

और प्रकारसे बलवत्ता कहते हैं, कि जो ग्रह उदय हुआ है जो मार्ग गति अर्थात् वक्र होकर मार्गी हुआहै जो शुभ ग्रहयुक्त वा वीक्षित है और जिसपर क्रूर ग्रहकी क्षुत १० । ४ । ७ । १ दृष्टि है तथा जो क्रूरयुक्त नहीं है, वह बलवान् होता है,समय बलके निमित्त 'सायंचसितें दुभौमाः' इस पदका अर्थ आद्यश्लोकमें कहेंगे. यहां बलगणनेकी विधि यह है कि उदय बलके वास्ते उदयदिनमें पूर्ण ६० बल अस्तादिनमें ० शून्यबल होता है अंतर दिनको अनुपात करना. जैसे उदय दिनसे अस्तादिन पर्यंत जितने दिन है उनका आधा करके जो उसमें ६० बल होता है तो इष्ट दिनोंमें कितना होगा यह त्रैराशिक विधि है. १ मार्गगति ग्रहका बल पूर्ववत् ही जानना, २ शुभयुक्त बलके लिये उसके समान-लिप्तापर्यंत हो तो ६० बल न्यूनाधिक हो तो दोनहूंका अंतर करना वह अंश ३० से न्यून होगा पुनः वे अंशादि दुगुण करनेसे बल होता है ३

शुभ दृष्टि बल दृश्य ग्रहकी पूर्वोक्त प्रकार दृष्टिमें उसकी चौथाई घटायके दृष्टिबल होता है, ४ ऐसेही औरभी जानने ॥ ५२ ॥

उ०जा०--यदोदयंतेपररात्रिभागे जीवार्कजावह्निनराःसवीर्याः ॥ अन्ये निशीनस्यनचैकभागे स्थिताः स्थिरर्क्षेचबलेनयुक्ताः५३॥

शुक्र चंद्रमा मंगल सायंकालमें उदय हो तथा बृहस्पति शनि अर्द्ध रात्रिसे उपरांत, जिस समयमें उदय हों तथा पुरुष ग्रह सूर्य भौम बृहस्पति, दिनमें स्त्री ग्रह चंद्रमा बुध शुक्र शनि रात्रिमें तथा स्थिर राशि २ । ५ ८ । ११ में जो ग्रह हो, इतने सभी बलवान् होते हैं.बलानयन प्रकार है कि सायं समयोदयी शुक्र तो होताही नहीं चन्द्र भौमका व सूर्य स्पष्टका अंतर करके उसमें छः घटाय देना शेषके अंश करके तीनसे भागलेना लाभबल होगा यहां भी पूर्णबल साठही है उत्पत्ति उच्चबल तुल्य है शुक्र-के व सूर्यके अंतर करके छःसे गुनदेना पांचसे भागदेना लाभ बल शुक्रका होगा इसकी उपपत्ति, जो पचास अंशोंसे ६० बल मिलता है तो इष्टांशके कितना यह त्रैराशिक है, इनमें १० से अपवर्त्तन करके गुणक ६ भाजक ५ होताहै १ अपररात्रिस्थ बृहस्पति शनि बल निमित्त जब अर्द्धरात्रोत्तरका इष्ट हो तो अर्द्धरात्रिसे तीसरे प्रहर पर्यंत क्रमसे बल पूर्ण और तीसरे प्रहरसे क्रम करके चौथे प्रहर होनेमें बल शून्य होजाता है, अर्द्धरात्रिसे उपरांत इष्ट काल हो तो उसमें रात्र्यर्द्ध घटाय-देना तीसरे प्रहर उपरांत हो तो रात्रिमानमें घटाय देना शेष साठसे गुना-कर प्रहर प्रमाण घट्यादिसे भागलेना लब्धि गुरु शनिका बलहोगा २ दिवाग्रहबल विधि यह है कि जो इष्टकाल प्रातः कालसे मध्याह्नके भीतर हो तो दिनगत लेना मध्याह्नोत्तर सायंकालके अंतर हो तो दिनशेष लेना उसे ६० से गुनाकर दिनार्द्धसे भागलेना दिवाबल ग्रहोंका बल मिलेगा उपपत्ति यह है कि जब दिनार्द्धमें ६० बल मिलता है तो दिनगत वा दिन-शेष अमुक संख्यासे कितना मिलेगा ३ इसी विधिसे रात्रि बली ग्रहोंका बल रात्र्यर्द्धसे मिलता है ४ । सूर्यके भावबलविधि यह है कि ग्रहमें सूर्य घटाय देना, शेष अंशादि त्रिगुना करके ६० से शुद्ध करना बल

होता है इसमें सूर्यके प्रवृत्ति निवृत्तिके २० अंश है इनमें ६० बल मिलता है तो पूर्वोक्त अंतरसे कितना मिलेगा. गुणक भाजकके २० से अपवर्त्तन करके गुणक तीन भाजक१एक होता है. ५स्थिर राशि बल यह है कि राशिके आरंभमें बलका आरंभ १५ अंशमें पूर्ण ६० पंद्रह अंशमें ३० तो शून्यबल क्रमसे घटता बढता है ग्रहराशिके पूर्वार्द्धमें हो भुक्तांश उत्तरार्द्धमें हो तो भोग्यांश लेने वही चतुर्गुणा करके बल होता है अनुपात यह है कि १५ अंशमें पूर्ण ६० बल होता है तो भुक्त वा भोग्यांशोंसे कितना होगा ६ किसीका मत यह है कि ग्रह राश्यादिमें पूर्ण बली मध्यमें मध्य अन्तमें शून्य बली क्रमसे होता है, तो ग्रहके अंशादि ३० से शुद्ध करके शेष द्विगुण करना वही बली होता है "अनुपात" जो ३० अंशके पूर्ण बल ६० मिलता है तो ग्रह भोग्यांशों-से कितना मिलेगा यहां दोनहूंमें ३० से अपवर्त्तन करके शेष द्विगुण बल होगा, यह अर्थयुक्त है ॥ ५३ ॥

उपेंद्रव०—स्त्रियश्चतुर्थात्पुरुषावियद्वाद्वषट्कगाओजभगाःपुमांसः॥
समेपरेस्युर्बलिनोविमृश्यविशेषमेतेषु फलंनिगद्यम् ॥५४॥

और प्रकारसे बल कहते हैं कि स्त्री ग्रह च. बु. शु. श. चतुर्थ भावसे दशम पर्यंत छः स्थानमें और पुरुष ग्रह सू. मं. बृ. दशमसे चतुर्थ पर्यंत बली होते हैं तथा विषम राशियोंमें पुरुष ग्रह सम राशियोंमें स्त्री ग्रह बली होते हैं यहा स्त्रीग्रह चतुर्थसे दशम और पुरुषग्रह दशमसे चतुर्थ पर्यंत,सभी भावोंमें तुल्यही बल पाते हैं यही उपपत्ति है और विषम सम राशिगत पुंस्त्री ग्रहोंका बल स्थिर राशिसंस्थ ग्रहवत् पूर्वोक्त प्रकारसे जानना इतने प्रकार बलाबल कहनेका प्रयोजन यह है कि इत्थशाल कर्त्ता वा इत्थ-शाल करना चाहता ग्रह उक्त प्रकारोंसे जैसेमें हो वैसाही फल कहना. यहां उक्त बल भेदोंमेंसे किसी प्रकार बली जो इत्थशाली ग्रह है उसीको कुत्थ योग कहते हैं न कि कुत्थ शब्दसे बली ग्रह लिया जाता है ॥५४॥

स्रग्धरा—लग्नात्षष्ठांत्यमेंत्येऽनृजुररिगृहगो नीचगो वक्रगामी
क्रूरैर्युक्तोऽस्तगोवायदिचमुथशिलीकुरनीचारिभस्थैः ॥

क्षुद्दृष्ट्याक्रूरदृष्टो व्ययरिपुमृतिगैरित्थशालंविधित्सुः
कुर्वन्वानिर्बलोऽयंस्वगृहनभगोराहुपुच्छास्यवर्त्ती ॥ ९६॥

उपजा०-अनीक्षमाणस्तनुमस्तभागस्थितः स्वभोच्चादिपदैश्चशून्यः॥
क्रूरेसराफी न स वीर्ययुक्तः कार्यं विधातुं न विभुर्यतोऽसौ ॥९६॥

अब सोलहवें दुरफ योगका लक्षण कहते हैं पारशीय दुरफ शब्द निर्बलवाची है यह निर्बलता बहुत प्रकार होती है इसलिये निर्बलप्रकाश प्रथमश्लोकसे यह है कि वर्ष प्रश्न वा दिन लग्नसे जो छठे आठवें बारहवें स्थानमें हो तथा गतिरहित यद्वा शत्रुराशिस्थ नीचराशिगत वक्रगतिवाला तथा पापयुक्त और अस्तंगत ग्रह यद्वा जो शत्रु ग्रहसे वा नीचशत्रुराशिगत ग्रहसे इत्थशाली हो और जिस पर पापग्रहकी क्षुत दृष्टि ४ । १० । ७ । १ हो और छठे आठवें बारहवें स्थानगत ग्रहसे जिसका इत्थशाल हो वा करना चाहता हो यद्वा अपनी राशिसे सप्तम राशिमें हो तथा राहुके पुच्छवा मुखमें हो राहुके भुक्तांस पुच्छ भोग्यांश मुख होता है इतने प्रकार युक्त ग्रह निर्बल होता है. इसके निर्बलांक गणितकी पूर्ववतही विधि है. जैसे शत्रुराशिगतका स्थिर राशिगत ग्रह तुल्य विधिसे करना वक्रग्रहके लिये वक्रदिनोंमें पूर्ण फिर क्रमसे पूरे दिनोंमें शून्य होता है, मध्य दिनोंसे पूर्ण (६०) मिलता है तो इष्टदिनोंमें कितना मिलेगा इति । तथा क्रूर युक्त ग्रह नौ अंशके भीतर शून्य उपरांत भाव फलके तुल्य बल लेना, अस्तग्रहको उदित ग्रहवत् विधिसे त्रैराशिक करना, उपरांत भाव फलके तुल्य बल लेना ॥ ५५ ॥ और प्रकार अशुभ बल प्रकार कहते है कि जो ग्रह लग्नेश नहीं देखता वह निर्बल होताहै जिस भावमें जिस ग्रहकी दृष्टिका भाव है उसमें गणितसे जो कुछ अंकपाया है वह उसके आगेके भावके अंकपर घटाय देना शेष अशुभ दृष्टि होती है१ तथा अस्तंगत सूर्य जिस नवांशकमें है उससे सप्तम नवांश जो हो वह निर्बल होता है. पूर्वविधि से जो बल अस्तका आता है

उसे ६० में शुद्ध करके अशुभ बल होता है, किसीका मत है कि सूर्य जिस राशिनवांशमें अस्त होता है उसमें वर्त्तमान ग्रह निर्बल होता है परंतु जिस दिन सूर्य उदयनवांशमें अन्यमें अस्त हो उस दिन यह विचार है सूर्य तो सर्वदा उदयनवांशमें अस्त होता है कदाचित् बदलता है २ तथा स्वगृह उच्च हद्दा द्रेष्काण नवांश संज्ञक पदोंसे रहित ग्रह निर्बल होता है यहभी स्वगृहादियोंका शुभ बल जो पूर्व कहा गया है उसे ६० में शुद्ध करनेसे अशुभ बल होता है और (क्रूरेसराफी) ईसराफ योग पूर्व कहा गया है, जो ग्रह पाप ग्रहके साथ ईशराफी अर्थात् शीघ्र घन भाग मन्द अल्प भाग हो तो यह अपना तेज दूसरेको नहीं देसकता इसकारण यहभी निर्बली होता है मन्दग्रहसे पीछे शीघ्रग्रह स्वदीप्तांशोंके अन्तर हो तो शून्य बल इसके उपरांत क्रमसे मन्दग्रहोंके अंशोंके समान होनेपर पूर्ण बली होता है, बीचमें हो तो अनुपात जैसे यदि दूसरेको नहीं देसकता इस कारण यहभी निर्बली होता है मन्दग्रहसे पीछे शीघ्र अमुक दीप्तांशोंके पूर्ण (६०) बल मिलता है तो दीप्तांशोंमें भुक्त अंशोंका कितना मिलेगा ऐसाही ईशराफकीभी रीति है, इत्थशाली ग्रह इत्युक्त प्रकारोंमें किसी प्रकारसे निर्बल हो तो इत्थशालोक्त फल नहीं देता; इसका नाम दुरफ योग है ॥ ५६ ॥

शालि०--चन्द्रःसूर्याद्द्वादशेवृश्चिकाद्येखंडेनेष्टोऽन्तेतुलायांविशेषात् ॥
राशीशेनादृष्टमूर्त्तिर्नसर्वैर्दृष्टो ज्ञेयः शून्यमार्गः पदोनः ॥ ५७ ॥

सब ग्रहोंके दुरफ कहने उपरांत केवल चन्द्रमाका दुरफ कहते हैं कि जो सूर्यसे बारहवें स्थानमें चन्द्रमा हो तो निर्बल होता है तथा वृश्चिकके पूर्वार्द्ध १५ अंशपर्यंत और तुलाके उत्तरार्ध १५ अंश उपरांत तद्वत् चन्द्रमा जिस राशिमें है उसका स्वामी इसको न देखे, तथा चन्द्रमाको कोई ग्रह न देखे तथा शून्याध्वग अर्थात् स्वोच्चादि शुभाधिकाररहित हो तो इतने प्रकारसे चन्द्रमा निर्बलहोता है. ग्रन्थांतरोंमें चन्द्रमाके निर्बल होनेके दश प्रकार ये हैं कि नीचगत १ नीचस्थ ग्रहसे मुथशिली २ सूर्यके समीप १२ अंशके अभ्यंतर ३ (राहुमुख) राहुके भोग्यांशोंमें ४ पापग्रहके साथ १२ अंशके

भीतर ५ अपनी राशिमें सप्तम मकरका ६ धन राशिमें धननवांशका-अपनी राशिसे सप्तम राशिमें ग्रह निर्बल होता है, जो कहा वह उसमें पूर्व राशिके एक नवांशको लेकर होता है ७ अस्तंगतके ८ अस्तंगतके साथ मुथशिली ९ शत्रुक्षेत्रगत १० इतने प्रकारोंसे चन्द्रमा निर्बल होता है ॥ ५७ ॥

शालि०-क्षीणोभांतेनोशुभोजन्मकालेपृच्छायांवाचंद्रएवंविचिंत्यः ॥ शुक्ले भौमःकृष्णपक्षेऽर्कसूनुःक्षुद्दृष्ट्येंदुंवीक्ष्यतेनोशुभोऽसौ॥५८॥

और चन्द्रमा कृष्ण पक्षकी एकादशीसे शुक्लकी पंचमी पर्यंत तथा राशिके अत्यन्त २६ । ४० अंशसे ऊपर अर्थात् नवम नवांशकमें (क्षीण) अशुभ होता है यह विचार जन्मकाल वा प्रश्नादिमें करना तथा मंगल शत्रु दृष्टि ४ । १० । ७ । १ से शुक्ल पक्षके चन्द्रमाको देखे और शनि ऐसी दृष्टिसे कृष्ण पक्षके चन्द्रमाको देखे तो वह चन्द्रमा संपूर्ण कार्योंमें अशुभ होता है ॥ ५८ ॥

वसंततिलका०--शुक्लेदिवानृगृहगोऽर्कसुतःशशांकं कृष्णे कुजोनिशि समर्क्षगतःप्रपश्येत् ॥ दोषाल्पतां वितनुतेऽपरथाबहुत्वं प्रश्नेऽथवाजनुषिबुद्धिमतोहनीयम् ॥ ५९ ॥

जो शुक्लपक्ष और दिनमें (पुरुष राशि) विषम राशिमें बैठा शनैश्चर चन्द्रमाको देखे तथा कृष्णपक्ष और रात्रिमें (समराशि) स्त्री संज्ञकराशिमें बैठा मंगल इसे देखे तो चन्द्रमाका पूर्वोक्त (दुरफ) निर्बलताका दोषन्यून हो जाता है इस प्रकार श. मं. की दृष्टि न होनेमें दोष प्रबलही रहता है यह विचार जन्म तथा प्रश्न उपलक्षणसे वर्षादियोंमें विचारना चाहिये, इनें दोनहूंको (कुत्थ) बलवान् और (दुरफ)निर्बल योग सभी ग्रहोंके सर्वदा विचारने चाहिये. इन दोनोंका बल उक्त प्रकारसे गिनकर इनका अन्तर करना जो कुत्थ बल अधिक हो तो वह ग्रह अशुभ स्थानमेंभी शुभ देता है वह शुभ स्थानमें अत्यन्तही शुभ देता है जो दुरफ बल अधिक हो तो वह ग्रह शुभ स्थानमेंही अशुभ फल देता हैं अशुभ स्थानमें अत्यन्त अशुभ देता है यह बलतारतम्यसे फल सब विचारना. इति १६ योग स०॥५९॥

अथ हर्षबलायनम् ।

उ० जा०--नन्दत्रिषट्लग्नभवर्क्षपुत्रव्ययाइनाद्धर्षपदंस्वभोच्चम् ॥
त्रिभंत्रिभंलग्नभतः क्रमेण स्त्रीणां नृणांरात्रिदिनेचतेषाम् ॥६०॥

अब सामान्यतासे चार प्रकार हर्षस्थान कहते हैं कि सूर्य नवम स्थानमें चंद्रमा तीसरे मंगल छठेमें बुध लग्नमें बृहस्पति ग्यारहवें शुक्र पंचम शनि बारहवेंमें हर्षबल पाते हैं १ दूसरा सूर्यादि ग्रह अपने २ उच्च तथा अपनी २ राशिमें हर्ष बली होते हैं २ तीसरा जैसे १।२।३ भावोंमें स्त्री ग्रह ४।५।६ में पुरुष ग्रह तथा ७।८।९ में स्त्री ग्रह १० । ११ । १२ में पुरुष ग्रह ३ चौथे रात्रिमें स्त्री ग्रह दिनमें पुरुष ग्रह बल पाते हैं ४ यह बल प्रश्न और जन्म वर्षादियोंमें भी विचारना. इनका न्यास चक्र बनायके जिस स्थानमें जो ग्रह बल पावे उसके उस संज्ञाके कोष्ठमें ५ अंक

कुण्डली वर्ष.



हर्षबलचक्रम् ।

श्री०	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
स्थान	०	०	०	०	०	०	०
स्वरा०	०	०	०	०	०	०	०
स्वोच्च	५	०	०	[illegible]	०	५	०
स्त्री.पु.	०	०	०	५	५	०	५
स.दि	५	०	०	०	५	०	०
योग.	१०	०	०	५	१०	५	५

लिखना और स्थानोंमें शून्य करदेना पीछे सबका योगकरना. जैसे कोई ग्रह एक स्थानमें बल पावे तो५ यही योग हुआ दोनोंमें बली हो तो१० तीनमें १५ चारोंमें २० योग होगा इसे हर्षविंशोपका बल कहते हैं इसके अनुसार फल कहना बिशेष विचार यह है कि जो पूर्व कुत्थ दुरुफ बल त्रैराशिकसे मिले हैं उनका और हर्षबलको त्रिगुण करके मिलाय देना शुभाधिक हो तो शुभफल विशेष हीनबलाधिक हो तो अंतर करके अशुभ फल विशेष कहना. यह ताजिकशास्त्रवेत्ताओंका संप्रदाय है ॥ ६० ॥

शार्दूल०--श्रीगर्गान्वयभूषणंगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतो
ऽनंतोऽनंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् ॥

तत्सूनुः खलुनीलकंठविबुधोविद्वच्छिवानुज्ञया
योगान्षोडशहर्षभानिच तथा संज्ञाविवेकेव्यधात् ॥ ६१ ॥

प्रथम संज्ञाप्रकरणमें आचार्यने स्वनाम गुणादि प्रकट किये वही इस दूसरे प्रकरणमें भी जानना इतना विशेष है कि षोडशयोग हर्षस्थान इस दूसरे प्रकरणमें कहे है ॥ ६१ ॥ इति महीधरकृतायां ताजिकनीलकंठीभाषाटीकायां ग्रहस्वरूपदृष्टिषोडशयोगहर्षस्थानविवरणनामाध्यायः ॥

इन्द्रवज्राछन्दः–पुण्यंगुरुर्ज्ञानयशोऽथमित्रंमाहात्म्यमाशाच समर्थता च ॥ भ्रातातततोगौरवराजतातमातासुतोजीवितमंबुकर्म ॥ १ ॥ वसंतति०--मांद्यं च मन्मथकलीपरतः क्षमोक्तं शास्त्रंसबंधुसहमंत्वथबंदकंच॥ मृत्योश्चसद्मपरदेशधनान्यदारा स्यादन्यकर्मसवणिक्त्वथकार्यसिद्धिः ॥ २ ॥ अनु०--उद्वाहसूतिसंतापाः श्रद्धाप्रीतिर्बलंतनुः ॥ जाड्यव्यापारसहमे पानीयपतनं रिपुः ॥ ३ ॥ अनुष्टु०--शौर्योपायदरिद्रत्वंगुरुता जलकर्म च ॥ बंधनं दुहिताश्वश्चपंचाशत्सहमानिहि ॥ ४ ॥

अब सहम विचार कहते हैं (सहम) पारशीय पद सद्मवाची है यह समरसिंहमतसे ४८ और यवनादियोंके मतसे ५९ हैं कोई अधिकभी कहते हैं यहां ५० के नाम कहे जाते हैं कि पुण्य १ गुरु २ ज्ञान ३ यश ४ मित्र ५ माहात्म्य ६ आशा ७ समर्थता ८ भ्राता ९ गौरव १० राजा ११ तात १२ माता १३ सुत १४ जीवित १५ जल १६ कर्म १७ मांद्य १८ कामदेव १९ कलह २० क्षमा २१ शास्त्र२२ बन्धु २३ बंदक २४ मृत्यु २५ परदेश २६ धन २७ अन्यदारा२८ अन्यकर्म २९ वणिक् ३० कार्यसिद्धि ३१ विवाह ३२ प्रसूति ३३ संताप ३४ श्रद्धा ३५ प्रीती ३६ बल ३७ तनु ३८ जाड्य ३९ व्यापर ४० पानीयपतन ४१ शत्रु ४२ शौर्य ४३ उपाय ४४ दरिद्र ४५ गुरुता ४६ जलकर्म ४७ बन्धन ४८ दुहिता ४९ अश्व ५० ये तो आचार्य कथित हैं और इनमें परदेश ही मार्ग विवाहही स्त्री ज्ञानही विद्या सहम जानना. और आचर्यमतसे सहम औरभी हैं कि भार्या ५१ मोक्ष ५२ वसु ५३

पितृव्य ५४ क्लेश ५५ गमागम ५६ गज ५७ सन्मति ५८ घात ५९ कोष्ट६० चतुष्पद ६१ व्यसन ६२ कृषि६३ दृष्टि६४ आखेट ६५ भृत्य ६६ अंग ६७ प्राप्ति ६८ निधि ६९ ज्ञाति ७० ऋण७१बुद्धि ७२ आधान७३धैर्य ७४ सत्यक ७५ इतने और भी हैं ॥ १ ॥ २ ॥३॥४ ॥

इन्द्रव०--सूर्योनचंद्रान्वितमह्नि लग्नंवींद्वर्कयुक्तंनिशिपुण्यसंज्ञम् ॥
शोद्धयर्क्षशुद्धयाश्रयभांतरालेलग्नंनचेत्सैकभमेतदुक्तम् ॥ ५ ॥

अब सहमोंकी बनानेकी रीति कहते हैं प्रथम पुण्य सहमके लिये यह है कि,वर्षप्रवेश वा जन्मादि काल दिनका हो तो तात्कालिक स्पष्ट चन्द्रमामें तात्कालिक सूर्य स्पष्ट घटायके तात्कालिक लग्न स्पष्ट जोडदेना, रात्रिका लग्न हो तो सूर्यमें चन्द्रमा घटायके लग्न स्पष्ट जोड देना;यह पुण्य सहमका राश्यादि स्पष्ट होता है, परन्तु जिसमें संस्कार औरभी है, जो ग्रह घटाया जाता है वह शोध्य और जिसमें घटाया जाता है वह शुद्धयाश्रय कहाता है शोध्यर्क्ष और शुद्धयाश्रयके बीच अर्थात् शोध्य ग्रहकी राशिसे शुद्धयाश्रयग्रह स्थित राशि पर्यंत लग्न न हो तो पूर्वानीत पुण्यसहममें एक (१) राशि जोडदेना ऐसा न हो तो जोडना (उदाहरण) सूर्य स्पष्ट राश्यादि ४ । ८ । १० चन्द्र स्पष्ट राश्यादि ६ । १२ । १० लग्न स्पष्ट ।८। १०।१० दिनके वर्ष प्रवेशमें सूर्य चन्द्रमामें घटाया शेष २ ।४।० लग्न जोड दिया तो १० । १४ । १०अब संस्कार है कि शोध्यर्क्ष सिंह८ अंशसे शुद्धयाश्रय तुला१२अंशके भीतर लग्न न होनेसे एक जोड दिया तो ११ । १४ । १० यह पुण्यसहम हुआ,रात्रिका वर्षप्रवेश हो तो उदाहरण सूर्य ८ । ४।१० । में चन्द्रमा ६ । १२ । १० घटाया शेष १ । २२।० लग्न० । १० । ० जोड दिया तो भया २ । २ । ० सूर्यमें चन्द्रमा घटाया इस लिये तुला १२ अंशसे धन ४ अंशपर्यंत लग्न न होनेसे सैक करना इससे ३ । २ । ० यही पुण्यसहम भया शोद्धयाश्रय राश्यंतर लग्न न हो तो राशिमें १ जोडना यह संस्कार सभी सहमोंमें जानना ॥ ५ ॥

उ०जा०-व्यत्यस्तमस्माद्गुरुविद्ययोस्तुसंसाधनंपुण्यवियुक्सुरेज्यः॥
दिवाविलोमंनिशिपूर्ववत्तुयशोभिधंतत्सहमंवदंति ॥ ६ ॥

अब गुरुविद्या और यह सहमके विधि कहते हैं, इनमें गुरु और विद्या, सहम तो पुण्य सहमके विपरीत है जैसे दिनमें सूर्यमें चन्द्रमा घटायके रात्रिमें चन्द्रमामें सूर्य घटायके लग्न जोड देना ' शोद्ध्यर्क्षेत्यादि ' संस्कार करके गुरु और विद्यासहम होते हैं विद्यासहमको ज्ञानभी कहते हैं ३ यश सहमके लिये दिनमें बृहस्पतिमें पुण्य सहम घटायदेना रात्रिमें पुण्य सहममें बृहस्पति घटाय देना शोद्ध्यर्क्षेत्यादि सर्वत्रही है यह यशसहम होता है ॥ ६ ॥

रथोद्ध०–पुण्यसद्मगुरुसद्मतस्त्यजेद्व्यत्ययोनिशिसितान्वितंचतत् ॥
सैकतातनुवदुक्तरीतितोमित्रनामसहमंविदुर्बुधाः ॥ ७ ॥

मित्र सहम निमित्त दिनमें गुरु सहममें पुण्यसहम घटायके शुक्र जोड देना, रात्रिको पुण्य सहममें गुरु सहम घटायके शुक्र जोडना शोद्ध्यर्क्ष शुद्ध्याश्रय भांरतालमें शुक्र न हो तो १ जोडदेना मित्र ५ सहम होताहै॥७॥

शालिनी-पुण्याद्भौमंशोधयेदुक्तवत्स्यान्माहात्म्यंतन्नक्तमस्माद्विलोमम् ॥ शुक्रंमंदादह्निनक्तंविलोममाशाख्यंस्यादुक्तवच्छेषमूह्यम्॥८॥

माहात्म्य और आशा सहमके लिये पुण्य सहममें मंगल घटायके लग्न जोडदेना शोध्यर्क्षेत्यादिसे सैक प्राप्ति हो तो १ जोडदेना दिनका माहात्म्य सहम ६ होता है रात्रिकोविपरीत, जैसे मंगलमें पुण्य सहम घटायके शेष पूर्ववत् करना आशा सहमको शनिमें शुक्र घटायके शेष लग्नमें जोडना एक योगकी प्राप्ति हो तो जोडना दिनका आशा सहम होता है, रात्रिको विपरीत जैसे शुक्रमें शनि घटायके शेष पूर्ववत् करना आशा इच्छाका नाम है॥८॥

इन्द्रवज्रा–सामर्थ्यमारात्तनुपंविशोध्यनक्तंविलोमंतनुपेकुजेतु ॥
जीवाद्विशुध्येत् सततंपुरावद्भ्रातार्किहीनाद्गुरुतः सदोह्यः ॥ ९ ॥

दिनको लग्नेश मंगलमें घटाना रात्रिको मंगल लग्नेशमें घटाय देना जब लग्नेश मंगलही हो तो दिन तथा रात्रिमें बृहस्पातिमें शुद्ध करना सामर्थ्यसहम होता है तथा दिन रात्रिमें बृहस्पतिमें घटायके शेष पूर्ववत् करना यह भ्रातृसहम होता है ॥ ९ ॥

उपजाति०–दिनेगुरोश्चंद्रमपास्यनक्तंरविंक्रमादर्कविधूचदेयौ ॥

रीत्योक्तयागौरवमर्कमार्केरपास्य वामंनिशिराजतातौ ॥ १० ॥

दिनको बृहस्पतिमें चन्द्रमा घटायके शेषमें सूर्य जोडना, रात्रिको बृहस्पतिमें सूर्य घटायके चन्द्रमा जोडना शोध्यर्क्षेत्यादिसे अंतरालमें सूर्य वा चन्द्रमा न हो तो १ जोडना गौरवसहम होता है १० । तथा दिनको शनिमें सूर्य घटायके और रात्रिको सूर्यमें शनि घटायके पूर्ववत् लग्न जोडना शोध्यर्क्षेत्यादि संस्कार करके राजसहम होता है ११ यह पितृसहम १२ भी है ॥ १० ॥

इंद्रव०--मातेन्दुतोऽपास्य सितं विलोमं नक्तं सुतोऽहर्निशमिंदुमीज्यात् ॥ स्याज्जीविताख्यं गुरुमार्कितोऽह्नि वामं निशीदं सममंबयांबु ॥ ११ ॥

दिनको चन्द्रमामें शुक्र घटायके रात्रिको शुक्रमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना, मातृ और अंबु अर्थात् जलसहम होता है १३ दिनको और रात्रिकोभी गुरुमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना पुत्रसहम होता है १४ दिनको शनिमें बृहस्पति घटायके रात्रिको बृहस्पतिमें शनि घटायके लग्न जोडना जीवितसहम होता है १५।इसीको ऐश्वर्यसहम भी कहते हैं अम्बुसहम मातृ सहम ही होता है सो कह चुके हैं १६ ॥ ११ ॥

इ०व०--कर्मज्ञमारान्निशिवाममुक्तंरोगाख्यमिंदुं तनुतः सदैव ॥ स्यान्मन्मथोलग्नपमिंदुतोऽह्नि वामंनिशींदुतनुपंसदाऽर्कात्॥ १२॥

दिनको मंगलमें बुध रात्रिको बुधमें मंगल घटायके लग्न जोडना कर्मसहम १७होता है,दिन रात्रिको वर्ष प्रवेश हो तो लग्नमें चन्द्रमा घटाय लग्न जोडके रोगसहम १८ होता है, दिनको लग्नमें चन्द्रमा घटायके रात्रिको विपरीत करके लग्न जोडना कामसहम १९ होता है, चन्द्रमा ही लग्नेश हो तो दिन तथा रात्रिको सूर्यमें चंद्रमा घटाना ॥ १२ ॥

उ०जा०--कलिक्षमेस्तोगुरुतोविशुद्धेकुजेविलोमंनिशिपूर्वरीत्या ॥ शास्त्रंदिने सौरिमपास्यजीवाद्वामं निशिज्ञस्य युतिः पुरावत् ॥१३॥

बृहस्पतिमें मंगल घटायके लग्न जोडना दिनका कालिसहम २० होता है,

रात्रिको मंगलमें बृहस्पति घटायके लग्न जोडना क्षमासहमभी इसी प्रकारका है २१ । दिनको बृहस्पतिमें शनि रात्रिको शनिमें बृहस्पति घटायके शेषमें बुध जोडना शास्त्रसहम होता है २२।शोध्यर्क्षेत्यादि संस्कार सर्वत्र ही है॥ १३॥

उ.जा.-दिवानिशंज्ञाच्छशिनंविशोध्यबंध्वाख्यमेतन्निशिबंदकंस्यात्
वामंदिवैतन्मृतिरष्टमर्क्षादिंदुंविशोध्योक्तवदार्कियोगात् ॥ १४॥

दिनको बुधमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना रात्रिको भी यही करना बन्धुसहम होता है २३, दिनको चन्द्रमामें बुध और रात्रिको बुधमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना बंदकसहम होता है २४ । दिन तथा रात्रिमें मृत्युभावमें चंद्रमा घटायके शनि जोडना मृत्युसहम २५होता है ॥ १४॥

उपजा०--अहर्निशंवित्तपमर्थभावाद्विशोध्यपूर्वोक्तवदर्थसद्म ॥
देशांतराख्यंनवमाद्विशोध्यधर्मेश्वरंसंततमुक्तवत्स्यात्॥ १५॥

दिवा और रात्रिमेंभी धनभावमें धनभावेश घटायके लग्न जोडना धन सहम २६ होता है, तथा दिवा रात्रि धनभावमें धर्मभावेश घटायके लग्न जोडना परदेशसहम २७ होता है ॥ १५ ॥

उपजा०--सितादपास्यार्कमथान्यदाराह्वयंसदाप्राग्वदथान्यकर्म ॥
चन्द्राच्छनिंवाममथोनिशायांशश्वद्वणिज्यंदिनबंदकोत्त्या ॥ १६॥

दिनरात्रिको शुक्रमें सूर्य घटायके लग्न जोडना परस्त्री सहम २८ होता है, दिनको चन्द्रमामें शनि रात्रिको शनिमें चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना परकर्म २९ सहम होता है. दिनरात्रिका चन्द्रमामें बुध घटायके लग्न जोडना वाणिज्य सहम ३० होता है ॥ १६ ॥

उपजा०--शनेर्दिवार्कंनिशिचंद्रमार्कोर्विशोध्यसूर्येंदुभनाथयोगात् ॥
स्यात्कार्यसिद्धिः सततंविशोध्यमंदंसितात्स्याचुविवाहसद्म॥ १७॥

दिनको शनिमें सूर्य घटायके सूर्यराशिनाथ जोडना, रात्रिको शनिमें चन्द्रमा घटायके चन्द्रराशिस्वामी जोडना कर्यसिद्धि ३१सहम होता है,दिन रात्रिको शुक्रमें शनि घटायके लग्न जोडना विवाहसहम ३२होता है ॥ १७॥

उपजा०--गुरोर्बुधंप्रोज्झ्यभवेत्प्रसूतिर्वामंनिशींदुंशनितोविशोध्य ॥
षष्ठंक्षिपेदुक्तदिशासदैव संतापसञ्चारमपास्यशुक्रात् ॥ १८ ॥

दिनको बृहस्पतिमें बुध रात्रिको बुधमें बृहस्पाति घटायके लग्न जोडना प्रसूतिसहम होता है ३३ । दिनरात्रिको शनिमें चन्द्रमा घटायके रिपुभाव जोडना संतापसहम ३४ होता है ॥ १८ ॥

उपजा०--श्रद्धासदाप्रोक्तदिशाथपुण्यंविद्याख्यतःप्रोज्झ्यसदापुरोत्त्या॥प्रीत्याख्यमुक्तंबलदेहसंज्ञेयशःसमेजाडचमपास्यभौमात् १९

दिनरात्रि शुक्रमें मंगल घटायके लग्न जोडना श्रद्धासहम ३५ होता है. दिनको रात्रिको भी विद्यासहममें पुण्यसहम घटायके लग्न जोडना प्रीतिसहम ३६ होता है, बलसहम ३७ और देहसहम ३८ यशसहमके तुल्य जानने और दिनको मंगलमें तथा शनि रात्रिमें विपरीत करके बुध जोडना जाडच ३९ सहम होगा ॥ १९ ॥

उपजा०-शनिंविलोमंनिशिचांद्रयोगाद्व्यापारमाराज्ज्ञमपास्यशश्वत्
पानीयपातः शशिनंविशोध्यसौरेर्विलोमंनिशिपूर्ववत्स्यात्२०॥

दिनरात्रिको भौममें बुध घटायके लग्न जोडदेना व्यापारसहम ४० होता है, दिनको शनिमें चंद्रमा रात्रिको चन्द्रमामें शनि घटायके लग्न जोडना पानीयपतन सहम ४१ होता है ॥ २० ॥

उपजा०-मन्दंकुजात्प्रोज्झ्यरिपुर्विलोमंरात्रौभवेद्भौमविहीनपुण्यात्।
शौर्यंविलोमंनिशिपूर्ववत्स्यादुपायइज्यंशनितोविशोध्य॥२१॥

दिनको मंगलमें शनि रात्रिको शनिमें मंगल घटायके लग्न जोडना शत्रु ४२सहम होता है, दिनको पुण्यसहममें मंगल रात्रिको मंगलमें पुण्यसहम घटायके लग्न जोडना शौर्यसहम४३ होता है; दिनको शनिमें बृहस्पति रात्रिको बृहस्पातिमें शनि घटायके लग्न जोडना, उपायसहम ४४ होता है ॥ २१ ॥

उपजा०-वामंनिशिज्ञंतुविशोध्य पुण्याज्ज्ञयुग्विलोमंनिशितद्दरिद्रम् ।
सूर्योच्चतः सूर्यमपास्यनक्तं चन्द्रंतदुच्चाद्गुरुतापुरोक्त्या॥२२॥

दिनको पुण्यसहममें बुध घटायके बुध जोडना रात्रिको बुधमें पुण्यसहम घटायके बुध जोडना तो दारिद्र्यसहम ४५ होता है, दिनको सूर्यके उच्च०। १० में सूर्य घटायके लग्न जोडना, रात्रिको चन्द्रमाके उच्च १। ३ में चन्द्रमा घटायके लग्न जोडना गुरुसहम ४६ होता है, शेषकर्म शोध्यर्क्षेत्यादिसे संस्कार सर्वत्र ही देखना चाहिये ॥ २२ ॥

अनु०--कर्कार्द्धतः शनिं प्रोज्झ्य स्याज्जलाध्वान्यथानिशि ॥
पुण्याच्छनिं विशोध्याह्नि वामं निशि तु बंधनम्॥२३॥

दिनको कर्कके आधा ३।१५में शनि घटायके रात्रिको विपरीत करके लग्न जोडना जलमार्गसहम ४७ होता है, दिनको पुण्यसहममें शनि और रात्रिको शनिमें पुण्यसहम घटायके बंधन ४८ सहम होता है ॥ २३ ॥

सहमसारणी ।

सं०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
ना०	पुण्य	गुरु	ज्ञान विद्या	यशब लवपु	मित्र	माहा त्म्य	आशा	समर्थ.	भ्रात	गौरब
दिवा लग्न	चंद्रे	रवौ	रवौ	जीवे	गुरु सहम	पु. स.	शनौ	भौमे	जीवे	जीवे
ऋण	रवि	चंद्र	चंद्र	पु. स.	पु. स.	भौम	शुक्र	तनुपः	शनि	चंद्र
धन	ल.	ल.	ल.	ल.	शुक्र	ल.	ल.	ल.	ल.	रवौ
रा. ल.	रवौ	चंद्रे	चंद्रे	पुण्ये	पुण्ये	भौमे	शुक्रे	तनुप तौ	गुरौ	गुरौ
ऋ.	चंद्र	रवि	रवि	जीवे	गु. स.	पु. स.	शनि	भौम	शनि	रवि
धन	ल.	ल.	ल.	ल.	शुक्र	ल.	ल.	ल.	ल.	चंद्रः

सं०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
ना०	राज	तात.	माता जल.	सुत.	जीव.	अंबु. कांति.	कर्म.	रोग.	काम. दे०	कलि.
दिवा लग्न.	शनौ.	शनौ.	चंद्रे.	गुरौ.	शनौ.	चंद्रे.	भौमे	शनौ.	चंद्रे.	गुरौ.
ऋण.	रवि.	रवि.	शुक्र.	चंद्र.	जीव	शुक्र.	बुध.	चंद्र.	लग्नेश.	भौमे.
धन.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.
रात्रौ	रवौ.	रवौ.	भृगौ.	गुरौ	गुरौ.	शुक्रे.	बुधे.	तनौ.	लग्नेश	भौम.
ऋण.	शनि.	शनि.	चंद्र.	चंद्र	शनि.	चंद्र.	भौम.	चंद्र.	चंद्र.	गुरौ.
धन.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.

सं.	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
ना.	क्षमा	शास्त्र	बंधु	बंदक	मृत्यु	परदेश	धन	अन्य दारा	परकर्म	वणिक्	कार्य	विवाह.
दिवाल.	शनौ	जीवे	बुधे	चंद्रे	मृत्यु भावे	धर्मभा	धनभा	शुक्रे	चंद्रे	चंद्रे	शनौ	शुक्रे
ऋण	भौम	शनि	चंद्र	बुध	चंद्रः	धर्मेश	धनेश	रवि	शनि	बुध	सूर्य	शनि
धन	लग्न	बुध	लग्न	ल.	शनि	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	सूर्यरा- शीश	ल.
रा.ल.	भौमे	शनौ	बुधे	बुधे	मृत्यु भावे	धर्मभा	धनभा.	शुक्रे	शनौ	चंद्रे	शनौ	शुक्रे
ऋण	गुरु	जीव	चंद्र	चंद्र	चंद्र	धर्मेश	धनेश	रविः	चंद्रः	बुधः	चंद्रः	शनि
धन.	ल.	बुध	ल.	ल.	शनि	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	चंद्ररा शीश	ल.

सं०	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
ना०	प्रसूति	संताप	श्रद्धा	प्रीति	बल सैन्य	तनु	जाड्य	व्यापार	पानीयपात	रिपु	शौर्य	उपाय
दि.ल.	गुरौ	शनौ	शुक्रे	विद्या सहमे	गुरौ	गुरौ	भौमे	भौमे	शनौ	कुजे	पुण्य सहमे	शनौ
ऋ.	बुध	चंद्र	भौम	पुण्य सहमे	पु. स.	पु. स.	शनि	बुध	चंद्रे	शं.	भौम	गुरु
ध.	ल.	रिपुभाव	ल.	ल.	ल.	ल.	बुध	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.
रा.ल.	बुधे	शनौ	शुक्रे	विद्या भाव	पुण्यस.	पु. स.	शनौ	भौमे	चंद्रे	शनौ	भौमे	गुरौ
ऋ	गुरु	चंद्र	भौम	पुण्यस.	गुरु	गुरु	भौ.	बुध	शनि	कुज	पुण्यस.	शनि
ध.	ल	रिपुभाव	ल.	ल.	ल.	ल.	बुध	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.

सं.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
ना.	दरिद्रः	गुरुता	जल मार्ग	बंधन	कन्या	अश्व	गज	हस्त	मार्ग	ऐश्वर्य	स्त्री	देशांतर
दिवाल.	पुण्यस.	०।१०	३ १५	पुण्य सहमे	शुक्रे	पु. स.	चंद्रे	चंद्रे	धर्म भावे	शनौ	शुक्रे	धर्मेशे
ऋ.	बु.	सू.	श.	श.	चं.	सू.	गु.	श.	धर्मेश	गुरु	जायेश	धर्म भाव
ध.	बु.	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.	आ ध.भा	ल.	ल.	ल.	ल.	ल.
रात्रि.ल	बुधे	१।३	शनौ	श.	शु.	सू.	चं.	श.	धर्म भाव	गु.	शु.	धर्म भावे
ऋ.	पु.स.	चंद्र	३।१५	पुण्य सहम	चंद्र	पु.स.	गु.	चं.	धर्मेश	श.	जायेश	धर्मेश
धन	बु.	ल.	ल.	ल.	ल.	आय भाव	ल.	ल.	ल.	ल.	जाया भाव	ल.

अनुष्टु०--चन्द्रं सितादपास्योक्तं सदाकन्याख्यमुक्तवत् ॥
पुण्यादर्कमपास्याययो गादश्वोऽन्यथानिशि ॥२४॥

दिन तथा रात्रिको शुक्रमें चंद्रमा घटायके जोडना कन्यासहम ४९ होता है, दिनको पुण्यसहममें सूर्य घटायके लग्न जोडना रात्रिको सूर्यमें

पुण्यसहम घटायके ग्यारहवाँ भाव जोडना अश्वसहम ५० होता है, ये ५० सहम आचार्योक्त कहे गये. मतांतरसे जो अन्य सहम हैं उनमेंसे कोई तो इनहींमें अंतर्भाव है कोई सारणीमें लिखेंगे सहमसारणी आवे है सहम विचार जिसके निमित्त करना है उसीके संबंधी भावसे सहमकल्पना करनी. जैसे भाइयोंके वास्ते तृतीयभावको, स्त्रीके निमित्त सप्तम भावको, लग्न जानकर पुण्यादि सहम कल्पना करनी यहभी किसीका मत है ॥ २४ ॥

उपजा०–स्वनाथहीनं सहमं तदंशाः स्वीयोदयघ्ना विहृतास्त्रिशत्या ॥ तत्सद्मपाको दिवसैर्हि लब्धैः स्यात्तद्दशायां तदसंभवेवा ॥ २५ ॥

सहमका फल पाकसमय कहते हैं कि, सहमका फल पाकसमय चाहिये उसमें उस भावके स्वामीका स्पष्ट घटाय देना शेषके अंश करके स्वदेशीय लग्न खंडसे गुणना. ३०० तीनसौसे भाग लेना लब्धि उस सहमफल पाकके दिन जानना किसीका मत है कि पूर्वविधिसे जो दिन मिले हैं उनमें ३० का भाग देके लब्धि राशि जाननी तदनंतर वर्षप्रवेशकालिक सूर्यराश्यादि कला पर्यंतमें जोडदेना राशिस्थानमें १२ से अधिक होनेपर १२ से शेष-कर देना यह सूर्य स्पष्ट जिस समयपर आवे वह समय सहम फल पाकका जानना कोई कहते हैं, कि, हीनांश पात्यांश क्रमसे जब सहमेशकी दशा हो तब फल होगा, यह सर्व संमत है. इन दो मतोंमें यह निश्चय है कि, पूर्वोक्त प्रकारसे जो दिन मिले हैं, यदि उनके भीतर तत्स्वामीकी दशा हो तो दशाहीमें फल होजायगा. जब उक्तदिनोंसे उपरांत दशा हो तो दशाप्रारंभ दिवससे उतने दिनोंमें फल होगा. इसमेंभी स्मरण चाहिये कि ऐसी विधिसे वर्षांत होजाय तो दूसरे वर्षमें फल कहना, परंतु इसमें बहुत शंका होती है इस लिये यादववाक्य है. "सहमेश्वरयोः कार्यमंतरं पूर्वराशिकम् ॥ तद्युक्तोऽर्को भवेद्यावांस्तादृक्संक्रांतिभे फलम् ॥" अर्थात् जिस भावसंबंधी सहमका फल चाहता है उसके पूर्वभावसे उसका अंतर करके दशाप्रवेशसा-

मयिक सूर्यस्पष्टमें जोडदे उसके जितने अंश हों उतने सौर दिनोंमें फल होगा यह निश्चय है ॥ २५ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां सहमानयनाधिकारः समाप्तः ।

वसंततिलका–स्वोच्चादिसत्पदगतो यदिलग्नदर्शी वीर्यान्वितस्स-हमपोयदिनेक्षतेऽङ्गल ॥ नासौबलीरविशशिश्रितभेशदर्शपूर्णा-तलग्नपबसस्य विचारणेत्थम् ॥ २६ ॥ १ ॥

सहमेशोंका बलाबल कहते हैं कि,अपने उच्चादि पूर्वोक्त शुभ स्थानोंमें होकर लग्नको यद्वा अपने सहमको सहमेश देखे तो बलवान् होते हैं-जो लग्नको न देखें तो सत्पदगतभी निर्बल होता है और इसमें जन्मकालिक सूर्यराशीश १ जन्मकालिक चन्द्रराशीश २ जन्ममासकी पूर्णमासी जिस लग्नमें अंत हो इसका स्वामी ३ जन्ममासकी अमावास्या जिस लग्नमें अंत हो इसका स्वामी ४ इनका बलाबलभी इसी रीतिसे विचारना, इनके बलाबलसे पुण्य सहमके तुल्य फल कहना ॥ २६ ॥ १ ॥

अनु०--पंचवर्गीबलेनोनो नहर्षस्थानमाश्रितः ॥
अबलोऽयं लग्नदर्शी बलीस्वल्पेऽस्तिचेत्पदे ॥२७॥२॥

जो ग्रह पंचवर्गीमें (हीन) पांचसे कम बली हो तथा हर्षस्थानमें न हो उपलक्षणसे लग्नदर्शी भी न हो वह निर्बल होता है,जो त्रैराशिक मुसल्लहसं-ज्ञक लघुस्थानमेंभी हो और लग्नको देखे तो बली होता हैं,स्वगृहोच्चे "महा-धिकारी" स्वहद्दा मध्यम और स्वत्रैराशिक स्वमुसल्लह स्वल्पाधिकार कहे है यह सर्वत्र जानना ॥ २७ ॥ २ ॥

वसंतति०--स्वस्वामिनाशुभखगैः सहितं च दृष्टं स्वामी बलीच यदि तत्सहमस्य वृद्धिः ॥ यत्स्वामिनाशुभखगैश्च न युक्तदृष्टं तत्संभवो न हि भवेदितिचिंत्यमादौ ॥ २८ ॥ ३ ॥

जो सहम अपनेस्वामी शुभ यद्वा पापसे युक्त वा दृष्ट हो तथा शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तथा सहमेश पूर्वोक्त प्रकारसे बली हो तो उस सह-

मकी वृद्धि होती है और जो सहम शुभग्रह तथा स्वस्वामीसे युक्त दृष्ट न हो वह सहम निर्बल होता है फल देनेकी सामर्थ्य उसको नहीं होतीहै २८॥३॥

रथोद्ध०--अष्टमाधिपतिनायुतेक्षितंपापदृग्युतमथेत्थशालितम् ॥
संभवेऽपिविलयंप्रयातितत्तेनजन्मनिपुरेदमीक्ष्यताम् ॥२९॥४॥

जो सहम वर्षलग्नसे वा अपने स्थानसे अष्टमभावेशसे युक्त वा दृष्ट हो तथा पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो यद्वा पूर्वोक्त अष्टमेशसे वा पापग्रहसे सहमेश इत्थशाली हो तो पूर्वोक्त शुभफलदातृलक्षणयुक्तभी हो तो भी निर्बल कहाता है फल देनेकी सामर्थ्य नहीं होती है जन्ममें प्रथम इसी बलको देखलेना ॥ २९ ॥ ४ ॥

अनुष्टु०--आदौ जन्मनि सर्वेषां सहमानां बलाबलम् ॥
विमृश्य संभवो येषां तानि वर्षे विचिंतयेत् ॥३०॥ ५ ॥

सहमोंका प्रथम बल सहम बलादि सर्वप्रकारसे सहमोंका बलाबल जन्ममें तदुत्तरवर्षमें देखके जिनका बलाधिक हो फल देनेकी सामर्थ्य हो उन्हें वर्षमें स्थापन करना जिनको फल देनेकी सामर्थ्य न हो उन्हें छोडदेना॥३०॥५॥

अनु०--सबले पुण्यसहमे धर्मवृद्धिर्धनागमः ॥
शुभस्वामीक्षितयुतेव्यत्ययेव्यत्ययंविदुः ॥ ३१ ॥ ६ ॥

अब सहमोंके फल कहे जाते हैं, प्रथम पुण्यसहमका फल यह है कि पुण्य सहम पूर्वोक्त लक्षणोंसे बलवान् हो तो धर्मकी वृद्धि धनका आगमन होता है शुभग्रह स्वस्वामियुक्त दृष्ट होनेमें भी ऐसा ही फल है जो इनसे विपरीत पूर्वोक्त प्रकारसे बलरहित तथा पापयुत दृष्ट हो तो फल भी विपरीत अर्थात् धर्म धन हानि होगी ॥ ३१ ॥ ६ ॥

अनु०--लग्नात्षष्ठाष्टरिःफस्थंधर्मभाग्ययशोहरम् ॥
शुभस्वामिदृशाप्रांतेसुखधर्मादिसंभवः ॥ ३२ ॥ ७ ॥

जो पुण्यसहम लग्नसे ६।८।१२ इन स्थानोंमें हो तो भाग्य (ऐश्वर्य) यशका हरण करता है और शुभग्रह स्वस्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो तो सुख और

धर्मादि शुभ फलका संभव करता है, स्वस्वामी वा शुभसे युक्त दृष्ट सहम-वर्षके उत्तरार्द्ध अथात् प्रवेशसे ६ महीने पीछे सौख्यादि फल देता है, जो पापादि युक्त दृष्टसे अशुभ फल है,वह वर्ष पूर्वार्द्धमें होता है ॥ ३२ ॥ ७ ॥

अनुष्टु०--पापयुक्छुभदृष्टंचेदशुभंप्राक्ततःशुभम् ॥
शुभयुक्तंपापदृष्टमादौशुभमसत्परे ॥ ३३ ॥ ८ ॥

संसर्गसे स्वभाव गुण बदल जाता है पुण्यादिसहम पापयुक्त और शुभ-दृष्ट हो तो वर्षके पूर्वार्द्धमें अशुभ, उत्तरार्द्धमें शुभ फल देते हैं.जो शुभ युक्त और पाप दृष्ट हो तो पूर्वार्द्धमें शुभ फल उत्तरार्द्धमें अशुभ फल देते हैं जो युक्त और दृष्टभी पापहीसे हो तो समस्त वर्षमें अशुभ ही फल होगा; जो शुभहीसे युक्त और दृष्टभी हों तो समस्त वर्षमें शुभही फल होगा॥ ३३॥८॥

अनु०--यत्राब्दे पुण्यसहमं शुभं सोऽत्र शुभावहः ॥
अनिष्टेऽस्मिञ्छुभो नेति पुण्यमादौ विचारयेत्॥३४॥९॥

जिस वर्षमें पुण्यसहम पूर्वोक्त विधिसे शुभ हो वह समस्तही शुभ होता है और सहम अशुभ भी हो तो अनिष्टफल सहसा नहीं दे सकते जिसमें पुण्य सहम (निर्बल) अशुभ है वह वर्ष अशुभही व्यतीत होता है. और सहम शुभ भी हो तो शुभ फल नहीं देते इस कारण पुण्यसहम सभी "जन्मवर्षमें" मुख्य विचार्य है ॥ ३४ ॥ ९ ॥

अनु०--सूतौ षष्ठाष्टरिःफस्थे मध्ये पापहतं पुनः ॥
पुण्यं धर्मार्थसौख्यघ्नं पत्यौ दग्धे फलं तथा॥३५॥१०॥

जन्ममें पुण्यसहम लग्नसे छठा आठवाँ वा बारहवाँ हो और वर्षमें पापयुत हो तथा सहमेश (दग्ध) अस्तंगत हो तो धर्म, धन और सुख-का नाश करता है ॥ ३५ ॥ १० ॥

अनु०--सहमान्यखिलानीत्थं सूतौ वर्षे विचिंतयेत् ॥
मांद्यारिकलिमृत्यूनां व्यत्ययादादिशेत्फलम्॥३६॥११॥

उक्त प्रकारसे सम्पूर्ण सहम जन्म तथा वर्षमें विचारने पुण्यसहमके बलवान् होनेमें द्रव्यादिक लाभ होते हैं, परंतु रोग अरि कली झकटक मृत्यु इन सहमोंके बलवान् होनेमें विपरीत फल उनके नामसदृश होता है. यदि रोगादि पांच अनिष्ट सहम निर्बल अशुभफलदाता हों तो वर्षादिमें शुभ फल जानना ॥ ३६ ॥ ११ ॥

रथोद्ध०--कार्यसिद्धिसहमंयुतंशुभैर्दृष्टमूथशिलगंजयप्रदम् ॥
संगरेऽथशुभपापदृष्टियुक्क्लेशतोजयउदीरितोबुधैः ॥ ३७ ॥ १२ ॥

कार्यसिद्धि सहम शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा शुभग्रहोंसे मुथशिलकारी हो तो संग्राममें जय देता है. शुभयुत दृष्ट और शुभमुथशिली भी हो तो विशेषतर जय देता है जो दृष्ट युक्त वा मुथशिली शुभ और पापोंसेभी हो तो संग्राममें क्लेशसे जय देता है ऐसा ही विचार विवाहादिसहमोंमें करना. यद्वा कार्यसिद्धि हर किसी कार्यकी होती है ॥ ३७ ॥ १२ ॥

मंजुभा०--कलिसद्मपापखगदृष्टिसंयुतं यदि पापमूथशीलगं कलेर्मृतिम् ॥ अथ तत्र सौम्यसहितावलोकितेजयमेतिमिश्रदृशितेर्कलिव्यथे ॥ ३८ ॥ १३ ॥

कलि कलह सहम पाप शुभ दोनोंहीसे युक्त हो तथा पापग्रहसे मुथशिली हो तो कलहमें मरण होवे जो वही कलिसहम शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो थोडेही कलहमें जय होवे. जब पाप और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि तुल्य हो वा दोनोंहीसे युक्त हो तो कलह वा व्यथा परिश्रममात्र होती है जय वा पराजय परिणाममें कुछ भी नहीं ॥ ३८ ॥ १३ ॥

उपजा०--विवाहसद्माधिपसौम्यदृष्टंयुतंशुभैर्मूथशिलंशुभाप्तिम् ॥
कुर्याद्यदामिश्रसमेतदृष्टंकष्टादथक्रूरमृतीश्वरैर्न ॥ ३९ ॥ १४ ॥

विवाहसहम स्वस्वामी वा शुभग्रह युक्त वा दृष्ट हो और शुभग्रहके साथ मुथशिल करे तो विवाहप्राप्ति करेगा जो शुभ और पाप ग्रहोंसे युगपत् युक्त वा दृष्ट हो उपलक्षणसे मिश्रहीके साथ इत्थशाली हो तो विवाहप्राप्ति कष्टसे

करेगा जब पापहीसे युक्त दृष्ट और मुथशिल हो तो विवाह प्राप्ति नहीं होने देगा ॥ ३९ ॥ १४ ॥

उपजा०--यशोधिपेनैधनगेखलेनयुतेक्षितेसद्यशसोविनाशः ॥ पापार्जितस्यायशसोऽस्तिलाभोनष्टौजसिस्यात्कुलकीर्तिनाशः४०।१५॥

यशसहमाधीश अष्टम स्थानमें हो और पापयुक्त वा दृष्ट हो तो अपने प्राप्ति किये यशका नाश होवे. किंच स्वयमर्जित महापातकोंमेंसे किसी एक पातकसंबन्धी अयशका लाभ होवे जब यही यशसहमेश अष्टम और पापयुत दृष्ट होकर अस्तंगत भी हो तो अपने वंशसे चला आया पितृपितामहादिकोंका जो यश उसे नाश करता है अर्थात् अपने सारे वंशकी कीर्ति नाशक है ॥ ४० ॥ १५ ॥

उपजा०--शुभेत्थशालेशुभदृग्युतेवाबलान्वितेस्याद्यशसोऽभिवृद्धिः युद्धेजयोवाहनशस्त्रलाभः पापेसराफादयशोऽर्थनाशः ॥४१॥१६॥

यशसहमेश शुभग्रहसे मुथशिली अथवा शुभदृष्ट वा युक्त हो तो यशकी वृद्धि होवे, उपलक्षणसे धर्मवृद्धि धनलाभभी होवे तथा संग्राममें जय, अश्वादि वाहन और धनुषादि शस्त्रोंका लाभ होवे जो यशसहमेश पापग्रहोंसे मुथशिली शुभग्रहसे ईसराफी उपलक्षणसे नष्टबली हो तो अपयशवृद्धि और धननाश होवे ॥ ४१ ॥ १६ ॥

उपजा०--आशातदीशश्चषडष्टरिःफविवर्जितःसौम्ययुतेक्षितश्च ॥ स्याद्वांछितार्थांबरवाहनादिलाभःखलेक्षायुतितोऽतिदुःखम् ४२।१७

आशासहम और इसका स्वामी भी ६।८। १२ स्थानोंमें न हो तथा शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो इच्छानुकूल हिरण्यादि द्रव्य वस्त्र वाहन आदि और शत्रुसे भूमिलाभ होता है, जो दोनोंही पूर्ववर्जित स्थानोंमें हो तथा पापग्रह युक्त दृष्ट हों तो अतिदुःख और वांछितार्थनाश होवे ॥ ४२ ॥ १८ ॥

उ०जा०--मांद्याधिपः पापयुतेक्षितश्चपापः स्वयंरोगकरोविचिंत्यः ॥ चेदित्थशालोमृतिपेनमृत्युस्तदाभवेद्धीनबलेऽतिकष्टात् ॥४३॥१८॥

रोगसहमेश आप पापग्रह हो तथा पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो वह रोगकर्त्ता जानना; पुनः लग्नसे अष्टमभावेशसे इत्थशालीभी हो तो मृत्यु करेगा, इसमें हीनबल हो तो मृत्यु भी अतिकष्टसे होगी, बलवान् होनेमें अल्पकष्टसे मृत्यु होगी, इस प्रकार कष्टाधिक्यकी प्राप्ति होनेमें धर्मशास्त्रोक्त शांति करनी चाहिये जैसे उक्त भी है कि "क्लेशेषु शांतिरुक्ता ज्ञातव्या तत्र शास्त्रज्ञैः" इति ॥ ४३ ॥ १८ ॥

उपजा०-स्वस्वामिसौम्येक्षणभाजिमांद्येनाथेसवीर्येऽष्टषडंत्यवर्ज्यः॥
रोगस्तदानैवभवेद्विमिश्रंयुतेक्षितेरुग्भयमस्तिकिंचित्४४॥१९॥

मांद्यसहम अपने स्वामी वा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट पूर्वोक्त रीतिसे हो और छठा आठवाँ बारहवाँ न हो तो रोग नहीं होगा सुखी रहेगा जो सौम्य पाप दोनहूंसे युक्त दृष्ट हो तो स्वल्परोगभय होगा जो वह सहमेश बली होकर शुभ ग्रहसे मुथशिलकारी हो तो वाहनादि प्राप्ति भी होगी उपलक्षणसे रोग सहमेशका शुभग्रह मुथशिली भी ऐसाही होता है, यह रोग होनेका योग सिद्ध होजावे तो समझना कि, पूरे तौरसे रोग होगा क्योंकि पूर्वमें लिख दिया है आचार्यने कि, "मान्द्यारिकलिमृत्यूनां व्यत्ययादादिशेत्फलम्" ॥ ४४ ॥ १९ ॥

शार्दूलवि०--अर्थाख्यंशुभनाथदृष्टिसहितंद्रव्यागमात्सौख्यदं
पापैर्दृष्टयुतंचवित्तविलयंकुर्यादथोपापयुक् ॥
सद्दृष्टंचशुभेत्थशालियदितत्पूर्वंधनंनाशयेत्पश्चादर्थ-
समुद्भवंचससुखंव्यत्यासतोव्यत्ययः ॥ ४५ ॥ २० ॥

अर्थाख्यसहम स्वस्वामी वा शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो द्रव्यकी प्राप्ति करके सुख देता है, जो पापग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो द्रव्यका नाश करता है; शत्रुग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो शत्रुसंबंधी कर्मसे धननाश होता है, जो पापयुक्त और शुभदृष्ट भी हो और शुभग्रहके साथ इत्थशाली भी हो तो पूर्वसंचितद्रव्यका नाश करके पुनः अपने पुरुषार्थसे द्रव्यसंचय सुखसहित करता है, केवल पापयोग दृष्टिसे सर्वथा धननाश करता है॥४५॥२०॥

अनु०-रिपुदृष्ट्यारिपोर्भीतिस्तस्करादेर्धनक्षयः ॥
मित्रदृष्ट्यामित्रयोगाद्धनंमानोयशः सुखम् ॥४६॥२१॥

सहम सहमेशपर शत्रुदृष्टि हो तो शत्रुभय और चोर आदिसे धनक्षय होता है, मित्रदृष्टि हो तो मित्रके संबंधसे धनप्राप्ति मानोदय यशलाभ और सुख होता है ॥ ४६ ॥ २१ ॥

इन्द्रव०-सत्स्वामिदृष्टंयुतमात्मजस्यलाभंसुखंयच्छतिपुत्रसद्म ॥
पापान्वितंसौम्यखगेत्थशालीप्राग्दुःखदंपुत्रसुखाय पश्चात् ४७।२२

पुत्रसहम स्वस्वामी शुभग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तो पुत्रसुख अर्थात् पुत्रोत्पत्ति और उत्पन्न पुत्रोंका सुख देता है,ऐसाही शुभ मुथशिलसे भी कहना. जो पुत्रसहम पापयुक्त और शुभ ग्रहसे इत्थशाली हो तो प्रथम पुत्रसंबंधी दुःख पश्चात् पुत्रसौख्य देता है; योगफल प्रथम दृष्टिफल पीछे होता है ॥ ४७ ॥ २२ ॥

इन्द्रव०-पापान्वितंपापकृतेसराफंनाशायपुत्रस्यगतौजसीशे ॥
सूतौसुतेशःसहमेश्वरोऽब्देपुत्रस्यलब्ध्यैशुभमित्रदृष्टः ॥ ४८ ॥ २३ ॥

जो पुत्रसहम पापयुक्त वा दृष्ट हो और पापग्रहसे इसराफी हो तथा पुत्रभावेश निर्बल अस्तंगत हो तो पुत्रनाश करता है, जन्मलग्नसे पंचमेश वर्षमें पंचमेश वा पुत्रसहमाधीश हो और शुभग्रह स्वस्वामिस्वमित्रयुक्त दृष्ट हो तो पुत्रप्राप्ति करता है ॥ ४८ ॥ २३ ॥

वसंतति०-पित्र्यंसदीक्षितयुतं पतियुक्तदृष्टं तातस्ययच्छति धनांबरमानसौख्यम् ॥ पत्यौ गतौजसिमृतौ खलमूसरीफे नाशः पितुश्चरगृहे परदेशयानात् ॥ ४९ ॥ २४ ॥

पितृसहम शुभग्रह वा स्वस्वामि युक्त वा दृष्ट और शुभग्रहसे इत्थशाल हो तो पितृसंबंधी धन वस्त्र मान सुख देता है, जो पितृसहमेश अस्तादिसे निर्बल हो वा लग्नसे अष्टम स्थानमें हो पापग्रहसे मूसरीफ हो और

चरराशिमें हो तो पिता विदेशमें मरजावे, स्थिरराशिमें होतो स्वदेशमें मरे ॥ ४९ ॥ २४ ॥

उपजा०--शुभेत्थशाले खलखेटयोगे गदप्रकोपः प्रथमं महान्स्यात् ॥ पश्चात्सुखं विंदति पूर्णवीर्ये नाथे नृपान्मानयशोऽभिवृद्धिः॥५०॥२५॥

पितृसहम स्वस्वामीसे वा शुभग्रहसे इत्थशाली हो और पापग्रहसे युक्तभी हो तो वर्षके पूर्वार्द्धमें रोगवृद्धि होवे उत्तरार्द्धमें सुख होवे जब पितृसहम स्वामी पूर्णवीर्य १५ विश्वासे अधिक बल होकर शुभस्थानमें हो तो राजासे मान तथा यशकी वृद्धि होवे. मातृसहममें भी ऐसा ही जानना ॥ ५० ॥ २५ ॥

रथोद्धता--बंधनाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिना न हि तदास्ति बंधनम् ॥ पापवीक्षितयुतेस्तु बंधनं पापजे मुथशिले विशेषतः ॥ ५१ ॥ २६ ॥

बन्धनसहम स्वस्वामी वा शुभग्रह युक्त दृष्टिहो तो बंधन (कारागार) आदिक भय नहीं होता, पापयुक्तवीक्षितसे तथा पापेत्थसालसे बंधन होता है यहभी फल विपरीतही जानना चाहिये ॥ ५१ ॥ २६ ॥

रथोद्ध०—गौरवाख्यसहमं युतेक्षितं स्वामिनाशुभखगैः सुखाप्तये ॥ राजगौरवयशोऽम्बराप्तयः पापवीक्षणयुते पदक्षतिः॥ ५२ ॥ २७ ॥

गौरव सहम स्वस्वामी वा शुभग्रहसे युक्त दृष्टि हो तो सुख प्राप्ति और राज्य गुरुता अथात् बडप्पन और यश तथा वस्त्रप्राप्ति होती है इत्थशाली शुभग्रहसेही हो तो धन, वाहन; यश और सुख मिलते हैं. जो पापग्रहसे युक्त दृष्ट वा इत्थशाली हो तो पद (अधिकार) तथा धन नाश सौख्य करता है ॥ ५२ ॥ २७ ॥

उपजा०—शुभाशुभदृष्टयुतं खलैश्चेत्कृतेत्थशालं धनमाननाशम् ॥ पूर्वं विधत्ते चरमे शुभेत्थशाले सुखं वाहनशस्त्रलाभम् ॥५३॥२८॥

गौरवसहमका फल और भी कहते हैं कि जो यह शुभ पाप दोनहूं प्रकारके ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो और पापग्रहसे इत्थशाली हो तो पूर्वार्धमें

धन तथा मानका नाश करता है, उत्तरार्द्धमें शुभ फल देता है, जो पाप शुभसे दृष्ट युक्त होकर शुभ ग्रहसे इत्थशाली हो तो वर्षपूर्वार्द्धमें शुभ उत्तरार्द्धमें अशुभ फल देता है सभी प्रकार मिश्र हो तो संपूर्णवर्षमें मिश्रही फल करता है, केवल इत्थशालीभी एक राशि साहित्यसे पूर्वार्द्धमें भिन्न-राशि साहित्यसे उत्तरार्द्धमें शुभ फल सौख्य वाहन शस्त्रादि वा वस्त्रादि लाभ देता है (वस्त्रलाभम्) ऐसाभी पाठ है ॥ ५३ ॥ २८ ॥

रथोद्ध०-कर्मभावसहमाधिपाः शुभैःस्वामिनामुथशिलीबलान्विताः
हेमवाजिगजभूमिलाभदाःपापदृष्टियुतितोऽशुभप्रदाः ॥५४॥२९॥

कर्मभाव, कर्मभावेश तथा, कर्मसहम, कर्मसहमेश ये चारों प्रागुक्त रीतिसे बलवान् हों अर्थात् स्वस्वामी शुभग्रह युक्त दृष्ट तथा शुभग्रहके साथ इत्यशाली हों तो सुवर्ण घोडा हाथी भूमि इनका लाभ देते हैं जो पापयुक्त दृष्ट वा पापग्रहसे इत्थशाली हों तो द्रव्यका नाशादि अशुभ फल देते हैं ॥ ५४ ॥ २९ ॥

शालि०—दग्धावक्राःकर्मवैकल्यदास्तेयुक्तादृष्टाःसौरिणातोविशेषात्
राज्यभ्रंशःकर्मनाशश्चराजकर्मेशौचेन्मूशरीफौखलेन ॥५५॥३०॥

पूर्वोक्त कर्मभाव समाधिपति पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट अथवा पापोंसे इत्थ-शाली हो तो कर्मकी विकलता (नाश) देता है, यद्वा शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो विशेष करके कर्मका नाश करता है, ऐसे ही दग्ध (पापकर्त्तर्यादिसे उपद्रुत) तथा वक्र (विपरीत) होनेमें भी फल देते हैं तथा राज्यसह-मेश, कर्मभावेश राज्यभावेश, कर्मसहमेश जो पापग्रहसे मुथशिली हों उप-लक्षणसे क्रूरयुक्त दृष्ट हो तो राज्यनाश पापमुशरीफसेभी यही फल है तथा सुवर्णादि द्रव्यका नाश करते हैं शुभ पापसे तुल्य योग दृष्टि वा मुशरीफ हो तो फल बलाबलके तारतम्यसे विचारके कहना इसी प्रकार माता आदि सहमोंका विचार करना ॥ ५५ ॥ ३० ॥

अनु०—उपदेष्टागुरुर्ज्ञानंविद्याशास्त्रंश्रुतिस्मृती ॥
मोहोजाड्यंबलंसैन्यमंगंदेहोजलंद्युतिः ॥ ५६ ॥ ३१ ॥

किसी २ सहमोंके पदार्थसे अर्थ भ्रम होता है. जैसे गुरु, गौरव, कर्म, राज बल, वपु इत्यादि इसके सन्देह निवारणार्थ कहते हैं कि, गुरु उपदेशकरनेवाला विज्ञानविद्यामात्र विषयिक बुद्धि विद्या (वेदन) जानना, शास्त्र, श्रुति, स्मृति ज्ञान, जाड्य अज्ञान ग्रन्थविस्मरणादि, बल सेना, सामर्थ्य, शारीरादिक बल, देह हस्तपादादि पिंड देह, जल कांति, हीरकादि मणि, कांतिवत्, जलपथ जलमार्ग इत्यादि. इनके पर्याय हैं ॥ ५६ ॥ ३१ ॥

अनु०--गुरुतामंडलेशत्वं गौरवं मानशालिता ॥
निग्रहानुग्रहविभूराजाछत्रादिलिंगभाक् ॥ ५७ ॥ ३२ ॥

गुरुता, मण्डलेशत्व, सामान्यराजा, गौरव, श्रेष्ठ, मानी, राजा, निग्रह कारागार, बंधन, सामर्थ्य, तथा अल्पानल्प देश, द्रव्य, दान, सामर्थ्य तथा छत्र चामरादि राचचिह्नधारीको राजा कहते हैं ॥ ५७ ॥ ३२ ॥

अनुष्टु०--माहात्म्यं मन्त्रगांभीर्यंधृतिबुद्ध्यादिशालिता ॥
सामर्थ्यं देहजाशक्तिः शौर्यं यत्नोऽरिनिग्रहे॥५८॥३३॥

माहात्म्य मन्त्र गाभीर्यका नाम है धृतिनाम बुद्धिमानीका है सामर्थ्य शरीरशक्तिको और शौर्य शूर वा वीरत्व शत्रुनिग्रहत्व सामर्थ्यको कहते हैं ॥ ५८ ॥ ३३ ॥

अनुष्टु०--आशेच्छोक्तामतिर्धर्म्याश्रद्धावंदः पराश्रयः ॥
पानीयपतनं वृष्टिर्जलेऽकस्माच्च मज्जनम् ॥५९॥३४॥

आशा इच्छाका नाम है दिशाकाभी नाम है; श्रद्धा धर्मकार्यकी मतिको कहते हैं तथा यहां विश्वासताका अर्थ लेना मुख्य है, वन्दनाम पराश्रयका है, पानीयपतनका प्रयोजन वृष्ट्यादि ऊपरसे गिरनेवाला पानीका है जलमें डूबनेकाभी अर्थ है ॥ ५९ ॥ ३४ ॥

अनुष्टु०--आधिव्याधी तापमांद्ये सपिण्डाबंधवः स्मृताः ॥
सत्यालीकं वणिग्वृत्तिराधानं प्रसवःस्मृतः॥६०॥३५॥

आधि मानसी व्यथा, व्याधि, रोग, ताप, सन्ताप, ये सब मांद्यके पर्याय हैं,

बांधव, सपिण्ड सातपुरुष पर्यन्तका नाम है, सत्यालीक वणिग्भावका पर्याय है, प्रसव गर्भाधान सन्तानोत्पत्तिका नाम है ॥ ६० ॥ ३५ ॥

अनुष्टु०--दासत्वं परकर्मोक्तमन्यत्स्पष्टं स्वनामतः ॥
निरूप्याणियथायोग्यंकुलजातिस्वरूपतः ॥६१॥३६॥

परकर्म दासत्वका पर्याय है इतने सहमोंके नाम द्व्यर्थ होनेसे पर्याय कहे गये शेष सहमोंके प्रकट नाम हैं जैसे पुण्य विवाह आदि यथायोग्य कुल, तथा जाति विचारके फल कहना ॥ ६१ ॥ ३६ ॥

अनुष्टु०--शुभयोगेक्षणात्सौख्यं पत्युर्वीर्यानुसारतः ॥
दारिद्र्यमृतिमांद्यारिकलिपूक्तोविपर्ययः ॥ ६२ ॥ ३७ ॥

सम्पूर्ण सहम शुभग्रहके दृष्टि तथा योगसे सहमेशके वीर्यानुसार शुभफल देते हैं परन्तु दारिद्र्य,मृत्यु मांद्य,अरि,कलह ये ५ सहम विपरीत फल देते हैं अर्थात् शुभयोगेक्षण, तथा स्वामी बलवान् होनेमें भावसदृश अशुभ फल और पापयोग दृष्टि तथा सहमेशके निर्बल होनेमें नाम गुणसे विपरीत शुभफल देते हैं ॥ ६२ ॥ ३७ ॥

अनुष्टु०--प्रश्नकालेऽपि सहमं विचार्यं प्रष्टुरिच्छया ॥
सर्वेषामुपयोगोऽत्र चित्रं पृच्छंति यज्जनाः॥६३॥३८॥

जिसका जन्मपत्र हो तो प्रथम जन्मके तदुत्तर वर्षके सहम विचारने जन्म-पत्र जिसका न हो उसके प्रश्न लग्नसे पुण्यादि सहम विचार करना (यतः) प्रष्टा अनेक प्रकार प्रश्न पूँछते हैं सहमोंसे सभी प्रकार कह देना ॥ ६३ ॥ ३८॥

वसंत०--आसीदसीमगुणमण्डितपण्डिताग्र्योव्याख्यद्भुजंगप-
गवीः श्रुतिवित्सुवृत्तः॥साहित्यरीतिनिपुणो गणिता-
गमज्ञश्चिन्तामणिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥ ६४ ॥ ३९ ॥

इस तन्त्रकी समाप्तिमें ग्रंथकर्ता अपने नामादि कहता है कि साधुत्व शास्त्र पांडित्यादि निःसीम गुणोंसे भूषित तथा पंडितोंमें श्रेष्ठ तथा शेषनागके वाणी पातंजलादि महाभाष्यकी व्याख्या करनेवाला तथा वेदज्ञान जाननेवाला तथा शुभाचरण युक्त और गणितादि ज्योतिःशास्त्र पारंगम साहित्य काव्यादिकी

रीतिमें निपुण होरहा ऐसा चिन्तामणि नामा दैवज्ञ गर्गमहर्षिके कुलका भूषण हुआ ॥ ६४ ॥ ३९ ॥

उपजा०—तदात्मजोऽनंतगुणोऽस्त्यनंतोयोऽधोक्सदुक्तिकिल-
कामधेनुम् ॥ संतुष्टये जातकपद्धतिं च न्यरूपयद्दु-
ष्टमतं निरस्य ॥ ६५ ॥ ४० ॥

तिसका पुत्र अगणित गुणशाली अनंत नामा दैवज्ञ है जिसने सुन्दर वाणी युक्त गणितरूपी कामधेनु जैसी कामधेनुका दोहन किया, अर्थात् कामधेनुगणितकी टीका की तथा गुणज्ञ सज्जनोंके प्रसन्नतार्थ जन्मपद्धति संप्रदायके अनभिज्ञ दुष्ट जनोंके दुष्ट मतको नाश करके गणितग्रन्थविशेष जातकपद्धतिभी निर्मित करी ॥ ६५ ॥ ४० ॥

इंद्रव०—पद्मांबयासावितितोविपश्चिच्छ्रीनीलकंठःश्रुतिशास्त्रनिष्ठः ॥
विद्वच्छिवप्रीतिकरंव्यधात्तंसंज्ञाविवेकंसहमावतंसम् ॥ ६६ ॥ ४१ ॥

ऊपर अपने पिताका नाम अनन्तज्योतिर्वित् ग्रन्थकर्त्ताने प्रकट किया पुनः पद्मानामा अपनी मातासे उत्पन्न पण्डित वेद तथा शास्त्र व्याकरण मीमांसा ज्योतिष तन्त्रादि पारंगम श्रीनीलकंठ नामा देवज्ञने संज्ञाविवेक नाम ताजिकग्रंथका एक तन्त्र जिसमें सहमरूप भूषण है ऐसा शिवनामा पाठक पंडित महाराष्ट्रदेशीय ब्राह्मणकी प्रीति करनेवाला यद्वा, विद्वत् भूत भविष्यवर्त्तमान त्रिकालज्ञ सर्वांतर्यामी शिव सकलदुःखापनोदनपूर्वक कल्याण करणशील श्रीमहादेवजीकी प्रीति करनेवाला यह ग्रन्थ निर्माण किया ॥ ६६ ॥ ४१ ॥ इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां सहमविवेको नाम तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

श्रीनीलकंठच्चाविदधान्महीधरस्संज्ञाविवेकस्यमतिप्रवर्द्धिनीम् ॥
माहीधरींसज्जनतोषकारिणींभाषाविवृतिंसुमनःप्रसादिनीम् ॥ ४२ ॥

श्रीनीलकंठ दैवज्ञकृत ताजिकनीकंठीके संज्ञाविवेक नाम एक प्रथम तंत्रकी बुद्धि बढानेवाली तथा सज्जनोंको सन्तोष करनेवाली सद्बुद्धि पाठकोंके मन प्रसन्न करनेवाली माहीधरी नाम भाषाटीका महीधरने रची ॥ ४२ ॥

इति महीधरकृतायांनीलकंठीभाषाटीकायां प्रथमं संज्ञातंत्रम् ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ नीलकंठीद्वितीयतंत्रप्रारम्भः ।

उपेंद्रव०-स्वस्वाभिलाषंनहिलब्धुमीशानिर्विघ्नमीशानमुखाःसुरौघाः
विनाप्रासादंकिलयस्यनौमितंढुंढिराजंमतिलाभहेतुम् ॥ १॥

ग्रन्थकर्त्ता आचार्य नीलकण्ठ दैवज्ञ ताजिकनीलकण्ठी द्वितीय फलतंत्रके प्रारम्भमें निर्विघ्नतार्थ गणेशजीको प्रणाम करता है कि, जिसके कृपा विना महादेव प्रभृति देवसमूह अपने अपने अभिलाषोंको निर्विघ्नतासे पानेको समर्थ-नहीं हैं ऐसे ढुंढिराज गणेशको सद्बुद्धिप्राप्तिके लिये प्रणाम करता हूं ॥ १॥

रथो०-जातकोदितदशाफलंचयत् स्थूलकालदंस्फुटं नृणाम् ॥
तत्र न स्फुरतिदैववित्मतिस्तद्ब्रुवेऽब्दफलमादिताजिकात्॥२॥

जातकोंमें दशाफल बहुत कालपर्यंत एकही फलदाता मनुष्योंको कहे हैं यहां ज्योतिषीकी बुद्धि स्फुरित नहीं होती जैसे शुक्रकी दशा २० वर्ष पर्य्यं-तकी कही है तो इतने समय पर्यंत एकहीसा कीसीकोभी नहीं रहता इस लिये सौर वर्ष मात्र समयावधिवाला सूक्ष्म फलविचार मैं प्राचीन ताजिकके अनु-सार करताहूं ॥ २ ॥

(गाथा) तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणा स्याद्यतःसमः ॥
तदैवाब्दप्रवेशः स्यात्तिथ्यादेर्नियमो न तु ॥
एकैकराशिवृद्ध्याचेत्तुल्योंऽशाद्यैर्यदारविः ॥
तदामासप्रवेशोद्युप्रवेशश्चेत्कलासमः ॥ ३ ॥

वर्षकालिक सूर्यस्पष्ट राश्यादि जन्मकालका सूर्य स्पष्ट राश्यादि समान जब मिले वहीं वर्ष प्रवेशका समय होता है, वर्षप्रवेशमें तिथ्यादिकोंका तुल्य होना नियम नहीं है,क्योंकि कदाचित् अन्तर पड जाता है। उसी स्पष्टमें एक राशिमात्र जोडके अंशादि वही स्थापन करके मास प्रवेशका सूर्य स्पष्ट होता है तथा इसी स्पष्टमें एक एक अंशजोडके जिस महीनेका दिन प्रवेश करना है उसकी राशि उसी महीनेलौं रखके तथा कला विकला पूर्ववत्ही स्थापन करके दिनप्रवेश होता है । इस सूर्यस्पष्ट

लग्नस्पष्टसे इष्टकाल निकालनेका "उदाहरण" जन्मकालका सूर्य स्पष्ट० १८।४२।३१। है; संवत् १९४३ वैशाख कृष्ण द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३। ५४। वर्ष प्रवेश ३८ में भी सूर्य स्पष्ट यही ०।१८।४२।३१। है अब इससे लग्नस्पष्ट और लग्नस्पष्टसे इष्टकाल लेना है सूर्यस्पष्टसे लग्नस्पष्टकी विधि उदाहरणसहित प्रथम संज्ञातंत्रके २१।२२।२३ श्लोककी टीकामें प्रकट लिखी है. सूर्यस्पष्टसे इष्टकालके लिये ग्रहलाघवका श्लोकार्ध "अर्क-भोग्यस्तनोभुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत्॥" यह है, इसके क्रमसे लग्नस्पष्टसे इष्टघटी साधन होताहै, "उदाहरण" अयनांश २२।४४ सूर्य स्पष्ट राश्यादि०।१८।४२।३१लग्न स्पष्ट३।१०।२७।३सायन सूर्य १ ११।२६।३१ अंशादि ३० में घटायके भोग्यांश १८।३३।२९ हुए, ३० से उद्धृत करनेपर भोग्य काल १५०।१९।१२। हुआ, सायन लग्न ४।३ ११। ३ सोदयसे गुनके ३० से भाग दिया तो भुक्तकाल ३७।४०। ४५। हुवा अर्क भोग्य काल १५०।१९।१२ में जोड दिया १८७।५९ ५७ अब सूर्य और सायन लग्नके बीच जितने लग्न हैं उनके स्वदेशीय खंड जोडने हैं यहां मिथुन ३०० कर्क ३४६ ये दो जोड दिये तो ८३३।५९।५७ हुए इनमें ६० से भाग देकर लब्धि १३ घटी शेष ५३ पल और विशेष विपलभी ५९।५७। जानना (अर्द्धाधिक्ये रूपम् १) के प्रमाणसे १३।५४।यह इष्टकाल होगया जो किसी कारण इष्टकाल खो-गया हो और लग्न स्पष्ट सूर्य स्पष्ट हो तो ऐसेही इष्ट निकाललेना यह प्रसंगसे लिख दिया है ॥ ३ ॥

वसंतति०—तात्कालिकास्तुखचराः सुधिया विधेयाः स्पष्टा-विलग्नमुखभावगणो विधेयः ॥ वीर्यं तथोक्तविधिना निखिल-ग्रहाणामब्दाधिपस्य विधये कथयामि युक्तिम् ॥ ४ ॥

ग्रंथकर्त्ता कहता है कि प्रथमोक्त प्रकारसे तात्कालिक ग्रह स्पष्ट लग्नादि भाव स्पष्ट करके सद्बुद्धिमान् जोतिषीने ग्रह तथा भोगका बल उस प्रकार सभीका करके वर्षेश नियत करना इसके विधिनिमित्त आगे युक्ति कहता हूं ॥ ४ ॥

रथोद्धता–जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुंथहाधिप इति त्रिराशिपः ॥
सूर्यराशिपतिरह्निचन्द्रभाधीश्वरो निशि विमृश्यपंचकम् ॥ ५ ॥

कि जन्मलग्नका स्वामी १ तथा वर्ष लग्नका स्वामी २ मुंथहाराशिका स्वामी ३ त्रिराशीश (त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रेत्यादिसे) ४ और दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य राशीश, रात्रिका वर्ष प्रवेश हो तो चंद्र राशीश ५ ये पांच अधिकारी हैं इनकी विधि पूर्व संज्ञातंत्रमें कही है ॥ ५ ॥

उपजाति–बलीयएषांतनुमीक्षमाणस्सवर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ॥
नैवाब्दपोदृष्ट्यतिरेकतः स्याद्बलस्यसाम्ये विदुरेवमाद्याः ॥ ६ ॥

उक्त प्रकार पंचाधिकारियोंको स्थापन करके इनका दृग्बल पंचवर्गीबल देखके, जो ग्रह बलसे अधिक हो तथा लग्नकोभी देखे तो वह वर्षेश होता है बलाधिक हो और लग्नको न देखे तो वर्षेश नहीं होता, बलाधिककी दृष्टिभी पूर्ण हो तो वही होगा इसके अभावमें इससे न्यून बली तथा इससेभी न्यून बली दृष्टि बिशेष वर्षेश होता है, जो वर्षमें सभी वा २ तुल्यबली हों तो जिसकी दृष्टि अधिक हो वही होगा, लग्नपर दृष्टि जिसकी नहीं है वह बलाधिक हो तौभी वर्षेश नहीं होता है ॥ ६ ॥

उ०जा०–दृगादिसाम्येऽप्यथ निर्बलत्वे वर्षाधिपःस्यान्मुथहेश्वरस्तु
पंचापिनोचेत्तनुमीक्षमाणावीर्याधिकोऽब्दस्यविभुर्विचिंत्यः ॥७॥

जो पंचाधिकारियोंमें सभीकी दृष्टि लग्नपर बराबर हो तथा बलवान्भी सभी तुल्य हों यद्वा (हीनबलः शरोनः)इत्यादिसे सभी हीनबल हों तो मुंथाराशिपति वर्षेश होता है,जो पांचोंमें कोई लग्नको न देखे तो बलाधिक ग्रह वर्षेश होता है जो लग्नपर दृष्टि पांचोंकी पूर्णही हो तो उनमेंसे बलाधिक वर्षेश जानना, कोई कहते हैं कि; पांचोंमें बल तथा दृष्टि पूर्ण कोई न हो तो वर्ष लग्नेश राजा होता है किसीका मत है कि ऐसी प्राप्तिमें जिसके स्वोच्च गृह नवांश द्रेष्काण हद्दादि बहुत अधिकार हैं वह राजा होगा, किसीका मत है कि पांच अधिकारियोंमें जिसके

दो तीन वा चार अधिकार मिले हों वह राजा होता है. इतने मतोंमें प्रमाण भी अन्यग्रन्थोंसे है, इननें भी जिसका बल यद्वा दृष्टि अनेक हों वही वर्ष राजा करना ॥ ७ ॥

उपजा०—बलादिसाम्येरविराशिपोऽह्निनिशींदुराशीडितिकेचिदाहुः येनेत्थशालोऽब्दविभुः शशीसवर्षाधिपश्चंद्रभपोऽन्यथात्वे॥८॥

किसीका मत है कि बल तथा दृष्टिके तुल्य पांचोंके होनेमें दिनका वर्ष हो तो सूर्यराशीश, रात्रिका वर्ष हो तो चन्द्रराशीश राजा करना- पूर्वोक्त प्रकारोंसे चन्द्रमा वर्षेश हो तो यह वर्षेश न करना, पांच अधि- कारियोंमेंसे जिसके साथ यह इत्यशाली हो उसे वर्षेश करना जब किसीके साथ इत्थशाल भी न हो तो जिस राशिमें चन्द्रमा बैठा है उसके स्वामीको वर्षेश करना; जो चन्द्रमा कर्कका हो तो चन्द्रराशीश चन्द्रमाही हुआ, तब तो चन्द्रमाही वर्षेश करना पड़ा इसी हेतु आचार्यने आगे चन्द्रमा वर्षेशके फल भी लिखे हैं. नहीं तो चन्द्रमा राजा न होता तो इसका राजत्व फल भी नहीं होनाथा ॥ ८ ॥

वसंतति०—अब्दाधिपोव्ययषडष्टमभिन्नसंस्थोलब्धोदयोऽब्द- जनुषोःसदृशो बलेन ॥ निःशेषमुत्तमफलं विदधाति कायेनै रुज्यराज्यबललब्धिमतीव सौख्यम् ॥ ९ ॥

अब वर्षेशका सामान्य फल कहते हैं कि, वर्षेश व्यय १२ षट् ६ वा अष्ट ८ इन स्थानोंमें न हो तथा जन्मवर्षमें उदयी हो अस्तंगत न हो बलमें पूर्ण हो यद्वा जन्ममें तथा वर्षमें भी बली हो तो संपूर्ण उत्तम फल देता है तथा शरीरमें नीरोगता कुलानुमान राजसुख और बल तथा अति- सौख्य देता है ॥ ९ ॥

अनु०—बलपूर्णेऽब्दपे पूर्ण शुभं मध्ये च मध्यमम् ॥
अधमे दुःखशोकारिभयानि विविधाः शुचः ॥ १० ॥

वर्षेश पूर्वोक्त गणितागत बलसे पूर्ण बली हो तो शुभ फल पूर्ण देता है मध्यबली हो तो मध्यम अर्थात शुभ न अशुभ और अधम बली हो तो

रोगादि दुःख तथा स्वजन वियोगादि शोक शत्रुभय और नानाप्रकारकी चिन्ता उत्पन्न करता है ॥ १० ॥

वसंततिल०—सूर्येऽब्दपे बलिनि राज्यसुखात्मजार्थलाभः कुलोचितविभुः परिवारसौख्यम् ॥ पुष्टं यशो गृहसुखं विविधा प्रतिष्ठा शत्रुर्विनश्यति फले जनिखेटयुक्त्या ॥ ११ ॥

सूर्य उत्तम बली होकर वर्षेश हो तो कुलानुमान राज्य तदीय सुख और पुत्र तथा धनलाभ होवे कुलानुसार प्रभुता और कुटुंबका सौख्य मिले शरीरसें पुष्टता होवे यश बढ़े गृहसंबंधी सौख्य होवे, अनेक प्रकारकी प्रतिष्ठा बढ़े शत्रुनाश होवे इतने फल जन्मके भी स्वोच्च गृहादि उत्तम बली होनेमें होता हैं जन्मका हीन बली हो तो फल पूरे नहीं होते, मिश्रतामें मिश्रही फलभी होते है ॥ ११ ॥

वसंतति०—मध्ये रवौ फलमिदं निखिलं तु मध्यं स्वल्पं सुखं स्वजनतोऽपि विवादमाहुः ॥ स्थानच्युतिर्न च सुखं कृशतापि देहे भीतिर्नृपान्मुथशिलोनशुभे न चेत्स्यात् ॥ १२ ॥

सूर्य्य मध्य बली होकर वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तम बलका फल मध्यम होता है सुख थोड़ा होता हैं और अपने मनुष्योंसे कलहभी कराता है, तथा स्थान वा पदसे भ्रष्ट हो जाना सुख न मिलना शरीरपीडा हो जाना राजासे भय होना, और इतने फल होते हैं परन्तु यह सूर्य शुभग्रहसे इत्थशाली हो तो उत्तम बलोक्त फल होते हैं ॥ १२ ॥

वसंतति०—सूर्ये बलेन रहितेऽब्दपतौ विदेशयानं धनक्षयशुचोऽरिभयं च तंद्रा ॥ लोकापवादभयमुग्ररुजोऽतिदुःखं पित्रादितोऽपि न सुखं सुतमित्रभीतिः ॥ १३ ॥

सूर्य बलरहित होकर वर्षेश हो तो विदेशगमन तथा धननाश चिन्ता शत्रु भय तन्द्रा (आलस्य सहित अर्द्धनिद्रा) होवे, तथा संसारमें अपवाद (झूंठ कलंकका भय) होवे. उग्ररोग उत्पन्न और अति दुःख होवे पिता माता आदिसे भी सुख न मिलै, तथा पुत्र और मित्रोंसे भी भय होवे ॥ १३ ॥

अनु०-चन्द्रेऽब्दपे मुथशिलं येनासावब्दपोऽस्यचेत् ॥
कंबूलमिन्दुना जन्म निशि वर्षे तदोत्तमम् ॥ १४ ॥

चंद्रमाकी वर्षेशप्राप्तिमें जिसके साथ यह मुथशिल करता हो वह वर्षेश होताही है परंच उसके साथ चंद्रमा यदि उत्तमादि भेदसे कंबूल करे और रात्रिका वर्षप्रवेश हो तो यह ग्रह हीनबलीभी हो तौभी वर्षमें उत्तमही फल देता है. पूर्ण बली वह ग्रह हो तो क्याही कहना पडता है अर्थात् अत्युत्तम फल देता है जो दिनका वर्ष हो तो सामान्य फल जानना ॥ १४ ॥

व० ति-०वीर्यान्विते शशिनिवित्तकलत्रपुत्रमित्रालयादिविविधंसुखमाहुरार्याः॥स्रग्गंधमौक्तिकदुकूलसुखानि भूतिर्लाभः कुलोचितपदस्य नृपैः सखित्वम् ॥ १५ ॥

चंद्रमा जब किसीके साथ इत्थशाली न होकर वर्षेश पूर्वोक्त विधिसे होही जावे तो उत्तम बल होनेमें धन स्त्री पुत्र मित्र गृहादि अनेक प्रकारके सुख देता है ऐसे श्रेष्ठजन कहते हैं. तथा शृंगारी वस्तु माला चंदन मृगमदादि सुगंधी मोती वस्त्र आदिकसे सुख देता है. ऐश्वर्य, तथा कुलानुमान अधिकार देता है और राजाओंसे मैत्री होती है ॥ १५ ॥

व०ति०-वर्षाधिपे शशिनि मध्यबले फलानि मध्यान्यमूनि रिपुतासुतमित्रवर्गैः ॥ स्थानांतरे गतिरथो कृशता शरीरे श्लेष्मोद्भवश्च यदि पापकृतेसराफः ॥ १६ ॥

चंद्रमा वर्षेश मध्य बली हो तो उत्तम बलोक्त फल सभी मध्यम होते हैं तथा पुत्र और मित्रवर्गसे शत्रुता होती है एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन और शरीरमें पीडा होती है. जो पापग्रहके साथ ईसराफ योग भी करता हो तो श्लेष्मविकारसे क्लेशभी देता है ॥ १६ ॥

व० ति०-नष्टेऽब्दपे शशिनिशीतकफादिरोगश्चौर्यादिभिः स्वजनविग्रहमप्युशंति ॥ दूरेगतिः सुतकलत्रसुखात्तयश्च स्यान्मृत्युतुल्यमतिहीनबले शशांके ॥ १७ ॥

नष्टबली चंद्रमा वर्षेश हो तो शीत तथा कफ आदिक रोग हो चोर

ठग आदिसे भय हो और अपने मनुष्योंमें कलह भी कहते हैं दूर गमन होवे पुत्र वा स्त्रीका सुख नष्ट होवे और यह अतिहीनबली हो तो शीतककफादि रोगोंसे मृत्यु समान कष्ट होता है ॥ १७ ॥

व० ति०—भौमेऽब्दपे बलिनि कीर्त्तिजयारिनाशः सेनापतित्वरणनायकता प्रदिष्टा॥ लाभःकुलोचितधनस्य नमस्यता च लोकेषु मित्रसुतवित्तकलत्रसौख्यम् ॥ १८ ॥

बलवान् मंगल वर्षेश हो तो कीर्ति बढै शत्रुसे जीत मिले तथा शत्रुनाश होवे सेनापतिका अधिकार तथा रणमें श्रेष्ठता भी होवे है और कुलउचित धनकी प्राप्ति होवे. संसारमें साधारण मनुष्योंसे नमस्कार प्रणाम करनेके योग्य होवे मित्र पुत्र धन स्त्रीका सौख्य मिले ॥ १८ ॥

व० ति०—मध्येऽब्दपेऽवनिसुते रुधिरस्रुतिश्चकोपोऽधिकोऽङ्गकटशस्त्रहतिक्षतानि ॥ स्वामित्वमात्मगणतो बलगौरवं च मध्यं सुखं निखिलमुक्तफलं विचिंत्यम् ॥ १९ ॥

मध्यबली मंगल वर्षेश हो तो शरीरसे किसी प्रकार रुधिर गिरे क्रोध बहुत आवे, शस्त्रकी चोट लगनेसे घाव होवे और अपने जनोंमें स्वामित्व तथा बल और गुरुता मिले सौख्य मध्यम होवे इस प्रकारका कहा हुआ फल मध्यबलमें मध्यमही विचारना ॥ १९ ॥

व० ति०—हीनेऽब्दपेऽसृजिभयं रिपुतस्कराग्निलोकापवादभयमात्मधिया विनाशः ॥ कार्यस्य विघ्नमतिरोगभयं विदेशयानंक्षयोऽपनयतो गुरुदृष्टयभावे ॥ २० ॥

हीनबली मंगल वर्षेश हो तो शत्रु चोर और अग्निसे भय होवे झूठा कलंक लगनेका भय होवे; और अपनी ही बुद्धिसे वस्तु वा कार्यका नाश होवे तथा कार्यमें विघ्न होवे, बहुधा रोगभय तथा परदेश गमन होवे और उद्धतपनसे धन एवं कार्यादिक्षय होवे; परंतु इतने फल ऐसे मंगलपर बृहस्पतिकी दृष्टि न होनेमें होते हैं, गुरुकी दृष्टि होनेमें सभी शुभफल कहे हैं ॥ २० ॥

वसंतति०--सौम्येऽब्दपे बलवति प्रतिवादलेख्यसच्छास्त्रसद्व्यव-हृतौ विजयोऽर्थलाभः ॥ ज्ञानं कलागणितवैद्यभवं गुरुत्वं राजाश्रयेण नृपता नृपमंत्रिता वा ॥ २१ ॥

बुध पूर्णबली वर्षराजा हो तो विवादमें तथा लिखनेके कर्मसे और शुभ शास्त्र शुभ व्यवहारसे विजय तथा धनलाभ होवे. मंत्रादि कला वैद्यत्व गणितशास्त्र इनसे गौरवता मिले, ज्ञान होवे और राजाके आश्र-यसे राज्य मिले अथवा राजमंत्रित्व मिले ॥ २१ ॥

वसंतति०--अब्दाधिपे शशिसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाध्वयानम् ॥ वाणिज्यवर्त्तनमथात्मजमित्रसौख्यं सौम्येत्थशालवशतोऽपरथा न सम्यक् ॥ २२ ॥

मध्यबली बुध वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तम बलीका फल समस्त मध्यम होता है और मार्ग चलना पडता है. व्यापार तथा पुत्रमित्रोंका सुख होता है परंतु शुभग्रहसे इत्थशाली हो तो उक्तफल है अन्यथा अशुभ फल देता है ॥ २२ ॥

वसंतति०--सौम्येऽब्दपेऽधमबले बलबुद्धिहानिर्द्धर्मक्षयः परिभवो निजवाक्यदोषात् ॥ निक्षेपतो विपदतीव मृषैव साक्ष्यं हानिः परव्यवहृतेः सुतवित्तमित्रैः ॥ २३ ॥

अधमबली बुध वर्षेश हो तो बल तथा बुद्धिकी हानि धर्मका क्षय होवे तथा अपनेही वचनसे अपमान पावे इत्यादि निक्षेप (निधानसे) विपत्ति बहुत होवे झूँठी साक्षी (गवाहीमें) कठिनाई आनपडे, पराये व्यापारमें अपनी धनहानि और पुत्र मित्र धनकी भी हानि होवे ॥ २३ ॥

व०ति०-जीवेऽब्दपे बलयुते परिवारसौख्यं धर्मो गुणग्रहिलता धनकीर्तिपुत्राः ॥ विश्वास्यताजगति सन्मतिविक्रमातिर्लाभो निधेर्नृपतिगौरवमप्यरिघ्नम् ॥ २४ ॥

बृहस्पति उत्तम बली वर्षेश हो तो कुटुंबका सुख तथा धर्म होवे शौ-र्यादि गुणोंका आग्रह होवे अर्थात् ये गुण मिलें धन यश और पुत्रप्राप्ति

होवे संसारमें सभी विश्वास माने अच्छी बुद्धि होवे पराक्रमसिद्धि तथा निधि वस्तु मिले राजासे गुरुता मिले, शत्रुनाश होवें ॥ २४ ॥

वसंतति०-अब्दाधिपे सुरगुरौ किल मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं फलमिदं नृपसंगमश्च ॥ विज्ञानशास्त्रपरताऽप्यशुभेसराफदारिद्र्यमर्थविलयश्च कलत्रपीडा ॥ २५ ॥

मध्यबली बृहस्पति वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तम बलके फल मध्यम होते हैं. तथा शुभ ग्रहसे इत्थशाल भी करता हो तो राजाका संगम होगा ज्ञान तथा शास्त्रमें तत्पर रहता है जो पापग्रहसे ईसराफ योग कर्ता हो तो दरिद्र और धननाश और स्त्रीसे कष्ट भी करेगा ॥ २५ ॥

वसंतति०-जीवेऽब्दपेऽधमबले धनधर्मसौख्यहानिस्त्यजंति सुतमित्रजनाः सभार्याः ॥ लोकापवादभयमाकुलताऽतिकष्टवृत्तिस्तनौ कफरुजो रिपुभीः कलिश्च ॥ २६ ॥

अधमबली वर्षेश बृहस्पति हो तो धन धर्म और सुखकी हानि होवे तथा पुत्र मित्र लोग और स्त्री उसे त्यागदेवें. संसारमें झूंठे कलंक लगनेका डर होवे चित्त व्याकुल रहे आजीवन बडे कष्टसे होवे. शरीरमें कफ रोग होवे, शत्रुसे भय तथा कलह भी होवे है ॥ २६ ॥

वसंततिलकाछंद-शुक्रेऽब्दपे बलिनि नीरुजताविलासच्छास्त्ररत्नमधुराशनभोगतोषाः ॥ क्षेमप्रतापविजया वनिताविलासो हास्यं नृपाश्रयवशेन धनं सुखं च ॥ २७ ॥

उत्तम बली वर्षेश शुक्र हो तो शरीर निरोग रहे, नित्यसुखसे विलास करे, शुभ शास्त्र तथा मिष्टान्न भोजनादि भोगोंसे प्रसन्नता रहे. सर्वथा कुशल प्रताप बढे शत्रुसे जय मिले स्त्रीविलासका सुख रहे प्रसन्नता रहे और राजाके आश्रयसे धन तथा सुख मिले ॥ २७ ॥

वसंतति०-अब्दाधिपे भृगुसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं निखिलमेतदथाल्पवृत्तिः ॥ गुप्तं च दुःखमखिलं सुनिबद्धवृत्तिः पापारिवीक्षितयुते विपदोऽर्थनाशः ॥ २८ ॥

मध्यबली शुक्र वर्षेश हो तो पूर्वोक्त उत्तमबलीका फल सभी मध्यम होता है तथा आजीवनार्थ थोडा द्रव्यादि मिलता है गुप्त प्रकारसे दुःख लगा रहे, वाच्य अथवा अवाच्य सुख मध्यम वृत्ति जीवनोपाय अल्प रहे, जो पापग्रह शत्रुसे युक्त दृष्ट हो तो विपत्ति होवे धननाश भी होवे ॥ २८ ॥

व० ति०—शुक्रेऽब्दपेऽधमबले मनसोऽतितापो लोकोपहास-
विपदो निजवृत्तिनाशः ॥ द्वेषः कलत्रसुतमित्रजनेषु कष्टा-
दन्नाशनं च विफलक्रियता न सौख्यम् ॥ २९ ॥

अधम बली शुक्र वर्षेश हो तो मनमें अति संताप रहे लोगोंसे उपहास होवे, अपनी आजीवनकी वृत्ति नष्ट होवे, स्त्री पुत्र मित्रजनोंसे वैर होवे, भोजन भी अति कष्टसे प्राप्त होवे. जो कुछ कर्म भलाई निमित्त करै वही निष्फल होवे सुख न मिले ॥ २९ ॥

व०ति०—मंदेऽब्दपे बलिनि नूतनभूमिवेश्मक्षेत्राप्तिरर्थनि-
चयो यवनावनीशात् ॥ आरामनिर्मितजलाशयसौख्यमंग-
पुष्टिः कुलोचितपदाप्तिगुणाग्रणीत्वम् ॥ ३० ॥

उत्तम बली शनि वर्षेश हो तो नवीन गृह भूमि (खेती) मिले, धन बहुत मिले, यवनावनीश(मुसलमान आदि जाति राजा)वा राजतुल्यसे मिले उपवन (बगीचा) बनावे, जलाशय, कूप तडागादिका सुख मिले, शरीर पुष्ट रहे अपने कुलयोग्य अधिकार मिले अपने समाजमें श्रेष्ठ रहे ॥ ३० ॥

व० ति०—अब्दाधिपे रविसुते खलु मध्यवीर्ये स्यान्मध्यमं
निखिलमन्नभुजिस्तु कष्टात् ॥ दासोष्ट्रमाहिषकुलान्यरतस्तु
लाभः पापं फलं भवति पापयुगीक्षणेन ॥ ३१ ॥

मध्यबली शनि वर्षेश हो तो पूर्वोक्त फल उत्तम सभी मध्यम होवे तथा अन्न खानेमें किसी प्रकार (अपची) अरुचि आदिसे होवे और दास ऊंट भैंस तथा अपनेसे हीन कुलमें तत्पर रहे कहीं 'कुधान्यरत' ऐसा पाठ भी है अर्थात् दुष्ट अन्न कोद्रव,साँवा,जुवार, बगड आदिमें तत्पर रहे.इतनी वस्तु-

ओंका लाभ भी होवे, और पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो समस्त फल दुष्टही होंगे शुभ दृष्टिसे शुभ जानना ॥ ३१ ॥

व०ति०—मंदे बलेन रहितेऽब्दपतौ क्रियाणां वंध्यत्वमर्थविलयो विपदोऽरिभीतिः ॥ स्त्रीपुत्रमित्रजनवैरकदन्नभुक्तिः सौम्येत्थशालयुजि सौख्यमपीषदाहुः ॥ ३२ ॥

शनि हीनबली वर्षेश हो तो कर्ममात्रका वंध्यत्व (निष्फलता) होवे, (कुत्सित अन्न) कुलत्थ, कोद्रव, जुवार, साँवा, आदि भोजनको मिले धन नाश तथा विपत्ति, शत्रुभय और स्त्री, पुत्र, मित्र जनोंसे वैर होवे, जो शुभग्रहसे इत्थशाली वा युक्त हो तो थोडा सुख भी होगा ऐसा कहते हैं ॥ ३२ ॥

व० ति०—वर्षेश्वरो भवति यः स दशाधिपोऽब्दे ज्ञेयोऽखिलोऽब्दजनुषोर्बलमस्य चिंत्यम् ॥ वीर्यान्विते च निखिलं शुभमब्दमाहुर्हीने त्वनिष्टफलता समता समत्वे ॥ ३३ ॥

पूर्वोक्त प्रकारसे जो वर्षेश हुआ वही प्रथम दशाधीश भी जानना यतः सभी दशाधीश ग्रहोंका यह राजा होता है इसका फल थोडा२सभीकी दशाओंमें होता है. और वर्षेश बल जन्ममें भी पंचवर्गी क्रमसे वर्षतुल्य गिनना, जन्म वर्षका बल मिलायके बलाबल जानना, दोनहूंमेंसे बली होनेसे पूर्णबली कहाता है, संपूर्ण वर्षमें शुभही फल देता है, इसी क्रमसे उत्तम मध्य कनिष्ठ भी बल जानना, हीनबलमें मध्यम फल, कनिष्ठमें अशुभ, सममें सम फल समस्त वर्षमें विचारसे कहना । बलाबल विधि पूर्ण कही है ॥३३॥

उ०जा०-येनेत्थशालोऽब्दपतौग्रहोऽसौस्वीयस्वभावात्सुफलंददाति शुभेसराफ शुभमस्तिकिंचिदनिष्टमेवाशुभमूसरीफ॥३४॥

वर्षेश जिस ग्रहके साथ इत्थशाल करता हो वह ग्रह अनेक अपने पूर्वोक्त स्वभावानुसार शुभ फल देता है. जो शुभग्रहसे ईसराफ योग हो तो शुभ फल थोडा देता है, और पापग्रहसे इत्थशाल हो तो अनिष्ट फल देता है बलाबलसे उत्तम मध्यम व अधम बलका विचार करना ॥ ३४ ॥

अनुष्टु०-हद्दे यादृशि यः खेट आधत्तेऽत्र च यो महः ॥
जन्मन्यब्दे च तादृक्त्वे तदात्मफलदस्त्वसौ ॥ ३५ ॥

जन्ममें जो ग्रह जिस प्रकारकी हद्दामें होकर दूसरेका तेज ग्रहण करता हो वर्षमेंभी उसी प्रकार हद्दामें हो तो अपना फल अपने संबंधी ग्रहको दे देता है अर्थात् जन्ममें जिस हद्दामें ग्रह हैं उसी हद्दामें जो कोई ग्रह हो उसके साथ मुथशिली हो तो जन्मके उस ग्रहका तेज ले लेता है, जैसे जन्ममें राज्य भावेश मंगल मेषके२०अंश अपने हद्दामें है, और शुक्रादि कोई ग्रह सुखाधीश१६अंशपर स्थित होकर मुथशिली होनेसे तेज ग्रहण करता है,एवं वर्षमें मंगल स्वहद्दामें होकर शुक्रसे मुथशिली हो तो शुक्र अपनी दशामें मंगलके स्वभाव तुल्य फल दशम भावसंबंधी फल भी देगा ॥३५॥

अनुष्टु०--यो जन्मनि फलं दातुं विभुर्मूसरिफोऽस्य चेत् ॥
अब्दलग्नाब्दपतिना तस्मिन्नब्देन तत्फलम् ॥ ३६ ॥

जो ग्रह जन्मसे शुभ वा अशुभ फल देनेको समर्थ है वह वर्षमें वर्ष-लग्नेश वा वर्षेशके साथ मूसरीफ योग करता हो तो जन्मकालोक्त फल वर्षमें नहीं होता है,जो इनके साथ ईसराफ हो तो जन्मकालोक्त फल वर्षमें होता है,ईशराफ, मूसरीफ कोई भी नहीं हो तो जन्मोक्तफल जन्महीमें वर्षोक्त वर्षहीमें फल देता है इसका उदाहरण अगले श्लोकमें है ॥ ३६ ॥

इन्द्रवज्रा--पुत्राधिपो जन्मनि पुत्रभावं पश्यन्सुतं दातुमसौ समर्थः॥
वर्षेऽत्र पुत्राब्दपमूसरीफी पुत्रस्य नाशो भवतीह वर्षे ॥ ३७ ॥

जन्मकालमें पुत्रभावेश पुत्रभावको देखे "उपलक्षणसे" वा पुत्र स्थानमें हो तो अपनी दशामें इसे पुत्र देनेकी सामर्थ्य है,वर्षमें वही जन्मके पुत्र भावेश वर्षलग्नेश वा वर्षेशसे वा पंचमेशसे मूसरीफ योग करे तो इस वर्षमें अवश्य पुत्र नाश करेगा यह पूर्व श्लोकका उदाहरण है.ऐसेही सभी भावोंका विचार करना ॥ ३७ ॥

अनु०--अब्देश्वरो गुरुर्मित्रहद्दे मित्रदृशा शशी ॥
महोऽत्राधाद्यमुद्दिश्य वर्षेशस्तेन शोभनः ॥ ३८ ॥

वर्षमें वर्षेश बृहस्पति हो और जन्ममें बृहस्पतिसे चन्द्रमा इत्थशाल करता हो, परन्तु बृहस्पति अपनी हद्दामें हो और वर्षमें चन्द्रमाको देखे तो जन्ममें चन्द्रमा बृहस्पतिको तेज देनेसे यह वर्ष शुभफल देनेवाला होगा ॥ ३८ ॥

अनु०—एवमुन्नेयमन्यच्च शुभाशुभफलं बुधैः ॥
बलाबलविवेकेन योगत्रयविमर्शतः ॥ ३९ ॥
इति श्रीनीलकंठदैवज्ञकृतायां नीलकंठ्यां फलतंत्रे वर्ष-
पतिफलानि समाप्तानि ॥ १ ॥

इसी प्रकार जन्मका तथा वर्षका बलाबल संबंध देखके तथा भविष्य मुथशिल वर्तमान मुथशिल ईसराफ तीन योगोंसे पंडितोंसे विचार करना चाहिये. यह लक्षण मात्र कहा है ऐसेही और भी विचार सब कर लेना ॥ ३९ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां वर्षतंत्रे वर्षेशफल-
निरूपणं नाम प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

अथ मुंथानिरूपणम् ।

उ० व०—स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैकराशिभोगान्मुथहाभ्रमेण ॥
स्वजन्मलग्नंरवितष्टयातंगताब्दयुक्तंभमुथहास्यात् ॥१॥

जन्मलग्नका नाम मुंथा है प्रतिवर्ष एक एक राशि भोगनेसे क्रमसे भ्रमण करती है. जैसे जन्मका सिंह लग्न हो तो दूसरे वर्षमें कन्याकी, तीसरेमें तुलाकी, इत्यादि, पुनः तेरहवें वर्षमें जन्मलग्न सिंहकी चौदहवेंमें कन्याकी यही क्रम है (जन्म लग्नमें गतवर्ष जोडके बारहसे भाग करके शेष राशिमें मुंथा वर्षकी होती है,) जन्मलग्नका जो स्पष्ट है वही मुंथा स्पष्ट रहता है केवल एक एक राशिमात्र प्रति वर्ष बढती है ॥ १ ॥

अनु०—प्रत्यहं शरलिप्ताभिर्वर्द्धते सानुपाततः ॥
सार्द्धमंशद्वयं मास इत्याहुः केऽपि सूरयः ॥ २ ॥

मासप्रवेश दिनप्रवेशमें मुंथाके लिये अनुपात त्रैराशिकसे है कि सौरमान १ वर्षमें १ राशि भुगती है तो एक महीनेमें कितना एक राशिके ३०

अंश १ अंशकी ६० कला प्रसिद्ध हैं त्रैराशिक करनेसे एक महीनेमें २ अंश ३० कला और एक दिनमें ५ कला मिलती हैं मासप्रवेशमें वर्ष मुंथाके स्पष्टमें २ अंश ३० कला जोडके दूसरे मासकी मुंथाका स्पष्ट होता है पुनः प्रतिमास २ अंश ३० कला जोडते रहना दिनप्रवेशमें केवल ५ कला प्रतिदिन जोडना ॥ २ ॥

अनु०—स्वामिसौम्येक्षणात्सौख्यं क्षुतदृष्ट्या भयं रुजः ॥
भावालोकनसंयोगात्फलमस्या निरूप्यते ॥ ३ ॥

मुंथाका फल कहते हैं कि, जिस राशिमें मुंथा है उसका स्वामी मुंथेश कहाता है मुंथा स्वस्वामी वा शुभ ग्रहके देखनेसे सुख देती है तथा शत्रु और पाप अल्पबली ग्रहके दृष्टिसे भय तथा रोग देती है, भाव दृष्टि और योगके अनुसार इसका फल कहा जाता है ॥ ३ ॥

अनु०--वर्षलग्नात्सुखास्तांत्यरिपुरंध्रेष्वशोभना ॥
पुण्यकर्मायगाः सौख्यं दत्तेऽन्यत्रोद्यमाद्धनम् ॥ ४ ॥

मुंथा वर्षलग्नेश सुख ४ अस्त ७ अंत्य १२ रिपु ६ रंध्र ८ स्थानोंमें शुभ नहीं होती. पुण्य ९ कर्म १० आय ११ स्थानोंमें सुख देनेवाली होती है इनसे उपरांत १। २। ३। ५ स्थानोंमें उद्यम करनेसे धन देती है ॥ ४ ॥

उपजा०--शत्रुक्षयं मानसतुष्टिलाभं प्रतापवृद्धिं नृपतेः प्रसादम् ॥
शरीरपुष्टिं विविधोद्यमाश्च ददाति वित्तं मुथहा तनुस्था॥५॥

मुंथाके भावफल कहते हैं लग्नमें मुंथा हो तो शत्रुक्षय होवे मन संतुष्ट रहे प्रताप बढे राजासे प्रसाद हो शरीर पुष्ट रहे अनेक प्रकारका उद्यम होवे तथा धन देवे ॥ ५ ॥

उपजा०--उत्साहतोऽर्थागमनं यशश्च स्वबंधुसम्माननृपाश्रयश्च ॥
मिष्टान्नभोगो बलपुष्टिसौख्यं स्यादर्थभावे मुथहायदाब्दे ॥६॥

मुंथा द्वितीय स्थानमें हो तो उत्साहसे धन आवे यश बढे बंधु (स्वजातिमें)सन्मान होवे तथा राजाका आश्रय मिले मीठे पदार्थ खानेको मिलें शरीरमें बल तथा पुष्टता होवे और सुख मिले ॥ ६ ॥

उपजा०-पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानि सौंदर्यसौख्यं द्विजदेवपूजा ॥
सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकांतिनृपाश्रयाश्चेन्मुथहा तृतीया॥ ७ ॥

मुंथा तीसरे स्थानमें हो तो अपने पराक्रमसे धन यश और सुख होवे, सुखरूपता और सौख्य होवे, देव ब्राह्मणोंकी पूजा अपनेसे होवे, सभीका उपकार अपनेसे बने शरीर पुष्ट कांतिमान् होवे, राजाका आश्रय मिले॥ ७॥

उपजा०--शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्गवैरं मनस्तापनिरुद्यमत्वे ॥
स्यान्मुन्थहायां सुखभावगायां जनापवादामयवृद्धिदुःखम्॥८॥

मुंथा चतुर्थ स्थानमें हो तो अपने समुदायमें वैर होवे मनको संताप रहे, उद्यमहानि अर्थात् आलस्य रहे और लोगोंमें झूंठा कलंक लगे अनेक प्रकारके रोग और दुःख बढें ॥ ८ ॥

उपजा०-यदीथिहा पंचमगाब्दवेशे सद्बुद्धिसौख्यात्मजवित्तलाभः।
प्रतापवृद्धिर्विविधा विलासा देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ॥९ ॥

मुंथा पंचम स्थानमें हो तो बली बुद्धि तथा सुख पुत्र धन लाभ होवे, प्रताप बढे, अनेक प्रकार हर्षप्राप्ति होवे देव ब्राह्मणोंका पूजन अपनेसे होवे९॥

उपजा०–कृशत्वमंगेषु रिपूदयश्च भयं रुजस्तस्करतो नृपाद्वा ॥
कार्यार्थनाशो मुथहाऽरिगाचेद्दुर्बुद्धिवृद्धिःस्वकृतोऽनुतापः॥१०॥

मुंथा छठे स्थानमें हो तो सभी अंग माडे होजावें शत्रु बढें रोग उत्पन्न होवे चोरसे वा राजासे भय होवे कार्य तथा धनका नाश होवे, दुष्टबुद्धि बढे, अपने किये कामसे आपही पछतावे ॥ १० ॥

उपजा०–कलत्रबन्धुव्यसनारिभीतिरुत्साहभंगोधनधर्मनाशः ॥
द्यूनोपगाचेन्मुथहातनौस्याद्रुजामनोमोहविरुद्धचेष्टे ॥ ११ ॥

स्त्री और बांधव पक्षमें कष्ट होवे द्यूतादि व्यसनसे हानि. शत्रुभय उद्यमहानि धन और धर्मका नाश होवे शरीरमें रोग होवे, मनकी अज्ञानता वा तंद्रादिसे विपरीत कर शारीरी चेष्टाओंको बिगाड देवे ॥ ११ ॥

उपजा०-भयं रिपोस्तस्करतो विनाशो धर्मार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च ॥
मृत्युस्थिता चेन्मुथहा नराणां बलक्षयः स्याद्गमनं सुदूरे ॥ १२ ॥

मुंथा अष्टम भावमें हो तो शत्रुसे भय चोर धन धर्मका नाश दुष्ट व्यसन जुँवा चोरी वेश्या आदिमें नाश हो रोगभी पैदा हो बलहानि हो बहुत दूर गमन निरर्थक करना पडे ॥ १२ ॥

इंद्रव०-स्वामित्वमर्थोपगमो नृपेभ्यो धर्मोत्सवः पुत्रकलत्रसौख्यम् ॥
देवद्विजार्चापरमंयशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेंथिहायाम् ॥ १३ ॥

नवम स्थानमें मुंथा हो तो सब लोगोंमें स्वामित्व मिले, राजासे धन आवे धर्मसंबंधी उत्साह होवे पुत्र और स्त्रीका सुख मिले, देव ब्राह्मण पूजन होवे पूरा यश मिले ऐश्वर्य बढे ॥ १३ ॥

उपजा०--नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ॥
यशोऽभिवृद्धिं विविधार्थलाभं दत्तेऽम्बरस्था मुथहापदातिम् १४ ॥

मुंथा दशम स्थानमें हो तो राजासे प्रसाद मिले अपने मनुष्योंका उपकार होवे. भले कर्मकी सिद्धि तथा देवता ब्राह्मणकी भक्ति अपनेसे बने यश बढे अनेक प्रकार धन लाभभी देतीहै और पदातिम्(उत्तमस्थान भी)देती है १४ ॥

उपजा०-यदींथिहा लाभगता विलाससौभाग्यनैरुज्यमनःप्रसादाः ॥
भवंति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभिमताप्तयश्च ॥ १५ ॥

मुंथा ग्यारहवें स्थानमें हो तो अष्ट प्रकार शृंगारका विलास और सौभाग्य नीरोगिता मनकी प्रसन्नता होवे. राजाके आश्रयसे धन मिले, अच्छे मित्र और पुत्र मिलें मन मानती भलाई होवे ॥ १५ ॥

उपजा०-व्ययोऽधिको दुष्टजनैश्च संगोरुजातनौविक्रमतोऽप्यसिद्धिः ।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा तदा स्याज्जनतोऽपिवैरम् १६ ॥

मुंथा बारहवें स्थानमें हो तो व्यय बहुत होवे दुष्ट मनुष्योंकी संगति मिले शरीरमें रोग होवे पराक्रम करनेमें परिश्रम व्यर्थ जावे. धर्म और धनकी हानि होवे सज्जनोंसे वैर होवे ॥ १६ ॥

अनु०--क्रूरैर्दृष्टः क्षुतद्दशा यो भावो मुथहाऽत्र चेत ॥
शुभं तद्भावजं नश्येदशुभं चापि वर्द्धते ॥ १७ ॥

मुंथाफल विशेष कहते हैं कि जो भाव पापयुक्त हो वा जिसपर क्रूरग्रहकी शत्रु दृष्टि हो उसीमें मुंथा हो तो शुभस्थानगतभी हो तौ भी उस भावका शुभ फल नहीं देती है, प्रत्युत, अशुभ फल बढ़ता है ॥ १७ ॥

भुजंगप्रयात०-शुभस्वामियुक्तेक्षितावीर्य्ययुक्सेंथिहास्वामिसौम्यैत्थशालं प्रपन्ना ॥ शुभं भावजं वर्द्धयेन्नाशुभं साऽन्यथात्वेऽन्यथाभाव ऊह्यो विमृश्य ॥ १८ ॥

जो मुंथा स्वस्वामी वा शुभ ग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तथा स्वामी बलवान् हो अथवा अपने स्वामी यद्वा शुभग्रहसे इत्थशालिनी हो तो जिस भावमें है उस भावसंबंधी शुभ फलको बढ़ाती है अन्यथा शुभ फलको नहीं बढ़ाती तथा अन्यथामें अन्यथा जैसे शुभग्रह स्वस्वामीसे युत दृष्ट न होनेसे निर्बल हो यद्वा पापग्रहसे मूसरीफ करती हो तो उस भावसम्बंधी शुभ फलको नाशकर अशुभ फलको बढ़ाती है ऐसे भावसम्बन्धी फलका शुभाशुभ मुंथाके बलसे विचारके कहना ॥ १८ ॥

भु०प्र०--जनुर्लग्नतोऽस्तांत्यषण्मृत्युबंधुस्थिताब्देहता क्रूरखेटैस्तु सा चेत् ॥ विनश्येत्स यत्रेंथिहाभाव एवं शुभः स्वामिदृष्टौ न नाशः शुभं च ॥ १९ ॥

मुंथा जन्मलग्नसे छठे आठवें वा चौथे स्थानमे हो तथा वर्षमें पापयुक्त पापाक्रांत हो तो जिस भावमें मुंथा है उस भावको नाश करती है, जैसे द्वितीयमें धनका तृतीयमें भाईका इत्यादि परन्तु वर्षमें स्वस्वामी शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो यह फल नहीं होता प्रत्युत शुभ फल देती है ॥ १९ ॥

अनु०--यदोभयत्रापि हता भावो नश्येत्स सर्वथा ॥
उभयत्र शुभत्वे तु भावोऽसौ वर्द्धतेतराम् ॥ २० ॥

मुंथा जन्मलग्नसे तथा वर्षलग्नसे शुभ स्थानमें हो पापाक्रांत न हो तो उस भावसम्बन्धी शुभ फल, अर्थात् वह भाव बढ़ता है जैसे जन्मलग्नसे

वर्षलग्नसे मुन्था पंचम शुभग्रह स्वस्वामियुक्त दृष्ट हो तो पुत्रवृद्धि करती है इत्यादि जो जन्म तथा वर्षलग्नसे अनिष्ट स्थानमें हो तथा पापयुक्त दृष्ट वा पापेत्थशालिनी हो वह भाव अवश्य नष्ट होगा ॥ २० ॥

अनु०--वर्षेऽप्यनिष्टगेहस्था यद्भावे जनुषि स्थिता ॥
क्रूरोपघातात्तं भावं नाशयेच्छुभयुक्छुभा ॥ २१ ॥

जन्मलग्नसे४।६।८।१२।दुष्टभावमें तथा वर्षमें ऐसेही अनिष्ट स्थानोंमें हो तो तथा पापग्रहयुक्त वा दृष्ट स्वामीके अस्तंगतादिसे निर्बल हो तो उस भावको नाश करती है और स्वस्वामियुक्त दृष्ट वा इत्थशालसे शुभ फल देती है ॥ २१ ॥

भुजंगप्रयात०--जनुर्लग्नतस्तुर्य्यगासौम्ययुक्ताऽब्दवेशे पितुर्द्रव्यलाभं विधत्ते॥ नृपाद्भीतिदा पापयुक्ताऽतिकष्टाऽष्टमादावपीत्थं विमर्शो विधेयः ॥ २२ ॥

जन्मलग्नसे मुथा चतुर्थभावमें शुभग्रहयुक्त हो तो पिताका द्रव्य धन भूम्यादिलाभ करती है, ऐसेही पापयुक्त हो तो राजासे भय और आजीवन अति कष्टसे होवे, ऐसेही जन्मलग्नसे अष्टमगत शुभयुक्त हो तो शुभफल तथा पापयुक्त होनेमें अनिष्ट फल देती है ऐसेही षष्ठादि स्थानोंमेंभी बुद्धिके विचारसे मुंथाका तारतम्य देखके फल कहना ॥ २२ ॥

शालिनी--यस्मिन्भावे स्वामिसौम्येक्षिता चेद्भावो जन्मन्येष यस्तस्य वृद्धिः ॥ एवं पापैर्नाश उक्तस्तु तस्येत्यूह्यं वीर्याद्वर्षपस्यास्तिसौख्यम् ॥ २३ ॥

वर्षलग्नमें मुंथा स्वस्वामी शुभग्रह दृष्ट युक्त जिस भावमें हो वह जन्मलग्नमें जो भावमें हो उस भावकी वृद्धि करती है, जैसे वर्षमें मुंथा चतुर्थ शुभग्रह वा स्वामियुक्त दृष्ट है और जन्मलग्नगणनासे यह भाव तीसरा होता है तो इस वर्षमें भ्रातृसम्बन्धी शुभफल होगा तथा पापग्रहयुक्त वा दृष्ट जिस भावमें हो वह जन्मलग्नसे जो भाव हो उसकी हानि होती है परन्तु वर्षेश बलवान् तथा शुभग्रह हो तो मुंथा पापयुक्तका पूर्वोक्त फल न होगा॥२३॥

इति मुंथाभावफलम् ।

अथ ग्रहयुक्तदृष्टमुंथाफलम् ।

उपजा०--यदींथिहा सूर्यगृहे युता वा सूर्येण राज्यं नृपसंगमं च ॥
दत्ते गुणानां परमामवाप्तिंस्थानांतरस्येतिफलंदृशोऽपि ॥२४॥

मुंथाका प्रत्येक ग्रहयुक्तका फल कहते हैं सूर्यकी राशि ५ में हो अर्थात् सूर्यके साथ वा सूर्यसे दृष्ट हो तो कुलानुमान राज्य मिले तथा राजाकी संगति मिले, स्त्री वस्त्र भूषणादि श्रेष्ठ भोग मिलें ॥ २४ ॥

उपजा०-कुजेन युक्ता कुजभे कुजेन दृष्टा च पित्तोष्णरुजं विधत्ते॥
शस्त्राभिघातं रुधिरप्रकोपं सौरीक्षिता सौरिगृहे विशेषात्॥२५॥

मुंथा मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो मंगलकी राशि १।८ में हो तो पित्तविकार उष्ण रोग देती है, और शस्त्रसे घात रुधिरकोपसे कष्टभी करती है ऐसी मुंथा शनिसे युक्त वा दृष्ट भी हो यद्वा शनि राशिमें मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो तो पूर्वोक्त फलको विशेष वढाय देती है शनि मंगलका मुन्थाक निमित्त परस्पर तुल्य फल है ॥ २५ ॥

उपजा०-चन्द्रेणयुक्तेंदुगृहेऽथ दृष्टेंदुनापिवा धर्मयशोऽभिवृद्धिम्॥
नैरुज्यसंतोषमतिप्रवृद्धिं ददाति पापेक्षणतोऽतिदुःखम् ॥ २६ ॥

मुंथा चन्द्रमासे युक्त चन्द्रमाके राशि (४) में अथवा चन्द्रमासे दृष्ट हो तो धैर्य तथा यशकी वृद्धि करती है नीरोगिता तथा प्रसन्नताकी तो अतिही वृद्धि देती है और पापग्रहकी दृष्टि भी हो तो अतिदुःख करती है ॥२६॥

उपजा०-बुधेनशुक्रेण युतेक्षितावा तद्भेऽपिवास्त्रीमतिलाभसौख्यम् ॥
धर्मं यशश्चाप्यतुलं विधत्ते कष्टं च पापेक्षणयोगतःस्यात्॥२७॥

मुंथा बुध अथवा शुक्रसे युक्त वा दृष्ट अथवा इनके राशि २।३।६।७ में हो तो स्त्री तथा बुद्धिलाभ और सुख होवे तथा अनुपम धर्म और यशभी देती है इसमें पापग्रहकी दृष्टि वा योगभी हो तो कष्ट होता है ॥ २७ ॥

उपजा०-युतेक्षिता वा गुरुणा गुरोर्भे यदींथिहा पुत्रकलत्रसौख्यम्॥
ददातिरत्नांबरधर्मसौख्यं शुभेत्थशालादिहराज्यलाभः ॥२८॥

मुंथा बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट तथा गुरु राशि ९ । १२ में हो तो पुत्र तथा स्त्रीका सुख और रत्न वस्त्र धर्मका सुख देती है शुभग्रहसे इत्थशालि-नी भी हो तो कुलानुमान राज्य मिलता है ॥ २८ ॥

उप०–शनेर्गृहेतेनयुतेक्षितावायदींथिहावातरुजं विधत्ते ॥
यानक्षयंवह्निभयंधनस्यहानिंचजीवेक्षणतःशुभाप्तिम् ॥२९॥

मुंथा शनिकी राशि १० । ११ में यद्वा शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो वातसंबन्धि रोग उत्पन्न करती है वाहनहानि भी करती है जो इसपर बृह-स्पतिकी दृष्टिभी हो तो शुभ भी फलही देती है ॥ २९ ॥

उ०व०–तमोमुखे चेन्मुथहाधनाप्तिर्यशः सुखं धर्मसमुन्नतिश्च ॥
सितेज्ययोगेक्षणतःपदाप्तिः सुवर्णरत्नांबरलब्धयश्च ॥३०॥

मुंथा राहुके मुखसंज्ञक अंशोंमें हो तो धनप्राप्ति और यश सौख्य धर्मकी उन्नति होती है शुक्र बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्टभी हो तो अधिकार प्राप्ति और सुवर्ण रत्न वस्त्रलाभ भी होते हैं ॥ ३० ॥

अनु०–भोग्या राहोर्लवास्तस्या मुखं पृष्ठंगता लवाः ॥
ततः सप्तमभे पुच्छं विमृश्येति फलं वदेत् ॥ ३१ ॥

राहुके मुखपुच्छलक्षण कहते हैं राहुकी वक्रगति स्पष्ट ही है जो राहुके एक राशिमें भोग्य अंश हैं वह मुख और भुक्तांशको पृष्ठ कहते हैं किसी २ का मत है कि मुखपृष्ठमें राहु स्थित अंशसे १५ । १५ अंश पूर्व और पीछेके लेते हैं और इससे सप्तम राशिमें केतु रहता है यह पुच्छ कहाता है तारतम्य विचारके फल कहना ॥ ३१ ॥

इ०व०–तत्पृष्ठभागेन शुभप्रदास्यात्तत्पुच्छभागाद्रिपुभीतिकष्टम्॥
पापेक्षणादर्थसुखस्यहानिश्चजन्मनीत्थंगृहवित्तनाशः॥३२॥

राहुके पृष्ठभाग अर्थात् राहुस्थित अंशसे विपरीत पूर्व पंद्रह वा राश्यंतपर्यंत अंशके आभ्यंतर मुन्था हो तो शुभ फल नहीं देती और पुच्छगत अर्थात् केतु-युक्त हो तो शत्रुसे भय और कष्ट देती है तथा पापग्रह दृष्टिसे धन सुखकी हानि करती है ऐसेही जन्ममें मुंथा हो तो गृह और धनका नाश करती है ॥३२॥

उपजा०--ये जन्मकाले बलिनोऽब्दकाले चेद्दुर्बलास्तैरशुभं समांते॥
विपर्ययेपूर्वमनिष्टमुक्तं तुल्यं फलंस्यादुभयत्रसाम्ये॥ ३३॥

जो ग्रह जन्मकालमें बलवान् और वर्षकालमें निर्बल हो वह वर्षके पूर्वार्द्धमें शुभ और वर्षके उत्तरार्द्धमें अशुभफल निर्बलताको देते हैं इनसे विपरीत अर्थात् जो जन्ममें निर्बल और वर्षमें बलवान् हैं ये वर्षपूर्वार्द्धमें अशुभ उत्तरार्धमें शुभ फल देते हैं दोनों कालमें तुल्यही हों तो सम्पूर्ण वर्षमें तुल्यही फल देते हैं ॥ ३३ ॥

उपजा०-षष्टेऽष्टमेऽन्त्येभुविवेंथिहेशोऽस्तगोऽथवक्रोऽशुभदृष्टयुक्तः॥
क्रूराच्चतुर्थास्तगतश्चभव्योनस्याद्रुजंयच्छतिवित्तनाशम्॥ ३४॥

मुंथाका स्वामी छठे आठवें बारहवें वा चौथे स्थानमें हो अथवा अस्तंगत हो वा वक्री हो तथा पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा क्रूर ग्रहसे चौथा व सप्तम अर्थात् शत्रुदृष्टिमें हो तो शुभ फल देनेवाला नहीं होता है और रोगोत्पत्ति धननाशभी करता है ॥ ३४ ॥

उप०-यद्यष्टमेशेन युतोऽथदृष्टः क्षुताख्यदृष्ट्या न शुभस्तदापि॥
योगद्वये स्यान्निधनं यदैकयोगस्तदामृत्युसमत्वमाहुः॥ ३५॥

जो मुंथेश वर्षलग्नसे अष्टमेश युक्त अथवा १। ४। ७। १० क्षुत दृष्टिसे दृष्ट हो तो भी शुभफल नहीं देता, एक योग यह है एक योग पहिले श्लोक (षष्ठेऽष्टमेंऽत्ये) इत्यादिमें कहा है जिस वर्षमें ये दोनों योग होवें तो मृत्युफल देते हैं जो एकही हो तो भी मृत्यु समान कष्ट देता है ॥ ३५ ॥

अनुष्टु०-मुंथहातत्पतिर्वापि जन्मनीक्षितयुक्छुभैः ॥
वर्षारंभे शुभं धत्तेऽब्दे चेदंत्येऽन्यथाऽशुभम् ॥ ३६॥

इति नीलकंठचां फलतंत्रे मुंथहाफलाध्यायः ॥ २ ॥

जो जन्मकालमें मुंथा वा मुंथेश शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो पूर्वार्द्धमें शुभ फल देता है मुन्था मुन्थेश दोनों शुभग्रहयुक्त वा दृष्ट हों तो अतिशुभ फल वर्षपूर्वार्द्धमें देते हैं तथा (वर्षकालमें मुंथा वा मुंथेश शुभग्रह युक्त वा दृष्ट हों तो वर्षके उत्तरार्द्धमें शुभफल देते हैं तथा मुंथा मुंथेश दोनों शुभ

ग्रहयुक्त दृष्ट हों तो अति शुभफल वर्षोत्तरार्धमें देते हैं और ऐसेही जन्ममें मुंथा मुंथेशमेंसे एकभी पापग्रहयुक्त वा दृष्ट हो तो वर्षपूर्वार्द्धमें अशुभ फल और जो दोनों पापयुक्त दृष्ट हों तो अति अशुभ फल देते हैं एवं वर्षमें मुंथा मुंथेशमेंसे एक पापग्रहयुक्त दृष्ट हो तो वर्ष उत्तरार्द्धमें अशुभ फल तथा दोनों हों तो अति अशुभ फल देते हैं ॥ ३६ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकण्ठीभाषाटीकायां फलतंत्रे
मुंथाफलप्रकरणं द्वितीयम् ॥ २ ॥

अथ वर्षारिष्टविचारः ।

अनुष्टु०–लग्नेशऽष्टमगेऽष्टेशे तनुस्थे वा कुजेक्षिते ॥
ज्ञजीवयोरस्तगयोः शस्त्राघातो विपन्मृतिः ॥ १ ॥

व्याकरणमें 'रुष रिष हिंसायां' इससे रिष धातुसे अनिट् 'क्तः' प्रत्ययका आदान करके रिष्ट पद सिद्ध होता है, नञ्समाससिद्ध अरिष्ट पदका अर्थ विपरीत जान पडता है. परंतु ज्योतिषग्रन्थोंमें सर्वत्र रिष्ट और अरिष्ट पद तुल्यार्थवाची होते हैं । अब अरिष्टयोग कहते हैं कि वर्षलग्नका स्वामी अष्टम स्थानमें हो इसपर मंगलकी दृष्टि हो अथवा अष्टमेश लग्नमें भौमदृष्ट हो उपलक्षणसे पापदृष्ट हो अथवा बुध बृहस्पति अस्तंगत हो तो शस्त्रसे चोट लगे, विपत्ति होवे और मृत्यु होवे ये तीन फल निर्बलताके क्रमसे हैं, जैसे प्रथम सामान्य बलमें शस्त्राघात, हीन बलमें विपत्ति, अतिहीन बलमें मृत्यु इस क्रमसे जानना. इस श्लोकमें तीन योग हैं ॥ १ ॥

अनुष्टु०–अब्दलग्नेशरंध्रेशौव्ययाष्टहिबुकोपगौ ॥
मुंथहासंयुतौ मृत्युप्रदौ तद्धातुकोपतः ॥ २ ॥

वर्षलग्नेश वा अष्टमेश मुंथासहित बारहवें आठवें चौथे स्थानमें हो तो उस ग्रहके पित्तादि धातु उक्तसे मृत्युसमान कष्ट होवे, जो मुंथासहित लग्नेश अष्टमेश दोनों उक्तस्थानमें हों तो मृत्यु देते हैं ॥ २ ॥

अनुष्टु०–जन्मलग्नाधिपोऽवीर्यो मृतीशोलग्नपो यदा ॥
सूर्यदृष्टो मृतिं धत्ते कुष्ठं कंडूं तथापदः ॥ ३ ॥

जन्मलग्नेश जन्म तथा वर्षमें निर्बल हो और वर्षमे अष्टमेश लग्नमें हो सूर्यकी दृष्टि भी हो तो मृत्यु वा कुष्ठ कंडू (खुजली) और आपत्ति देता है ॥ ३ ॥

अनुष्टु०--क्रूरमूसरिफोऽब्देशो जन्मेशः क्रूरितः शुभैः ॥
कंबूलेऽपि विपन्मृत्युरित्थमन्याधिकारितः ॥ ४ ॥

वर्षेशके साथ क्रूरग्रहका मूसरीफ हो तथा जन्मलग्नेश क्रूर होगया हो जैसे पापयुक्त बुध क्षीणचंद्रमा शुभभी क्रूर है और चंद्रमादि शुभग्रह कंबूल योगभी करे तो विपत्ति अथवा मृत्यु होवे, ऐसे ही जन्मलग्नेश वर्ष-लग्नेश मुंथेश आदि पंचाधिकारियोंसे भी यही योग होता है, जैसे यहां वर्षेश क्रूर मूसरीफी कहा तैसेही मुंथेशादि क्रूर मूसरीफी और कंबूल पूर्वचंद्रमाका ही कहा है यहां उसी विधिसे सभी शुभग्रहोंका विचारना॥४॥

अष्टुनु०--अस्तगौ मुथहालग्ननाथौ मंदेक्षितौ यदा ॥
सर्वनाशो मृतिः कष्टमाधिव्याधिभयं भवेत् ॥ ५ ॥

मुंथेश और लग्नेश अस्तंगत हो इनपर शनिका दृष्ट भी हो तो स्त्री पुत्रादि सर्वनाश अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा कुष्ठ और मानसीचिंता शरीर-पीडा आदिसे भय होवे ॥ ५ ॥

अनुष्टु०--क्रूरा वीर्याधिकाः सौम्या निर्बला रिपुरंध्रगाः ॥
तदाधिव्याधिभीतिःस्यात्कलिर्हानिस्तथा विपत्॥६॥

क्रूरग्रह बलवान् अर्थात् पंचवर्गीमें १५ से अधिक बली और ३।६ ११ स्थानोंमें हो तथा शुभग्रह निर्बल अर्थात् पंचवर्गीमें ५ से न्यून बल हों और ६।८।१२ स्थानोंमे हो तो मानसीव्यथा और रोगभयहो तथा कलह धनहानि और विपत्ति होवे ॥ ६ ॥

अनुष्टु०--नीचे शुक्रो गुरुः शत्रुभागे सौख्यलवोऽपि न ॥
लग्नेशेऽष्टमगेऽष्टेशे तनौ वा मृतिमादिशेत् ॥ ७ ॥

शुक्र नीचराशि ६ में और बृहस्पति शत्रुके अंशकमें हो तो उस वर्षमें सुखका अंशभी न होवे १. और लग्नेश अष्टम अष्टमेश लग्नमें हो तो मृत्यु होवे ये २ योग हैं ॥ ७ ॥

अनुष्टु०--निर्बलौ धर्मवित्तेशौ दुष्टखेटास्तनौ स्थिताः ॥
लक्ष्मीश्चिरार्जिता नश्येद्यदि शक्रोऽपि रक्षिता ॥ ८ ॥

धर्मस्थान ९ का स्वामी तथा धनस्थान २ का स्वामी निर्बल हो और पापग्रह लग्नमें हो तो इन्द्र भी रक्षा करने आवें तो भी बहुत दिनोंका संचित धन नष्ट होजावे ॥ ८ ॥

अनुष्टु०--नीचे चन्द्रेऽस्तगास्सौम्या वियोगः स्वजनैःसह ॥
शरीरपीडा मृत्युर्वा साधिव्याधिभयं द्रुतम् ॥ ९ ॥

चन्द्रमा नीचराशि ८ में हो तथा शुभग्रह अस्तंगत हो तो अपने मनुष्योंके साथ बिछोह होवे तथा शरीरपीडा वा मृत्यु अथवा मानसीव्यथा रोगभय शीघ्रही एकसे एक होवे ॥ ९ ॥

अनुष्टु०--अब्दलग्नं जन्मलग्नराशिभ्यामष्टमं यदा ॥
कष्टं महाव्याधिभयं मृत्युःपापयुतेक्षणात ॥ १० ॥

वर्षलग्न जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम हो तो कष्ट और महारोग क्षयादिका भय होवे ऐसे अष्टम लग्नपर पापग्रहकी दृष्टि वा पापग्रहका योग होवे तो मृत्यु होवे ॥ १० ॥

अनुष्टु०--जन्मन्यष्टमगः पापो वर्षलग्ने रुगाधिदः ॥
चन्द्राब्दलग्नपौ नष्टबलौ चेत्स्यात्तदा मृतिः॥ ११ ॥

जन्मकालमें जो ग्रह अष्टम है वही वर्षमे लग्नका हो तो रोग तथा मानसी व्यथा देता है; जो चन्द्रमा और लग्नेश दोनों (नष्टबल) ५ से हीन होवें तो मृत्यु होवे ॥ ११ ॥

अनुष्टु०--जन्माब्दलग्नपौ पापयुक्तौ पतितभस्थितौ ॥
रोगाधिदौमृत्युकरावस्तगौ नेक्षितौ शुभैः ॥ १२ ॥

जन्मलग्नेश तथा वर्षलग्नेश भी पापयुक्त होकर अष्टमस्थानमें हो तो रोग और मानसीव्यथा देते हैं अस्तंगत तथा शुभग्रह दृष्टिरहित भी हों तो मृत्यु करते हैं॥ १२॥

अनुष्टु०--व्ययांबुनिधनारिस्थाजन्मेशाब्दपमुन्थहाः ॥
एकर्क्षगास्तदामृत्युः पापक्षुतदृशा ध्रुवम् ॥ १३ ॥

जन्मलग्नेश वर्षेश और मुंथा तीनों बारहवें चौथे आठवें और छठे स्थानोंमेंसे किसीमें साथही हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होवे, जो इनपर पापग्रहोंकी क्षुताख्य दृष्टि भी हो तो अवश्य मृत्यु ही होगी ॥ १३ ॥

अनुष्टु०--चन्द्रोव्ययेशनियुतः शुक्रः षष्ठोऽर्थनाशकृत् ॥
चित्तवैकल्यमशुभेसराफान्नशुभेक्षणात् ॥ १४ ॥

शनिके साथ चंद्रमा बारहवां हो और शुक्र छठा हो तो धननाश करता है और शनि शुक्रके साथ किसी पापग्रहका ईसराफ हो तो चित्त विकल रहे, इनपर शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो धननाश तथा चित्तवैकल्य दोनों फल होवें १४

अनुष्टु०--चन्द्रोऽर्कमण्डलगतो रिपुरिःफाष्टबंधुगः ॥
त्रिदोषतस्तस्य रुजाविबुधेज्यदृशा शुभम् ॥ १५ ॥

चंद्रमा अस्तंगत होकर छठे, बारहवें, आठवें, वा चौथे स्थानमें हो तो त्रिदोष (वात पित्त कफ) के विकारसे सन्निपातादि रोग होवें जो इस पर बृहस्पतिकी दृष्टि होजाय तो परिणाममें निरोगी होजायगा ॥ १५ ॥

अनुष्टु०--हद्दाहायनलग्नेशौ सप्ताष्टांत्ये खलान्वितौ ॥
स्वदशायां निधनदौ शुभदृष्ट्या शुभं वदेत् ॥ १६ ॥

लग्नमें जिसका हद्दा तत्काल हो वह और लग्नेश सप्तम अष्टम वा बारहवें पापयुक्त हो तो अपनी दशामें मृत्यु देते हैं इनपर शुभग्रहकी दृष्टि भी हो तो भोगकर परिणाममें सुख होगा कहना ॥ १६ ॥

अनुष्टु०--अब्दलग्नाहज्वनृजूव्ययार्थस्थौ रुजा तदा ॥
एवं वर्षाब्दलग्नेशजन्मेशैरपि बंधनम् ॥ १७ ॥

वर्षलग्नसे बारहवां मार्गी ग्रह द्वितीय स्थानमें वक्री ग्रह हो तो रोग होता है इनका नाम कर्त्तरी योग है, ऐसेही जन्मलग्नेश वा वर्षलग्नेश वर्षेशसे कर्त्तरी हो तो बंधन कहना और सप्तमस्थानपर भी कर्त्तरीयोग रोग वा दुष्ट उपद्रवोंसे बंधन देता है ॥ १७ ॥

अनुष्टु०--नीचे त्रिराशिपे पापदृष्टे कार्यं विनश्यति ॥
इंथिहेशेऽब्दपे वरिभेऽस्तंयाते रुजा विपत् ॥ १८ ॥

त्रिराशिपति नीच राशिमें पापदृष्ट हो तो अभिलषित कार्यका नाश होता है १ और मुंथेश तथा वर्षेश छठा वा उपलक्षणसे आठवाँ अस्तंगत हो तो रोगोंसे विपत्ति होवे यह २ दो योग है ॥ १८ ॥

शार्दूलवि०--चंद्रोरिः फषडष्टभूद्युनगतो दृष्टोऽशुभैर्नोशुभैःसोऽरिष्टं विदधातिमृत्युमथवाभौमेक्षणादग्निभीः ॥ शस्त्राद्वाशनिराहुकेतुभिररेर्भीतिं रुजां वायुजां दारिद्र्यं रविणाशुभं शुभदृशेज्यालोकनादादिशेत् ॥ १९ ॥

चन्द्रमा बारहवें छठे आठवें प्रथम वा सप्तम स्थानमें हो इसपर पापग्रहोंकी दृष्टि हो शुभग्रहोंकी न हो तो अरिष्ट वा मृत्युही देता है. दृष्टिवशसे विशेष फल यह है कि उक्त प्रकारके चन्द्रमापर मंगलकी दृष्टि हो तो अग्निका भय वा शस्त्रसे भय देता है, शनि राहु वा केतुकी दृष्टि हो तो शत्रुभय तथा वातरोगसे पीडा तथा सूर्यकी दृष्टि हो तो दरिद्रता देता है, जो शुभग्रहकी विशेष करके बृहस्पतिकी दृष्टिभी हो तो उक्तपीडा परिहार उपरांत कल्याण देता है ॥ १९ ॥

व० ति०--क्रूरान्वितेक्षितयुताशनिनेंथिहाधिव्याधिप्रदाजनुषि
रिःफसुखारिरंध्रे ॥ द्यूने च वर्षतनुनैधनगा मृतिं सा
दत्ते खलेक्षितयुतेत्यपि चिंत्यमार्यैः ॥ २० ॥
इति नीलकंठ्यां फलतंत्रेऽरिष्टाध्यायः ॥ ३ ॥

मुंथा क्रूरग्रहसे युक्त हो और शनि उसे देखे अनिष्टस्थान ६ । १२ और ८ । ४ में हो तो मानसीव्यथा तथा शरीरमें रोग देती है १ यही मुंथा जन्मकालमें अर्थात् जन्मलग्नसे १२ । ४ । ६ । ८ । ७ । स्थानमें हो तथा वर्षमें अष्टम स्थानगत हो पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देती है इस प्रकार विद्वानोंसे विचार करना ॥ २० ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां फलतंत्रे
अरिष्टविचाराध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अथारिष्टभंगाध्यायः ।

अनुष्टु०--लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षितयुतोऽपि वा ॥
केंद्रत्रिकोणगोऽरिष्टं नाशयेत्सुखवित्तदः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त अरिष्ट योगोंके परिहारार्थ अरिष्टभंग योग कहते हैं कि वर्षलग्नका स्वामी बलवान् पंचवर्गीमें १५ से अधिक बली हो शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तथा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वा त्रिकोण ५ । ९ में हो तो पूर्वोक्त दुष्ट योगोंका अरिष्टफल नाश करके सुख और धन देता है ॥ १ ॥

अनुष्टु०--गुरुः केंद्रे त्रिकोणे वा पापादृष्टः शुभेक्षितः ॥
लग्नचंद्रेथिहारिष्टं विनाश्यार्थसुखं दिशेत् ॥ २ ॥

बृहस्पति केन्द्र वा त्रिकोणमें शुभग्रहोंसे दृष्ट हो और इसपर पापग्रहकी दृष्टि न हो तो लग्न चन्द्रमा और मुन्थाजन्य पूर्वोक्त अरिष्टका नाश और सुखप्राप्ति कहना ॥ २ ॥

अनुष्टु०--सुखं स्वामियुतं सद्भिर्दृष्टं सौख्ययशोऽर्थदम् ॥
लग्ने तृतीयेऽथगुरुर्जन्मेट्सौख्यार्थदः सुखे ॥ ३ ॥

चतुर्थभाव अपने स्वामीसे युक्त तथा शुभग्रहसे दृष्ट वा युक्त हो तो यश और धन देता है और बृहस्पति लग्न वा तृतीय स्थानमें तथा जन्मलग्नेश सुख ४ स्थानमें हो तो सुखपूर्वक धन देता है ॥ ३ ॥

उपजा०--लग्ने द्युनेशस्तनुगः सुरेज्यः क्रूरैरदृष्टः शुभमित्रदृष्टः॥
रिष्टं निहत्यर्थयशःसुखाप्तिंदिशेत्स्वपाके नृपतिप्रसादम् ४

सप्तमेश लग्नमें बृहस्पतिके साथ हो क्रूरग्रह इसे न देखें शुभग्रह तथा मित्र ग्रहोंसे दृष्ट उपलक्षणसे युक्तभी होवे तो अरिष्टको नाशकर धन यश और सुख देता है तथा अपनी दशामें राजप्रसादभी देगा कहना ॥ ४ ॥

उपजा०--बलान्वितौधर्मधनाधिनाथौक्रूरैरदृष्टौतनुगौ यदास्ताम् ॥
राज्यं गजाश्वांबररत्नपूर्णंरिष्टस्यनाशोऽप्यतुलं यशश्च॥५॥

नवमेश तथा धनभावेश बलवान् और लग्नमें हों पापग्रह इन्हें न देखे तो हाथी घोडा वस्त्र रत्नोंसे पूर्ण राज्य मिले तथा अरिष्टका नाश हो और अनुपम यशभी होवे ॥ ५ ॥

उ०जा०—त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यैः केंद्रत्रिकोणोपगतैश्चसौम्यैः ॥
रत्नांबरस्वर्णयशःसुखाप्तिर्नाशोऽप्यनिष्टस्य तनोश्च पुष्टिः॥६॥

पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहवें स्थानमें हों तथा शुभग्रह केंद्र वा त्रिकोणमें हों तो रत्न वस्त्र सुवर्ण यश और सुख मिलें और पूर्वोक्त अरिष्टका नाश होवे तथा शरीरमें पुष्टिभी होवे ॥ ६ ॥

उ०जा०—यदासवीर्योमुथहाधिनाथोलग्नाधिपोजन्मविलग्नपो वा॥
केंद्रत्रिकोणायधनस्थितास्तेसुखार्थहेमांबरलाभदाः स्युः॥ ७ ॥

जो मुंथेश वा लग्नेश अथवा जन्म लग्नेश पूर्ण बली होकर केंद्रत्रिकोण वा ग्यारहवें वा द्वितीय स्थानमेंसे किसीमें हो तो सुख तथा धन सुवर्ण वस्त्र देते हैं तीनों ऐसे हों तो विशेषतर उक्त लाभ देते हैं ॥ ७ ॥

उपजा०—तुंगेशनिर्वाभृगुजोगुरुर्वाशुभेत्थशालाद्यवनाद्धनातिम्॥
बलीकुजो वित्तगतोयशोऽर्थतेजांस्यकस्माच्चसुखं निदद्यात्॥८॥

शुभग्रहसे इत्थशाली उच्चराशिका शनि वा शुक्र अथवा बृहस्पति हो तो श्रेष्ठ यवनसे धनलाभ होवे शनियोगसे और शुक्रकृत योग हो तो स्त्रीसे और गुरुकृत योग हो तो ब्राह्मणसे यवनात्के माने यवनादि ग्रहानुसार जातियोंसे जो तीनों उक्त उच्चवर्ती तथा शुभग्रहेत्थशाली हों तो यवन राजासे बहुत धन मिले औरनसे थोड़ा २ बलवान् मंगल धनस्थानमें हो तो यश धन और तेज मिले तथा अकस्मात् सुखभी प्राप्त होवे ॥ ८ ॥

इंद्रव०—सूर्येज्यशुक्रामिथइत्थशालंकुर्युस्तदाराज्ययशःसुखार्थाः ॥
सूर्यः कुजोवोपचये ददाति भद्रं यशोमंगलमिथिहायाः ॥९ ॥

सूर्य बृहस्पति शुक्र परस्पर इत्थशाल करें तो राज्य यश सुख और धन मिले १ तथा सूर्य वा मंगल मुंथासे उपचय ३।६।१०।११स्थानमें हों तो कल्याण और अति मंगल देते हैं ॥ ९ ॥

अनु०—शुक्रज्ञचन्द्रा हद्दे स्वे पापाख्यायगता यदि ॥
स्वबाहुबलतोहेमसुखकीर्तिं नरोऽश्नुते ॥ १० ॥

शुक्र बुध और चन्द्रमा अपनी हद्दामें हो और पापग्रह तीसरे ग्यारहवें स्थानमें हो तो मनुष्य अपने बाहुबलसे सुवर्ण सौख्य और कीर्तियोंका भोग करता है ॥ १० ॥

अनु०—बुधशुक्रौ मूसरिफौ गुरुर्विक्रमभावगः ॥
तदा राज्ययशोहेममुक्ताविद्रुमलब्धयः ॥ ११ ॥

बुध शुक्रका मूसरीफ योग हो और बृहस्पति तृतीयस्थानमें हो तो राज्य यश और सुवर्ण मोती मूंगे आदि रत्न मिलें ॥ ११ ॥

अनु०—भौमो मित्रगृहेऽब्देशः कंबूलीस्वगृहादिगैः ॥
गजाश्वहेमांवरभूलाभं दत्ते सुखाधिकम् ॥ १२ ॥

मंगल वर्षेश होकर मित्रके राशिमें हो और स्वगृहादि पदस्थित किसी ग्रहसे मुथशिली तथा चन्द्रमासे कम्बूली हो तो हाथी घोडे सुवर्ण वस्त्र भूमिका लाभ और अधिक सुख देते हैं ॥ १२ ॥

अनु०—इत्थं जन्मनि वर्षे च योगकर्तुर्बलाबलम् ॥
विमृश्य कथयेद्राजयोगं तद्भंगमेव च ॥ १३ ॥

इस प्रकार जन्म तथा वर्षमें योग करनेवाले ग्रहोंके बलाबल विचारके राजयोग तथा राजयोगभंग कहना. जैसे योगकर्त्ता ग्रह उच्चादि पदस्थ वा पूर्णबली हो तो राज्यप्राप्ति निर्बल होनेमें राज्यादि हानि इत्यादि हो ॥ १३ ॥

उ०जा०—अब्देंथिहेशादिखगाःखलैश्चेद्युतेक्षिताह्यस्तगनीचगावा ॥
सौम्याबलोनानृपयोगभंगं तदाभवेद्वित्तसुखक्षयश्च ॥ १४ ॥

वर्षमें मुंथशादि ग्रह जो पापयुक्त वा पापदृष्ट वा अस्तंगत नीचगत हो तथा शुभग्रह बलरहित हो तो राजयोगभी हो तो भी भंग होगा और धन तथा सुखकाभी क्षय कहना ॥ १४ ॥

शा० वि०—श्रीगर्गान्वयभूषणंगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतोऽनंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम्॥तत्सूनुःखलुनीलकंठविबुधोविद्वाच्छिवानुज्ञयाऽवोचद्वर्षपमुंथहाफलमथारिष्टादिसद्योगयुक् १५

इस श्लोकका अर्थ पूर्वोक्तही है विशेष यह है कि वर्षेश मुंथाफल अरिष्ट; योग अरिष्टभंग राजयोग इस अध्यायमें ग्रन्थकर्त्ताने कहे हैं ॥ १५ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषायां फलतंत्रे अरिष्टभंगराजयोग-राजयोगभंगकथनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ भावविचारेषु तावत्प्रथमभावविचारः ।

अनुष्टु०—योयोभावःस्वामिसौम्यैर्दृष्टोयुक्तोऽयमेधते ॥
पापदृष्टयुतेर्नाशो मिश्रैर्मिश्रफलं वदेत् ॥ १ ॥

जो जो भाव अपने स्वामी वा शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो उस भावकी वृद्धि और जो भाव पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो उसकी हानि होती है, शुभपाप दोनोंसे युक्त वा दृष्ट एक प्रकारसे युक्त दूसरे प्रकारसे दृष्ट हो तो मिश्रफल कुछ शुभ कुछ अशुभ कहना सभी भावोंमें यह विचार है ॥ १ ॥

इंद्रव०—लग्नाधिपेवीर्ययुतेसुखानिनैरुज्यमर्थागमनं विलासः ॥
स्यान्मध्यवीर्येऽल्पसुखार्थलाभःक्लेशाधिकत्वंविपदल्पवीर्ये॥२॥

लग्नेश पूर्वोक्त प्रकारसे बलवान् हो तो सौख्य तथा नीरोगता धनप्राप्ति और हास विलासादि सुख होवे जो मध्यवीर्य हो तो सौख्य और धन-लाभ थोडा थोडा होता है जो अल्प वा हीनवीर्य हो तो अधिक क्लेश और विपत्ति होती है ॥ २ ॥

शार्दूलवि०—जन्माब्दांगपतींथिहापतिसमान्ताथाद्यधीकारवान्
सूर्योनष्टबलस्त्वगक्षिविलयंकुर्यान्निरुत्साहताम् ॥
नीचत्वं पितृमातृतोऽप्यभिभवश्चंद्रेक्षिकार्यक्षयो
दारिद्र्यंचपराभवोगृहकलिर्व्याध्यादिभीतिस्तथा ॥३॥

अधिकारी ग्रहोंके निर्बलतामें प्रत्येकके फल कहते हैं कि जन्मलग्नेश वा वर्षलग्नेश वा मुंथेश अथवा वर्षेश नष्टबली पंचवर्गीमें ५ से न्यून होनेमें यह फल है कि, सूर्य हो तो नेत्ररोगसे दृष्टिहानि कुष्ठ दद्रु आदि त्वचारोग उत्साहभंग होवे तथा नीचकर्म करने पडे माता पितासे "परभाव" अधिकारहानि होवे चन्द्रमा हो तो नेत्रक्षय कार्यहानि दरिद्र अपमान घरमें कलह मानसीव्यथा रोगभय ये होते हैं ॥ ३ ॥

अनुष्टु०—भौमेऽबलत्वं भीरुत्वं बुधे मोहपराभवौ ॥
जीवे धर्मक्षयः कष्टफलजीवनवृत्तयः ॥ ४ ॥

पूर्वोक्त प्रकारसे मंगल बलहीन अधिकारी हो तो शरीरमें निर्बलता

और भय प्राप्त होवे.बुध हो तो मूर्च्छा वा अज्ञान और अपमान होवे बृहस्पति हो तो धर्मक्षय और जीविका कष्टसे होवे ॥ ४ ॥

अनुष्टु०–शुक्रे विलाससौख्यानां नाशः स्त्रीभिः समं कलिः ॥
सौरौ भृत्यजनाद्दुःखं रुजो वातप्रकोपतः ॥ ५ ॥

ऐसेही शुक्र हो तो हास विलास सुखका नाश और स्त्रियोंसे कलह होवे शनि हो तो भृत्यमनुष्यसे दुःख और वातकोपसे रोग होवे ॥ ५ ॥

अनुष्टु०–लग्नं पापयुतं सौम्यैरदृष्टं सहितं नृणाम् ॥
विवादं वंचनं दुष्टमशनं चापि विंदति ॥ ६ ॥

लग्न पापग्रहसे युक्त हो तथा शुभग्रहोंसे दृष्टि युक्त वा न हो तो मनुष्योंको कलह होवे कोई ठग लेवे दुष्ट वस्तु खानेको मिले इतने फल होते हैं ॥ ६ ॥

शार्दूलवि०–जन्माब्दांगपरंध्रपाब्दमुथहानाथाबलाढ्यास्तदा
रम्यं वर्षमुशंति सर्वमतुलं सौख्यं यशोऽर्थागमः ॥
षष्ठाष्टांत्यगता नचेदिहपुनस्ते दुःखभीतिप्रदा-
निर्वीर्यायदिवर्षमेतदशुभं वाच्यं शुभेक्षां विना ॥ ७ ॥

जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश अष्टमेश वर्षेश और मुंथेश बलवान् हो तथा छठे आठवें बारहवें स्थानोंमें न हों तो सम्पूर्ण वर्षमें दैवज्ञ शुभही फल कहते और अगणित सुख तथा यश और धनागम भी होते हैं जो उक्त ग्रह बलरहित हों और इनपर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि भी न हो तो दुःख तथा भय होते हैं और सम्पूर्ण अशुभ फल ही देते हैं, यदि निर्बल अशुभदृष्ट ६।८। १२ में भी हों तो उक्त ग्रह मृत्यु ही देते हैं ॥ ७ ॥

अनुष्टु०–सूतौ धनप्रदः खेटो धनाधीशश्च तौ यदि ॥
वर्षे नष्टौ वित्तनाशान्यनिक्षेपापवाददौ ॥ ८ ॥

जन्ममें जो ग्रह धन देनेवाला है वह और जन्महीका धनभावेश वर्षमें नष्टबली हो तो धननाश तथा अपवाद (कि मैंने इसको कुछ धन धरो हर दिया था इसने चुरालिया ऐसा कलंक) लगे, जो उक्त दोनों बलवान् हों तो धन देते हैं ॥ ८ ॥

अनु०-एवंसमस्तभावानां सूतौ नाथाश्च पोषकाः ॥
अब्दे नष्टबलास्तेषां नाशायोह्याविचक्षणैः ॥ ९ ॥

इसी प्रकार सम्पूर्ण भावोंके स्वामी जन्ममें बलवान् वर्षमेंभी बलवान् हों तो उस भावको पालते हैं जो भावेश जन्ममें तथा वर्षमें भी निर्बल हों तो बुद्धिमानोंसे उस भावका नाश कहना ॥ ९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकण्ठीभाषा० वर्षतन्त्रे प्रथमभावफलाध्यायः॥ १॥

अथ धनभावविचारः ।

उपजा०-वित्ताधिपोजन्मनिवित्तगोऽब्देजीवोयदालग्नपतीत्थशाली ।
तदाधनाप्तिः सकलेऽपिवर्षेक्रूरेसराफे धनधान्यहानिः ॥१॥

जो जन्मका धनभावाधीश बृहस्पति वर्षमें धनभावगत हो और लग्नेशके साथ इत्थशाली हो तो सम्पूर्ण वर्षमें धनप्राप्ति होवे, जो उक्त बृहस्पति पापग्रहसे ईसराफी हो तो धन तथा अन्नका नाश करे ॥ १ ॥

अनु०-जन्मन्यर्थावलोकीज्योऽब्देऽब्देशोबलवान्यदा ॥
तदा धनाप्तिर्बहुलाविनाऽऽयासेन जायते ॥ २ ॥

जन्ममें धनस्थानको बृहस्पति देखे और वर्षमें वर्षेश होजावे बलवान् भी होवे तो विना परिश्रम बहुत धनप्राप्ति होवे ॥ २ ॥

अनुष्टु०-एवं यद्भावपोजन्मन्यब्देतद्भावगोगुरुः ॥
लग्नेशनेत्थशालीचेत्तद्भावजसुखं भवेत् ॥ ३ ॥

ऐसेही जन्ममें जिस भावका स्वामी बृहस्पति है वर्षमें उसी स्थानमें हो और उपलक्षणसे वर्षेश हो जावे, लग्नेशसे इत्थशाली हो तो उस भावका सुख होता है जैसे जन्ममें तृतीयेश बृहस्पति वर्षमें तीसरा वा वर्षेश होकर लग्नेशसे इत्थशाली हो तो भ्रातृसुख होगा ऐसेही संपूर्ण भावोंमें विचार करना ॥ ३ ॥

अनुष्टु०-तथा जनुषियंपश्येद्भावमब्देऽब्दपोगुरुः ॥
तदा तद्भावजं सौख्यमुक्तं ताजिकवेदिभिः ॥ ४ ॥

जैसे पूर्व कहा गया ऐसेही बृहस्पति वर्षमें वर्षेश हो और जन्ममें वह जिस भावको देखे उस भावजन्य सुख देता है ताजिकशास्त्र जाननेवालोंका यह मत है ॥ ४ ॥

अनुष्टु०–जन्मषष्ठाधिपबुधःषष्ठोऽब्देस्वल्पलाभदः ॥
पापार्दिते गुरौरंध्रेऽर्थेवादंडः पतेद्ध्रुवम् ॥ ५ ॥

जन्ममें बुध षष्ठेश हो और वर्षमें छठे स्थानमें हो तो थोड़ा लाभ देता है. चार प्रकारके ग्रह युद्धसे पापपीडित बृहस्पति अष्टम वा धनस्थानमें हो तो निश्चय राजासे दण्ड पडे ॥ ५ ॥

अनुष्टु०–गुरुर्वित्ते शुभैर्दृष्टो युतोवाराजसौख्यदः ॥
जन्मन्यब्देचमुथहाराशिं पश्यन्विशेषतः ॥ ६ ॥

बृहस्पति धनस्थानमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो राजासे सुख देता है, जन्म और वर्षमें भी मुंथा राशिको बृहस्पति देखे तो विशेष राजसुख देता है६

अनुष्टु०–एवं सितेऽब्दपे भूरिद्रव्यं धान्यं च जायते ॥
वित्तलग्नेशसंयोगो वित्तसौख्यविनाशदः ॥ ७ ॥

बृहस्पतिके तरह धनस्थानमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो और वर्षेशभी शुक्र ही हो तो बहुतसा धन तथा अन्न होता है और धनेश लग्नेश एकही स्थानमें हों तो धन सुखका नाश करते हैं, इसमें भी विचार है कि, इनका इत्थशाल हो तो धनसुख होता है,"ईसराफ हो तो धन सुखका नाश होता है" और इत्थशाल वा ईसराफ न हो केवल संयोगमात्र हो तो भी धन सुख होता है यह अर्थ बहुत संमत है ॥ ७ ॥

अनुष्टु०–एवंबुधेसवीर्येस्याल्लिपिज्ञानोद्यमैर्धनम् ॥
जन्मलग्नगताःसौम्यावर्षेऽर्थेधनलाभदाः ॥८॥

ऐसेही बुध बलवान् वर्षेश धनस्थानमें शुभ युक्त दृष्ट हो तो लिखनेके काम तथा ज्ञान शास्त्र और उद्यम (व्यवसाय) से धन मिले और जन्ममें जो शुभग्रह लग्नमें नहीं है वर्षमें धनस्थानमें हो तो धनलाभ देते हैं ॥८॥

अनुष्टु०–मालसद्मनिवित्ते वा बुधेज्यसितसंयुते ॥
तैर्वादृष्टेधनंभूरि स्वकुले राज्यमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

पारसी भाषामें माल (धनको) कहते हैं मालस्थानसे वा मालसहममें बुध बृहस्पति और शुक्र हों वा ये तीनों उसे देखें तो बहुत धन तथा अपने कुलका राज्य मिले ॥ ९ ॥

अनुष्टु०—अर्थार्थसहमेशौ चेच्छुभैर्मित्रदृशेक्षितौ ॥
बलिनौ सुखतोलाभप्रदौ यत्नादरेर्दृशा ॥ १० ॥

धनभावेश और धनसहमेश पर शुभग्रहोंकी मित्रदृष्टि हो तथा बलवान् भी हो तो सुखपूर्वक धनलाभ हो, जो इन्हें शुभग्रह शत्रुदृष्टिसे देखें तो यत्नसे धनलाभ देते हैं ॥ १० ॥

अनुष्टु०—मित्रदृष्ट्यामुथशिलेऽर्थांगयोःसुखतोधनम् ॥
तयोर्मूसरिफेवित्तनाशदुर्नयभीतयः ॥ ११ ॥

लग्नेश धनेशका मित्रदृष्टिसे मुथशिल योग हो तो अनायाससे धन मिले जो इनका मूसरिफ योग हो तो धननाश तथा दुर्नय (त्रास) भय होवे ॥ ११ ॥

अनुष्टु०—जन्मनीज्योऽस्तियद्राशौसराशिर्वर्षलग्नगः ॥
शुभस्वामीक्षितयुतो नैरुज्यस्वाम्यवित्तदः ॥ १२ ॥

बृहस्पति जन्ममें जिस राशिका होवे वह राशि वर्षमें लग्न हो शुभग्रह तथा स्वस्वामियुक्त दृष्ट हो तो नीरोगता ,अपने देशका स्वामित्व और धन देता है ॥ १२ ॥

अनुष्टु०—सुतौ लग्ने रविर्वर्षे धनस्थो धनसौख्यदः ॥
शनौवित्तेकार्यनाशोलाभोऽल्पोऽथधनव्ययः ॥ १३ ॥

जन्ममें सूर्य लग्नका और वर्षमें धनस्थानका हो तो धनका सुख देता है. ऐसा ही शनि धनस्थानमें कार्यनाश थोडा लाभ बहुत धनहानि करता है १३॥

अनु०—भ्रातृसौख्यं गुरुयुतेभूतयः स्युःशुभेक्षणात् ॥
क्रूरयोगेक्षणात्सर्वं विपरीतं फलं भवेत् ॥ १४ ॥

परंतु यह उक्त प्रकार शनि बृहस्पतियुक्त तथा शुभग्रहसे दृष्ट हो तो ऐश्वर्य और भाइयोंका सुख देता है. क्रूरग्रहोंके योग तथा दृष्टिसे उक्त शुभ फल संपूर्ण विपरीत होता है ॥ १४ ॥

अनुष्टु०—वित्तेशो जन्मनिगुरुर्वर्षेवर्षेशतां दधत् ॥
यद्भावगस्तमाश्रित्य लाभदो लग्न आत्मनः ॥ १५ ॥

जन्ममें बृहस्पति धनभावका स्वामी हो और वर्षमें वर्षेश हो जाय तो

जिस भावमें बैठा हो उस संबंधी लाभ देता है, जैसे उक्त बृहस्पति लग्नमें हो तो अपने पुरुषार्थसे लाभ देता है और आत्मनः—शरीरको सुख देता है॥ १५॥

अनु०—वित्ते सुवर्णरूप्यादेर्भ्रात्रादेः सहजर्क्षगः ॥
पितृमातृक्षमादिभ्यो वित्तं सुहृदि पंचमे ॥

उक्त प्रकार बृहस्पति धनस्थानमें हो तो सुवर्ण रौप्यादि लाभ हो तीसरा हो तो भ्रातादिकोंसे, चौथा हो तो पिता माता वा उनके सदृशोंसे 'पंचमे' इसका अर्थ दूसरे श्लोकार्थमें है ॥ १६ ॥

अनु०—सुहृत्तनयतःषष्ठेऽरिवर्गाद्धानिभीतिदः ॥
स्त्रीभ्यो द्यूनेऽष्टमे मृत्युरर्थहेतुस्तथांकगे ॥ १७ ॥

और पंचम होनेमें मित्र वा मित्रपुत्र वा आत्मपुत्रसे धनलाभ और छठा हो तो शत्रुवर्गसे धनहानि और भय देता है. सातवें हो तो स्त्रियोंसे धन देता है, आठवें हो तो मृत्युतुल्य धनक्लेश देता है, नववें हो तो अनेक प्रकारसे धन देता है ॥ १७ ॥

अनु०--खेनृपादेर्नृपकुलादायेऽत्येव्ययदो भवेत् ॥
इत्थं विमृश्यसुधिया वाच्यमित्यपरे जगुः ॥ १८ ॥

इति धनभावः ।

दशवें हो तो राजा मंत्री आदिकोंसे ग्यारहवां हो तो राजकुलसे धन देता है बारहवां हो तो व्यय देता है. बुद्धिमानोंसे इस प्रकार विचार फल कहना. ऐसा और आचार्यभी कहते हैं ॥ १८ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां फलतंत्रे धनभावविचाराध्यायः २

अथ सहजभावविचारः ।

अनु०--अब्देशेऽर्कसितेवापि सबले पापवर्जिते ॥
सौख्यं मिथःसोदराणां व्यत्ययाद्व्यत्ययं वदेत् ॥ १ ॥

वर्षेश सूर्य अथवा शुक्र बलवान् हो तथा पापग्रहोंसे युक्त न हो तो परस्पर भाइयोंका सुख होवे. जो पापग्रहयुक्त हो तो विपरीत फल कहना अर्थात् भाइयोंके साथ परस्पर कलहादि उपद्रव होवें ॥ १ ॥

वसंतति०--दग्धेकलिः सहजपेऽब्दपतौतयोर्वाजीवेबलेन रहिते
सहजे सहोत्थैः ॥ वैरं तृतीयभवनाधिपतीसराफे
मांद्यं कलिस्वजनसोदरतश्च विद्यात् ॥ २ ॥

तृतीयस्थानका स्वामी वर्षेश होकर दग्ध (दुष्टस्थान अस्तंगतादि दोषसहित)हो तो भाइयोंके साथ कलह होवे;शुक्र वा सूर्य दग्ध हो तौ भी यही फल है और बृहस्पति बलरहित तृतीय स्थानमें हो तौभी यही फल होता है. तथा आकुलता भी उनको होती.है (बलवान् बृहस्पति तृतीय भ्रातृसुख देता है) और वर्षेश तथा तृतीयेशका ईसराफ योग हो तो भाई तथा अपने मनुष्योंसे कलह और उनके शरीरमें कष्टभी जानना ॥ २ ॥

उपजा०--यदेत्थशालःसहजेश्वरेण गुरुस्तृतीयेसहजात्सुखाप्तिः ॥
सारेविधौस्यात्कलहस्तृतीये दृष्टौ युतौनोगुरुणायदातौ॥३॥

यदि निर्बलभी बृहस्पति तृतीयमें हो पर तृतीयेशसे शुभ दृष्टिका इत्थशाल करता हो तो भाईसे सुख कहना, सबल होके ३ में इत्थशालके विना भी भ्रातृसुख देता है, यह पूर्वसिद्ध है, मंगलसहित चंद्रमा तीसरे स्थानमें हो, तो भाइयोंके साथ कलह होवे परंतु इनपर बृहस्पतिकी दृष्टि न हो तो यह फल है गुरुदृष्टिसे शुभ फल होजाता है ॥ ३ ॥

अनुष्टु०--सहजेसहजाधीशोऽधिकारिणिसमापतेः ॥
लग्नपेवामुथशिलेमिथः सौख्यं सहोत्थयोः ॥ ४ ॥

तृतीयेश तृतीय स्थानमें हो और अधिकारयुक्त हो तथा वर्षेश लग्नेश मुथशिली हो तो परस्पर भ्रातृसौख्य होवे ॥ ४ ॥

अनुष्टु०--क्रूरेसराफेकलहःशनौभौमर्क्षगेरुजः ॥
ज्ञर्क्षेभौमेऽनुजेमांद्यं वदेत्सहजगेस्फुटम् ॥ ५ ॥

तृतीयेशसे पापग्रहोंका ईसराफ योग हो तो भाइयोंसे कलह होवे. शनि मंगलकी राशि १ । ८ में तीसरा हो तो भाईयोंको रोग उत्पन्न होवे तथा बुधकी राशि ६ । ३ में मंगल तीसरा हो तो भाइयोंको क्लेश कहना॥५॥

अनुष्टु०--मंदर्क्षगे सृजिबुधे कुजर्क्षे सहजेशुभैः ॥
युतेक्षिते सोदारणां मिथःसौख्यं सुखंबहु ॥ ६ ॥

शनिकी राशि १०।११ का मंगल तृतीय स्थानमें यद्वा मंगलकी राशि १।८ का बुध तीसरा हो शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो भाइयोंका परस्पर बहुत सुख होवे ॥ ६ ॥

वसन्तति०--जन्माब्दपौ बुधसितौ सबलौतृतीयेसोदर्यबंधुगणसौख्यकरौगुरुश्च ॥ वीर्यान्वितेंदुगृहगोभृगुजोऽधिकारी सूत्यब्दयोः सहजबंधुगणस्य वृद्ध्यै ॥ ७ ॥

जन्म तथा वर्षलग्नेश बुध यद्वा शुक्र बलवान् होकर तृतीय स्थानमें हो तो सहोदर भाई तथा और बंधुगणका सुख करते हैं, इस प्रकार बृहस्पतिभी उक्त फल देता है और अधिकारी शुक्र तथा जन्म वर्षमें बलवान् हो तथा चंद्रमाकी राशि ४ में हो तो भाई तथा बंधुगणकी वृद्धि करता है ॥ ७ ॥

वसन्तति०--पापान्विते तु सहजेसहमेशभावनाथेक्षणेन रहिते सहजस्य दुःखम्॥एवं सहोत्थसहमेऽपिवदेत्तदीशौ दग्धौ यदा सहजनाशकरौ विचिंत्यौ ॥ ८ ॥

तृतीयभाव पापग्रह युक्त हो तथा तृतीयेश वा सहजेश सहजसहमेशकी दृष्टि इस पर न हो तो भाईको दुःख मिले, इसी प्रकार सहोत्थ सहममेंभी कहना और तृतीयभावेश तथा सहज सहमेश दग्ध(दुष्टस्थानगत अस्तंगतादि दोषसहित) हो तो भाइयोंको नाश करनेवाला जानना शुभयुक्त दृष्ट हों तो भाइयोंको शुभ जानना ॥ ८ ॥

उपजा०--तृतीयपादब्दपतौद्युनस्थेलग्नेश्वरेवासह जैर्विवादः ॥
तृतीयपोजन्मनिताहगब्दे शुभेक्षितस्तत्रसहोत्थतुष्ट्यै ॥ ९ ॥

इति सहजभाव विचारः ।

तृतीयभावेशसे वर्षेश वा वर्षलग्नेश सप्तम हो तो भाइयोंसे कलह होवे और जन्म तथा वर्षमेंभी तृतीयेश तृतीयगत हो शुभग्रहकी दृष्टिभी इसपर हो तो परस्पर भाइयोंका आनंद देनेवाला होता है ॥ ९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकण्ठीभाषाटीकायां वर्षतंत्रे तृतीयभावविचारः३॥

अथ सुखभावविचारः ।

उपजा०--तुर्येरवीन्दू पितृमातृपीडापापान्वितौपापनिरीक्षितौच ॥
जन्मस्थसूर्यर्क्षगतेऽर्कपुत्रेऽवमानता वैरकलीचपित्रा ॥१॥

चतुर्थ स्थानमें पापयुक्त वा पापदृष्ट सूर्य हो तो पिताको और ऐसाही चंद्रमा हो तो माताको पीडा करता है, जो सूर्य चंद्रमा साथही चतुर्थ हों वा सूर्य चंद्रमा पापयुक्त दृष्ट हों तो पिताको पीडा देते हैं और जन्ममें सूर्य जिस राशिका है वर्षमें उस राशिका शनि हो तो अपमान होवे तथा पिताके साथ कलह वैर होवे ॥ १ ॥

उपजा०--चंद्रेजनन्यैवमुशंतिबंधौसुखाधिपे प्रीतिसुखानिपित्रोः ॥
तुर्याधिपेलग्नपतीत्थशालेवीर्यान्वितेसौख्मुशंतिपित्रोः॥२॥

जन्ममें चंद्रमा जिस राशिमें है वर्षमें उस राशिका शनि हो तो मातासे वैर तथा कलह होवे, चतुर्थ स्थानका स्वामी चतुर्थहीमें हो तो मातापिताके साथ प्रीति तथा उनका सुख कहते हैं, उपलक्षणसे पितृ वा मातृ सहम भी चतुर्थ होनेमें यही फल देता है तथा चतुर्थेश चतुर्थभावको देखे तो पितृ मातृसुख देता है और बलवान् चतुर्थेश लग्नेशसे इत्थशाली हो तो पितृ मातृ सुख होवे; उपलक्षणसे लग्नेश चतुर्थेशका योगभी उक्त-फल देनेवाला होता है ॥ २ ॥

व०ति०--सौख्याधिपोजनुषिनष्टबलोऽब्दसूत्योः पित्रोरनिष्टकृद-
थोसहमेशयोस्तु ॥ दग्धे तुरीयगृहगे च यदींथिहायां
नाशस्तयोः सहमयोरपि दग्धयोः स्यात् ॥ ३ ॥

जन्मका चतुर्थभावेश वर्ष तथा जन्ममें बलहीन हो तो माता पिताको अशुभ फल करता है ऐसाही मातृपितृसहममें भी विचारना तथा इन सहमोंमें दग्ध पापग्रह हो और मुंथासे चतुर्थ पडे तो पिता माताका नाश होवे तथा मातृ पितृ सहमोंके स्वामी नष्टबल वा पापाक्रांत और अस्तंगत हों तो यही फल देते हैं सुखेश वा उक्त सहमेश बली हों तो माता-पिताको शुभ फल देते हैं ॥ ३ ॥

अनु०–जन्मन्यंबुगृहंयच्चतत्पतिस्तत्पदोपगौ ॥
शान्यारौक्लेशदौपित्रोर्नचेत्सौम्यनिरीक्षितौ ॥ ४ ॥

जन्ममें चतुर्थभाव और चतुर्थेशके आश्रित राशियोंमें शनि और मंगल बैठे होंय तो माता पिताको क्लेश करते हैं पापदृष्टभी हो तो अधिक क्लेश करते हैं, शुभ दृष्ट हो तो क्लेश नहीं देते हैं अथवा चतुर्थेशके साथ शनि मंगल हों तो पूर्वोक्त फल देते हैं. जो ये शनि मंगल सुखमें वा सुखेशके साथ हों और शुभग्रह भी साथ हो वा देखे तो पिताको कष्ट होकर परिणाममें सुखभी होता है ॥ ४ ॥

वसंतति०–मातुः पितुश्च सहमे तनुपेत्थशाले तुर्येऽपिचेत्थम-
वगच्छसुखानि पित्रोः ॥ चेदष्टमाधिपतिनाकृतमित्थशालं
पित्रोर्विपद्भयमनिष्टकृतेसराफे ॥५॥ इति चतुर्थभावविचारः ।

मातृपितृसहममें वर्षलग्नेशका इत्थशाल हो तो माता पिताका सुख जानना ऐसेही चतुर्थभावमें वर्षलग्नके स्वामीके इत्थशालसे भी मातापिता को सुख जानना और मातृ पितृ सहम वा सुखभावमें वर्षलग्नसे अष्टमभावेशका इत्थशाल हो तथा अशुभफल दाता ग्रहसे ईशराफ योग हो तो मातापिताको विपत्ति तथा भय जानना ॥ ५ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकयां वर्षतंत्रे चतुर्थभावविचारः॥४॥

अथ सुतभावविचारः ।

उपज०–पुत्रायगोवर्षपतिर्गुरुश्चेत्सूर्यारसौम्योशनसोऽथवेत्थम् ॥
सत्पुत्रसौख्यायफलार्दितास्तेदुःखप्रदाःपुत्रत एव चिंत्याः ॥१॥

वर्षेश बृहस्पति पंचम वा ग्यारहवें स्थानमें हो अथवा सूर्य मंगल बुध शुक्रमेंसे कोई वर्षेश होकर पांचवाँ वा ग्यारहवाँ हो तो सत्पुत्रसे सुख मिले और यही ग्रह उक्त प्रकार होकर पापपीडित भी हो तो पुत्रजनित अस्वास्थ्य कलहादि क्लेश विचारना ॥ १ ॥

वसन्तति०–पुत्रे सुतस्य सहमे सबले सुताप्तिःसौम्येक्षितेऽप्यति

सुखं यदि तत्र वर्षेट् ॥ सौम्येक्षितःशुभगृहे सकुजोबुधश्चेत्पुत्रायगः सुतसुखं विबलः सुतार्तिम् ॥ २ ॥

पंचमभाव वा पुत्रसहम बलसहित हो तो पुत्रप्राप्ति होती है शुभग्रहकी दृष्टि भी उसपर हो तो अति सुख पुत्रसंबंधी होता है,जो वर्षेश भी पंचम हो तो फल देता है और शुभ ग्रहोंकी राशिमें मंगलके साथ बुध पंचम वा ग्यारहवाँ हो शुभ ग्रह भी इन्हें देखे तो पुत्रसुख देते हैं ऐसा निर्बल बुध पंचम वा ग्यारहवां हो तो पुत्रको पीडा करता है ॥ २ ॥

अनुष्टु०–जीवो जन्मनियद्राशावब्देऽसौसुतगोबली ॥
पुत्रसौख्याय भौमोज्ञो वर्षोशोऽत्र सुताप्तिदः ॥ ३ ॥

जन्मकालमें बृहस्पति जिस राशिमें है वह राशि वर्षमें पंचम हो तथा बलवान् वह राशि हो तो पुत्रप्राप्ति सौख्य देता है और मंगल वा बुध वर्षेश होकर जन्मकी गुरु राशिमें पंचमस्थानगत हो तो वे भी पुत्रप्राप्ति करते हैं॥ ३ ॥

प्रहर्षिणी--यत्रेज्यो जनुषिगृहेविलग्नमेतत्पुत्राप्त्यै बुधसितयोरपीत्थमूह्यम् ॥ यद्राशौ जनुषिशनिःकुजश्च सोऽब्दे पुत्रार्तिं तनुसुतगःकरोति नूनम् ॥ ४ ॥

जन्मकालमें बृहस्पति जिस राशिमें है वह वर्षमें लग्न हो तो पुत्रप्राप्ति करता है ऐसेही बुध शुक्रका फलभी जानना. जैसे बुध और शुक्र जन्मके जिस राशिमें हों वह राशि वर्षलग्नमें होनेसे पुत्रप्राप्ति कहना, और जन्ममें जिस राशिका शनि वा मंगल हो वह राशि वर्षलग्नमें वा पंचममें हो तो पुत्रकष्ट करता है, यहां शनिकी राशि लग्नमें मंगलकी राशि पंचम होनेमें यह योग होता है यह निकृष्टफल है ॥ ४ ॥

अनुष्टु०–पुत्रे सुतस्य सहमेपुत्राप्त्यैशुभदृष्टियुक् ॥
लग्नपुत्रेश्वरौ पुत्रे पुत्रदौबलिनौ यदि ॥ ५ ॥
चंद्रोजीवोऽथवा शुक्रः स्वोच्चगः सुतदः सुते ॥
वक्रीभौमः सुतस्थश्चेदुत्पन्नसुतनाशनः ॥ ६ ॥

जो लग्नसे पंचमभावमें तथा पुत्रसहममें शुभग्रह हों वा इनकी दृष्टि हो

तो पुत्रप्राप्ति करते हैं और लग्नेश पुत्रभावेश बलवान् होकर पंचममें हो तो भी पुत्रप्राप्ति करते हैं तथा चंद्र बृहस्पति वा शुक्र अपनी उच्चराशि उपलक्षणसे उच्चांशकका पंचम वा लग्नमें हो तो पुत्र देते हैं और वक्रगति मंगल पंचम हो तो पुत्रनाश करता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

उ०जा०—सुताधिपोजन्मनिभागवऽब्देपुत्रेविलग्नाधिपतीत्थशाली।
पुत्रप्रदो मंदपदस्थपुत्रे पापाधिकारीक्षितआत्मजर्तिः॥७॥

जन्मकालमें पंचमेश शुक्र हो वर्षमें बलवान् होकर पंचममें हो तथा लग्नेशसे इत्थशाली हो तो पुत्र देता है और जन्मका शनि जिस राशिमें हो वह वर्षमें पंचम हो तथा कोई अधिकारी पापग्रह उसे देखे वा पंचम हो तो पुत्रको पीडा देता है ॥ ७ ॥

अनुष्टु०—यद्राशिगो ग्रहःसूतौ स राशिस्तत्पदाभिधः ॥
बली जन्मोत्थसौख्याय वर्षे तद्दुःखदोऽन्यथा॥८॥इतिसुतभावः

जन्मकालमें जो ग्रह जिस राशिका है वह उसका पद कहाता है वह पदसंज्ञक वर्षराशिमें उसी भावमें हो, यद्वा वह ग्रह उसी पदमें हो तथा वह ग्रह उसी भावमें हो तो बलवान् होनेमें तद्भावसंबंधी शुभफल देता है इसमें विचार बहुत हैं सभी भावोंमें बुद्धिबलसे विचारना ॥ ८ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां० नी० भा० पंचमभावफलानि ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावविचारः ।

व०ति०—मंऽब्दपे नृजुगते पतितेरुजार्तिः स्यात्सन्निपातभवभीररिगेऽत्रशूलम्॥गुल्माक्षिरोगविषमज्वरभीर्गुरौतुपापार्दिते ऽनिलरुजोऽपि कबूलशून्ये ॥ १ ॥

वर्षेश शनि वक्रगति होकर छठे स्थानमें हो तथा पापाक्रांतभी हो तो वातसंबंधी रोगसे पीडा तथा सन्निपात (वात पित्त कफ) तीनोंके साथही कोप होनेसे भय तथा शूलरोग पेटमें गुल्मरोग नेत्ररोग और विषम ज्वरका भय होवे जो बृहस्पति वक्रगति पापाक्रांत छठे स्थानमें हो और चंद्रमासे कंबूल योग न हो तो वातरोग कमलवातादि तथा नेत्ररोगभी होवे॥ १ ॥

व० ति–स्यात्कामलाख्यरुगपीत्थमसृज्यसृग्भीः पित्तं च रिष्फगरवौद्दृशिशूलरोगः ॥ पित्तं पुनारिपुगृहेऽत्र भृगौनृभेऽरौ श्लेष्मा-भयेक्षितयुतेऽपिकफोऽरिगेंदौ ॥ २ ॥

मंमल वक्रगति होकर छठे स्थानमें पापपीडित हो और वर्षेशभी हो तो रुधिरविकारसे रोग होवे. पित्तरोग भी होवे (इस श्लोकमें कामलाख्य रोग पूर्वश्लोकोक्त योगका संबंधी है) और ऐसाही सूर्य छठा हो तो नेत्रशूलादि अक्षिरोग होवे तथा ऐसाही शुक्र छठे स्थानमें हो तो पित्तरोग होवे, जो पुरुष राशिका शुक्र छठा हो और षष्ठेशकी दृष्टिभी इस पर हो तो श्लेष्मरोग होवे और ऐसाही चन्द्रमा छठा हो तो कफसम्बन्धी रोग होवे ॥ २ ॥

इं०व०–एवंबुधेपापयुतेऽब्दपेऽरौवातोत्थरोगोजनिलग्ननाथः ॥ पापोऽब्दपेनक्षुतदृष्टिदृष्टो रोगप्रदोमृत्युकरः सपापः ॥ ३ ॥

जो वर्षेश बुध पापयुक्त वक्रगति होकर छठे स्थानमें हो तो वातप्रधान रोग होवे, जो जन्मलग्नका स्वामी पाप और वर्षेश इसे क्षुतदृष्टिसे देखे तो रोग देनेवाला होता है जो वही पाप जन्मलग्नेश और पापयुक्त भी हो तो मृत्युतुल्य कष्ट फल देता है ॥ ३ ॥

अनुष्टु०–सूत्यार्किभेलग्नगते रूक्षशीतोष्णरुग्भयम् ॥ शनीक्षिते याप्यता स्यात्सपापे मृत्युमादिशेत् ॥४॥

जन्ममें जिस राशिका शनि है वह राशि वर्षका लग्न हो तो रूक्ष एवं शीतपित्तके द्वंद्व व रोगका भय होवे इस पर शनिकी दृष्टिभी होवे तो और निंद्य,रोग होवे और वही जन्मकी शनिराशि वर्षलग्नमें हो शनिकी दृष्टि और पापयुक्त भी होवे तो मृत्युभय होवे ॥ ४ ॥

अनु–एवं भौमे क्षुतदृशा रक्तपित्तरुजोऽग्निभीः ॥ ततोऽन्ये बहुलारोगाः शुभदृष्टौ रुजाल्पता ॥ ५ ॥

ऐसेही जन्मकालीन मंगलकी राशि वर्षलग्नमें हो पापग्रहसे क्षुतदृष्टिसे देखें तो रक्त एवं पित्तरोग तथा अग्निभय होवे, जो यही जान्मिक मंगल-

राशि वर्षमें होकर इसीमें मंगलभी यद्वा मंगलकी दृष्टि भी उस पर हो तो उक्तरोग अल्पही होवें ॥ ५ ॥

वसंतति०--लग्नाधिपाब्दपतिषष्ठपतीत्थशालो रोगप्रदः खचरधातुविकारतः स्यात् ॥ स्मारोगदोजनिसिताश्रितभाजिसूर्ये षष्ठेसितेपततिरुक्सहमं समापम् ॥ ६ ॥

लग्नेश वा वर्षेशसे षष्ठेशका इत्थशाल हो तो वातादि धातुमें जो उस ग्रहका धातु संज्ञाप्रकरणमें कहा है उसके विकारसे रोग होवे और जन्ममें जिस भावका शुक्र है उसमें वर्षकालका सूर्य हो तो धातुविकारसे रोग होवे, यहां श्लोकमें जन्मकी शुक्रराशिका सूर्य ऐसा अर्थ प्रकट होता है, परंतु जन्ममें सूर्य जिस राशिका है वर्षमें भी उसी राशिका होगा शुक्रकी राशिमें कैसे जानना सम्भव है; जो सूर्य शुक्र एकही राशिमें किसीके साथ हों तब यह सम्भावना है तो उसके नित्यही यह योग होना इससे यह अर्थ वर्षमें योग्य नहीं है, इसलिये शुक्रभावका सूर्य होगा प्रमाण है.जो जन्ममें सूर्य शुक्र एक राशिमें हो और वर्षमें शुक्र छठे पड़जाय तो स्मा‍ररोग (कामविकार) रोग होता है रोगसहम सपाप हो तो विशेषसे कहना ॥ ६ ॥

भु०प्र०--सपापेगुरौरंध्रगेलग्नआरेसतंद्रास्तिमूर्च्छांगनाशःसचंद्रे ॥ खलाःसूतिकेंद्रेऽब्दलग्नेरुगाप्त्यैकफोद्ध्रचंथ्रिगैरीक्ष्यमाणेसितेस्यात ७

पापयुक्त बृहस्पति अष्टम और मंगल लग्नमें हो तो तन्द्रा (आलस्यसहित मूर्च्छा) होवे, जो चन्द्रमायुक्त अष्टम बृहस्पति और लग्नमें मंगल हों तो किसी रोगसे किसी अंगका नाश (अति पीडा) होवे, जो पापग्रह जन्मके केन्द्रमें हों और वर्षमें लग्नके हों तो रोगोत्पत्ति करते हैं. यथा नरराशिमें बैठे हुए पापग्रहोंसे शुक्र क्षुतदृष्टिसे देखाजाय तो वर्षमें कफरोग होता है ॥ ७ ॥

भु०प्र०-दिनेऽब्दप्रवेशोविलग्नेऽब्दसूत्योर्यदादृक्कदृदागृहाद्योऽधिकारः खर्वाकुजस्यात्रपीडाज्वरात्स्याद्दृशासौम्यखेटोत्थयावेसुखाप्तिः ८॥

---

(१) " कांदर्पिकामयभयं पतिते सितेऽर्कस्थानेऽथ षष्ठ इह " यह पाठ अच्छा है। जन्मकालमें शुक्र जिस राशिमें है, वह राशि वर्षमें छठा हो, और सूर्य उसभावमें हो तथा शुक्र पतित (६ । ८ । १२ में) हो तो यथोक्तफल कहना चाहिये ।

दिनका वर्षप्रवेश हो और जन्म तथा वर्षकालके लग्नमें सूर्य वा मंगलका स्वगृह हद्दा द्रेष्काण आदि कोई अधिकार हो तो उस वर्षमें ज्वरसे कष्ट होवे जो लग्नपर शुभग्रहकी दृष्टि भी हो तो परिणाममें सुख होगा ॥ ८ ॥

अनु०–निशिसूतौवर्द्धमाने चन्द्रे भौमेत्थशालतः ॥
रुग्नश्येदेधतेमंदेत्थशालाद्व्यत्यययोऽन्यथा ॥ ९ ॥

रात्रिका जन्म हो तथा चन्द्रमा वर्द्धिष्णु (शुक्लपक्षका) हो और वर्षमें मंगलके साथ मुथशिली हो तो रोगनाश होवे और ऐसाही चन्द्रमा शनिसे मुथशिली हो तो रोग बढता है, विपरीतमें फलभी विपरीत जानना, जैसे दिनका जन्म और कृष्णपक्षका चन्द्रमा मंगलसे मुथशिली हो तो रोग करता है ऐसाही चन्द्रमा शनिसे मुथशिली हो तो रोगनाश करता है ॥ ९ ॥

अनुष्टु०--रवावीदृशिवित्केतुयुतेऽब्दं निखिलं गदाः ॥
अधिकारीबलीसूतावब्दे केतुज्ञयुक्तथा ॥ १० ॥

ऐसाही सूर्य मंगल वा शनिके साथ मुथशिली तथा बुध केतुयुक्तभी होवे तो सम्पूर्ण वर्षमें रोग रहे तथा जन्मकालका अधिकारी बुध वर्षमें केतुयुक्त हो तो वही फल देता है ॥ १० ॥

अनुष्टु०--चतुर्थेऽस्तेचमुथहाक्षुतदृष्टयाशनिक्षिता ॥
शूलंपापखगैर्दृष्टे तच्छूलं परिणामजम् ॥ ११ ॥

चतुर्थ वा सप्तम स्थानमें मुंथा हो शनिसे युक्त वा शत्रुदृष्टिसे दृष्ट हो तो शूलरोग होता है तथा चतुर्थ सप्तममें मुंथा किसी पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो किसी कर्म वा किसी रोगसे शूल उत्पन्न होवे ॥ ११ ॥

वसंततिल०--जन्मस्थजीवसितराशिगतेमहीजेसूर्यांशुगेपि-
टकशीतलिकादिमांद्यम् ॥ शीतोष्णगंडभवरुक्सबुधे च
सेंदौ कुष्ठभगंदररुजोऽपि सगंडमालाः ॥ १२ ॥

जन्ममें जिस राशिका बृहस्पति वा शुक्र हो उसी राशिका वर्षमें मंगल अस्तंगत हो तो पिटका (फुन्सी) शीतला, दद्रु, आदि रोग तथा शीत-

पित्त और गंडमाला आदि रोग होवें और जन्मका बृहस्पति शुक्रकी राशिका बुध वर्षमें चन्द्रमासहित हों तो कुष्ठादि रोग होवें ॥ १२ ॥

अनुष्टु०--जन्मलग्नेंथिहानाथौ षष्ठौ पापान्वितेक्षितौ ॥
निर्बलौ ज्वरपीडांगवैकल्याद्यतिकष्टदौ ॥ १३ ॥

जन्मलग्नेश एवं मुंथेश छठे स्थानमें पापयुक्त वा पापदृष्ट और निर्बल हों तो ज्वरपीडा तथा किसी अंगकी विकलतासे अति कष्ट देते हैं ॥ १३॥

अनुष्टु०--मुथहालग्नतन्नाथाःपापांतःस्थास्तुरोगदाः ॥
षष्ठेशेषष्ठगेसौम्येस्त्रियःप्राप्तिरितीर्यते ॥ १४ ॥

मुंथा और मुंथेश लग्न और लग्नेश ये चारों पापग्रहोंके बीच हों तो रोगोत्पत्ति करते हैं यहां एक वा दोके पापांतःस्थ होनेमें रोग, चारोंसे मृत्युतुल्य कष्ट जानना, और षष्ठेश शुभग्रह छठेही स्थानमें हो तो स्त्री प्राप्ति होती है. परंतु कन्या मिथुन तुलाका शुक्र छठा कफरोग करता है यह ताजिकांतर मत है ॥ १४ ॥

अनुष्टु०--रोगकर्त्तायत्रराशावंशेस्यादनयोर्बली ॥
तत्स्थानं तस्य रोगस्य वाच्यं राशिस्वरूपतः ॥ १५ ॥

उक्तयोगोंसे रोगकर्त्ता ग्रह जानकर रोगका स्थान जाननेकी यह विधि है कि वह ग्रह जिस राशिमें एवं जिस नवांशकमें है उनमेंसे जो अधिक बली है उसका कालांग राशिस्वरूपमें जो स्थान है उसमें रोग उत्पन्न करता है बुद्धिसे बलाबल विचारके कहना ॥ १५ ॥

अनुष्टु०--जन्मषष्ठाधिपे भौमे वर्षे षष्ठे गते रुजः ॥
क्रूरेत्थशालेविपुलः शुभदृग्योगतस्तनुः ॥ १६ ॥ इतिषष्ठभावः॥

जन्मका षष्ठेश मंगल वर्षमें छठाही हो तो रोग करता है, इसमें भी विशेष विचार है कि, इसके साथ पापग्रहका इत्थशाल हो तो रोग बहुत शुभग्रहका हो तो अल्परोग होता है ॥ १६ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां ता० नीलकण्ठीभाषाटी० षष्ठभावफलाध्यायः ॥६॥

अथ सप्तमभावविचारः ।

उपजा०–बलीसितोऽब्दाधिपतिः स्मरस्थः स्त्रीपक्षतःसौख्यकरो विचिंत्यः ॥ ईज्येक्षितोऽत्यंतसुखं कुजेनाधिकारिणा प्रीतिकरोमिथः स्यात् ॥ १ ॥

वर्षेश शुक्र बली होकर सप्तमस्थानमें हो तो स्त्रीपक्षसे सुख करता है और बृहस्पतिकी दृष्टिभी इस पर हो तो अत्यंतही स्त्रीसुख करता है,जो ऐसे शुक्रपर आधिकारी मंगलकी दृष्टि हो तो स्त्रीपुरुषकी परस्पर प्रीति बढाता है, (जो शुक्र सप्तम निर्बल नष्ट दग्ध हो तो स्त्रीसे कष्ट देता है) ॥ १ ॥

अनुष्टु०--बुधेक्षितेजारतास्याल्लघ्व्यामंदेनवृद्धया ॥
गुरुदृष्टयानवाभार्या संततिस्त्वरितं ततः ॥ २ ॥

वही वर्षेश शुक्र यदि अधिकारी बुधसे देखा जाय तो (लघ्व्या) थोडी अवस्थाकी परस्त्री वा वारस्त्रीसे जारता और उक्त शुक्र अनधिकारी शनिसे देखा जाय तो वृद्ध परस्त्रीसे जारता होवे । उक्त शुक्र पर अधिकारी वा अनधिकारी गुरुकी दृष्टि होनेसे विवाहिता नवीन भार्यासे संयोग तथा शीघ्र सन्तानोत्पत्ति होती है, इस श्लोकमें, गुरुदृष्टया, यह पाठ प्रमादसे है क्योंकि पूर्व पद्यमें निरुक्त है यहां 'गुरुयोगात् ' ऐसा पाठ होना चाहिये, उक्त भी है ताजिकसुधानिधिमें 'गुरुयुतेऽपिच नूतनवल्लभा भवति तत्र च सन्ततिराशु हि ॥ २ ॥

अनुष्टु०--जन्मलग्नाधिपेऽस्तस्थेदारसौख्यंबलान्विते ॥
जन्मशुक्रर्क्षमस्तेऽब्दे स्त्रीलाभाय सितेऽब्दपे ॥ ३ ॥

जन्मलग्नेश वर्षकालमें सप्तम बलवान् हो तो स्त्रीसुख होता है जन्मकी शुक्रराशि वर्षमें सप्तम हो और शुक्रही वर्षेश हो तो स्त्रीलाभ होवे॥ ३ ॥

अनुष्टु०–जन्मलग्नाधिपे वर्षे लग्नात्सप्तमगे सति ॥
उदिते सबले चैव दारसौख्यं प्रजायते ॥ ४ ॥

जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश सप्तम हो और उदित तथा बलवान् हो तो स्त्रीसौख्य होवे ॥ ४ ॥

अनुष्टु०--शुक्रो जन्मनि यद्राशौ वर्षे लग्नेश्वरो यदि ॥
तद्राशौ सप्तमस्थेऽपि पुंसः परिणयस्तदा ॥ ५ ॥

जन्मका शुक्र जिस राशिमें है उसमें वर्ष लग्नेश हो, अथवा वह राशि सप्तममें हो तो पुरुषका इस वर्षमें विवाह होगा; यह योग ताजिकसारमें "शुक्रस्य लग्नपतेर्विवाहः" अर्थात् शुक्रकी राशिका लग्नेश हो ऐसा लिखा है यह भी प्रमाणही है ॥ ५ ॥

अनुष्टु०--नष्टेंदौ शुक्रपदगे मैथुनं स्वल्पमादिशेत ॥
जन्मशुक्रर्क्षगो भौमः स्त्रीसुखोत्सवकृद्बली ॥ ६ ॥

जन्मकी शुक्रराशिमें वर्षमें क्षीण चन्द्रमा हो तो इस वर्षमें मैथुनसुख थोडा होवे, जो जन्मकी शुक्रराशिमें वर्षका बलवान् मंगल हो तो स्त्री-सुख उत्सवकारी होवे ॥ ६ ॥

व० ति०--जन्मास्तपेऽब्दपसितेनयुगीक्षितेस्यात्स्त्रीसंगमोबहु-विलाससुखप्रधानः ॥ केन्द्रत्रिकोणगगुरौजनिशुक्रभस्ते स्त्रीसौख्यमुक्तमितिहद्दविवाहयोश्च ॥ ७ ॥

जन्मका सप्तमेश वर्षमें शुक्रसे युक्त वा दृष्ट किसी स्थानमें हो तो स्त्रीसंगम बहुत विलास हास सुखपूर्वक होवे १, जन्मका शुक्र जिस राशि-में हो उसमें वर्षका बृहस्पति लग्नसे केन्द्र वा त्रिकोण हो तो स्त्रीसुख होवे २, वर्षलग्नकी हद्दाका स्वामी जन्मकी शुक्रराशिमें वर्षलग्नसे केन्द्र त्रिकोणमें हो तो स्त्रीसौख्य होवे ३, ऐसा ही वर्षका विवाहसहमस्वामी जन्मके शुक्रराशिका वर्षलग्नसे केन्द्रत्रिकोणमें हो तो स्त्रीप्राप्ति होवे ४, ये चार योग हैं ॥ ७ ॥

अनुष्टु०--अधिकारिपदस्थेऽर्के स्त्रीभ्योऽव्याकुलतानिशम् ॥
इंथिहाधिकृतस्थाने गुरुदृष्ट्याविवाहकृत् ॥ ८ ॥

पंचाधिकारियोंमेंसे किसीकी राशिमें सूर्य हो तो स्त्रियोंसे नित्य व्या-कुलता रहे, एवं मुंथेशकी राशिका बृहस्पति हो वा मुंथाकी राशिमें बृह-स्पति हो वा मुंथाराशिको बृहस्पति देखे तो विवाहयोग कहा है ॥ ८ ॥

अनुष्टु०--इंथिहार्कारथुग्धूनेकूरितसहमेस्त्रियाः ॥
स्त्रीपुत्रेभ्यो भवेत्कष्टं पापदृष्ट्या विशेषतः ॥ ९ ॥

सूर्य मंगलके साथ मुंथा सप्तम स्थानमें हो तथा स्त्रीसहम पापाक्रांत हो तो स्त्रीसे एवं पुत्रसे कष्ट होवे पापग्रहकी दृष्टि भी उसपर हो तो स्त्री पुत्रोंसे अधिक ही कष्ट होगा ॥ ९ ॥

अनुष्टु०—सूतौद्यूनाधिपः शुक्रोऽब्देद्यूनेबलवान्भवेत् ॥
लग्नेशेनेत्थशालश्चेत्स्त्रीलाभं कुरुते सुखम् ॥ १० ॥

जन्मका सप्तमेश शुक्र वर्षमें बलवान् होकर सप्तम स्थानमें हो तथा लग्नेशके साथ इत्थशालीभी हो तो सुखपूर्वक स्त्रीप्राप्ति होवे ॥ १० ॥

अनुष्टु०--भौमेऽब्दपे सितदृशाशुक्रेऽब्देशेकुजेक्षया ॥
तद्दृष्टेदारसहमे स्त्रीलाभो भवति ध्रुवम् ॥ ११ ॥

वर्षेश मंगलपर शुक्रकी दृष्टि हो तो स्त्री लाभ होताहै तथा वर्षेश शुक्रपर मंगलकी दृष्टि हो तो यही फल होता है. इन दोनों योगोंके भेद हैं कि शुक्रकी दृष्टिमें मंगल हो तो विवाह होगा १, मंगलकी दृष्टिमें शुक्र हो तो भी विवाह होगा २, और जन्मकी स्त्रीसहमराशिपर वर्षमें मंगल शुक्रकी दृष्टि हो तो निश्चय विवाहयोग होता है ॥ ११ ॥

अनु०—सूतौ वा दारसहमे तद्दृष्टे योषिदाप्यते ॥
स्वामिदृष्टं स्त्रीसहमं शुक्रदृष्टं विवाहकृत् ॥ १२ ॥

जन्मके वा वर्षके स्त्रीसहममें मंगल शुक्रकी दृष्टि हो तो विवाहप्राप्ति होती है और स्त्रीसहमपर शुक्र तथा सहमेशकी दृष्टिसे यही फल है ॥ १२ ॥

अनु०—सूतौ द्यूनाधिपे वर्षे सहमेशे स्त्रियाः सुखम् ॥
जन्मास्तपेंथिहानाथवर्षेशः खे द्यूने तथा ॥ १३ ॥

जन्मका सप्तमेश वर्षमें स्त्रीसहमका स्वामी हो तो स्त्रीसे सुख मिले और जन्मका सप्तमेश मुंथेश तथा वर्षेश भी दशम वा सप्तम हो तो स्त्रीसे सुख होवे ॥ १३ ॥

अनु०–मुंथहातोद्यूनसंस्थः स्वगृहोच्चगतः शशी ॥
विदेशगमनं कुर्यात्क्लेशः पापेक्षणाद्भवेत् ॥ १४ ॥ इति सप्तमभावः ॥

चन्द्रमा अपने गृह वा अपने उच्चका मुंथासे सप्तम हो तो विदेशगमन करता है, इसपर पापग्रहकी दृष्टि हो तो विशेष कष्टसे गमन अन्यथा सुखसे होता है ॥ १४ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकण्ठीभाषाटीकायां सप्तमभावफलाध्यायः ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावविचारः ।

अनु०–भौमेऽब्दपे क्रूरहतेऽयसाघातोबलोज्झिते ॥
अग्निभीरग्निभेक्रूरनराद्द्विपदभेमृतिः ॥ १ ॥

वर्षेश मंगल बलरहित और पापपीडित हो तो लोहेके शस्त्रसे किसी अंगपर क्षत होवे, अंगकी निश्चयता द्रेष्काणवशसे संज्ञाध्यायमें कही है तथा अग्निराशि मेष सिंह धन १ । ५ । ९ में यह होवे तो अग्निभय होवे और यही मंगल द्विपद मिथुन कन्या तुला और धनके पूर्वार्द्धमें हो तो चौरादि दुष्ट मनुष्यसे मृत्यु होवे ॥ १ ॥

अनु०–वियत्यवनिपामात्यरिपुतस्करतोभयम् ॥
तुर्येमातुःपितृव्याद्वामातुलात्पितृतो गुरोः ॥ २ ॥

इसी प्रकार वर्षेश मंगल निर्बल तथा पापपीडित होकर दशमस्थानमें हो तो राजा वा राजमंत्री वा शत्रु वा चोरसे भय होवे और ऐसा ही मंगल चतुर्थस्थानमें हो तो माता वा ताऊ वा चाचा वा मामा वा पितासे भय होवे ॥ २ ॥

व०ति०–लग्नेंथिहापतिसमापतयोमृतीशाश्चेदित्थशालिनइमे निधनप्रदाःस्युः ॥ चेत्पाकरिष्टसमये मृतिरेव तत्र सार्केकुजे नृपभयं दिवसेऽब्दवेशे ॥ ३ ॥

लग्नेश मुंथेश और वर्षेश अष्टमेश इत्थशाली हो तो मृत्युफल कहा है,

परंतु जिस वर्षमें यह योग है उससे मारक दशा वा दशारिष्ट किसी प्रकारकाभी हो तो मृत्यु होती है. केवल उक्त इत्थशाल ही हो तो मरणतुल्य कष्टमात्रही होता है और दिनके वर्षप्रवेशसे वर्षेश मंगल सूर्यसहित हो तो राजासे भय होवे ॥ ३ ॥

शार्दूलवि०-सूर्ये मूसरिफे सितेनजननेवर्षेऽधिकारीतथा केंद्रे राजगदाद्भयंचरुगसृक्स्थानेऽधिकारींदुजे ॥सौम्येक्रूरदृशाकुजस्यरुगसृक्दोषादिनांशुस्थिते दग्धेबंधमृतीविदेशतइतिप्राहुर्बुधे तादृशे ॥ ४ ॥

जन्ममें सूर्य शुक्रसे मूसरिफ कर्त्ता हो तथा वर्षमें पंचाधिकारियोंमेंसे किसी अधिकारवाला होकर केंद्रमें हो तो राजरोग (क्षयरोग) का भय होवे १, और जन्मके भौमराशिस्थितमें अधिकारी बुध वर्षमें हो तो यही फल देता है २, तथा अधिकारी बुधपर मंगलकी क्रूर दृष्टि हो तो रुधिर दोषसे रोग होवे ३, तथा अधिकारी बुध अस्तंगत और मंगलयुत दग्ध हो तो विदेशमें बंधनसे मृत्यु होवे ॥ ४ ॥

अनु०--भौमस्थानेऽधिकारींदौगुप्तं नृपभयं रुजः ॥
मंदोऽधिकारी खे लोहहते पीडाकरः स्मृतः ॥ ५ ॥

जन्मकी मंगलस्थित राशिमें वर्षका अधिकारी चंद्रमा हो तो गुप्त(अनजानेमें) राजभय होवे एवं रोगभय भी होवे १. और अधिकारी शनि दशम स्थानमें हो तो लोहेके प्रहारसे पीडा करनेवाला कहा है ॥ ५ ॥

अनु०--भौमेऽष्टमे भयं वह्नेः प्रहारो वा नृपाद्भयम् ॥
आरे खस्थे चतुष्पद्भ्यः पातो दुःखं रुजोऽसृजा ॥ ६ ॥

अधिकारसहित मंगल अष्टम हो तो अग्निका भय अथवा शस्त्रादिसे चोट और राजासे भय होवे, और अधिकारी मंगल दशम हो तो घोडा आदि चौपायोंसे पतन तथा क्लेश और रुधिरसंबंधी रोग होवे ॥ ६ ॥

अनु०--वित्तेऽष्टमेज्यो धनहा यद्यब्देशोऽशुभेक्षितः ॥
मंदे द्यूने दुर्वचनं विवादकलिभर्त्सनम् ॥ ७ ॥

वर्षेश बृहस्पति पापग्रहदृष्ट द्वितीय तथा अष्टम हो तो धननाश होवे और शनि सप्तम हो तो बुरे वचन झूँठा कलंक कलह और झिडकन मिले ॥ ७ ॥

अनु०--पतिते ज्ञे क्रूरदृशाऽरेत्थशाले मृतिं वदेत् ॥
कुजहद्दास्थिते नाशः सौम्यदृष्ट्याशुभं वदेत् ॥ ८ ॥

बुध पापाक्रांत हो और मंगलके साथ क्रूर दृष्टिसे इत्थशाल करता हो तो मृत्यु होवे तथा बुध मंगलकी हद्दामें पापदृष्ट हो तो अश्व आदि द्रव्यका नाश होवे और इसपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो शुभफल देता है ॥ ८ ॥

अनु०--लग्नाधिपे नष्टदग्धेयोषिद्वादोऽशुभान्विते ॥
जन्मन्यष्टमगो जीवो नाधिकारी कलिः पृथुः ॥ ९ ॥

लग्नेश पापयुक्त बलहीन और अस्तंगत हो तो किसी स्त्रीसे कलह होवे और जन्ममें बृहस्पति अष्टम हो वर्षमें अधिकाररहित हो तो बडा कलह होवे ॥ ९ ॥

अनु०--जयः शुक्रेक्षणादुक्तः प्रत्युत्तरवशेन तु ॥
भौमेऽत्यगे धने सूर्ये वादात्क्लेशं विनिर्दिशेत् ॥ १० ॥

जन्मका बृहस्पति अष्टम वर्षमें अधिकाररहित हो शुक्र इसे देखे तो विवादमें प्रत्युत्तर देनेसे जय होवे और मंगल बारहवें स्थानमें सूर्य द्वितीय स्थानमें हो तो विवादसे क्लेश होगा कहना ॥ १० ॥

अनु०--रिपुगोत्रकलिर्भीतिः संख्ये कुजहतेऽब्दपे ॥
दग्धो जन्मांगपो वर्षेऽष्टमो रोगकली दिशेत् ॥ ११ ॥

वर्षेश भौमसे पीडित हो तो शत्रुओंसे और अपने कुलके भी शत्रुओंसे कलह होवे तथा संग्राममें भय होवे और जन्मलग्नेश अस्तंगत हो वर्षमें अष्टम हो तो रोग तथा कलह होगा कहना ॥ ११ ॥

अनु०--सूत्यब्दयोरधिकृतौ भौमस्थाने गुरुर्हतः ॥
पापैर्वादः स्फुटोऽप्येवं तादृशीं दो शनेः पदे ॥ १२ ॥

बृहस्पति जन्मकाल और वर्षकालका अधिकारी होके जन्मकालिक मंगलके आक्रांत राशिमें हो पापग्रहसे हत होय तो लोगोंके साथ बहुत

कलह होगा और जन्मकालिक शनिराशिके जन्म और वर्षकालका अधिकारी चंद्र पापग्रहसे हत होय तो ऐसा ही फल जानना ॥ १२ ॥

अनु०--सूत्यब्दयोरधिकृते चंद्रे बुधपदे हते ॥
क्रूरैर्विदेशगमनं वादः स्याद्विमनस्कता ॥ १३ ॥

जन्म तथा वर्षका अधिकारी चंद्रमा जन्मके बुधकी राशिमें पापपीडित हो तो विदेशगमन कलह और मानसी क्लेश होवे ॥ १३ ॥

अनु०--मेषे सिंहे धनुष्यारेऽब्दपे रंध्रेऽसितो भयम् ॥
मृत्यौ मृतीशलग्नेशौ मृत्युदौ पापदृग्युतौ ॥ १४ ॥

मेष सिंह धनका मंगल वर्षेश होकर अष्टममें हो तो तलवारसे भय होवे और अष्टमेश एवं लग्नेश अष्टम स्थानमें पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देते हैं ॥ १४ ॥

अनु०--यत्रर्क्षे जन्मनि कुजः सोऽब्दलग्नोपगो यदा ॥
बुधो वर्षपतिर्नष्टबलस्तत्र न शोभनम् ॥ १५ ॥

जिस राशिमें जन्मका मंगल है वही वर्षका लग्न हो और वर्षेश बुध भी नष्टबल होवे तो वह वर्ष अच्छा नहीं होगा ॥ १५ ॥

अनुष्टु०--सार्केशनौभौमयुतेखाष्टस्थेवाहनाद्भयम् ॥
सार्केभौमेऽष्टमस्थे तु पतनं वाहनाद्भवेत् ॥ १६ ॥

शनि सूर्य मंगलसहित दशम वा अष्टममें हो तो वाहन (सवारी)से भय होवे और सूर्यसहित मंगल अष्टम हो तो वाहनसे पतन होवे ॥ १६ ॥

अनु०--सारेऽब्दपेऽष्टमे मृत्युश्चंद्रेंऽत्यारिमृतौ मृतिः ॥
उदिते मृतिसद्मेशे निर्बले जीवितेमृतिः ॥ १७ ॥

वर्षेश मंगलसहित अष्टम हो तो मृत्यु फल देता है तथा चन्द्रमा भौमयुक्त छठा आठवाँ बारहवाँ हो तो भी मृत्यु देता है और मृत्युसहमेश उदय हो जीवितसहमेश निर्बल हो तो मृत्यु होता है ॥ १७ ॥

अनु०--पुण्यसद्मेश्वरः पुण्यसहमादष्टमो यदा ॥
सूत्यष्टमेशःपुण्यस्थो मृतिदःपापदृग्युतः ॥ १८ ॥

पुण्यसहमेश पुण्यसहमसे अष्टम हो पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट भी हो तथा जन्मका अष्टमभावेश पुण्यसहम राशिमें पापयुक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देता है ॥ १८ ॥

अनु०–मृत्यष्टमगतोराशिःपुण्यसद्मनिनाथयुक् ॥
अब्दलग्नाष्टमर्क्षेवाचेदित्थंस्यान्मृतिस्तदा ॥ १९ ॥

जन्मकी अष्टमभावराशि वर्षमें पुण्यसहम होके निजनाथसे युक्त हो तथा वर्षलग्नसे अष्टमेश अष्टमगत हो तो मृत्यु होता है ॥ १९ ॥

अनु०–पुण्यसद्माशुभाक्रांतंमृतीशोऽत्यारिरंध्रगः ॥
मुथहेशोऽब्दपोवापिमृत्युंतत्रविनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

पुण्यसहममें पापग्रह हों और अष्टमेश त्रिकस्थान ६ । ८ । १२ में हो तो मृत्यु होवे और वर्षेश वा मुंथेश पापाक्रांत त्रिकस्थान ६ । ८ । १२ में हो तो मृत्यु देता है कहना ॥ २० ॥

अनु०–सक्रूरेजन्मपेमृत्यौमृतिश्चेदिंथिहार्कियुक् ॥
भौमेक्षुतेक्षणेतत्रमृत्युःस्यादात्मघाततः ॥ २१ ॥

जन्मलग्नेश वा जन्मराशीश पापग्रहयुक्त वर्षलग्नसे अष्टम हो तौ मृत्यु होती है और मुंथा भी कहीं बैठी होय पर शनैश्चरके साथ होय और जो इसपर मंगलकी शत्रुदृष्टि भी हो तो आत्मघात (अपनेही हाथसे) मृत्यु होवे ॥ २१ ॥

अनु०–मंदोऽष्टमोमृतीशेत्थशालान्मृत्युकरःस्मृतः ॥
शुभेत्थशालात्सर्वेऽपियोगानांशुभदायकाः ॥ २२ ॥

अष्टम शनि अष्टमेशसे इत्थशाली हो तो मृत्यु देनेवाला कहा है और जो ग्रह उक्त योगोंमेंसे मृत्युफल करनेवाले हैं वे किसी शुभग्रहसे इत्थशाल करते हों तो मृत्यु नहीं होती प्रत्युत शुभफल देते हैं ॥ २२ ॥

अनु०–मृतिरंध्रपतिर्मंदोऽष्टमेऽब्दे लग्नपेन चेत् ॥
इत्थशालीक्रूरदृशातत्काले मृत्युदायकः ॥ २३ ॥

जन्मका अष्टमेश शनि वर्षमें अष्टम हो तथा लग्नेशसे क्रूरदृष्टिका इत्थशाल करता हो तो वर्षप्रवेशमेंही मृत्यु देता है ॥ २३ ॥

रथोद्धता-पुण्यसद्मनि विधुस्तनौ तथाऽस्तेखलो मृतिरथार्थरिःफगौ॥
मृत्युदौ खलखगावथो जनुर्वर्षवेशतनुपौ मृतौ मृतिः ॥ २४ ॥

इति अष्टमभावविचारः ।

पुण्यसहममें वा लग्नमें चन्द्रमा और इससे सप्तम पापग्रह हो तो मृत्यु-तुल्य कष्ट देता है तथा लग्नसे दूसरे बारहवें पापग्रह हों तो भी यही फल दत हैं पुण्यसहम और चन्द्रराशिसे भी द्वितीय द्वादश पापग्रह होनेमें यही फल है इसमें पापकर्त्तरी विशेष है और ऐसाही विचार जन्मलग्न वषलग्न पुण्यसहम चन्द्रराशिका भी करना और वर्षलग्नेश वा वर्षेश और अष्टमेश अष्टम हो तो फल देता है ॥ २४ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायामष्टमभवाध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नवमभावविचारः ।

अनु०--भौमेऽब्दपे त्रिनवगे क्रूरायुक्त बलान्वित ॥
गुणावहस्तदामार्गश्चरं कार्यं स्थिरं ततः ॥ १ ॥

वर्षेश मंगल तृतीय वा नवम स्थानम बलवान् हो और पापयुक्त न हो तो मार्ग अर्थात् सफर गुणदायक होवे. चर कार्यभी स्थिर हो जावे अर्थात् जलकम नहर आदिसे शुभत्व होवे ॥ १ ॥

अनु०-त्रिधर्मस्थोऽब्दपः सूर्यः कंबूलीमार्गसौख्यदः ॥
अन्यप्रेषणयानं स्यात्स चेन्नाधिकृतो भवत् ॥ २ ॥

वर्षेश सूर्य तृतीय वा नववें स्थानमें अधिकारयुक्त हो और चन्द्रमासे कंबूली भी हो तथा स्वगृहाच्चादम होव तो अपनी इच्छासे मार्ग चलना पडे मार्गमें सुख भी हो, जो वह सूर्य स्वगृहादि अधिकारयुक्त न हो तो दूसरेके प्रेषणसे गमन होवे मार्गमें सुख भी न होवे ॥ २ ॥

अनु०-शुक्रेऽब्दपे त्रिनवगे मार्गसौख्यं विलोमगे ॥
अस्ते वा कुगतिः सौम्ये देवयात्रा तथाविधे ॥ ३ ॥

वर्षेश शुक्र तीसरे वा नवम स्थानमें क्रूररहित हो बलवान् भी हो और वक्रगतिमें हो तो गमन होनेसे मार्गमें सौख्य होवे, जो यह अस्तंगत होकर उक्त स्थानोंमें हो तो कुगति इच्छासे विरुद्ध गमन होवे, और वर्षेश बुध पापरहित बलवान् तीसरे नवम स्थानमें वक्री हो तो तीर्थ वा देवतासंबंधी यात्रा होवे ॥ ३ ॥

अनु०-क्रूरार्दिते कुयानं स्याद्गुरावेवं विचिंतयेत् ॥
इत्थशाले लग्नधर्मपत्योर्यात्राऽस्त्यचिंतिता ॥ ४ ॥

पूर्वोक्त बुधके सदृश वर्षस्वामी बृहस्पति पापग्रहरहित ३ । ९ स्थानोंमें होनेसे तीर्थदेवसंबंधी यात्रा देता है. जो हीनबली वा क्रूर पीडितादि हो तो कुयान अनिष्टगमन देता है. और लग्नेश नवमेशका परस्पर इत्थशाल हो तो अकस्मात् गमन होवे जहांका स्मरण नहीं गमन संभावना भी नहीं गमन ऐसा होता है ॥ ४ ॥

अनु०--लग्नेशो धर्मपं यच्छन्स्वं महश्चिंतिताध्वदः ॥
एवं लग्नाब्दयोर्योगे मुंथहांगपयोरपि ॥ ५ ॥

लग्नेश अपना तेज नवमेशको देवे अर्थात् लग्नेश शीघ्रगति अल्पांश और नवमेश अधिकांश मंदगति दोनों दीप्तांशोंके भीतर हो तो पूर्वनिश्चित यात्रा अपना तेज लग्नेशको देता हो तो अचिंतित यात्रा होवे, ऐसे ही वर्षलग्नेश वर्षेशका तथा लग्नेशका मुंथेशका योग भी फल देता है ॥५॥

अनु०--गुरुस्थाने कुजे धर्मे सद्यात्राभृत्यवित्तदा ॥
ज्ञस्थाने लग्नपाद्भौमो दृष्टः सद्यानसौख्यदः ॥ ६ ॥

जन्मकालमें बृहस्पति जिस राशिका है उसीमें वर्षका मंगल नवमस्थानमें हो तो गमनमें भृत्य और धनकी प्राप्ति होवे, और जन्मका बुध जिस राशिमें है उसी राशिमें वर्षका मंगल हो और लग्नेशकी दृष्टि उस पर हो तो गमनमें सौख्य होवे ॥ ६ ॥

अनु०--स्वस्थानगो वा बलवाँल्लग्नदर्शी सुयानदः ॥
जन्माधिकारी ज्ञो मंदस्थाने क्रूरयुतो यदा ॥ ७ ॥

पंथा रिपोर्झकंटकाद्दुरुरध्वेंदुजीवयोः ॥
धर्मे शनिर्नाधिकारी पंथानमशुभं वदेत् ॥ ८ ॥

जन्मका मंगल अपनी राशि १ । ८ में हो वर्षमें भी अपनी राशिका नवमस्थानमें हो और सावयव दृष्टिस्पष्टसे भावानुसार लग्नको देखता हो गमनमें खुशी होवे, शुभकार्यसंबंधी गमन होवे १, और जन्मका अधिकारी बुध शनिकी राशिमें होवे और वर्षमें पापयुक्त नवम स्थानमें हो तो शत्रुकलहसम्बन्धी मार्ग चलना हो. ऐसेही चन्द्रमा और बृहस्पतिका भी जन्ममें शनि सहित और वर्षमें पापयुक्त नवमस्थानमें हो तो विना प्रयोजन दीर्घमार्ग चलना होवे, मंगलसे भी ऐसा योग होता है और अधिकाररहित शनि वर्षमें नवम स्थानगत हो तो चौरादि उपद्रवयुक्त मार्गमें गमन होवे ॥ ७ ॥ ८ ॥

अनु०--इत्थं गुरौ दूरयात्रा नृपसंगस्ततो गुणः ॥
कुजेऽब्दपे नष्टबले स्वजनाद्दूरतो गतिः ॥ ९ ॥

ऐसेही बृहस्पति अधिकाररहित नवम स्थानमें हो तो दूर गमन और राजाका संग तथा द्रव्यलाभादि गुण होवे तथा वर्षेश मंगल बलरहित होकर नवम स्थानमें हो तो अपने बन्धुजनोंसे दूरगमन होवे ॥ ९ ॥

अनु०--मून्थिहाधम इदा सबलेऽध्वाविदेशजः ॥
वर्षेशो बलवान्पापायुतः केंद्रेऽधिकारवान् ॥ १० ॥

जो मुन्था सप्तम और चन्द्रमा बलवान् होकर नवमस्थानमें हो तो विदेशसंबंधी मार्ग चलना होवे और वर्षेश बलवान् किसी पापसे युक्त न होके केंद्रमें हो तो परदेशमें अधिकार मिलनेसे गमन होवे अथवा सेनापति होकर विदेशगमन करे ॥ १० ॥

अनु०--अधिकारे गतिः संख्ये सैनापत्येऽपि वा वदेत् ॥
एवं बुधे कुजे जीवयुतेऽर्कान्निर्गते पुनः ॥ ११ ॥

पूर्वार्द्धश्लोकका अर्थ पूर्वश्लोकके अर्थमें लिखा गया है उत्तरार्द्धका

प्रयोजन यह है बृहस्पतिकी तरह बुध वा मंगल केंद्रवर्ती बलवान् अधिकारवान् और उदयी तथा बृहस्पति युक्त हो तो जय यश और सुख देनेवाली यात्रा होवे ॥ ११ ॥

अनु०--परसैन्योपरिगतिर्जयः ख्यातिसुखावहा ॥
जीवान्नवमगे भौमे शुभयात्रा नृणां भवेत् ॥ १२ ॥

इति नवमभावविचारः ॥

इस श्लोकके पूर्वार्द्धका प्रयोजन सम्बन्धवशसे पूर्व ११ वें श्लोकके साथ लिखा है उत्तरार्द्धसे यह है कि बृहस्पति नवम मंगल बलवान् हो तो मनुष्योंकी शुभ यात्रा होवे ॥ १२ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां नवमभावफलाध्यायः ॥९॥

अथ दशमभावविचारः ।

अनु०--सबलेऽब्दपतौ खस्थे राज्यार्थसुखकीर्त्तयः ॥
स्थानांतराप्तिरन्यस्मिन्केन्द्रे गृहसुखाप्तयः ॥ १ ॥

बलवान् वर्षेश दशम स्थानमें हो तो कुलानुमान राज्य तथा धन सुख और कीर्ति मिले जो अन्य केंद्र लग्न चतुर्थ सप्तममें हो तो गृहसम्बन्धी सुख मिले ॥ १ ॥

अनु०--इत्थं बली रविर्भूस्थः पूर्वार्जितपदाप्तिकृत ॥
एकादशेऽस्मिन्सख्यं स्यान्नृपामात्यगणोत्तमैः ॥ २ ॥

वर्षेश सूर्य बलसहित चतुर्थ स्थानमें हो तो पितृ पितामहादिकोंके उपार्जित राज्य वा कोई अधिकार मिले, जो ऐसा ही सूर्य ग्यारहवाँ हो तो राजाके उत्तम अमात्य (वजीर) आदिकोंसे मैत्री होवे ॥ २ ॥

अनु०--रविस्थानेंथिहालग्ने खे वा राज्यातिसौख्यदा ॥
नीचेऽर्कः पापसंयुक्तो भूपाद्बंधवधं दिशेत् ॥ ३ ॥

जन्मके सूर्यस्थित राशिकी मुंथा वर्षके लग्न वा दशम स्थानमें हो तो राज्यप्राप्ति और सुख देती है और वर्षेश सूर्य नीच राशिका दशम स्थानमें पापयुक्त हो तो राजासे मृत्यु वा बंधन कैद होना कहना ॥ ३ ॥

अनु०--सिंहे रविर्बलीखस्थः स्थानलाभो नृपाश्रयः ॥
स्थानांतराधिकप्राप्तिरिन्दुरारपदे बली ॥ ४ ॥

जन्मका सूर्य सिंहराशिमें हो और वर्षमें बलवान् होकर दशम स्थानमें हो तो नवीन स्थानप्राप्ति और राजाका आश्रय भी होवे और जन्मकी मंगल स्थित राशिका वर्षमें चंद्रमा हो तो अन्य स्थानमें अधिकार प्राप्ति वा राज्य प्राप्ति होवे ॥ ४ ॥

अनु०--खेशलग्नेशवर्षेशेत्थशालो राज्यदायकः ॥
वर्षेशे राजसहमेऽर्केत्थशालो महान्नृपः ॥ ५ ॥

दशमेश लग्नेश और वर्षेशका परस्पर इत्थशाल हो तो राज्य देता है और वर्षेश राजसहममें होकर सूर्यसे इत्थशाली हो तो महाराजा होवे ॥ ५ ॥

अनु०--शनिस्थाने कुजः पश्यन्मुथहां पापकर्मतः ॥
नृपभीतिं वित्तनाशं दद्याद्दशमगो यदि ॥ ६ ॥

जन्मकी शनिस्थित राशिमें वर्षका मंगल दशमस्थानमें हो और मुंथाको देखे तो कुकर्मसे राजभीति और धननाश होवे ॥ ६ ॥

अनु०--ईदृशे त्रिनवस्थेऽस्मिन्दग्धनष्टेऽघसंचयः ॥
मन्दोऽब्दपोऽधिकारी त्रिधर्मगो धर्मवृद्धिदः ॥ ७ ॥

जन्मकी शन्याक्रांत राशिमें वर्षका मंगल तीसरे वा नवम स्थानमें नष्टबल दग्ध वा हो अस्तंगत हो तो पुण्यनाशद्वारा पापवृद्धि होवे और वर्षेश शनि अधिकारी होकर तीसरे वा नौवें स्थानमें हो तो पापनाशद्वारा धर्मवृद्धि होवे ॥ ७ ॥

अनु०--अस्मिन्दग्धेऽपि नष्टे च पापकृद्धर्मनिंदकः ॥
ईदृशीदृक्फलं सूर्ये गुरावित्थं नयार्थभाक् ॥ ८ ॥

तथा अधिकारी वर्षेश शनि दग्ध वा नष्ट हो तो इस वर्षमें पाप करने वाला तथा धर्मकी निंदा करनेवाला होवे ऐसा ही वर्षेश सूर्य अधिकारी वर्षमें तीसरे वा नवमस्थानमें हो तो ऐसाही फल होता है, और ऐसेही वर्षेश बृहस्पति अधिकारवान् ३ । ९ स्थानमें नष्ट वा दग्ध हो तो न्यायसे द्रव्यप्राप्ति होती है ॥ ८ ॥

अनु०--तत्रस्थामुथहा पुण्यागमंपापं खलाश्रयात् ॥
सूतौ खेशे रवौ खस्थे वर्षे मुथशिलं यदि ॥ ९ ॥

मुंथा तीसरे नववें स्थानमें पुण्यागम करती है और इन्हीं स्थानोंमें पापयुक्त मुंथा हो तो पापकी प्राप्ति करती है और जन्मका दशमेश सूर्य वर्षमें दशम हो बलवान्भी हो तथा (मंदगामी) लग्नेशसे इत्थशाली भी हो तो अपने बलके अनुसार राज्यप्राप्ति करता है ॥ ९ ॥

अनु०--लग्नाधिपेन राज्याप्तिरुक्ता वीर्यानुमानतः ॥
धर्मकर्माधिपौ दग्धौ धर्मराज्यक्षयावहौ ॥ १० ॥
इति कर्मभावविचारः ॥

लग्नेश बलवान् होनेमें इसके बलानुसार राज्यप्राप्ति होती है और नवमेश एवं दशमेश दग्ध वा पापपीडित हो तो धर्म तथा राज्यको क्षय करते हैं. यहां दशमभाव राज्यसहम कर्मसहम और लग्न तथा इनके स्वामी बलवान् और शुभग्रहोंके साथ होनेमें शुभ फल तथा वक्रदग्धादि निर्बल और पापयुक्त होनेसे अशुभ फल देते हैं यह विचार विशेष है ॥ १० ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां दशमभावफलाध्यायः ॥ १० ॥

अथ लाभभावविचारः ।

अनु०--अब्दपे ज्ञेऽर्थगे लाभो वाणिज्याच्छुभदृग्युते ॥
सेंथिहेऽस्मिल्लग्नगते लाभः पठनलेखनात् ॥ १ ॥

वर्षेश बुध धनस्थानमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो अन्नादि द्रव्यके व्यापारसे धनलाभ होवे जो यही बुध मुंथासहित लग्नमें हो तो पढने लिखनेसे लाभ होवे ॥ १ ॥

अनु०--अस्मिन्षष्ठाष्टांत्यगते सक्रूरे नीचकर्मकृत् ॥
क्रूरेक्षणेन लाभोऽस्तंगतेन लिखनादितः ॥ २ ॥

वर्षेश बुध छठे आठवें वा बारहवें स्थानमें पापग्रहसहित हो तो नीच कर्म कराता है,जो इस पर पापग्रहकी दृष्टि हो तो श्रम करनेमें भी लाभ न होवे जो यह अस्तंगत हो तो लिखने पढनेमें व्यर्थ श्रम होवे लाभ न होवे ॥ २ ॥

अनु०--लंग्नेऽब्दपे[1] क्रूरहते लग्ने हानिर्भयं नृपात् ॥
अस्मिन्नधिकृते द्यूने व्यवहाराद्धनाप्तयः ॥ ३ ॥

लग्नेश वा वर्षेश पापपीडित होकर वर्ष लग्नमें हो तो राजासे भय होवे यही अधिकारी सप्तम स्थानमें हो तो व्यवहारसे धनप्राप्ति होवे ॥ ३ ॥

अनुष्टु०--लग्नायेशेत्थशालेस्याल्लाभः स्वजनगौरवम् ॥
सर्वेलाभेच वित्ताप्त्यै सबला निर्बला न तु ॥ ४ ॥

लाभेश लग्नेशका इत्थशाल हो तो बडा लाभ होवे, अपने मनुष्योंसे गौरवता भी मिले तथा कोई भी ग्रह ग्यारहवें स्थानमें बलवान् हो निर्बल न हो तो धनप्राप्ति करते हैं ॥ ४ ॥

अनु०--सवीर्योज्ञः समुथहोलग्नेऽर्थसहमे शुभाः ॥
सदा खनितद्रव्यस्य लाभः पापदृशा न तु ॥ ५ ॥

इति लाभभाव विचारः ॥

बलवान् बुध मुंथाके साथ लग्नमें हो और अर्थसहममें शुभग्रह हो तथा लग्नपर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो खान (धात्वादि भूमि) संबंधी द्रव्यका लाभ होवे लग्नमें पापदृष्टि हो तो उक्तलाभ नहीं होगा ॥ ५ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां लाभभावफलाध्यायः ॥ ११ ॥

---

१ यहां " जीवेऽब्दपे " अच्छा पाठ है, वर्षेश गुरु पापपीडित होकर लग्नमें हो तो यथोक्तफल कहना चाहिये ।

अथ व्ययभावविचारः ।

वसन्तति०--लग्नाब्दपौ हतबलौ व्ययषण्मृतिस्थौयद्राशिगौतदनु-सारिफलं विचिंत्यम् षष्ठेऽब्दपे भृगुसुतेऽथविनष्टवीर्ये दृष्टेखलैःक्षुत-दृशाद्विपदर्क्षसंस्थे ॥ १ ॥ भृत्यक्षतिस्तुरगहाचतुरंघ्रिभस्थेन्यस्मि-न्नपीदमुदितं फलमब्दनाथे ॥ खस्थे कुजे शशियुते तुरगादिनाशः स्याद्व्याकुलत्वमशुभोपहतेव्ययेवा ॥ २ ॥

लग्नेश तथा वर्षेश बलहीन छठे आठवें बारहवें स्थानमें चतुष्पदादि जैसी राशिमें हो उसके सदृश फल देते हैं. चतुष्पदराशि उक्त स्थानोंमें हो तो चौपायोंका वा उससे नाश होवे यह इस भावका सामान्य विचार है. और विशेष शुक्र नष्टबल छठे स्थानमें पापग्रहोंसे क्रूरदृष्टि दृष्ट हो तथा मनुष्यराशिमें हो तो सेवकोंकी हानि होवे तथा ऐसा ही शुक्र चतुष्पदराशिमें हो तो हाथी घोडे आदि चौपायोंकी हानि करता है ऐसे ही वर्षेशके अष्टम द्वादश स्थानगत होनेमें फल कहना और वर्षेश मंगल चंद्रमा सहित दशम स्थानमें हो तो घोडे आदिकोंका नाश करता है तथा मनमें व्याकुलता भी करता, तथा पापपीडित मंगल छठे होनेसे भी यही फल देता है ॥ १ ॥ २ ॥

व०ति०—षष्ठे रवौ खलहते चतुरंघ्रिभस्थे भृत्यःसमंकलिरथाष्टमरि-ष्फगेऽपि॥ मंदेऽब्दपेबलयुतेरिपुरिष्फसंस्थेभूवासनंद्रुमज-लाशयनिर्मितिश्च ॥ ३ ॥

वर्षेश सूर्य छठे स्थानमें पापपीडित और चतुष्पदराशिमें हो तो अपन नौकरोंके साथ कलह होवे तथा आठवाँ और बारहवाँ होनेमें भी यही फल होता है. और वर्षेश शनि बलयुक्त छठा वा बारहवाँ हो तो त्याग करी हुई भूमिमें नवीन वसती बनानेसे आजीवन होवे तथा वृक्षारोपण, जलस्थान, कूप, तलाव, धारा आदिकोंका निर्माण होवे ॥ ३ ॥

उपजा०—स्वर्क्षोच्चगे कर्मणिसूर्यपुत्रेनैरुज्यमर्थाधिगमश्च जीवे ॥ सूर्येनृपाद्धाहु बलात्कुजेऽर्थोबुधेभिषग्ज्योतिषकाव्याशिल्पैः॥४॥

वर्षेश शनि अपनी राशि १०।११का वा उच्च७का दशमस्थानमें हो तो शरीर नीरोग रहै तथा धनागम भी होवे जो ऐसा ही बृहस्पति वर्षेश अपनी राशि९।१२वा उच्च ४ का दशम हो तो यही फल देता है तथा वर्षेश सूर्य स्वराशि ५वा उच्च १ का दशम हो तो राजासे धन मिले तथा वर्षेश मंगल स्वराशि १।८वा उच्च १० का दशम हो तो अपने बाहुबलसे धनागम होवे, तथा वर्षेश बुध स्वराशि ३।६ उच्चका दशम हो तो वैद्यक ज्योतिष और शिल्प (कारीगरी) से लाभ होवे ॥ ४ ॥

अनु०--मंदेऽब्दपे गतबले नैराश्यं दौस्स्थ्यमादिशेत् ॥
सूर्येऽब्देशे शशिस्थाने मंदेऽब्दजनुषोर्हते ॥ ५ ॥

वर्षेश शनि निर्बल पापाक्रांत हो तो नैराश्य (प्राप्तिका नाश) होवे तथा एक जगह स्थिति न होवे जो वर्षेश सूर्य हो और जन्मके चन्द्रमाकी राशिका वर्षमें शनि हो तथा जन्मकाल वर्षकालमें पापाक्रांत निर्बल शनि हो तो संपूर्ण शुभ कर्मोंमें विकलता (असिद्धि) होवे और ऐसा ही शनि वक्र वा अस्तंगत हो तो उक्तफल ही होता है ॥ ५ ॥

अनु०--सर्वकर्मसु वैकल्यं वक्रेऽस्ते च तथा पुनः ॥
कर्मकर्मेशसहमनाथाः शनियुतेक्षिताः ॥ ६ ॥

इस श्लोकके पूर्वार्द्धका अर्थ पूर्व५वां श्लोकमें लिखा है उत्तरार्द्धका यह है दशमस्थान तथा दशमेश और कर्मेश और कर्म सहमेश शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो (कर्मवैकल्य) कार्यहानि व्यर्थपरिश्रम होवे ॥ ६ ॥

अनु०--षडष्टव्ययगेऽब्देशे कर्मेशे च बलोज्झिते ॥
सूतावब्दे च न शुभं तत्राब्दे मृतिपे तथा ॥ ७ ॥

वर्षेश छठा आठवाँ वा बारहवाँ होवे तथा जन्म और वर्षका दशम भावेश निर्बल हो वर्षका अष्टमेश भी ६। ८। १२ स्थानमें हो तो इस वर्षमें शुभ फल नहीं होगा ॥ ७ ॥

अनु०--यत्र भावे शुभफलो दुष्टो वा जन्मनि ग्रहः ॥
वर्षे तद्भावगस्तादृक्तत्फलं यच्छति ध्रुवम् ॥ ८ ॥

जन्ममें जो ग्रह जिस भावमें शुभ वा अशुभ देनेवाला है वर्षमें भी वह ग्रह उसी स्थानमें हो तो निश्चय वही फल विशेषतासे देता है ॥ ८ ॥

इंद्रव०–येजन्मनिस्युःसबलाविवीर्यावर्षेसुखंप्राक्चरमेत्वनिष्टम् ॥ दद्युर्विलोमं विपरीततायां तुल्यं फलंस्यादुभयत्रसाम्ये॥९॥

इति व्ययभावविचारः ।

जो ग्रह जन्ममें बलवान् और वर्षमें निर्बल है वह वर्षके पूर्वार्द्धमें शुभफल और उत्तरार्द्धमें अशुभ फल देते हैं जो जन्ममें निर्बल और वर्षमें बलवान् हैं वे वर्षके पूर्वार्द्धमें अशुभ उत्तरार्द्धमें शुभ फल देते हैं दोनों कालमें(तुल्य) बली हों तो समान फल देते हैं ॥ ९ ॥

इति श्रीमही० व्ययभावफलाध्यायः ॥ १२ ॥

शार्दू०--श्रीगर्गान्वयभूषणंगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतोऽनंतमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् । तत्सूनुःखलु नीलकंठ विबुधो विद्वच्छिवानुज्ञयासन्तुष्टचै व्यदधाद्विवेचनमिदं भावेषु सत्ताजिकात् ॥ १० ॥

इति ताजिकनीलकंठचां द्वादशभावविचारः ।

यह श्लोक अध्यायका है इसका अर्थ पूर्ववत् ही है इतना विशेष है कि अच्छे ताजिकग्रन्थोंके मतसे भावफलविवेचना इस अध्यायमें रक्खीहै॥१०॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां भावबलप्रकरणं पंचमम् ॥५॥

अथ वर्षदशाक्रमविचारः ।

उपजा०-स्पष्टान्सलग्नान्खचरान्विधायराशीन्विनात्यल्पलवंतुपूर्वम् निवेश्यतस्मादधिकाधिकांशंक्रमादयंस्यात्तुदशाक्रमोऽब्दे ॥ १॥

पात्यांशी दशाका क्रम कहते हैं.प्रथम लग्नसहित सभी ग्रहोंका स्पष्ट करके राशियोंको छोड देना अंशादि दशाक्रमसे स्थापन करना उसका क्रम यह

है कि सबसे अल्प अंशवाला ग्रह पहिले और उससे अधिकांश उससे आगे फिर अधिक अधिक अंशवालेका क्रमसे आगे आगे स्थापन करते जाना, अन्तमें सबसे अधिकांश ग्रह आवेगा, यह दशाका स्थापनक्रम है उदाहरण चक्रमें है ॥ १ ॥

स्पष्टाः ।							
र.	चं.	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	९	८	४	३	४	३	४
९	२८	१९	२	१९	१६	२१	८
३६	१६	५७	१८	२३	४४	५७	५७
५७	३१	८	२८	३७	२६	३	२
५७	७२४	७५	८	१३	७	७	०
५	३१	३०	३५	३६	३२	५२	०

अंशादयः ।							
र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
९	२८	१९	२	१९	१६	२१	८
३६	१६	५७	१८	२३	४४	५७	५७
५७	३१	८	२८	३७	२६	३	२

हीनांशादिक्रम								
बु.	ल.	सू.	शु.	बृ.	मं.	श.	चं.	०
२	८	९	१६	१९	१९	२१	२८	
१८	५७	३६	४४	२३	५७	५७	१६	०
२८	२	५७	२६	३७	८	३	३१	

उ०जा०-न्यूनं विशोध्याधिकतःक्रमेणांशाद्यंविशुद्धांशकशेषकैक्यम्
सर्वाधिकांशोन्मितमेवतत्स्यादनेनवर्षस्यमितिस्तुभाज्या ॥ २॥

सभीसे न्यूनांश जो ग्रह है वह उससे अधिकांशमें घटावना पुनः वह अधिकांश भी उससे अधिकांशमें घटावना,ऐसे ही सभी घटायके अंत्यमें जो ग्रह सभीसे अधिकांश है उसके तुल्य सब हीनांशोंका योग होगा, तब ठीक समझना. उदाहरण—सबसे हीनांश बुध २।१८।२८ अंशादि है यह यथा स्थित रहा, इसके आगे इससे अधिकांश लग्न ८ । ५७ । २ हैं इसमें बुध घटाया तो ६ । ३८ । ३४ । यह लग्नके पात्यांश हुये, अब इसके आगे सूर्य ९ । ३६ । ५७ है इसमें लग्नांश ८। ५७। २ घटाया, शेष० ।३९। ५५ यह सूर्य हुआ, ऐसे ही सभीको पात्यांश करके अंत्यमें सर्वाधिकांश चन्द्रमा २८ । १६।३१ है इतना ही सभी का योग भी है,यह निश्चयार्थ

पात्यांशाः ।

बृ.	ल.	सू.	शु.	बु.	मं.	श.	चं.
०	६	०	७	२	०	१	६
१८	३८	३१	७	३९	३३	५१	११
२८	३४	५५	२९	११	३१	५५	२८

युक्ति है—हीनांश करके भी चन्द्रमा सर्वाधिकांश ही रहता है और पात्यांश करके सब अंशादिकोंके योगसे सर्वाधिकांश होता है, अंत्यके सर्वाधिकांशसे वर्षकी मिति सौरकी ३६० वा सावनकी ३६५ । १५ । ३१ । ३० से भाग देना जो लाभ हो वह वर्षमें लब्ध ध्रुवांक होगा ॥ २ ॥

उपजा०—शुद्धांशकांस्तान्गुणयेदनेनलब्धध्रुवांकेनभवेद्दशायाः ॥
मानं दिनाद्यं खलुतद्ग्रहस्यफलान्यथासानिगदेत्तुशास्त्रात् ॥३॥

उक्त प्रकारके लब्ध ध्रुवांकसे प्रत्येक ग्रहके पात्यांशादि गोमूत्रिका क्रमसे वा हीनजाति पिंड करके गुणना, दिन घटी पलात्मक ३ अंक रखना यह उसी ग्रहके नीचे स्थापन करना दिनादि दशा होती है ऐसे ही सभी ग्रहोंकी दशा दिनादि निश्चय करके प्रथमवाले ग्रहके दिनादि सूर्यके अंशादिकोंमें जोडकर आगेके ग्रह यथाक्रम जोडने और उसके नीचे लिखते जाना अंत्यमें अगले वर्षका सूर्य स्पष्ट ठीक मिल जायगा अथवा वर्षप्रवेशके दिन घटीपलाओंमें प्रथम दशामान जोडके क्रमसे सभी जोडने अंत्यमें अगले वर्षके दिन घटीपला ठीक मिलेंगी, ऐसे ही सावनक्रम तिथ्यादि जोडनेसे अग्रिम वर्षके तिथ्यादि मिलते हैं, उदाहरण—सब पात्यांशोंका जोड २८ । १६ । ३१ यही अंत्यवाले चंद्रमाके अंशादि हैं.अब इससे वर्षकी मितिमें भाग लेना है प्रथम योगको एकजाति करना. जैसे२८को६०से गुना१६८०कला१६जोडदी१६९६हुवा,इसे भी ६० से गुना१०१७६०हुआ विकला३१जोड दिया१०१७९१यह सवर्णित भाजक हुआ, इसी प्रकार भाज्य ३६० को भी दोबार ६० से गुनाकर १२९६००० यह सवर्णित भाज्य हुआ, इसमें उक्त भाजकसे लब्ध १२मिला फिर शेष७४५०८को ६०से गुनाकर भाजकसे भाग लिया ४३मिला, फिर ऐसा ही करनेसे ५५ मिला यह १२।४३।५५।ध्रुवांक हुवा इससे सभी ग्रहोंके

अंशादि गोमूत्रिका क्रमसे प्रत्येक गुणक प्रत्येकके दिनादि दशा होती है उप-रांत प्रथम दशावालेके दिनादि वर्षप्रवेश समयके सूर्य स्पष्टमें जोडने, फिर उसमें उसके आगेवाली दशा जोडना ऐसे क्रमसे सबोंको जोडकर अंत्यमें अगले वर्षप्रवेशसमयका सूर्य स्पष्ट मिलेगा अथवा प्रथम दशावालेके दिना-दिकोंमें वर्षप्रवेशसमयके गत दिन पैट वा प्रविष्टा और घटी पला जोडके फिर उक्त क्रमसे सभोंको जोडना, अंत्यमें अगले वर्षप्रवेशका दिनघटी पला आ-वेंगे. उदाहरण—वर्षप्रवेशमें सूर्य स्पष्ट ३।९।३६।५७। इसी समयमें बुध की दशा प्रारंभ हुई, बुधके पूर्वक्रमसे दिन २९ घटी २२ पला ६ हैं सूर्य स्प-ष्टमें जोडकर ४।८। ५९।३ ।इतने सूर्यस्पष्ट पर्यंत बुधकी दशा पहुँची, उपरांत दूसरे लग्नकी दशा प्रवेश हुई, विशेष उदाहरणार्थ पाकदिनादि और सूर्यस्पष्ट चक्रमें लिखे हैं, ऐसे संक्रांति मानके दिनादि जोडनेसे संक्रांतिके दिनादि मिलते हैं ॥ ३ ॥

बु	ल	सू	शु	बृ	मं	श	चं	योग	ग्रह
२९	८३	९	९०	३३	७	२५	८०	३६०	दशापाकदिन
२२	४४	१९	४२	४६	६	२६	३१	०	घटी
६	२८	३४	१७	४३	४४	४६	२२	०	पला

सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सूर्य्यः
३	४	७	७	१०	११	११	०	३	स्पष्ट
९	८	२	१२	१२	१६	२३	१९	९	
३६	५९	४३	३	४५	३२	३८	५	३६	राश्यादि
५७	३	३१	५	२२	५	४९	३५	५७	

उपजा०-शुद्धांशसाम्येबलिनोदशाद्याबलस्यसाम्येऽल्पगतेस्तुपूर्वा।
साम्येविलग्नस्यखगेनचिंत्या बलादिकालग्नपतेर्विचिंत्या ॥ ४ ॥

दशाक्रमहीनांश प्रथम उससे अधिक उसके आगे लिखना कहा है, यदि अंशादि दो आदियोंके तुल्य ही हों तो उनमेंसे जो अधिक बली है वह प्रथम दशेश होगा, यहां'शुद्धांशसाम्ये'यह पाठ अनुचित है किंतु'हीनांशसाम्ये'यह पाठ उचित है; जब बलभी समान हो तो मन्द गतिवालाप्रथम शीघ्र गतिवाला उपरांत लिखना, ग्रह और लग्नके अंशादि साम्य होनेपर लग्नेशसे बलादिकका विचार करके जिसकी प्रथम हो उसकी दशा प्रथम लिखनी, यही क्रमहै॥ ४॥

अन्तर्दशाके लिये ग्रन्थान्तरका श्लोक है कि; "शुद्धांशयोगेन भजेत्स्वकीयदशादिनाद्यं स्वलवैर्निहन्यात्॥शुद्धांशकांशान्निजतः क्रमेण चांतर्द्दशाथो विदशापि चैव ॥ १ ॥

अर्थात् जिस ग्रहकी अन्तर्दशा करनी है उसके शुद्धांशको पहले उसीके शुद्धांशसे गुणना फिर जिन २ की अन्तर्दशा लानी है उन्हे उन्हके शुद्धांशसे गुणना तथा सर्वाधिकांशसे भाग लेना लब्धभाजक जात्यनुसार अन्तर्दशा मान होता है अथवा (प्रकारांतर) उसके मासादिसे जिसकी दशामें अन्तर्दशा करनी हो उसके मासादि गुन देने और हीनांशयोग जो सर्वाधिकांश है उससे भाग देना; लब्धिदिनादि अन्तर्दशा होतीहै ऐसे ही प्रत्येक ग्रहमें सभीकी अंतर्दशा होती है उदाहरण—लग्नकी दशादिनादि ८३।४४।२८ इसमें सबहीकी अंतर्दशा करनी है प्रथम बुध है इसके दिनादि २९।२२ सभी ग्रहोंके दशाका योग दिनादि ३६०।०।० है तो गोमूत्रिका क्रम करके बुधसे लग्न गुनदिया २५०९।२०।१३ हुआ इसमें ३६० से भाग दिया तो ६। ५८।१३ दिनादि लग्नदशामें बुधकी अंतर्दशा हुई ऐसेही और ग्रहोंकीभी अंतर्दशा लेनी सबका योग जिसकी अंतर्दशा है उसके दिनादि पर ठीक मिले तो सत्य जानना, मासप्रवेशमेंभी दशाका यही क्रम है, जैसे " पात्यांशयोगेन भजेद्गतैष्यमासांतरंस्याद्गुणकोत्थितेन ॥ पात्यांशकाः

संगुणितादशाः स्युरुक्तक्रमान्मासफले दशानाम् ॥१॥" मासमिति ३० ग्रह पात्यांशोंसे गुनाकर पात्यांश योगसे भाग लेना प्रत्येक ग्रह पात्यांशसे ऐसेही रीतिसे प्रत्येककी दशा होती है. गौरीमतसे प्रथम दशेशके लिये मास प्रवेशदिननक्षत्रमें जो ग्रह दशेश आवे कृत्तिका उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढसे आ० चं० कु० रा० जी० श० बु० के० शु० ये तीन आवृत्तिसे हैं. यही प्रथम दशाधीश होगा इन सबके दिनादिमान यह है ऐसेही दिन-

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
१॥	२॥	१॥।	४॥	४	४॥।	४	१॥।	९

प्रवेशमें दिननक्षत्रसे जानना, और जैसे जातककी मुख्यदशा दश हैं ऐसेही वर्षकी भी पात्यांश १ तासीर २ भावतासीर ३ स्थलभावतासीर ४ कालहोरादशा ५ हद्दादशा ६ नैसागकदशा ७ तनुभावदशा ८ मुद्दादशा ९ बलराममतदशा १० दश दशा हैं. यहां ग्रन्थभूयस्त्वभयसे ग्रंथकर्त्ताने मुख्य पात्यांशीही स्थित करी हैं तथापि सर्व साधारणमें जैसे जातककी महादशा ऐसे वर्षमें भी उसी छायासे मुद्दादशा प्रमाण प्रचलित और फलमें अनुभव करी है, इसलिये इस दशाका क्रम लिखताहूं. "जन्मर्क्षसंख्यासहिता गताब्दा द्व्यूनितानंदहृतावशेषाः॥ आ. चं. कु. रा. जी. श. बु. के. शु. पूर्वा ग्रहा दशास्वामिन इत्थमब्दे ॥१॥" जन्मनक्षत्रमें गतवर्ष जोडके दो घटाय देना शेष९से भाग देकर जो शेष रहैं वह आ. चं. कु. आदि क्रमसे दशेश जानना जैसे जन्मनक्षत्र रोहिणी ४ गतवर्ष८जोडके १२ हुए दो घटाये १० रहे ९से भाग देकर १ शेष रहा तो सूर्यकी दशा प्रथम हुई २ शेषमें चंद्रमा ३ में मंगल४में राहु५में बृहस्पति ६ में शनि ७ में बुध८में केतु ९में शुक्रकी दशा होती है उपरांत ग्रहोंके जो जातकोक्त दशावर्ष सू. ६ चं. १० मं. ७ राहु १८ बृ. १६ श. १९ बु. १७ के. ७ शु. २० है इन्हें तीनसे गुनाकर वर्षके दिन

होते हैं जैसे सूर्यके १८, चंद्रमाके ३०, मंगल २१, रा. ५४ बृ. ४८ श. ५७ बु. ५१ के. २१ शु. ६० दिन होते हैं. अब इसकी अन्तर्दशाके लिये सुगम रीति है कि "वेदा४ नागाः ८ शराः ५ सप्त ७ दिक् १० रसां ६ क९ शरा ५ रसाः ६ ॥ सूर्यादीनां च गुणकास्तैर्निघ्नास्वदशामितिः ॥ १ ॥ षष्ट्याप्तांतर्दशास्तस्य

मुद्दादशाक्रमः ।

सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रहाः
कृ	रो	मृ	आ	पु	ति	श्ले	म	पू	नक्षत्र
उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	नक्षत्र
उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	नक्षत्र
आ ३	श्ले ३	उ ३	स्वा ३	ज्ये ३	उ ३	श ३	रे ३	कृ ३	आर्द्रादि क्रमः
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	६०	दिनयो३६०
१॥	२॥	१॥।	४॥	४	४॥।	४।	१॥।	५	योग ३०
३	५	३॥	९	८	९॥	८॥	३॥	१०	योग ६०

जायतेऽतिपरिस्फुटा ॥ यस्य वर्षे भवेत्तस्य प्रथमांतर्दशा भवेत् ॥ २ ॥ अन्यास्तदग्रिमस्थानाज्जायतेंऽतर्दशाअपि ॥ ३ ॥ " इन क्षेपकोंसे प्रत्येक ग्रहके दशादिन गुननेसे प्रत्येककी अंतर्दशा होती है॥ जैसे गु० सूर्यके दिन १८ से गुने ७२ साठसे भाग दिया १। १२ यह सूर्यकी दशामें सूर्यका अंतर हुआ उपरांत चंद्रमाका गुणक ८ से सू० १८ गुना १४४ हुआ ६० से भाग दिया तो २। २४ यह सूर्यमें चंद्रमाकी अंतर्दशा दिनादि हुई ऐसेही सभी ग्रहोंको जानना प्रकटतासे चक्रमें लिखे हैं ॥ ४ ॥

अंतर्दशाक्रमः ।

सू	चं	भौ	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रहाः
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	६०	
१८	४८	६९	१२३	१७१	२२८	२७९	३००	३६०	योग
४	८	५	७	१०	६	९	५	६	गुणक

सू १।१२	चं १।१२	भौ ४।०	रा १।४५	बृ ६।१८	श ८।०	बु ५।४२	के ७।३९	शु १।४५	ग्रहः गुणक
चं २।२४	भौ २।३०	रा २।२७	बृ ९।०	श ४।४८	बु ८।३३	के ४।१५	शु २।६	आ ४।१	०
भौ १।३०	रा ३।३०	बृ ३।३०	श ५।२४	बु ७।१२	के ४।१५	शु ५।६	आ १।२४	चं ८।०	०
रा २	बृ ५।८	श २।६	बु ८।६	के ४।०	शु ४।४८	आ ३।४८	च ३।४८	भौ १।४५	०
बृ ३।०	श ३।०	बु ३।४	के ४।२०	शु ४।४८	आ ३।४८	चं ६।४८	भौ १।४५	रा ७।०	०
श १।४	बु ४।३०	के १।४५	शु ५।२४	आ ३।१२	चं ६।२४	भौ ५।१५	रा २।२७	बृ १०।०	०
बु २।४२	के १।३०	शु २।६	आ ३।३६	चं ६।२०	भौ ४।४५	रा ५।५७	बृ ३।३०	श ६।०	०
के १।३०	शु ३।०	आ १।२४	चं ७।१२	भौ ४।०	रा ६।३०	बृ ८।३०	श २।६	बु ९।०	०
शु १।४८	आ २।०	चं २।४८	भौ ४।३०	रा ५।३६	बृ ९।३१	श ५।६	बु ३।९	के ५।०	१०

अथ दशाफलानि ।

अनु०—हेममुक्ताफलद्रव्यलाभमारोग्यमुत्तमम् ॥
कुरुते स्वामिसम्मानं दशालग्नस्य शोभना ॥ ५ ॥

लग्नकी उत्तम दशाका फल सुवर्ण, मोती, द्रव्य इनका लाभ उत्तम आरोग्य और स्वामीसे सन्मान देती है ॥ ५ ॥

लाभं दिष्टेन वित्तस्य मानहीनस्य सेवनम् ॥
मनसो विकृतिं कुर्याद्दशालग्नस्य मध्यमा ॥ ६ ॥

लग्नकी मध्यमदशाका फल ऐसा है कि लग्नकी मध्यमदशा

दिष्टेन (भाग्यसे) द्रव्यका लाभ मानहीनकी सेवा मनको और विकार करती है " दिष्टं दैवं भागधेयम् " इत्यमरः ॥ ६ ॥

विदेशमगनं क्लेशबुद्धिनाशं कदव्ययम् ॥
मानहानिं करोत्येवं कष्टालग्नदशाफलम् ॥ ७ ॥

कष्टालग्नदशाका फल—विदेशमें जाना क्लेश बुद्धिका नाश युद्ध व्यय और मानकी हानि कष्टालग्नदशा करती है यह कष्टालग्नदशाका फल है ॥७॥

क्रूरलग्नदशामध्यासौख्यंस्वल्पंधनव्ययम् ॥
अंगपीडांत्वपुष्टिं च कुरुते मृत्युविग्रहम् ॥ ८ ॥

क्रूर लग्नकी दशा मध्यम रहती है. वह स्वल्प सौख्य धनका व्यय अंगमें पीडा कृशता मृत्यु और झगडा ये करती है ॥ ८ ॥

रविदशाफलम् ॥

उपजा०—दशारवेःपूर्णबलस्यलाभं गजाश्वहेमांबररत्नपूर्णम् ॥
मानोदयंभूमिपतेर्ददाति यशश्च देवद्विजपूजनादेः ॥ ९ ॥

अब ग्रहदशाका फल कहते हैं—पूर्णबली सूर्यकी दशा हो तो हाथी घोडे सुवर्ण रत्नादिसे पूर्ण लाभ होवे तथा राजासे मानोदय और देवता ब्राह्मण पूजनादिसे यश देता है ॥ ९ ॥

उपजा०—दशारवेर्मध्यबलस्य सर्वमिदं फलं मध्यममेवदत्ते ॥
ग्रामाधिकारव्यवसायधैर्यैः कुलानुमानाच्चसुखादिलाभः १०॥

जो सूर्य मध्यबली हो तो अपनी दशामें पूर्वोक्त फल मध्यम और कुलानुमान मानादियोंका अधिकार व्यवसाय धीरतासे सुखादिलाभ देता है॥ १०॥

उपजा०—दशारवेरल्पबलस्यपुंसांददातिदुःखंस्वजनैर्विवादात् ॥
मतिभ्रमंपित्तरुजंस्वतेजोविनाशनंधर्षणमप्यरिभ्यः ॥ ११ ॥

अल्पबली सूर्य अपनी दशामें अनेक प्रकार दुःख तथा अपने मनुष्योंके साथ विवाद बुद्धिभ्रम पित्तरोग धनहानि और शत्रुसे पराभव (हार)भी देता है ११

उपचा०—दशारवेर्नष्टबलस्यपुंसांनृपाद्रिपोर्वाभयमर्थनाशम् ॥
स्त्रीपुत्रमित्रादिजनैर्विवादं करोतिबुद्धिभ्रममामयंच ॥ १२ ॥

नष्टबली सूर्य अपनी दशामें पुरुषोंको राजासे भय धननाश स्त्रीपुत्रमित्रोंसे धनसंबंधी विवाद बुद्धिभ्रम और रोगभी करता है ॥ १२ ॥

उपजा०—लग्नाद्रविः षट्त्रिदशायसंस्थोनिंद्योऽपिदत्तेशुभमर्द्धमेव ॥
मध्यत्वमूनः शुभतांचमध्योयातीत्थमत्यंतशुभः शुभः स्यात् ॥ १३ ॥

जो सूर्य लग्नसे६।३।१०।११स्थानमें हो तो निर्बलभी हो तो भी आधा फल शुभ देताही है और हीनबली होके पूर्वोक्त स्थानोंपर हो तो मध्यबलका फल देता है और मध्यबली होके होय तो पूर्णबलका फल देता है तथा उत्तमबली होके होय तो अत्यंत शुभ फल देता है ॥ १३ ॥

अथ चन्द्रदशाफलम् ॥

उपजा०—इंदोर्दशापूर्णबलस्यदत्तेशुक्लांबरस्त्रङ्मणिमौक्तिकाद्यम् ॥
स्त्रीसंगमंराज्यसुखंचभूमिलाभं यशः कांतिबलाभिवृद्धिम् ॥ १४ ॥

पूर्णबली चंद्रमाकी दशामें श्वेत वस्त्र माला मणि मोती आदिकोंका लाभ होवे और स्त्रीसंगमसे तथा राज्यसे सुख भूमिलाभ और यश कांति बल बढे १४

इंदोर्दशामध्यबलस्यसर्वमिदंफलमध्यममेवदत्ते ॥
वाणिज्यमित्रांबरगेहसौख्यंधर्मंमतिंकर्षणतोऽन्नलाभम् ॥ १५ ॥

मध्यबली चंद्रमा अपनी दशामें पूर्वोक्त संपूर्ण फल मध्यम देताहै तथा व्यापारसे लाभ मित्र वस्त्र घरका सुख धर्मकी वृद्धि और कृषिकार्यमें लाभ होताहै १५

इंदोर्दशास्वल्पबलस्यदत्तेकफामयंकांतिविनाशमाहुः ॥
मित्रादिवैरंजननंकुमार्याधर्मार्थनाशंसुखमल्पमत्र ॥ १६ ॥

अल्पबली चंद्रमाकी दशा कफरोग तथा शरीरकी कांतिका नाश मित्रादिकोंसे वैर कन्याका जन्म धर्म धनका नाश और सुख अल्प देता है॥ १६ ॥

इंदोर्दशा नष्टबलस्यलोकापवादभीतिंधनधर्मनाशम् ॥
शीतामयंस्त्रीसुतमित्रवैरंदौःस्थ्यंचदत्तेविरसान्नभुक्तिम् ॥ १७ ॥

नष्टबली चंद्रमाकी दशा शीतरोग पुत्रमित्रोंसे वैर और शरीरका अस्वास्थ्य स्वादरहितअन्नके भोजन झूठा कलंक और धन तथा धर्मका नाशकरतीहै १७

षष्ठाष्टमांत्येतरराशिसंस्थोनिंद्योऽपिदत्तेऽर्द्धसुखंदशायाम् ॥
मध्यत्वमूनः शुभतांचमध्योयातीत्थमिंदुः शुभगः शुभः स्यात् ॥ १८

जो चंद्रमा६।८।१२स्थानोंमें न हो तो हीनबली भी आधा शुभ फलदेता है, हीन बल उक्त भिन्न स्थानोंपर हो तो मध्यबलका फल देता है और मध्य बली हो तो शुभ फल देता है और उत्तमबली हो तो अत्यंत शुभफल देता है ॥ १८ ॥

अथ मंगलदशाफलम् ।

दशापतिःपूर्ण बलोमहीजःसेनापतित्वंतनुतेनराणाम् ॥
जयं रणे विद्रुमहेमरत्नवस्त्रादिलाभंप्रियसाहसत्वम् ॥ १९॥

दशापति मंगल पूर्ण बली हो तो मनुष्योंको सेनापति, बहुतोंको अग्रगण्य करता है तथा संग्राममें जय मूँगा सुवर्ण रत्न वस्त्रोंका लाभ और साहसभी देता है ॥ २० ॥

दशापतिर्मध्यबलोमहीजः कुलानुमानेन धनं ददाति ॥
गजाधिकारोऽप्यथतत्परत्वं तेजस्वितांकांतिबलाभिवृद्धिम् ॥२०॥

दशापति मध्यबली मंगल कुलानुमान धन देता है तथा हाथियोंका अधिकार और हाथीकी सवारीमें प्रसन्न रहै तथा तेजस्वित्व कांति और बलकी वृद्धि देता है ॥ २० ॥

उपजा०—दशापतिःस्वल्पबलोमहीजोददातिपित्तोष्णरुजं शरीरे ॥
रिपोर्भयंबंधनमास्यतोऽसृक्स्रवंचवैरंस्वजनैश्चशश्वत् २१॥

दशापति मंगल अल्पबली हो तो अपनी दशामें पित्त और गरमीके विकारसे शरीरमें रोग देता है तथा शत्रुभय यद्वा बंधन तथा मुखसे रुधिरस्राव और अपने मनुष्योंके साथ निरंतर वैर होवे ॥ २१ ॥

उपजा०—दशापतिर्नष्टबलोमहीजोविवादमुग्रं जनयेद्रणं वा॥
चौराद्भयंरक्तरुजंज्वरंचविपत्तिमल्पस्वहृतिंचखर्जूम् २२॥

दशापति मंगल नष्टबल हो तो उत्कट कलह अथवा रणही कर देता है तथा चौरसे भय, रुधिरसंबंधि रोग, विपत्ति, थोडी धनहानि और खुजलीका रोग करता है ॥ २२ ॥

अनु०—त्रिषष्ठायगतो भौमो नष्टवीर्यः शुभार्द्धदः ॥
मध्योहीनःशुभोमध्यःशुभोऽत्यंत शुभावहः ॥२३ ॥

मंगल दशापति ३।६।११ स्थानमें नष्टबली हो तो शुभफल आधा देता है, हीनबली हो तो मध्यबलीका फल देता है और मध्यबली होके शुभ फल देता है और उत्तम बली हो तो अत्यंत शुभ फल देता हे और भावोंका उक्तही जानना ॥ २३ ॥

अथ बुधदशाफलम् ॥

उपजा०-दशापतिःपूर्णबलोबुधश्चेद्यशोऽभिवृद्धिर्गणितात्सुशिल्पात्
तनोति सेवां सफलांनृपादेर्दूत्यंचवैदूष्यगुणोदयं च॥२४॥

दशापति बुध पूर्णबली हो तो गणित एवं शिल्पविद्यासे यश बढे राजादिकोंकी सेवा सफल होवे दूतत्व मिले और निर्दोष गुणोंका उदय होवे ॥ २४ ॥

उपजा०-दशापतिर्मध्यबलोबुधश्चेद्गुरोस्सुहृद्भ्योलिपिकाव्यशिल्पैः
धनाप्तिदोऽथोसुतमित्रबंधुसमागमान्मध्यममेवसौख्यम्॥२५॥

दशापति बुध अल्पबली हो तो गुरुजन मित्रजन एवं लिखने पढने और शिल्पविद्यासे धनप्राप्ति होवे, और पुत्र मित्र बंधुजनोंका समागम होवे सुख मध्यम होवे ॥ २५ ॥

उपजा०—दशापतावल्पबलेबुधेस्यान्मानस्यनाशःस्वजनापवादः ॥
अकार्यकोपस्खलनाद्यनिष्टंधनव्ययंरोगभयंचविद्यात्॥२६॥

दशापति बुध अल्पबली हो तो माननाश अपने जनोंसे झूठा कलंक विना प्रयोजनका कोप अपनी वाणी चूकजानेसे बुरा धन खर्च और रोगभय भी जानना ॥ २६ ॥

उपजा०—दशापतौहीनबलेबुधेस्यात्स्वबुद्धिनाशोवधबंधभीतिः ॥
दूरेगतिर्वातकफामयार्त्तिर्निखातवित्तस्यचनापिलाभः॥२७॥

हीनबली बुधके दशापति होनेमें अपनी बुद्धिका नाश और बंधन, वा वध कार्यसंबंधी भय, दूरगमन वातकफसंभव रोगसे पीडा होवे और अपना ही स्थापित द्रव्य नहीं मिले ॥ २७ ॥

अनु०—षडष्टांत्येतरर्क्षस्थो नष्टो ज्ञोऽर्द्धशुभप्रदः ॥
मध्यो हीनः शुभो मध्यः शुभोऽत्यंतसुखावहः ॥२८॥

दशापति बुध ६ । ८ । १२ स्थानोंसे रहित और किसी स्थानमें हो तो नष्टबली भी आधा शुभ फल देता है. जो षडष्टांत्य भिन्नस्थानोंमें नष्टबल बुध मध्यमबलका फल और मध्यबली शुभ फल देता है, उत्तमबली अत्यंत शुभ फल देता है ६ । ८ । १२ स्थानोंमें उत्तमबली भी अशुभ हीनबली अत्यंत अशुभ फल देता है ॥ २८ ॥

अथ गुरु दशा फलम् ॥

उपजा०–गुरोर्दशापूर्णबलस्यदत्तेमानोदयंराजसुहृद्गुरुभ्यः ॥
कांत्यर्थलाभोपचयंसुखानिराज्यंसुताप्तिंरिपुरोगनाशम् ॥२९॥

पूर्णबली बृहस्पतिकी दशा राजा मित्र और गुरुजनोंसे मान देती है तथा कांति बढती हैं धनलाभ बहुत राज्यका सुख पुत्रप्राप्ति शत्रु और रोगका नाश होता है ॥ २९ ॥

उपजा०–गुरोर्दशामध्यबलस्यधर्मे मतिंसखित्वंनृपमंत्रिवर्गः ॥
तनोतिमानार्थसुखाभिलाभंसिद्धिंसदुत्साहबलातिरेकाम् ॥३०॥

मध्यबली बृहस्पतिकी दशामें राजासे मित्रता पुत्र स्त्री सुख और मित्र वस्त्र धर्मके लाभ होते हैं ॥ ३० ॥

उपजा०–दशागुरोरल्पबलस्यदत्तेरोगंदरिद्रत्वमथारिभीतिम् ।
कर्णामयंधर्मधनप्रणाशंवैराग्यमर्थंचगुणंचकिंचित् ॥३१॥

अल्पबली बृहस्पतिकी दशा रोग दरिद्रत्व और शत्रुभय देती है तथा कानोंमें रोग धर्म तथा धनका नाश होता है परंच चित्तमें वैराग्य और थोडा धनागम और स्वल्प गुण भी देती है ॥ ३१ ॥

उपजा०–दशागुरोर्नष्टबलस्यपुंसांददातिदुःखानिरुजंकफार्तिम् ॥
कलत्रपुत्रस्वजनादिभीतिंधर्मार्थनाशंतनुपीडनंच ॥३२॥

अल्पबली बृहस्पतिकी दशा पुरुषोंको अनेक दुःख एवं रोग कफविकारसे कष्ट और स्त्री पुत्र एवं अपने मनुष्यादिकोंको भय धर्म और धनका नाश तथा शरीरपीडा देती है ॥ ३२ ॥

अनु०–षडष्टरिष्फेतरगोगुरुर्नीर्द्यो़ऽर्द्धसत्फलः ॥
मध्योहीनःशुभोमध्यःशुभोऽत्यंतशुभावहः ॥ ३३ ॥

दशापति बृहस्पति ६ । ८ । १२ भावोंसे अन्य स्थानोंमें हो तो नष्ट-बली भी शुभफल आधा देता है और हीनबली मध्यफल और मध्यबली शुभ फल देता है और पूर्णबली अत्यंत शुभफल देता है ६ । ८ । १२ स्थानोंमें उत्तम बली भी शुभफल पूर्ण नहीं देता ॥ ३३ ॥

अथ शुक्र दशा फलम् ॥

उपजा०—दशाभृगोःपूर्णबलस्यसौख्यंस्रग्गंधवेश्मांबरकामिनीभ्यः॥
हयादिलाभःसुतकीर्तितोषानैरुज्यगांधर्वरतिःपदाप्तिः ॥३४॥

पूर्णबली शुक्रकी दशा, माला सुगंधी वस्तु गृह वस्त्र स्त्रीजनोंसे सुख देती है तथा घोडा आदि वाहनलाभ पुत्रसुख कीर्ति नीरोगता गायनादि आनंद और पदलाभ देती है ॥ ३४ ॥

उपजा०—दशाभृगोर्मध्यबलस्यदत्तेवाणिज्यतोऽर्थागमनं कृषेश्च ॥
मिष्टान्नपानांबरभोगलाभंमित्राणियोषित्सुतसौख्यलाभम् ३५

मध्यबली शुक्रकी दशामें व्यापारसे तथा कृषिकर्मसे धनलाभ और मीठा अन्न सवारी वस्त्रादि भोगलाभ और मित्र पुत्र स्त्रीसे सुखमिले ॥ ३५ ॥

उपजा०—दशाभृगोरल्पबलस्यदत्तेमतिभ्रमंज्ञानयशोऽर्थनाशम् ॥
कदन्नभोज्यंव्यसनामयार्तिस्त्रीपक्षवैरंकलिमप्यरिभ्यः॥३६॥

अल्पबली शुक्रकी दशा बुद्धिभ्रम ज्ञान यश और धनका नाश करती है तथा जुंवार बाजरा आदिका अन्न भोजन व्यसनवृद्धि रोग पीडा स्त्री पक्षसे वैर शत्रुसे कलह होता है ॥ ३६ ॥

उपज०—दशाभृगोर्नष्टबलस्यदत्तेविदेशयानंस्वजनैर्विरोधम् ॥
पुत्रार्थभार्याविपदोरुजश्चमतिभ्रमोऽपिव्यसनंमहच्च ॥ ३७॥

नष्टबली शुक्रकी दशा विदेशगमन अपने मनुष्योंसे विरोध पुत्र धनस्त्री आदिकी विपत्ति और रोग बुद्धिभ्रम तथा बडा व्यसन देती है॥ ३७ ॥

अनु०—षडष्टरिष्फेतरगोभृगुर्निंद्योऽर्द्धसत्फलः ॥
मध्योहीनःशुभोमध्यः शुभोऽत्यंतशुभावहः ॥ ३८ ॥

दशापति शुक्र ६ । ८ । १२ से अन्य स्थानोंमें नष्टबलीभी शुभ

फल आधा देताही है और हीनबली मध्य फल मध्यबली शुभ फल देता है, उत्तमबली अत्यंत शुभ फल देता है ६ । ८ । १२ स्थानोंमें शुभभी अशुभ देता है ॥ ३८ ॥

अथ शनिदशाफलम् ॥

उपजा०-दशाशनेःपूर्णबलस्यदत्तेनवीनवेश्मांबरभूमिसौख्यम् ॥
आरामतोयाश्रयनिर्मितिश्चम्लेच्छातिसंगान्नृपतेर्द्धनाप्तिः ३९

पूर्ण बली शनिकी दशा नये घर वस्त्र भूमिका सुख देती है वा जल-स्थान निर्माण और म्लेच्छसे तथा राजासे धनप्राप्ति होती है ॥ ३९ ॥

उपजा०-दशाशनेर्मध्यबलस्यदत्तेखरोष्ट्रपाखंडजतोधनाप्तिम् ॥
वृद्धांगनासंगमदुर्गरक्षाधिकारचिंताविरसान्नभोगः ॥ ४० ॥

मध्यबली शनिकी दशा गधा ऊंट एवं उडद आदि अन्न और(पाखंडज) मिथ्या धर्मसंचारसे धनप्राप्ति होवे तथा वृद्धास्त्रीका संगम होवे किला आदिकी रक्षा अधिकारकी चिंता होवे रसरहित अन्न भोजनको मिले ॥ ४० ॥

उपजा०-दशाशनेः स्वल्पबलस्यपुंसांतनोतिदुःखंरिपुतस्करेभ्यः ॥
दारिद्र्यमात्मीयजनापवादंरोगंचशीतानिलकोपमुग्रम् ॥४१॥

अल्पबली शनिकी दशा पुरुषोंके शत्रु और चौरोंसे दुःख देती है तथा दरिद्रता अपने मनुष्यसे झूंठा कलंक शत्रु और शीत तथा वातके कोपसे उग्ररोग उत्पन्न होवे ॥ ४१ ॥

उपजा०-दशाशनेर्नष्टबलस्यपुसामनेकधादुर्व्यसनानिदत्ते ॥
स्त्रीपुत्रमित्रस्वजनैर्विरोधंरोगादिवृद्धिंमरणेनतुल्याम् ॥४२॥

नष्टबली शनिकी दशा पुरुषोंको अनेक व्यसन देती है तथा पुत्रमित्रादि अपने मनुष्योंसे विरोध रोगादियोंकी वृद्धि मरणतुल्य करती है ॥ ४२ ॥

अनु०-त्रिषष्ठलाभोपगतोमंदोनिंद्योऽर्द्धसत्फलः ॥
मध्योहीनःशुभोमध्यःशुभोऽत्यंतशुभावहः ॥ ४३ ॥

शनि ३ । ६ । ११ स्थानोंमें नष्टबली भी आधा शुभफल देताही है तथा हीनबली मध्य फल मध्यबली फल शुभ फल देता है उत्तमबली अत्यंतही शुभ फल देता है ॥ ४३ ॥

उपेंद्रव०–दशातनोःस्वामिबलेनतुल्यंफलंददातीत्यपरोविशेषः ॥
चरेशुभामध्यफलाधमाचद्विमूर्त्तिभेस्याद्विपरीतमूह्यम्॥४४॥

लग्नकी दशा अपने स्वामिबलके सदृश फल देती है. जैसे उदित स्वगृहादि गत लग्नेश हो तो उसकी उत्तमबली दशोक्तफल और अस्त नीच होनेमें हीन बलोक्त स्वदशा फल देती है इसमें यह विशेष है कि चरलग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो दशा शुभ दूसरे द्रेष्काणमें मध्यबलोक्त और तीसरे द्रेष्काणमें हीन बलोक्त दशा फल देती है द्विस्वभाव राशिमें चरसे विपरीत अर्थात् प्रथम द्रेष्काणमें अधम द्वितीयमें मध्यम तृतीयमें उत्तम बलीका फल देती है ॥ ४४ ॥

उपें०व०–अनिष्टमिष्टंचसमंस्थिरर्क्षेक्रमाद्दृकाणैःफलमुक्तमाद्यैः ॥
सत्स्वामियोगेक्षणतःसुखंस्यात्पापेक्षणात्कष्टफलंचवाच्यम् ॥४५॥

स्थिरराशिमें प्रथम द्रेष्काण हो तो हीनबलीका दूसरा हो तो उत्तमबलीका तीसरा हो तो मध्यबलीका फल देता है इस प्रकार पूर्वाचार्योंने लग्नदशाका तीसरा फल द्रेष्काणवशसे कहा है तथा लग्नपर लग्नेशकी दृष्टि वा लग्नमे लग्नेश हो तो सुख और पापयोग पापदृष्टिसे कष्टफलभी कहना ॥ ४५ ॥

अथांतर्दशाप्रकारः ।

अ०–दशामानंसमामानंप्रकल्प्योक्तेनवर्त्मना ॥
अंतर्दशाः साधनीयाः प्राक्पात्यांशवशेनतु ॥ ४६ ॥

अंतर्दशाकी रीति कहते हैं कि, पहिले जिस विधिसे पात्यांशी दशा कही वही इसकीभी है और सावनवर्षमितिका जहां काम है तहां दशेशकी दशा दिनादि लेलेने यही विशेष है, जैसे पहिले हीनांशवशसे पात्यांश लिये हैं तहां पात्यांशयोगसे सौर वा सावन दिनादि दशामिति भाजनसे मिले हैं, वही अंतर्दशामभी ध्रुवक जानना उसीसे सभी पात्यांश गुनाकर प्रत्येककी अंत-

शुक्रान्तर्दशादिनोदाहरणम् ।

शु.	बृ.	मं.	श	चं.	बु.	ल	सू.	या.	ग्र.
२२	७	१	६	२०	७	२१	२	९०	सौरमासादि
५१	५१	४७	२४	१७	२४	१८	४७	४२	
१६	३७	३०	३९	१४	९	३०	१७	१७	
१८	२९	५०	५७	४१	३३	४८	२४	००	
७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	सौरःप्रवेशकालः
१२	४	१२	१४	२०	११	१८	९	१२	
३	५४	४५	३३	५८	१५	३९	५८	४५	
५	२१	५८	२९	९	२४	३३	४	२२	
०	१८	४७	३७	३४	१५	४८	३६	००	

दशा मिलतीहै. उदाहरण—शुक्रदशादिनादि ९० ।४२। १७ सवर्ण करके पहिलोंका सीधा सवर्णित पात्यांश योगसे भाग लिया तो लब्धि ३ ।१२। २८ ध्रुवक हुवा इससे प्रत्येकके पात्यांश गुनाकरके प्रत्येककी अंतर्दशा होती है उपरांत सूर्यस्पष्ट वा संक्रांतिदिनोंसे पूर्ववत् जोड करना ॥ ४६॥

अनु०--आदावंतर्दशापाकपतेस्तत्क्रमतोऽपराः ॥
शुभेक्षणान्वयान्मैत्र्यात्तत्फलंपरिकल्पयेत् ॥ ४७ ॥

अंतर्दशामेंप्रथम दशापति अर्थात् जिसका अंतर है तदनंतर जिस क्रमसे उक्त दशाका न्यास है वैसेही सभी ग्रह लिखने अंतर्दशा स्वामीकाभी चार प्रकारका बल देखके फल कहना, जैसे अंतर्दशापतिसे शुभग्रहोंकी दृष्टि वा योग हो उसके अनुसार स्थान उच्चनीचास्तोदयमें दशेशका फल शुभाशुभ कहना ऐसेही पापयोग दृष्टिसेभी अंतर्दशाका फल जानना॥४७॥

अनु०—चंद्रारजीवाः सौम्येज्यशुक्रारविविधूतथा ॥
मंदेज्यशुक्राः सूर्येन्दुभौमाः सौम्येज्यसूर्यजाः ॥ ४८॥
जीवज्ञशुक्राः सूर्यादेः शुभा अंतर्दशा इमाः ॥
अन्येषामशुभाज्ञेया इति वामनभाषितम् ॥ ४९ ॥

सूर्यकी दशामें चंद्रमा मंगल बृहस्पति चंद्रमाकीदशामें बुध बृहस्पति शुक्र मंगलमें सूर्य चंद्रमा बुधमें शनि बृहस्पति शुक्र बृहस्पतिमें सूर्य चंद्र-

मा मंगल शुक्रमें बुध बृहस्पति शनि और शनिमें बृहस्पति बुध शुक्रकी अंतर्दशा शुभ फल देती है. यह वामनाचार्यने कहा है, परंतु ऐसा फल वर्त्तमानमें यथार्थ मिलता नहीं है,शुभाशुभ ग्रहोंका बलाबल विचारसे फल यथार्थ मिलता है ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ इति महीधरकृतायां नीलकंठीभा० दशाफलाध्ययः ॥ १३ ॥

भू १ पञ्चचन्द्राः १५ कुगुणाः ३१ कुरामाः ३१ सिद्धा २४ गताब्दैर्गुणिताः समेताः ॥ खेना ० ब्धिदस्रै २४ गुणलोचनैश्च २३ तष्टानगै ७ रर्कमुखोऽब्दपः स्यात् ॥ १ ॥

वर्षपति लानेका प्रकार कहते हैं यथा-जन्मशाके १५१२ इष्टशाके १५५० दोनोंका अन्तर ३८ गतवर्ष हुवा गतवर्ष३८को क्षेपक ०। १५ ३१।३१।२४ से गुणदिया ४७।४९।५७।५३।१२ हुवा इस ४७।४९ ५७।५३। १२ में क्षेपक ०।२४।२३ जोडदिया ४८।१४।२०।५३।१२ इसको ७ से शेषित किया६।१४।२१।तो यह अब्दपति हुवा अब संस्कार कहते हैं कि यदि उदयान्तर, भुजफल, चरफल से संस्कृत हो तो संस्कार रहित करना चाहिये तो संस्कार रहित वर्षपति हो जायगा यह स्मरण रखना चाहिये। इस उदाहरणमें संस्कार किया हुवा है इसलिये संस्कार त्रय (उदयान्तर, भुजफल, चरफल) रहित करना तो अब्दपति होगा परन्तु संस्कार ग्रहकी अपेक्षासे अब्दपतिमें विपरीत संस्कार करना चहिये तब संस्कार रहित अब्दपति होगा ॥ १ ॥

अब्दौघतः शैलनखै २०७ र्विनिघ्नात्पुनर्मनु १४ घ्नं गतवर्षवृन्दम् ॥ शराब्धि ४५ भक्तं घटिकादिलब्धं युतं नभोऽभ्यग्नि ३२० युतात्खरवेभैः ८०० ॥ हृतादिनाद्यं गतवर्ष युक्तं सप्तोद्धृतं मेषमुखोऽब्दपः स्यात ॥ २ ॥

अथवा प्रकारान्तरसे अब्दाधिपका आनयन कहते हैं । यथा--जन्मकालीनशाके १५१२ तथा इष्टशाके १५५० दोनोंका अन्तर ३८ यह गतवर्ष हुआ । इस ३८ को क्षेपक २०७ से गुणदिया ७८६६ फिरगत-

वर्ष ३८ को क्षेपक १४ से गुणदिया ५३२ । ४५ से भाग दिया तो लब्धघटी ११ पला ४९ हुई । इसमें क्षेपक ३२० जोडदिया ३२० ११।४९ यह पूर्वानीतमें ७८६६ जोडदिया ८१८६।११।४९ हुआ । ८०० से भाग दिया तो लब्ध दिन घटी आदि हुआ १०।१३।५८ गतवर्ष ३८ जोडातो ४८ । १३ । ५८ हुआ । ७ से शेषित किया ता वर्षपति हुआ ६।१३।५८ जन्मकालिक सूर्यमें चर, देशान्तर संस्कार किया है इसलिये यहाँ भी दोनोंफल आनकर ग्रहोंकी अपेक्षा विपरीत करना तो संस्कार रहित वर्षपति होगा ॥ २ ॥

अथ ग्रहाणां भावफलानि ।

उपजा०--सूर्यारमंदास्तनुगाज्वरार्तिंधनक्षयंपापयुगिंदुरित्थम् ॥
शुभान्वितः पूष्टतनुश्चसौख्यंजीवज्ञशुक्राधनराज्यलाभम् ॥ ५० ॥

अब ग्रहोंके भावफल कहते हैं कि सूर्य मंगल शनि प्रत्येक वा सभी लग्नमें हों तो ज्वरसंबंधी पीडा धनहानि करते हैं. पापयुक्त चंद्रमाभी लग्नमें यही फल देता है जो पूर्ण और शुभयुक्त हो तो सुख देता है पर अल्पमें अल्प अधिकमें अधिक ऐसा बुद्धिसे समझ लेना तथा बृहस्पति बुध शुक्र लग्नमें धन और कुलानुमान राज्यसुख देते हैं, बुध लग्नका केवल वा सशुभ हो तो हर्ष देता है ॥ ५० ॥

उपजा०--चंद्रज्ञजीवास्फुजितोधनस्थाधनागमंराज्यसुखंचदद्युः ॥
पापाधनस्थाधनहानिदाः स्युर्नृपाद्भयंकार्यविघातमार्किः ॥ ५१ ॥

धनस्थानमें चंद्रमा बुध बृहस्पति और शुक्र धनागम तथा राज्यसुख देते हैं पूर्ण चन्द्रमा शुभयुक्तभी यही फल देता है और पापग्रहयुक्त चन्द्रमा धनस्थानमें धनहानि देता है विशेषतः शनि तो राजासे भय और कार्य नाशभी करता है ॥ ५१ ॥

वसन्तति०--दुश्चिक्यगाः खलगाः धनधर्मराज्यलाभप्रदा
बलयुताः क्षितिलाभदाः स्युः ॥ सौम्याः सुखार्थवसुलाभ-
यशोविलासलाभाय हर्षमुतलं किल तत्र चन्द्रः ॥ ५२ ॥

तृतीयभावमें पापग्रह धन धर्म और राज्यसुख देते हैं बलवान् हों तो भूमिलाभभी करते हैं शुभग्रह सुख धनलाभ कार्यसिद्धि यश विलासादि सौख्य करते हैं और चन्द्रमा अनुपम हर्ष देता है पूर्ण क्षीणका यहां उप-चय होनेसे अपेक्षा नहीं है ॥ ५२ ॥

वसन्तति०–चन्द्रः सुखे खलयुते व्यसनं रुजं च पुष्टः शुभेन सहितः सुखमातनोति ॥ सौम्यः सुखं विविधमत्र खलाः सुखार्थनाशं रुजं व्यसनमप्यतुलं भयं वा ॥ ५३ ॥

चतुर्थभावमें चंद्रमा सुख देता है पपायुक्त हो तो द्यूतादि व्यसन और रोग करता है शुभयुक्त पूर्ण हो तो सुख देता है और शुभग्रह अनेक प्रकार सुख देते हैं, पापग्रह सुख और धनका नाश तथा रोग व्यसन अनुपम भय देते हैं ॥ ५३ ॥

रथोद्ध०--पुत्रवित्तसुखसंचयंशुभाःपुत्रगा भृगुसुतोऽतिहर्षदः ॥ पुत्रवित्तधनबुद्धिहारकास्तस्करामयकलिप्रदः खलः ॥ ५४ ॥

पंचम भावमें शुभग्रह पूर्ण चन्द्रमा पुत्र धन और सुख बढाते हैं शुक्र त अतिही हर्ष देता है पापग्रह पुत्र मित्र धन तथा बुद्धिहरण और चौरसंबंधं व्यसन रोग कलह करते हैं ॥ ५४ ॥

शालिनी-षष्ठपापावित्तलाभंसुखाप्तिंभौमोऽत्यंतंहर्षदः शत्रुनाशम्॥ सौम्याभीतिंवित्तनाशंकलिंचचंद्रोरोगंपापयुक्तःकरोति ॥ ५५ ॥

छठें भावमें पापग्रह धनलाभ सुखप्राप्ति करते हैं मंगल अतिहर्ष तथा शत्रुनाश करता है शुभग्रह भय धननाश कलह करते हैं पापयुक्त चन्द्रमा रोगोत्पत्ति करता है ॥ ५५ ॥

भुजंगप्र०--सपापः शशीसप्तमो व्याधिभीतिं खलाः स्त्रीविना-शं कलिं भृत्यभीतिम् ॥ शुभाः कुर्वते वित्तलाभं सुखाप्तिं यशोराजमानोदयं बंधुसौख्यम् ॥ ५६ ॥

सप्तमभावमें पापयुक्त चन्द्रमा रोग भय तथा पापग्रह स्त्रीहानि कलह भृत्यसंबंधी भय करते हैं शुभग्रह धनलाभ सुखलाभ यश राजमान अभ्युदय और बंधुसुख करते हैं ॥ ५६ ॥

वसन्तति०--चंद्रोऽष्टमे निधनदः खलखेटयुक्तः पापैश्चतत्रमृतितुल्यफलं च विद्यात् ॥ सौम्याः स्वधातुवशतो रुजमर्थनाशं मानक्षयं मुथशिले शुभजे शुभं च ॥ ५७ ॥

अष्टमभावमें पापयुक्त चन्द्रमा मृत्यु पापग्रह मृत्यु तुल्य कष्ट फल देते हैं शुभग्रह अपने उक्त धातुके वशसे रोग तथा धननाश मानहानि करते हैं ॥ ५७ ॥

द्रुतविलं०-तपसिसोदरभीःपशुपीडनंखलखगेऽतिमुदोरविरत्रचेत् ॥ शुभखगाधनधान्यविवृद्धिदाःखलखगेऽपिशुभान्यपरेजगुः॥५८॥

नवमभावमें पापग्रह भाइयोंको क्लेश तथा पशुसंबंधी पीडा देते हैं परन्तु सूर्य तो अति हर्षही देता है तथा शुभग्रह धन अन्न बढाते हैं किसी आचार्यके मतसे पापग्रह भी शुभ फल देते हैं, यह बलाधीन है ॥ ५८ ॥

द्रुविलं०--गगनगोरविजः पशुवित्तहारविकुजौव्यवसायपराक्रमै ॥ धनसुखानिपरेचधनात्मजावनिपसंगसुखानिवितन्वते ॥५९॥

दशमभावमें शनि पशु धननाश करता है सूर्य मंगल व्यवसाय तथा पराक्रमसे अनेक सुख करते हैं शुभग्रह धन पुत्र और राजसंबंधी सुख करते हैं ५९॥

वसन्तति०--लाभे धनोपचयसौख्ययशोऽभिवृद्धिसन्मित्रसंगबलपुष्टिकराश्चसर्वे ॥ क्रूरा बलेन रहिताःसुतवित्तबुद्धिनाशं शुभास्तु शुभतां स्वफलस्य कुर्युः ॥ ६० ॥

ग्यारहवें भावमें सभी ग्रह यशकी वृद्धि भले मित्रोंका संग शरीरमें बल पुष्टि करते हैं, बलहीन पापग्रह पुत्र धन बुद्धिसंबंधी हानि और शुभग्रह अपने उक्त शुभ फलकी शुभता बढाते हैं ॥ ६० ॥

इंद्रव०–पापाव्ययेऽनेकरुजंविवादंहानिंधनानां नृपतस्करादेः ॥ सौम्याव्ययंसद्व्यवहारमार्गे कुर्युःशनिर्हर्षविवृद्धिमत्र ॥६१॥

व्ययभावमें पापग्रह अनेकरोग कलह धनहानि राजा तथा चौरादिसे करते हैं शुभग्रह शुभव्यय यद्वा शुभ मार्गमें धनव्यय और शनि हर्षवृद्धि करताहै ६१

शार्दूल०—श्रीगर्गान्वयभूषणोगणितविच्चिंतामणिस्तत्सुतोऽनंतोऽनन्तमतिर्व्यधात्खलमतध्वस्त्यैजनुःपद्धतिम् । तत्सूनुःखलु नीलकंठविबुधोविद्वच्छिवानुज्ञयाभावस्थग्रहपाकदौस्स्थ्यसुखतायुक्तं फलं सोव्यधात् ॥ ६२ ॥ इति भावफलाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

इस श्लोकका अर्थ पूर्ववत्ही है विशेष इतना है कि दशाका शुभाशुभ फल और ग्रहभावफल इस अध्यायमें आचार्यने कहे ॥ ६२ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां ग्रहभावफलाध्यायः॥ १४ ॥

अथ मासदिनप्रवेशानयनं तत्फलानि च ।

अनु०—मासार्कस्य यदासन्नपंक्त्यर्केण सहांतरम् ॥
कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येनयुतोनितम् ॥ १ ॥
तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वं मासार्केऽधिकहीनके ॥
तद्वाराद्ये मासवेशो द्युवेशोऽप्येवमेव हि ॥ २ ॥

अब मासप्रवेश दिनप्रवेशकी रीति कहते हैं कि, जन्मकालका तात्कालिक स्पष्ट सूर्य सबही वर्षप्रवेशमें तुल्यही होता है जितने मासका प्रवेश करना है उतनी संख्यामें १ घटायके वर्षप्रवेशकी राशिमें जोडदेना जैसे दूसरे मासप्रवेशमें १ तीसरेमें २ इत्यादि जोडके मासप्रवेशकालीन सूर्य स्पष्ट होता है ऐसेही दिनप्रवेशमें १ अंश जोडना इस सूर्य स्पष्टके समीपकी स्पष्टावधी पंचांगमें देखके उस अवधिमें जो सूर्य स्पष्ट है वह पंक्त्यर्क हुआ. मासप्रवेशका जो सूर्य स्पष्ट है वह मासार्क हुआ इन दोनोंका अंतर करना उपरांत कला करके गतिसे भाग देना वारादि ३ अंक लेने इस लब्धिको मासार्ककालीन वार घटी पलाओंमें न्यूनाधिक करना. जैसे मासार्कमें पंक्त्यर्क घटाया हो तो अवधिस्थ वारादिमें यह जोडदेना पंक्त्यर्कमें मासार्क घटाया हो तो घटाय देना यह मासप्रवेशका वार घटी पला मिलेंगी ऐसेही दिनप्रवेशभी जानना इसकी युक्ति इसी तंत्रके प्रथमाध्याय तीसरे श्लोककी टीकामें भी

लिखी है,उदाहरण--पूर्वलिखित जन्मकालीन सूर्य स्पष्ट ० । १८ । ४२ । ३१ । है संवत् १९४३ वैशाख कृष्ण द्वादशी शनिवार इष्टघटी १३।५४ वर्षप्रवेश ३८ में भी सूर्य स्पष्ट ० । १८।४२।३१ मासप्रवेशके लिये इसमें एक जोडके १ । १८ । ४२।३१ मासप्रवेशकालीन सूर्य स्पष्ट हुआ इसीका नाम मासार्क है, दूसरे महीने ज्येष्ठकी कृष्णद्वादशीके समीप ज्येष्ठकृष्णषष्ठी सोमवारके दिन पंचांगमें अवधि उदयकालकी है यह हाल २।०।० वरादि जानना इस दिन उदयकालिक सूर्य स्पष्ट १।१०।३५।३ गति ५७।२७ है यह पंक्त्यर्क हुआ, इनका अन्तर करना है मासार्क १ । १८ । ४२ । ३१ अधिक होनेसे इसमें पंक्त्यर्क १।१०।३५।३ घटायके ० ।८।७। २८ रहा इसकी कला ४८७।२८ हुई, गति५७।२७ है५७को ६० से गुनकर २७ जोड दिये ३४४७ हुए ये कला ४८७ को६०से गुनकर२८जोडदिये२९ २४८ हुए गतिपिंड ३४४७से कलापिंड२९२४८ में भाग लिया लब्धि८ दिन हुए शेष १६७२ को ६० से गुनकर १००३२० भागहार३४४७से भाग लिया लाभ २९ घटी हुई शेष ३५७ को ६० से गुनाकर२१४२० भागहारसे भागलिया लाभ ६। यह ८ । २९।६ वारादि पंक्त्यर्क कालिक वारादि २ ।०। ० में न्यूनाधिक करना है यहां मासार्कमें पंक्त्यर्क घटाया गया इस लिये ८ । २९।६ वारको ७ से शेष करके १।२९।६ पंक्ति वारादिमें जोड दिया तो मासप्रवेशका वारादि हुआ ३ । २९।६ ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशीको मंगलवार है इस दिन २९ घटी ६ पलामें द्वितीय मासप्रवेश हुआ एसही दिनप्रवेशभी जानना इसकी कल्पित रीति उदाहरणसहित इसी तंत्रके प्रथमाध्याय तीसरे श्लोककी टीकामें लिखी है दोनों प्रकार सिद्ध हैं विशेष बोधके लिये जगह २ लिखा है ॥ १ ॥ २ ॥

अनु०–मासप्रवेशकालेऽपि ग्रहान्भावांश्च साधयेत् ॥
तत्र मासतनोर्नाथो मुन्थेशो जन्मपस्तथा ॥ ३ ॥
त्रिराशिपो दिननिशो रवींदुभपतिस्तथा ॥
अब्दप्रवेशलग्नेश एषां वा योधिकस्तनुम् ॥ ४ ॥

पश्यन्मासपतिर्ज्ञेयस्ततो वाच्यं शुभाशुभम् ॥
अपरे मासलग्नेशं मासाधिपतिमूचिरे ॥ ५ ॥

जैसे वर्षप्रवेशमें वर्षेशके लिये पंचाधिकारी हैं तैसेही मासप्रवेशमें माशेशके लिये षडधिकारी ये हैं कि प्रथम माशप्रवेशके तत्कालीन ग्रहस्पष्ट करके प्रथम मासलग्नेश १, उससे उपरांत माससंख्या ढाई २।३०। अंशसे गुनकर वर्षकी मुंथा स्पष्टमें योग करनेसे मासकी मुंथा होती है इसका स्वामी २, जन्मराशि स्वामी ३, त्रिराशीश "त्रिराशिपाःसूर्यसिता-र्किशुक्राः" इत्यादिसे पूर्वोक्तही ४, दिनमें सूर्य राशिस्वामी रात्रिमें चंद्रराशिस्वामी ५, वर्षप्रवेश लग्नस्वामी ६ ये षडधिकारी होते हैं इन छहोंमेंसे जो बलाधिक और लग्नको देखता हो वह मासाधिपति होता है. कोई आचार्य मासप्रवेश लग्नेशकोही मासेश मानते हैं उनके मतसे षडधिकारि-योंकाभी प्रयोजन नहीं है स्वामीका निर्णय पूर्ववत्ही है ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

अनुष्टु०-दिनेशं दिनलग्नेशं तथा प्रोचुर्विचक्षणाः ॥
मासघस्त्रेशयोर्वाच्यं फलं वर्षेशवद्बुधैः ॥ ६ ॥

दिनेश दिनप्रवेश लग्नेशकोही बुद्धिमान् कहते हैं. फल इसका वर्षेशके समान बलाबल विचारसे शुभाशुभ बुद्धिमानोंने कहना ॥ ६ ॥

शार्दूलवि०-लग्नांशाधिपतिर्विलग्नपनवांशेशेनमैत्रीदृशादृष्टोवा सहितःशशी च यदितौ मैत्रीदृशालोकते ॥ तस्मिन्मासतनौ सुखं बहुविधं नैरुज्यमित्थं फलं तावद्यावदिमे स्युरित्थमथ तान्संचार्यवाच्यं फलम् ॥ ७ ॥

मासप्रवेश लग्नके नवांशका स्वामी लग्नेशसे वा उसके स्थित नवांश-स्वामीसे मित्र दृष्टि हो वा दोनों एक साथ हों तथा चंद्रमा उन दोनोंको मित्रदृष्टिसे देखे तो उस महीनेमें मासप्रवेशवालेके शरीरमें बहुत प्रकारके सुख और निरोगता जबलौं यह मासप्रवेश है तबलौं रहे ऐसेही गणित-वशसे ग्रहोंका बलाबल दृष्टियोग विचारके फल कहना ॥ ७ ॥

शार्दूलवि०–तौचेच्छत्रुदृशा मिथश्च शशिना दृष्टौ मनोदुःखदौ रोगाधिक्यकरौ च कश्चिदनयोर्नीचोऽस्तगो वा यदि॥ कष्टात् सौख्यमिहद्वयं यदि पुनर्नीचास्तगं स्यान्मृतिःमृत्यब्दोद्भवरिष्टतोमृतिसमं स्यादन्यथेत्यूचिरे ॥ ८ ॥

जो वही लग्नांशेश और लग्नेश्वरांशेश परस्पर शत्रुदृष्टिसे देखते हों वा चंद्रमाभी शत्रुदृष्टिसे देखे तो मानसी दुःख देते हैं जो लग्नेश और लग्नेश्वरांशेशमेंसे कोई नीच वा अस्तंगत हो तो बडा कष्ट भोगकर सुख पावे जो लग्नांशनाथ लग्नेश्वरांशनाथ नीच एवं अस्तंगत हों और चंद्रमा शत्रुदृष्टिसे देखे तो मृत्यु देते हैं, परन्तु इसी महीनेमें जन्म तथा वर्षकाभी अरिष्टहो तो मृत्यु होती है अन्यथा मृत्युतुल्य कष्ट होता है जो जन्मका अरिष्ट जिस महीनेमें हो वर्षका न हो तो मासपूर्वार्द्धमें मृत्युतुल्य कष्ट और वर्षका अरिष्ट हो जन्मका उस महीनेमें न हो तो मासोत्तरार्द्धमें उक्त अरिष्ट मिलता है यह कोई आचार्य कहते हैं ॥ ८ ॥

शार्दूलवि०–भावांशाधिपतिः स्वभावपनवांशेशेन मैत्रीदृशा दृष्टो वा सहितः शशी च यदि तौ मैत्रीदृशालोकते॥तद्भावोत्थसुखं विलोममथ तद्व्यत्यासतः कीर्तितं नीचास्तादिफलं च लग्नवदिदं विद्वद्भिरूह्यं धिया ॥ ९ ॥

ऐसेही संपूर्ण भावोंका विचार है कि जिस भावका नवांशस्वामी तथा भावनाथनवांशस्वामी परस्पर मित्रदृष्टिसे देखें तथा चन्द्रमाभी इन्हें मित्रदृष्टिसे देखें तो इस महीनेमें उस भावसंबंधी शुभफल मिलताहै जो उक्त ग्रह परस्पर शत्रुदृष्टिसे देखें अथवा युक्त हों तथा चंद्रमादि उन्हें शत्रुदृष्टिसे देखे तो तद्भावसंबंधी कष्टफल अवश्य मिलता है ऐसेही नीच वा अस्तंगत एक वा दोनों हों तोभी कष्टफल मिलता है विद्वानोंने लग्नके सदृश सबही भावोंमें ऐसा विचार करना ॥ ९ ॥

इंद्रव०–लग्नेशमासेशसमेश्वरांशनाथायदंशाधिपमित्रदृष्ट्या ॥ दृष्टायुतावाशशिनाचतद्भावोत्थसौख्यायनचेदनिष्टम् ॥१०॥

लग्नेश मासेश वर्षेश और लग्नांशनाथ ये चारों वा इनमेंसे कोई जिस भाव-नवांशस्वामीसे मित्रदृष्टिसे देखे वा युक्त हो तथा चंद्रमाभी मित्रदृष्टिसे देखे वा युक्त हो तो उस भावसंबंधी सुख देता है. ऐसे योगमें जो जन्मकाल योग उससे उस भावसंबंधी अनिष्ट फल हो तो यहां मध्यम फल जानना. जो जो जन्मसे भी शुभफली हों तो यहां अधिक शुभ जानना ऐसेही निर्बल और शत्रुदृष्टिसे अनिष्ट फल होता है फल तारतम्यसे कहना ॥ १० ॥

अनुष्टु०-निर्बला व्ययषष्ठाष्टपतयः शुभदायकाः ॥
अन्ये सवीर्याः शुभदा व्यत्यये व्यत्ययः स्मृतः ॥ ११ ॥

बारहवें छठे आठवें भावके स्वामी तथा इनके नवांशस्वामी निर्बल और भावोंके स्वामी सबल हों तो शुभ फल देते हैं और ६ । ८ । १२ भावोंके स्वामी सबल और भावोंके अबल कष्टफल देते हैं ॥ ११ ॥

उपजा०-लग्नेशमासेशसमेशमुंथाधिपाः षडष्टोपगताः सपापाः ।
दृष्टाः खलैः शत्रुदृशात्रमासे व्याध्यादिविद्विड्भयदुःखदाः स्युः ॥ १२ ॥

लग्नेश मासेश वर्षेश और मुंथेश ६ । ८ । १२ भावोंमें हों पापयुक्तभी हों और शत्रुदृष्टिसे देखते हों तो इस माससें रोगादि क्लेश तथा शत्रुघातादि दुःख देते हैं ॥ १२ ॥

इंद्रव०-केंद्रत्रिकोणायगतास्तुलग्नमासाब्दपा वीर्ययुता नराणाम् ॥
नैरुज्यशत्रुक्षयराज्यलाभमानोदयाद्भुतकीर्तिदाः स्युः ॥ १३ ॥

लग्नेश मासेश और वर्षेश बलवान् हों तथा केंद्र त्रिकोण और ग्यारहवें हों तो नीरोगता शत्रुक्षय कुलानुमान राज्यलाभ मान उदय अद्भुत कीर्ति देते हैं ॥ १३ ॥

अनुष्टु०-इंथिहालग्नयोराशियोंबलीतत्रहद्दपाः ॥
दशेशाः स्वांशतुल्याहैरित्युक्तंकैश्चिदागमात् ॥ १४ ॥

यह सामान्य मासफल कहेहैं इसमें भी सूक्ष्म दशा और अंतर्दशासे जानना पात्यांशी दशाकी विधि पूर्ववतही है, जहां सौर वा सावन दिन ३६० का कार्य है तहां मासदिन ३० से कार्य करना अन्यत् उसी रीतिसे मास प्रवे-

शकी दशा होती है, उसका प्रगट विवरण दशाविधिमें प्रथम लिखा है. तैसे ही अंतर्दशा गिननी चाहिये इनके अनुसार उच्च नीचादि बलाबलविवेकसे फल कहना दशाभी अनेक प्रकारकी हैं जैसे पात्यांशी १ मुद्दा २ देवकीर्तिमत हद्ददशा ३ अनेक भेदसहित तासीरदशा ४ निसर्गदशा ५ कालहोरा ६ लग्नादि राश्यादि ग्रहदशा ७ भोग्यांशदशा ८ महादेवमतदशा ९ बलभद्रमताख्या १० गौरीमताख्या ११ राममताख्या १२ इनका विशेष विस्तार ताजिक मुक्तावलीमें है. यहां ग्रंथभूयस्त्व भयसे केवल प्रधान अंशदशाही आचार्यने कही है मासदशादिनादि ज्ञानार्थ उपाय यह है कि मुंथा और मासलग्नमेंसे जो बलवान् हो उस राशिमें जो भौमादि हद्दास्वामी हैं वे अपने अपने अंशतुल्य दिन पाते हैं, जैसे वर्षलग्नस्पष्ट देखना "मेषेऽगतर्का०" इत्यादिसे जो हद्देश हैं वह प्रथम दशास्वामी तदनंतर क्रमसे होंगे, जैसे राशिके ३० अंश हैं इन्हें १२ से गुनाकर ३६० होते हैं ये सौरदशादिन हैं तद्वत्‌ही जितने हद्दांश हों उन्हें १२ से गुनाकर भौमादिकोंके दशादिनादि होते हैं प्रथम दशेशके भुक्तांश और भोग्यांश पृथक् १२ से गुनाकर भुक्त और भोग्य दशादिनादि होते हैं भुक्तदिनादि दशाके अंत्यमें आवेंगे यह देवकीर्तिमतसे हद्दादशा प्रकार है इसी रीतिसे दिनप्रवेशमें भी करना पात्यांश दशा उसीके उक्त प्रकारसे है ॥ १४ ॥

अनुष्टु०–रवींद्वोरसमावेशान्नैतद्युक्तं परे जगुः ॥
दशांतरदशाऽऽदेशफलमाब्दं तु युज्यते ॥ १५ ॥

जो किसीके मतसे सूर्य चंद्रमा और लग्नकी छोडदी है यह प्रमाण नहीं है दशांतरदशाओंका फल वर्षोक्तही है तो यह भी दशामें होनेही चाहिये इसलिये पात्यांश मुद्दही मुख्य है ॥ १५ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां मासप्रकरणम् ॥ १५ ॥

अनुष्टु०--दिनप्रवेशकालेऽपि ग्रहान्भावांश्च साधयेत् ॥
चंद्रलग्नांशकाभ्यां तु फलं तत्र वदेद्बुधः ॥ १६ ॥

दिनप्रवेशके लिये वर्षके तात्कालिक सूर्य स्पष्टमें जितना संख्याक दिनक

दिनप्रवेश हो उसमें १ न्यून करके जोडदेना, कला विकला वही रहेगी यह दिनप्रवेशका सूर्य स्पष्ट होगा इष्टकाल निकालनेकी युक्ति पूर्वोक्त ही है. उपरांत इस समयके ग्रहस्पष्ट भावस्पष्ट करके चंद्रमा और लग्नके नवांशवशसे मासप्रवेशतुल्य फल पंडितोंसेकहना ॥ १६ ॥

अनु०—चतुष्कमिंथिहेशादिदिनमासाब्दलग्नपाः ॥
एषां बलीतनुंपश्यन्दिनेशः परिकीर्तितः ॥ १७ ॥

मुंथेश १ त्रिराशीश २ जन्मलग्नेश ३ दिनका सूर्यराशीश रात्रिका चंद्रराशीश ४ दिनलग्नेश ५ मासलग्नेश ६ वर्षलग्नेश ७ ये दिनप्रवेशमें अधिकारी हैं इनमेंसे लग्न देखनेवाला दिनेश होता है विचारके पूर्वोक्त ही फल कहना ॥ १७ ॥

उपजा०—त्रिकोणकेन्द्रायगताःशुभाश्चेच्चंद्रात्तनोर्वाबलिनःखलास्तु ॥
षट्त्र्यायगास्तत्रदिनेसुखानिविलासमानार्थयशोयुतानि ॥१८॥

दिनप्रवेशके फल कहते हैं कि शुभग्रह बलवान् लग्न वा चंद्रमासे केंद्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ५।९ में हों तथा पापग्रह ३।६।११ स्थानोंमें हों तो इस दिनमें विलास सन्मान धन और यशसहित सुख होवे १८

उपजा०—षडष्टरिःफोपगतादिनाब्दमासेंथिहेशाःखलखेटयुक्ताः॥
गदप्रदामानयशोहराश्च केंद्रत्रिकोणायगताःसुखाप्त्यै ॥१९॥

दिनेश वर्षेश मासेश और मुंथेश पापयुक्त ६।८।१२ स्थानोंमें हों तो इस दिन रोग देते हैं मान तथा यशकी हानि करते हैं जो केंद्र त्रिकोण और ग्यारहवे हों तो सुख देते हैं ॥ १९ ॥

इंद्रव०--लग्नांशकःसौम्यखगैःसमेतो दृष्टोऽपिवामित्रदृशेंदुनापि ॥
नैरुज्यराज्यादिशरीरपुष्टिर्मासोक्तिवद्दुःखमतोऽन्यथात्वे ॥२०॥

लग्नका अंश वा उसका स्वामी शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तथा चंद्रमा उसे मित्रदृष्टिसे देखे तो नीरोगता राजप्रबंधादि सुख शरीरकी पुष्टि होवे जो वे निर्बल वा ६।८।१२ स्थानोंमें हों तो मासोक्त तुल्य दुःख होवे ऐसे ही सभी भावोंके अंशोंसे प्रत्येक भावोक्त शुभाशुभ कहना ॥ २० ॥

इंद्रव०–यदंशकःसौम्ययुतेक्षितोवास्निग्धेक्षणाद्भावजसौख्यकृत्सः ॥
दुःखप्रदःप्रोक्तवदन्यथात्वेभावेषुसर्वेष्वियमेवरीतिः ॥ २१ ॥

यहां नवांशविचार सभी भावोंमें तुल्य है जिस भावमें जो भाव स्पष्टका नवांश है वह शुभग्रह वा मित्रग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट तथा चन्द्रमासे भी मित्रदृष्टिसे देखा जावे तो उक्त भावसंबंधी सुख होवे यदि वह पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट तथा चंद्रमासे शत्रुदृष्टि करके देखा जावे तो उक्तभावसंबंधी क्लेश देता है यही रीति सभी भावोंकी है ॥ २१ ॥

अनु०–षष्ठांशकः सौम्ययुतो रोगदः पापयुक्छुभः ॥
व्ययांशे शुभयुग्दृष्टे सद्व्ययः पापतस्त्वसत् ॥ २२ ॥

किसी भावोंमें विचार और तरहभी है जैसे छठे भावका नवांश शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो रोग करता है पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो शुभ अर्थात् नीरोगता देता है ऐसेही बारहवें भावका अंश शुभ युक्त दृष्ट हो तो(सद्व्ययः) देवता ब्राह्मण आदिके कार्यमें व्यय और पापयुक्त दृष्टसे चोरी दंड आदिसे व्यय होवे ॥ २२ ॥

अनु०–जायांशः सौम्ययुग्दृष्टः स्वस्त्रीसौख्यविलासकृत् ॥
पापग्रहैः कलिर्दुःखं पापांतःस्थं मृतिं वदेत् ॥ २३ ॥

सप्तम भावांश शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो अपनी स्त्रीसे विलासादि सौख्य करता है पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो स्त्रियोंमें कलह, स्त्रीसंबंधी दुःख होवे. जो वह नवांश पापोंके बीच हो तो स्त्रीमरण होवे जो पाप ग्रह सप्तमभावमें होवें तो अन्यस्त्रीसंगम होवे शुभग्रहोंसे बहुत स्त्रीसौख्य होवे ॥ २३ ॥

अनु०–शुभमध्यस्थितेत्र्यंशे बहुलं कामिनीसुखम् ॥
स्वस्यां रतिर्गुरावन्यखगेऽन्यासु रतिं वदेत् ॥ २४ ॥

सप्तम भावांश जो शुभग्रहोंके बीच हो तो कामिनीसुख बहुत होवे बृहस्पतिसे युक्त वा दृष्ट हो तो अपनी स्त्रीसे, अन्य शुभग्रहोंसे हो तो अन्यस्त्रियोंसे रति होवे ॥ २४ ॥

अनु०-मृत्यंशे मृत्युगे सौम्यैर्युग्दृष्टे मरणं रणे ॥
मिश्रैर्मिश्रं खलैः सौख्यं वर्षलग्नानुसारतः ॥ २५ ॥

अष्टमभाव वा अष्टमभावनवांशकमें जो शुभ ग्रह हों वा देखें तो संग्राममें मरण देते हैं जो शुभग्रह तथा पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो युद्धमें जय वा नीरोगता होवे जो केवल पापग्रह अष्टमभाव तथा अष्टमभावनवांशमें हों तो युद्ध भी न होवे मरण भी न होवे अर्थात् नैरुज्य रहे॥२५॥

अनु०-द्विर्द्वादशे खला हानिं व्यये सौम्या शुभं व्ययम् ॥
कर्त्तरी पापजा रोगं करोति शुभजा शुभम् ॥ २६ ॥

दूसरे बारहवें स्थानमें पापग्रह हानि और धन स्थानमें शुभग्रह धनलाभ बारहवें शुभव्यय करते हैं यदि लग्नमें पापग्रहोंकी कर्त्तरी हो तो रोगादि दुःख देती है शुभग्रहोंकी कर्त्तरी हो तो शुभ फल देती है ॥२६॥

अनु०-लग्नेऽष्टमे वा क्षीणेन्दुर्मृत्युदः पापदृग्युतः ॥
रोगो वा ग्रहणं वाऽपि रिपुतः शस्त्रभीरपि ॥ २७ ॥

लग्नमें अष्टम स्थानमें क्षीण चन्द्रमा पापयुक्त वा दृष्ट हो तो मृत्यु देता है अथवा रोग वा बंधन और शत्रुसे शस्त्रका भय होवे ॥ २७ ॥

उपजा०--चंद्रेसभौमेनिधनारिसंस्थेनृणांभयंशस्त्रकृतंपशोर्वा ॥
पापैः सुखस्थैः पतनंगजाश्वयानात्तनौस्याद्बहुलाचपीडा२८

चन्द्रमा मंगलसहित छठा वा आठवां हो तो मनुष्योंको शस्त्रसे वा पशु (व्याघ्रादि)से भय होवे जो पापग्रह चतुर्थस्थानमें हों तो हाथी घोडा पालकी आदि वाहनसे पतन होवे तथा शरीरमें बहुतसी पीडा भी होवे ॥ २८ ॥

अनु०--शुभा द्यूने विजयदा द्यूतादर्थसुखावहाः ॥
नवमे धर्मभाग्यार्थराजगौरवकीर्त्तयः ॥ २९ ॥

शुभग्रह सप्तम स्थानमें जय करते हैं जुवामें धनलाभ तथा सुख भी करते हैं नवम स्थानमें शुभग्रह ऐश्वर्य धन राजासे गुरुता और कीर्ति बढाते हैं ॥ २९ ॥

अनु०--दिनप्रवेशेऽस्ति विधुरवस्थायां तु यादृशि ॥
तदवस्थातुल्यफलमसौ दत्ते न संशयः ॥ ३० ॥

दिनप्रवेशमें चन्द्र जिस प्रकारकी प्रवासादि अवस्थामें होवे उसी अवस्थाके तुल्य फल देता है मासप्रवेशमें भी निस्संदेह ऐसाही विचार करना ॥ ३० ॥

अनु०--विहायराशींश्चंद्रस्वभागाद्विघ्नाः शरोद्धृताः ॥
लब्धंगता अवस्थाः स्युर्भोग्यायाः फलमादिशेत् ॥ ३१ ॥

अवस्थाके लिये तत्काल चन्द्रमाके स्पष्ट राशिको छोडकर शेष अंशादिको दोसे गुनकर पांचसे भाग लेना जो मिले वह भुक्त अवस्था हुई उससे आगेकी भोग्या जो हो उसके अनुसार फल कहना अवस्थाओंके नाम प्रवास, नाश, मरण, जय, हास्य, रति, क्रीडित, सुप्त, भुक्ति, ज्वराख्य, कंप, स्थिर ये १२ हैं मेषके प्रवाससे वृषके नाशसे मिथुनके मरणसे ऐसेही मीनके स्थिरसे गिनतीका क्रम है अवस्था बारह ही हैं यहां इनमेंसे प्रत्येक राशिके पांच पांच ही लिये हैं कोई सभी राशियोंमें प्रवासही से गिनते हैं सो पक्षांतर है ॥ ३१ ॥

भुजंग०-प्रवासःप्रवासोपगेरात्रिनाथेऽर्थनाशस्तुनष्टोपगेमृत्युभीतिः॥
मृतावस्थितेस्याज्जयायांजयस्तुविलासस्तुहास्योपगेकामिनीभिः ३२

चन्द्रमाकी अवस्थाओंका फल कहते हैं कि प्रवास अवस्थामें चन्द्रमा प्रवास ही करता है तथा नाशमें धननाश मरणसे मृत्युभय जयामें विजय हास्यमें स्त्रियोंसे विलास देता है ॥ ३२ ॥

भु०-रतौस्याद्रतिःक्रीडितासौख्यदात्रीप्रसुप्तापिनिद्रांकर्लिदेहपीडाम्
भयंतापहानीसुखंस्युस्तुभुक्ताज्वराकंपितासुस्थितासुक्रमेण ३३॥

रतिमें (प्रीति) प्रसन्नता क्रीडितामें सुख सुप्तामें निद्रा और कलह और देहपीडा भुक्तामें भय और ज्वरामें संताप और कंपामें हानि स्थिरामें सुख ये क्रमसे अवस्थाओंके फल हैं यथार्थ मिलते हैं परन्तु चन्द्रमा अष्टम हो तो विपरीत फल देता है ॥ ३३ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां दिनप्रवेशप्रकरणम् ॥ १६ ॥

अथ मृगयाविचारः ।

भु०प्र०—सवीर्यौ कुजज्ञौ नृपाखेटसिद्धचैन सिद्धचैयदा वीर्यहीनाविमौ स्तः ॥ जलाखेटमाहुः सर्वीर्यैर्ग्रहर्क्षैर्जलाख्यैर्नगाख्यैर्नगाखेटमाहुः ॥ ३४ ॥

दिनप्रवेश लग्नसे जो मंगल बुध बलवान् विहित स्थानमें हो तो इस दिन प्रष्टा राजाकी सिकार खेलनेमें कार्यसिद्धि होगी जो उक्त ग्रह बलहीन हों तो सिकार नहीं मिलेगी पूर्व संज्ञाप्रकरणमें जलचर, पर्वतचर राशि और ग्रह भी कहे हैं उनके अनुसार फल कहना जैसे जलचर राशि एवं ग्रह बलवान् हों तो जलचर जीवोंकी सिकार होगी जो पर्वतचर राशि ग्रह बलवान् हों तो वनचरमृगया होगी विशेषतः दिनप्रवेश लग्न जलचर राश्यादि जैसे स्वभावका हो तथा जैसे स्वभावके ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों वैसेही मृगया मिलती है,मिश्रितमें फल भी मिश्रित ही कहना ३४॥

अनु०--लग्नास्तनाथौकेन्द्रस्थौनिर्बलौ क्लेशदायिनी ॥
मृगयोक्ताशुभफला बलाढ्यौ यदि तौ पुनः ॥३५॥

लग्नेश सप्तमेश केंद्रमें हों तथा बलवान् हों तो सुखसे और उक्त ग्रह निर्बल हों तो क्लेश देनेवाली मृगया होगी ॥ ३५ ॥

अथ भोजनचिन्ता ।

अनु०—लग्नाधिपो भोज्यदाता सुखेशो भोज्यमीरितम् ॥
बुभुक्षामदपः कर्मपतिर्भोक्तेति चिंतयेत् ॥ ३६ ॥

दिनप्रवेश लग्नसे वा प्रश्नलग्नसे लग्नस्वामी भोजन देनेवाला चतुर्थेश भोजन योग्य अन्न सप्तमेश भोजनकी इच्छा अर्थात् भूख वा रुचि और दशमेश भोजन करनेवाला जानना इनके बलाबलसे उक्त कामोंकी प्राप्ति अप्राप्ति कहनी जैसे लग्नेश शुभस्थानगत बलवान् हो तो भोजन देनेवाला भोजन श्रद्धासे देवे निर्बल हो तो वह (अश्रद्धा)कोपादिसे देवे ऐसे ही चतुर्थेश बलवान् हो तो भोज्य अन्न अच्छा मिलेगा निर्बल होनेमें न मिले वा निंद्य अन्न मिले, सप्तमेश बलवान् हो तो रुचि

भोजनमें अच्छी होगी, निर्बल हो तो क्षुधा मंद अरुचि आदि होंगी, दशमेश बली हो तो खानेवाला प्रसन्नतापूर्वक भोजन करेगा निर्बल हो तो भोजनमें किसी प्रकारका विघ्न होजायगा ॥ ३६ ॥

अनु०—लग्ने लाभे च सत्खेटयुतदृष्टे सुभोजनम् ॥
जीवे लग्ने सिते वापि सुभोज्यं दुस्थितावपि ॥ ३७ ॥

लग्न तथा लाभस्थानमें शुभग्रह हों अथवा इन्हें देखें तो सुभोजन दूध दही घृत मीठा आदि मिलेंगे तथा लग्नमें बृहस्पति वा शुक्र हो तो क्लेशनिवासमें भी सुभोजन मिले ॥ ३७ ॥

अनु०—मंदे तमसि वा लग्ने सूर्येणालोकिते युते ॥
लभ्यते भोजनं नात्र शस्त्राद्भीतिस्तदा क्वचित् ॥ ३८ ॥

शनि वा राहु लग्नमें हो सूर्यकी दृष्टि भी हो तो यत्न करनेसे भी भोजन इस दिन प्राप्त न होवे कहीं शस्त्रका भय तो होवे ॥ ३८ ॥

अनु०—रविदृष्टं युतं वाऽपि लग्नं यदि न तत्र हि ॥
उपवासस्तदा वाच्यो नक्तं वा विरसाशनम् ॥ ३९ ॥

जो लग्न सूर्यसे युक्त वा दृष्ट भी न हो तो प्रथम तो निराहार ही होवे अथवा रात्रिको नीरस भोजन रूखा मिले ॥ ३९ ॥

अनु०—चंद्रे कर्मगते भोज्यमुष्णं शीतं सुखे कुजे ॥
तुर्यस्थखेटवशतो भोज्यान्नरसमादिशेत् ॥ ४० ॥

जो दिन वा पृच्छा लग्नसे चन्द्रमा दशम हो तो (उष्ण) गर्मा-गर्म भोजन मिले जो मंगल दशम हो तो (शीत) ठंढा बासी भोजन मिले और चतुर्थस्थानमें जो ग्रह हो उसके उक्त रसानुसार मिले जैसे सूर्य-से कडुआ चन्द्रमासे सलोना, मंगलसे तीखा, बुधसे मिला हुआ, बृह-स्पतिसे मीठा, शुक्रसे खट्टा, शनिसे (कषाय) क्वाथ कांजी सिरका आदि बहुत दिनका संपादित मिलता है ॥ ४० ॥

अनु०—स्निग्धमन्नं सिते तुर्ये तैलसंस्कृतमर्कजे ॥
नोचापगे कदशनं विरसान्नमसंस्कृतम् ॥ ४१ ॥

शुक्र चतुर्थ हो तो घीके पकवान शनि चतुर्थ हो तो तेलके पकवान तथा सरस मिलें, जो चतुर्थमें नीचगत ग्रह हों तो निकम्मा स्वादरहित कच्चा पदार्थ भोजन मिले ॥ ४१ ॥

उपजा०-सूर्यादिभिर्लग्नगतैः सवीर्यै राजादिगेहे भुजिमामनंति॥
सुखेसुखेशेसबले सुभोज्यं चरादिकेस्यादसकृत्सकृद्द्विः ॥४२॥

सूर्यादिकोंमें जो उच्चादि बलयुक्त लग्नगत हो उसके जातिअनुसार राजादिके घरमें भोजन होवे जैसे सूर्यसे राजगृह, चंद्रमासे वैश्य, मंगलसे क्षत्रिय, बुधसे शूद्र, बृहस्पतिसे ब्राह्मण, शुक्रसे भी ब्राह्मण और शनिसे शूद्रके जो चतुर्थेश बलवान् चतुर्थहीमें हो तो अनेक पकवान युक्त भोजन मिले जो चतुर्थमें दुष्ट ग्रह हो तो कष्टसे मिले जो लग्नमें चरराशि हो तो अनेकवार, स्थिरराशि हो तो एकवार मिले द्विस्वभाव हो तो दो वार मिले ॥ ४२ ॥

अनु०-मूलत्रिकोणगेखेटेलग्नेपितृगृहेऽशनम् ॥
मित्रालये मित्रभस्थे शत्रुगेहेऽरिगेहगे ॥ ४३ ॥

लग्नगत ग्रह अपने मूलत्रिकोणमें हो तो पिताके वा अपने घरमें मित्रराशिका हो तो मित्रके, शत्रुराशिका हो तो शत्रुके घरमें भोजन होवे लग्नमें कोई ग्रह न हो तो जिसकी पूर्वदृष्टि लग्नपर हो उसके अनुसार भोजनगृह कहना ॥ ४३ ॥

शुभेक्षितेयुतेलग्ने बलाढ्ये स्वगृहे भुजिः ॥
ग्रहराशिस्वभावेन यत्नादन्यत्र चिंतयेत् ॥ ४४ ॥

लग्न शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो बलवान् भी हो तो अपने घरमें भोजन होवे ऐसे ही ग्रहकी राशि स्वभावके अनुसार यत्नसे और घर भी भोजनके कहना ॥ ४४ ॥

उपजा०-तिलान्नमर्के हिमगौ सुतंडुला भौमे मसूराश्चणकाश्च भोज्यम्।
बुधे समुद्गाः खलु राजमाषा गुरौ सगोधूमभुजिःसवीर्ये४५॥

लग्नगत जो बलवान् हो तथा लग्नमें न हो तो दृष्टिवालेसे अन्न कहना

जैसे सूर्यसे तिल, चंद्रमासे चावल, मंगलसे मसूर और चना, बुधसे मूंग तथा राजमाष (खांश) बृहस्पतिसे गेहूं ॥ ४५ ॥

उपजा०-शुक्रेयवावाजरिकायुगंधराः शनौकुलित्थादिसमाषमन्नम्।
भोज्यंतुषान्नंशिखिराहुवीर्याच्छुभग्रहालोकनतःसहर्षम् ४६॥

शुक्रसे जौ, बाजरा आदि,शनिसे कुलत्थ कैथ मक्का खिसरी उडद आदि, राहु केतुसे कोदों कांगनी समा आदि भूसी सहित (बेछाँटे अन्न) मिलें ये प्रधान अन्न हैं उक्तान्न आदि भोजन मिलेंगे कहना उस ग्रहपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो खुशीसे पापयुत दृष्टि हो तो सकोप (कलहादिसे) भोजन होवे ॥ ४६ ॥

शालिनी-सूर्येमूलंपुष्पमिन्दौकुजेस्यात्पत्रंशाखाचापिशाकंसवीर्ये॥
शुक्रेज्यज्ञैर्व्यंजनंभूरिभेदंमन्देनेत्थंसामिषंराहुकेत्वोः॥४७॥

भोज्यरूप सूर्य हो तो मूल (जडका) शाक,चन्द्र हो तो पुष्प,कुज हो तो पत्ता और डार शुक्र गुरु निष्पाप बुध हो तो अनेक तरहके व्यंजन शनि केतु हो तो मांस वा तेलकी बनी तरकारी मिले ॥ ४७ ॥

अथ स्वप्नचिंता ।

इं०व०-लग्नांशगेऽर्के तनुगेऽपिवास्मिन्दुःस्वप्नमीक्षेतयथार्कबिंबम्॥
रक्तांबरं वह्निमथापि चंद्रे शुभ्राश्वरत्नांबरशुभ्रवस्त्रम् ॥ ४८ ॥

अब स्वप्नविचार दिनप्रवेश वा प्रश्नलग्नसे कहते हैं कि जो सूर्य लग्न वा लग्न नवांशकमें हो तो इस दिन दुःस्वप्न देखेगा जैसे स्वप्नमें सूर्य-बिंब रक्त वस्त्र अथवा अग्नि देखे चद्रमा हो तो श्वेत रंग घोडा वस्त्र पुष्प हीरा आदि देखे ॥ ४८ ॥

उपजा०-स्त्रियः सुरूपाश्च कुजे सुवर्णं रक्तांबरस्रक्पशुविद्रुमाणि।
बुधेहयःस्वर्गतिधर्मवार्ता गुरौरतिर्धर्मकथा सुरेक्षा॥ ४९ ॥

चंद्रमा हो तो सुरूप स्त्री भी देखे, मंगल हो तो सुवर्ण रक्तवस्त्र रक्तपुष्प सुर्ख रंगके पशु और मूंगा आदि, बुध हो तो घोडा और स्वर्गगमन वा

स्वर्गसम सुख तथा धर्मसंबंधी कथा वार्त्ता बृहस्पति हो तो अपने प्रीत्यनुसार वस्तु धर्मसंबंधी कथा और देवताओंका दर्शन देखे ॥ ४९ ॥

उपजा०–सद्बंधुसंगश्च सिते जलानां पारेगतिर्देवरतिर्विलासः ॥ शनावरण्याद्रिगतिश्चनीचैः संगश्च राहौ शिखिनीत्थमेव॥५०॥

शुक्र हो तो सुबांधवोंका संगम तथा जलोंको तिरके पारगति देवताओंसे प्रीति विलासादि सुख देखे, शनि हो तो वन पर्वत गमन नीचजन संगति होवे राहु केतुका भी ऐसा ही फल है ॥ ५० ॥

द्रुत०--सहजधीमदनायरिपुस्थितो यदि शशी गुरुभानुसितेक्षितः॥ नवमकेन्द्रगतेषु शुभेषु च स्वबलयामनुजोरमते तदा ॥५१॥

चन्द्रमा ३।५।७।११।६। इन स्थानोंमें हो और बृहस्पति सूर्य शुक्रसे देखा जाता हो और ९।१।४।७।१० इन स्थानोंमें सबमें वा कोईमें भी शुभ ग्रह हों. तो मनुष्य स्वप्नमें अति सुन्दरीस्त्रीसे रमण करता है॥५१॥

वसंतति०--आसीदसीमगुणमंडितपंडिताग्र्यो व्याख्यद्भुजंगपगवीः श्रुतिवित्सुवृत्तः ॥ साहित्यरीतिनिपुणोगणितागमज्ञश्चिंतामणिर्विपुलगर्गकुलावतंसः ॥ ५२ ॥

आचार्य स्वनामधेय प्रकट करता है कि अगणित गुणोंसे भूषित पंडितोंमें मुख्यतम भुजंगपगवी अर्थात् शेषभाष्यको पढानेवाला वेदका जाननेवाला साहित्यशास्त्र परिपाटी निपुण गणितादि समस्त ज्योतिषशास्त्रपारंगम गर्गकुलमें उत्पन्न चिंतामणि दैवज्ञ हुए ॥ ५२ ॥

उपजा०–तदात्मजोऽनंतगुणोऽस्त्यनंतो योऽधोक्र सदुक्तिकिल कामधेनुम् ॥ संतुष्टये जातकपद्धतिंचन्यरूपयद्दुष्टमतं निरस्य॥५३॥

चिंतामणि दैवज्ञका पुत्र असंख्यगुणयुक्त अनंतनामा हुआ जिसने कामधेनु गणितकी टीका करी तथा सद्दैवज्ञोंको संतुष्ट करनेके लिये जन्मप-

द्धति संप्रदायानभिज्ञोंका दुष्ट मत निराकरण करके जिसने जातकपद्धति बनाई ॥ ५३ ॥

उपजा०-पद्मांबयाऽसावि ततो विपश्चिच्छ्रीनीलकंठःश्रुतिशास्त्रनिष्ठः विद्वच्छिवप्रीतिकरंव्यधासीत्समाविवेकंमृगयावतंसम्॥५४॥ शाके नन्दा १५०९ भ्रबाणेन्दुमित अश्विनमासके ॥ शुक्लेऽष्टम्यांसमातंत्रंनीलकंठबुधोऽकरोत् ॥ ५५ ॥ इति श्रीगर्गवंशा० नील० वर्षतंत्रं समाप्तम् ॥

अनन्त दैवज्ञका पुत्र जिसकी माताका नाम पद्मावती है विद्वान् वेदशास्त्रज्ञ श्रीनीलकंठ दैवज्ञ हुआ जिसने समाविवेकनामक ज्योतिषका एक प्रकरण वर्षफल सूचक शिव प्रीतिकारक बनाया ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां फलतन्त्रे दिनप्रवेशभोजनस्वप्नचिंताकथनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥



श्रीगणेशाय नमः ।

अथ नीलकंठीप्रश्नतंत्रः प्रारभ्यते ।

भूमिका ।

नीलकंठदैवज्ञकृत नीलकंठी तीन तंत्रकी प्रथा है परन्तु तीसरा प्रश्न-तन्त्र केवल नीलकंठाचार्यकृत सांप्रतमें समयप्रभावके कारणांतरोंसे दुष्प्राप्य है, जन्मविचारवैषयिक ग्रंथ बृहज्जातक एवं वर्षवैषयिक ताजिकनील-कंठी दो तंत्रोंकी भाषाटीका सर्वसाधारणके प्रसन्नतानिमित्त यथामति बनाये उपरांत तदनुगामी प्रश्नप्रकरण जो कि, जातक ताजिक ग्रन्थ देखनेवा-लोंको अवश्य ही उपयोगी है. यद्यपि उक्त जातक ताजिकोंमें बहुधा यही विचार प्रश्नमें भी करना लिखनेसे प्रश्नग्रंथका अंतर्भाव अर्थात् प्रश्नग्रंथका प्रयोजन उन्हींमें आलिया, तथापि पूर्वाचार्योंमें शिष्टाचार एवं प्रकटताके लिये अनेकानेक ग्रन्थ नीलकंठमतानुसारी होनेसे नीलकंठीनाम भया है. चमत्कारी प्रश्नग्रंथकी भाषाटीका यथामति करता हूं सज्जनजन स्वीय सौजन्यतासे अंगीकार करें संस्कृत विद्या अद्वितीय है कोई वस्तुमात्र इससे रहित नहीं है. जो रहित हो वह चतुर्दश भुवनमें है ही नहीं परन्तु भार-तवर्षमें विद्याके नाश होनेका मुख्य कारण यही है कि, जो लोग कोई अनूठी विद्या वा कला एवं औषधि मन्त्र आदि चमत्कृत जानते हैं वे दूसरेको सिखलानेमें मत्सरी होकर प्रकट नहीं बतलाते, उनके देहांत समयमें वह उन्हींके साथ गई आगे विद्या कहांसे बढे ? इस बातको विचार मैंने बृहज्जातक एवं नीलकंठी तीनहूं तंत्रोंमें ज्योतिषशास्त्रमें जो बहुधा संकेत रहते हैं वे यथावकाश प्रकट ही कर दिये हैं।

अनुष्टु०–दैवज्ञस्य हि दैवेन सदसत्फलवांछया ॥
अवश्यं गोचरं मर्त्यः सर्वः समुपनीयते ॥ १ ॥

प्राक्तन कर्मको दैव कहते हैं जैसा मनुष्यने कर्म किया वैसे ही फल भी

अवश्य पावेगा उसके शुभाशुभ परिपाकके जाननेकी इच्छा दैवज्ञकी हो तो ग्रहगोचर अर्थात् ग्रहचारसे संपूर्ण कह सकता है ॥ १ ॥

अनु०—अश्रौषीच्च पुराविष्णोर्ज्ञानार्थं समुपस्थितः ॥
वचनं लोकनाथोऽपि ब्रह्मा प्रश्नादिनिर्णयम् ॥ २ ॥

पहिले किसी कालमें लोकनाथ ब्रह्मा कर्मपरिपाकके जाननेके लिये विष्णुके पास गये उनसे प्रश्न स्वर शकुनादिकोंके निर्णयवचन सुनकर संसारमें ज्योतिषद्वारा प्रकट किया ॥ २ ॥

वसन्त०—तस्मान्नृपः कुसुमरत्नफलाग्रहस्तः प्रातः प्रणम्य वरयेदपि प्राङ्मुखस्थः ॥ होरांगशास्त्रकुशलान् हितकारिणश्च संहृत्यदैवगणकान्सकृदेव पृच्छेत् ॥ ३ ॥

तस्मात् प्रश्न पूछनेवाला राजा [यहां राजा उपलक्षणार्थ कहा गया] पुष्प रत्न फल आदि मंगल वस्तु दाहिने हाथमें लेकर प्रातःकाल प्रणामपूर्वक ज्योतिषीका वरण प्रश्ननिमित्त करें; तदनन्तर होरानामक ज्योतिष शास्त्रांगीभूतके जाननेवाले हितकारी गणकोंको इकट्ठा करके स्वल्पाक्षरोंसे एकही बार प्रश्न पूछे ॥ ३ ॥

आर्या—दशभेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ॥
यः कथयतिशुभमशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥४॥

प्रश्न पूछने उपरांत जो गणक दश प्रकार स्पष्टभाव बलाबल स्थानादि ग्रहगणित एवं जातकमत सम्पूर्ण देखकर शुभाशुभ फल कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती ॥ ४ ॥

अथादौ प्रष्टुः परीक्षा ।

आर्या०ऋजुरयमनृजुर्वायं प्रष्टा पूर्वं परीक्ष्य लग्नबलात् ॥
गणकेन फलं वाच्यं दैवं तच्चित्तगं स्फुरति ॥ १ ॥

पूछनेवालेका चित्त सरल वा वक्र कैसा है इस विचारमें गणकने लग्न बलसे प्रथम परीक्षा करके फल कहना. प्रष्टाके चित्तानुवर्ती दैव प्राक्तन कर्मपाक लग्नविचार द्वारा गणकको स्फुरण होजाता है ॥ १ ॥

आर्या–लग्नस्थे शशिनि शनौ केंद्रस्थे ज्ञे दिनेशरश्मिगते ॥
भौमज्ञयोः समदृशा लग्नगचंद्रेऽनृजुः प्रष्टा ॥ २ ॥

जैसे लग्नमें चन्द्रमा केंद्रमें शनि और बुध अस्तंगत हो तथा लग्नमें चन्द्रमा मंगल बुधकी पूर्ण दृष्टिसे दृष्ट हो तो प्रष्टा कुटिल जानना ॥२॥

आर्या–लग्ने शुभग्रहयुते सरलः क्रूरान्विते भवेत्कुटिलः ॥
लग्नेऽस्ते सौम्यदृशाविधुगुरुदृष्टया च सरलोऽयम् ॥३॥

लग्नमें शुभग्रह हों तो सरल और पापग्रह हों तो कुटिल तथा लग्न और सप्तम स्थानमें शुभग्रहोंकी दृष्टि हो वा चन्द्रमापर बुध बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो सरलचित्त जानना ॥ ३ ॥

आर्या–यदि गुरुबुधयोरेकः पश्यत्यस्ताधिपं च रिपुदृष्टया ॥
तत्कुटिलः प्रष्टा खल्वनयोः सौम्यदृष्टितः साधुः ॥४॥

जो बुध बृहस्पति सप्तमेशको शत्रुदृष्टिसे देखें तो कुटिल और इनकी उसपर मित्रदृष्टि हो तो सरलचित्त प्रष्टा जानना ॥ ४

आर्या–सम्यग्विचार्य लग्नं ब्रूयात्प्रश्नं सकृद्यथाशास्त्रम् ॥
यस्त्वेकं ब्रूतेऽसौ तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥ १ ॥

ज्योतिषी भले प्रकार लग्नविचारके थोडे प्रश्नको शास्त्रकी आज्ञानुसार जो एक प्रश्न कहता है उसकी वाणी मिथ्या नहीं होती अर्थात् लग्नमें बहुत प्रश्न सत्योत्तर नहीं होते ॥ १ ॥ बहुप्रश्नविषये-

अनु०--बहून्प्रश्नानथो प्रष्टा युगपद्यदि पृच्छति ॥
तत्रतेषां विधिं वक्ष्ये शास्त्रतो लोकतुष्टये ॥ २ ॥

जब प्रष्टा एकहीबार बहुत प्रश्न पूछता है तो उनके उत्तरके कहनेकी विधि लोकोंकी तुष्टिको शास्त्रसे कहताहूं ॥ २ ॥

अनु०--आदिमंलग्नतोज्ञानं चन्द्रस्थानाद्द्वितीयकम् ॥
सूर्यस्थानात्तृतीयं स्यात्तुर्यंजीवगृहाद्भवेत् ॥ ३ ॥
बुधभृग्वोर्बलीयः स्यात्तद्गृहात्पंचमं पुनः ॥
राश्यनुरूपं कथयेत्संज्ञाध्यायोक्तवद्बुधः ॥ ४

पहिला प्रश्न लग्नसे, दूसरा चन्द्रस्थानसे, तीसरा सूर्यस्थानसे, चौथा बृहस्पतिकी राशिसे, पांचवाँ बुध शुक्रमेंसे जो बलवान् हो उसकी राशिके अनुसार जो राशियोंका धातु रूप रंग आकार गुण संज्ञाध्यायमें कहे हैं उनके प्रभावसे प्रश्न कहना, वह विस्तार आगे लिखा जायगा ॥ ३ ॥४॥

अथावस्था ।

अनु०–दीप्तो दीनोऽथ मुदितः स्वस्थः सुप्तो निपीडितः ॥
मुषितः परिहीनश्च सुवीर्यश्चाधिवीर्यकः ॥ १ ॥

ग्रहोंके दश भेदोंके नाम दीप्त, दीन, मुदित, स्वस्थ, सुप्त, पीडित, मुषित, परिहीन, सुवीर्य और अधिवीर्य ये दश भेद हैं ॥ १ ॥

अनु०–स्वोच्चे दीप्तः समाख्यातो नीचे दीनः प्रकीर्तितः ॥
मुदितो मित्रगेहस्थः स्वस्थश्च स्वगृहे स्थितः ॥ २ ॥
शत्रुगेहे स्थितः सुप्तो जितोऽन्येन निपीडितः ॥
नीचाभिमुखगो हीनो मषितोऽस्तंगतो ग्रहः ॥ ३ ॥
सुवीर्यः कथितः प्राज्ञैः स्वोच्चाभिमुखसंस्थितः ॥
अधिवीर्यो निगदितः सुरश्मिशुभवर्गगः ॥ ४ ॥

अपने उच्चराशिका ग्रह दीप्त, नीचका दीन, मित्रराशिका मुदित, अपनी राशिका स्वस्थ, शत्रुराशिका सुप्त, अन्यपापसे आक्रांत पीडित, नीचाभिलाषी हीन, अस्तंगत मुषित, उच्चाभिलाषी सुवीर्य और रश्मि अधिक तथा शुभांशकमें अधिक अधिवीर्य कहाता है ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

अनु०–दीप्ते सिद्धिश्च कार्याणां दीने दुःखसमागमः ॥ स्वस्थे कीर्त्तिस्तथा लक्ष्मीरानंदो मुदिते महान् ॥५॥ सुप्ते रिपुभयं दुःखं धनहानिर्निपीडिते॥ मुषिते परिहीने च कार्यनाशोऽर्थसंक्षयः ॥ ६ ॥ गजाश्वकनकावाप्तिः सुवीर्ये रत्नसंपदः ॥ अधिवीर्ये राज्यलब्धिर्ग्रहैर्मित्रार्थसंगमः ॥ ७ ॥

अवस्थाओंके फल कहते हैं कि, दीप्त अवस्थामें ग्रह कार्यसिद्धि करता है, तथा दीनमें दुःखागम, स्वस्थमें कीर्ति और लक्ष्मी, मुदितमें बडा

आनंद, सुप्तमें शत्रुभय तथा दुःख, पीडितमें धनहानि, मुषित और परि-हीनमें कार्यनाश धननाश, सुवीर्यमें हाथी घोडे सुवर्ण और रत्नोंकी संपत्ति, अधिवीर्यमें राज्यलाभ, तथा मित्र धनका संगम होता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ ग्रहस्वरूपम् ।

अनु०–पूर्वः सत्त्वं नृपस्तातः क्षत्रं ग्रीष्मोऽरुणश्चलः ॥
मधुदृक्पैत्तिको धातुः शूरः सूक्ष्मकचो रविः ॥ १ ॥

पूर्वदिशाका स्वामी, सत्त्वगुण, राजा, पिता, क्षत्रिय जाति, ग्रीष्मऋतु, रक्तवर्ण, चपलस्वभाव, शहतके रंग सदृशनेत्र, पित्तधातु, शूरमा और बारीक केश ये रूप गुण सूर्यके हैं ॥ १ ॥

कफो वर्षामृदुर्मातापयो गौरश्च सात्त्विकः ॥
जीवो वैश्यश्चरो वृत्तो मारुताशो विधुः सुदृक् ॥ २ ॥

कफ धातु, वर्षा ऋतु, कोमल शरीर, मातास्थान, जलतत्त्व, गौरवर्ण, सत्त्वगुण, प्राणदाता, वैश्यजाति, चरस्वभाव, गोलाकार, वायव्य दिशाका स्वामी, सुहावने नेत्र ये रूप गुण चंद्रमाके हैं ॥ २ ॥

ग्रीष्मः क्षत्रतमो रक्तो याम्यः सेनाग्रणीश्चरः
युवा धातुश्च पिंगाक्षः क्रूरः पित्तं शिखी कुजः ॥ ३ ॥

ग्रीष्मऋतु, क्षत्रियजाति, तमोगुण, रक्तवर्ण, दक्षिण दिशाका स्वामी, सेनापति, चरस्वभाव, युवावस्था, शुक्रधातु, पीले नेत्र, कफप्रकृति, पित्तप्रधान अग्नि ये रूप गुण मंगलके हैं ॥ ३ ॥

शरदीशो हरिर्दीर्घः षंढो मूलं कुमारकः ॥
लिपिज्ञ उत्तरेशश्च शूद्रः सौम्यस्त्रिधातुकः ॥ ४ ॥

शरदृतु का स्वामी, हरितरंग, लंबा शरीर, नपुंसक, मूलवस्तुका स्वामी, कुमारअवस्था, लिपि (शिल्पविद्या जाननेवाला), उत्तरदिशाका स्वामी, शूद्रजाति, सौम्य प्रकृति, वातादि तीनों धातु ये रूप गुण बुधके हैं ॥ ४ ॥

सत्त्वं पीतो हिमः श्लेष्मा दीर्घो मंत्री द्विजो नरः ॥
मध्वैशानीकफो जीवो मधुपिंगलदृक् तथा ॥ ५ ॥

सत्त्वगुण, पीलारंग. हिमस्वभाव, श्लेष्मप्रकृति, लंबा शरीर; मंत्रज्ञ, ब्राह्मण जाति, पुरुष, मधुरप्रिय, ईशानदिशाका स्वामी, कफधातु, शहतसे नेत्रोंका रंग ये गुण बृहस्पतिके हैं ॥ ५ ॥

अनु०–शुक्रः शांतो द्विजो नारीवेष्यो मन्त्री हरः सितः ॥
आग्नेयी दिक् कफश्चाम्लः कुटिलासितमूर्द्धजः ॥ ६ ॥

शांतस्वभाव ब्राह्मणजाति स्त्रीवेषधारी मंत्रज्ञ चरस्वभाव श्वेतरंग आग्नेय दिशापति कफप्रधान खट्टारस श्याम और कुंचित केश ये गुण शुक्रके हैं ॥ ६ ॥

कृष्णस्तमः कृशोवृद्धः षंढोमूलांत्यजोऽलसः ॥
शिशिरः पवनः क्रूरः पश्चिमो वातुलः शनिः ॥ ७ ॥

कृष्णरंग तमोगुण कृश अंग वृद्धावस्था नपुंसक मूलवस्तु चांडालेश आलसी शिशिरऋतुका स्वामी वायुधातु क्रूरस्वभाव पश्चिमदिशाका स्वामी वाचाल ये रूप गुण शनिके हैं ॥ ७ ॥

राहुर्धातुः शिखी मूलं शेषमन्यच्च मन्दवत् ॥
चिंतनीयं विलग्नेशात्केंद्रगाद्वाबलाधिकात् ॥ ८ ॥

राहु धातुप्रधान जटाधारी मूलवस्तु है, शेष गुण शनिके तुल्य जानना केतु भी ऐसा ही जानना.लग्न वा लग्नेश अथवा जो ग्रह केन्द्रमें वा सर्वोत्तम बली है उसके अनुसार प्रश्नमें लक्षण कहने विशेष गुण तथा राशियोंके गुण प्रथमतन्त्र संज्ञाध्यायमें चक्रन्याससहित प्रकट लिखे हैं ॥ ८ ॥

अथ भावनिर्णयः ।

सौख्यमायुर्वयोजातिरारोग्यं लक्षणं गुणम् ॥
क्लेशाकृतीरूपवर्णास्तनोश्चिंत्यं विचक्षणैः ॥ १ ॥

सुख, आयु, अवस्था, जाति, नैरुज्य,शरीरलक्षण, गुण,क्लेश,आकृति, रूप और रंग इतने विचार लग्नभावमें विचक्षणोंको विचारणीय हैं ॥ १ ॥

मुक्ताफलं च माणिक्यं रत्नधातुधनांबरम् ॥
हयकार्याध्वविज्ञानं वित्तस्थानाद्विलोकयेत् ॥ २ ॥

मोती माणिक आदि रत्न, सुवर्णादि धातु, धन, वस्त्र अश्वकार्य मार्गसंबंधी ज्ञान इतने वस्तुके विचार दूसरे भावसे करना ॥ २ ॥

भगिनीभ्रातृभृत्यानां दासकर्मकृतामपि ॥
कुर्वीत वीक्षणं विद्वान् सम्यग्दुश्चिक्यवेश्मतः ॥ ३ ॥

बहिन भाई नौकर दास और कार्य करनेवाला उपलक्षणसे व्यापार पराक्रम भी विद्वानोंको तीसरे भावसे विचार करना योग्य है ॥ ३ ॥

वाटिकाखलकक्षेत्रमहौषधिनिधीनपि ॥
विवरादिप्रवेशं च पश्येत्पातालतो बुधः ॥ ४ ॥

बावडी खरिहान खेती औषधी अन्नादि निधि (उत्तमवस्तु भूमिगत द्रव्यादि) रंध्र कंदरा सुरंग आदिकोंमें प्रवेश इतने चतुर्थभावसे देखने॥४॥

गर्भापत्यविनेयानां मन्त्रसन्धानयोरपि ॥
विद्याबुद्धिप्रबंधानां सुतस्थाने विनिर्णयः ॥ ५ ॥

गर्भधारण, सन्तान, नम्रता, बुद्धि, मन्त्रका सन्धान, मसोदा आदि विद्या तथा बुद्धिका प्रबन्ध इत्यादि पंचम भावसे विचारना ॥ ५ ॥

चौरभीरिपुसंग्रामखरोष्ट्रक्रूरकर्मणाम् ॥
मातुलातंकभृत्यानां रिपुस्थानाद्विनिर्णयः ॥ ६ ॥

चौरभीति, शत्रु, संग्राम और खर, ऊंट तथा क्रूरकर्म, मातुलपक्ष, रोग, चाकर इनका विचार छठे स्थानसे करना ॥ ६ ॥

वाणिज्यं व्यवहारं च विवादं च समंपरैः ॥
गमागमकलत्राणि पश्येत्प्राज्ञः कलत्रतः ॥ ७ ॥

व्यापार वणिग्वृत्ति अन्यके साथ विवाद वा संधि तथा गमन आगमन स्त्री इतने विचार सप्तमभावसे करने ॥ ७ ॥

नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये दुर्गे चं शस्त्रसंकटे ॥
नष्टे दुष्टे रणे व्याधौ छिद्रे छिद्रं निरीक्षयेत ॥ ८ ॥

---

(१) "शात्रवसंकटे"—इति क्वचित्पाठः ।

नद्यादितारण, मार्गविचार, विषमस्थान, किला, शस्त्रसंकट आदि कठिनाई तथा नष्टता, दुष्टता, रणरोग, छिद्रता, गृहच्छिद्र वा विवरादि इतने विचार अष्टम भावसे देखना ॥ ८ ॥

वापीकूपतडागादि प्रपादेवगृहाणि च ॥
दीक्षां यात्रां मठं धर्मं धर्मान्निश्चित्य कीर्त्तयेत् ॥ ९ ॥

बावडी, कूप, तालाव आदि जलाशय, तथा प्रपा (पाउ) देवमंदिर, उपदेश, यात्रा, मठ और धर्मकार्य नवमस्थानसे विचारके कहना ॥ ९ ॥

राज्यं मुद्रां परं पुण्यंस्थानं तातं प्रयोजनम् ॥
वृष्टयादिव्योमवृत्तांतं व्योमस्थानान्निरीक्षयेत् ॥ १० ॥

राज्य, मुद्रा आदि चिह्न और पुण्य, निवासस्थान, पिता तथा प्रयोजन, वर्षाआदि आकाशका वृत्तांत दशमभावसे देखना ॥ १० ॥

गजाश्वयानवस्त्राणि सस्यकांचनकन्यकाः ॥
विद्वान् विद्यार्थयोर्लाभं लक्षयेल्लाभभावतः ॥ ११ ॥

हाथी घोडे डोली आदि सवारी वस्त्र अन्न सुवर्ण कन्या विद्या तथा धनका लाभ पांडित्य ग्याहर स्थानसे देखना ॥ ११ ॥

त्यागभोगविवादेषु दानेष्टकृषिकर्मसु ॥
व्ययस्थानेषु सर्वेषु विद्धि विद्वन्व्ययं व्ययात् ॥ १२ ॥

त्याग भोग कहल, दान, इष्टवस्तु, कृषिकर्म, व्ययके सब स्थान विद्वान् व्ययभावसे जाने ॥ १२ ॥

षट्पंचाशिकायाम् ।

इं.व.-योयोभावःस्वामिदृष्टोयुतोवासौम्यैर्वास्यात्तस्यतस्यास्तिवृद्धिः
पापैरेवं तस्यभावस्यहानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥१३॥

जो जो भाव अपने स्वामीसे वा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों उन २ की वृद्धि और जो पापोंसे युक्त वा दृष्ट हो उसकी हानि होती है यह विचार प्रश्न तथा जन्ममें भी सर्वत्र विचारना ॥ १३ ॥

---

(१) " लग्नतः "–इत्यपि पाठः ।

उपजा०–सौम्येविलग्नेयदिवास्ववर्गेशीर्षोदयेसिद्धिमुपैतिकार्यम् ॥
अतोविपर्यस्तमसिद्धिहेतुः कृच्छ्रेणसंसिद्धिकरं विमिश्रम्॥१४॥
सौम्यराशि लग्नमें हो यद्वा अपने अंशपर हो वा शीर्षोदय हो तो कार्य सिद्धि होती है, इससे विपरीत अर्थात् क्रूर लग्न सत्त्वादि अंश पृष्ठोदय लग्न हो तो कार्यसिद्धि नहीं होती. जो कुछ शुभ कुछ अशुभ मिश्रित हो तो बडे श्रमसे कार्यसिद्धि होवे ॥ १४ ॥

भुवनप्रदीपे ।

आर्या०–लग्नपतिर्यदिलग्नं कार्याधीशश्च वीक्षते कार्यम् ॥
लग्नाधीशः कार्यं कार्येशः पश्यति विलग्नम् ॥ १५ ॥
लग्नेशःकार्येशं विलोकयेल्लग्नपंतुकार्येशः ॥
शीतगुदृष्टौसत्यांपरिपूर्णाकार्यसंसिद्धिः ॥ १६ ॥
जो लग्नेश लग्नको देखे १ कार्येश कार्यस्थानको देखे २ लग्नेश कार्य स्थानको देखे ३ कार्येश लग्नको देखे ४ लग्नेश कार्येशको देखे ५ कार्येश लग्नेशको देखे ६ ये छः प्रकार हैं; इनमें यदि चंद्रमाकी दृष्टि हो तो एकही योग पूर्ण कार्य सिद्धि करलेता है ॥ १५ ॥ १६ ॥

आर्या–कथयतिपादयोगं पश्यति सौम्योनलग्नपोलग्नम् ॥
लग्नाधिपं च पश्यतिशुभग्रहश्चार्धयोगोऽत्र ॥ १७ ॥
जो लग्नेश तो लग्नको न देखे किंच शुभग्रह देखे तो चौथाई योग कहाता है तथा केवल लग्नेशको शुभग्रह देखे और छहोंमेंसे कोईभी योग न हो तो आधा योग होता है फल भी ऐसाही जानना ॥ १७ ॥

आर्या--एकः शुभग्रहोयदिपश्यतिलग्नाधिपंविलग्नं वा ॥
पादोनयोगमाहुस्तदाबुधाःकार्यसंसिद्ध्यै ॥ १८ ॥
एक शुभग्रह जो लग्न वा लग्नेशको देखे तो उसे बुधजन पादोन योग कहते हैं यह कार्यसिद्धि करता है ॥ १८ ॥

आ०--लग्नपतौदर्शने सति शुभग्रहौद्वौत्रयोऽथवालग्नम् ॥
पश्यंति यदितदानीमाहुर्योगं त्रिभागोनम् ॥ १९ ॥

लग्नेशको दो वा तीन शुभग्रह देखें अथवा लग्नको देखें इस योगको त्रिभागोन कहते हैं कार्यसिद्धि देता है ॥ १९ ॥

क्रूरावेक्षणवर्ज्यश्चंद्रःसौम्यो[1]वालग्नपंचलग्नं च ॥
पश्यंतः पूर्णं तद्योगं कार्यस्य संसिद्ध्यै ॥ २० ॥

पापग्रहदृष्टिरहित चन्द्रमा और शुभग्रह लग्न तथा लग्नेशको देखें तो पूर्ण योग कार्य सिद्धि देनेवाला होता है ॥ २० ॥

अनु०--क्रूराक्रांतः क्रूरयुतः क्रूरदृष्टश्च यो ग्रहः ॥
विरश्मितां प्रपन्नश्च सोऽनिष्टफलदायकः ॥ २१ ॥

जो कार्यकर्त्ता ग्रह पापाक्रांत वा पापयुक्त पापदृष्ट हो वा रश्मिरहित हो तो अनिष्ट फल कार्यनाश करता है ॥ २१ ॥

समरसिंहे ।

आर्या०–अमुकं वदेतिकार्यं कदाभविष्यत्यमुत्रपृच्छायाम् ॥
लग्नं लग्नाधिपतिःकार्यं कार्याधिपः पश्येत् ॥ २२ ॥
लग्नस्थः कार्येशः पश्यति चेल्लग्नपं तदेव भवेत् ॥
तत्कार्यं यद्यन्यः स्थितः सत्वरं तदा न स्यात् ॥ २३ ॥

जब कोई पूछे हमारा. अमुक कार्य कब होगा तो इस प्रश्नके लग्नमें कार्येश कार्यको देखे अथवा लग्नेश लग्नको देखे तो कार्य शीघ्र होगा कहना जो कार्येश लग्नमें हो लग्नेशको देखे तौभी शीघ्र कार्य होगा, जो लग्नेश अन्यत्र हो तो शीघ्र न होगा ॥ २२ ॥ २३ ॥

पश्यतियदा च लग्नं द्रक्ष्यतिचंद्रोविलग्नपंच यदा ॥ लग्ने कार्यं च यदा द्वयोश्चयोगतदासिद्धिः ॥२४॥ यदिलग्नपो न पश्यतिकार्याधीशोविलग्नमथतस्य ॥ कार्यस्यहानिरुक्तालग्नमृतेकिमपिनोवाच्यम् ॥ २५ ॥

(१) सौम्यखेचरालग्नम् । लग्नेशदर्शने सति पश्यन्तः पूर्णयोगकराः, क्वचित्पाठः

जो चन्द्रमा लग्नको तथा लग्नेशको देखे अथवा लग्नेश कार्येश एकही स्थानोंमें हों तो कार्यसिद्धि होगी। जो लग्नेश कार्येशको न देखे यद्वा कार्यस्थानको भी न देखे तौ कार्यहानि कही है, लग्नको छोडकर और भावोंसे कुछ भी विचार न कहना ॥ २४ ॥ २५ ॥

ग्रन्थान्तरे प्रकीर्णम् ।

अनु०--लग्नपोमृत्युपश्चापिमृत्यौस्यातामुभौयदि ॥
स्थितौद्रेष्काणएकस्मिन्प्रष्टुर्लाभस्तदाध्रुवम् ॥ २६ ॥

जो लग्नेश और अष्टमेश दोनों अष्टम स्थानमें एकही द्रेष्काणमें हों तो पूछनेवालेको निश्चय लाभ होगा ॥ २६ ॥

एवं द्वादशभावेषु द्रेष्काणैरेव केवलम् ॥
बुधोविनिश्चयंब्रूयाद्योगेष्वन्येषु निस्पृहः ॥ २७ ॥

ऐसेही समस्त भावोंका विचार केवल द्रेष्काणोंसे पंडितने निश्चय करके कहना और योगोंसे यहाँ बली रहता है ॥ २७ ॥

अनु०-प्रश्नकाले सौम्यवर्गो लग्ने यद्यधिको भवेत् ॥
ग्रहभावानपेक्षेण तदाख्येयं शुभं फलम् ॥ २८ ॥

प्रश्नकालमें जो लग्नमें शुभवर्ग अधिक हो तो ग्रहभावफलकी अपेक्षा न कर शुभ फलही कहना, भावफलसे वर्गफल बली फलमें होता है ॥ २८ ॥

लग्नाधिपश्च लाभस्याधीशश्च दायको भवेत् ॥
लग्नाधिपस्ययोगोवालाभाधीशेन लाभदः ॥ २९ ॥

लग्नेश और लाभेश धनदाता हैं इनका योग लाभ देनेवाला होता है ॥ २९ ॥

आर्या--भवतिपरमलाभकरस्तदैवयदिचन्द्रदृग्लाभे ॥
योगाःसर्वेष्वफलाश्चंद्रमृतेव्यक्तमेवच ॥ ३० ॥

जो लग्नेश वा लाभेश ग्यारहवें स्थानमें चन्द्रमासे दृष्ट हों तो परमलाभ करता है चंद्रमाकी दृष्टि वा योगविना सभी योग निष्फल होते हैं यह तो प्रकटही है ॥ ३० ॥

आर्या--कर्माधीशेनैवंकर्माधीशेनवृत्त्यधीशेन ॥
मृत्युपतिनाचयोगेलाभाधीशस्यवक्तव्यम् ॥ ३१ ॥

ऐसेही दशमेशकाभी विचार करना, क्योंकि वह आजीवन भाव है. और लाभेश अष्टमेशयुत हो तौ लाभ न होवे ॥ ३१ ॥

तत्तत्स्थानेक्षणतः पुण्यविवृद्धिश्च कर्मवृद्धिश्च ॥
विबुधैस्तदा निवृत्तिर्मृत्युर्भावापरेऽप्येवम् ॥ ३२ ॥

चन्द्रमा जिस स्थानको देखे उसकी वृद्धि जैसे नवममें पुण्यवृद्धि दशममें कर्मवृद्धि करता है जो अष्टम भाव वा अष्टमेशपर चन्द्रमाकी दृष्टि वा योग हो तो विपरीत फल कहना ऐसेही सभी भावोंमें विचारना ॥ ३२ ॥

लग्नेशो यदि षष्ठः स्वयमेव रिपुर्भवत्यात्मा ॥
मृत्युकृदष्टमगोऽसौ व्ययगः सततं व्ययं कुरुते ॥ ३३ ॥

लग्नेश छठा हो तो अपनी आत्मा भी शत्रु होती है अन्योंकी क्या कथा ? जो लग्नेश अष्टम हो तो मृत्यु और बारहवां हो तो बहुत व्यय करता है ॥ ३३ ॥

लग्नस्थं चन्द्रजं चंद्रः क्रूरो वा यदि पश्यति ॥
धनलाभोभवत्याशु किंत्वनर्थोऽपि पृच्छतः ॥ ३४ ॥

लग्नस्थित बुधको चंद्रमा वा पापग्रह देखें तो धनलाभ तो शीघ्र होवे किंच प्रष्टाको कोई प्रकार अनर्थभी होवे ॥ ३४ ॥

सामान्यभावविचारे ।

अनुष्टु०-इंदुःसर्वत्रबीजाभो लग्नं च कुसुमप्रभम् ॥
फलेनसदृशोंऽशश्च भावः स्वादुसमप्रभाः ॥ ३५ ॥

ग्रह विचारमें सर्वत्र चन्द्रमा बीचके लग्न पुष्पके अंश फलके और भाव स्वादके सामन है ॥ ३५ ॥

आर्या--उदयोपगतराशिंतत्कालीकृत्यलिप्तिकांगुणयेत् ॥
छायांगुलैश्चकुर्याद्धृत्वामुनिभिस्ततः शेषः ॥ ३६ ॥

गणयित्वैवं प्राग्वद्धृत्वासौम्यस्यभवेदुदयः ॥
कार्यप्राप्तिःप्रष्टुर्वक्तव्यानेतरैर्ग्रहैर्भवति ॥ ३७ ॥

लाभादि समस्त प्रश्नोंमें समय जाननेके लिये तत्काल लग्नका लिप्ता-पिंड करके उस समयमें द्वादशांगुलकी छायाके अंगुलोंसे गुनाकर चौदहसे भाग देना जो शेष रहै वह मेषादि राशि जाननी, वह जो शुभग्रहकी राशि हो तो कार्य प्राप्ति और पापग्रहकी राशि होतो कार्यहानि कहनी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

ग्रहगुणकारोज्ञेयोदैवविदा पंच ५ विंशतिः सैकः २१॥मनवो १४ऽङ्का ९ ष्टौ ८त्रितयं३भवाः११सूर्यादितो ज्ञेयाः ॥ ३८ ॥
गुणकारैक्यविभक्तः सूर्यादिगुणकसंशुद्धः ॥ यस्य न शुद्धयतिवर्गोविज्ञेयस्तद्वशात्कालः ॥ ३९ ॥

सूर्यके ५ चंद्र २१ मं० १४ बु० ९ बृ० ८ शु० ३ शनिके ११ ये ग्रहोंके गुणक हैं इनका योग ७१ से पूर्वोक्त जो तत्काल लग्नका कलापिंड छायांगुलोंसे गुणा है उसमें भाग लेना लब्धिमें सूर्यादिकोंके गुणक सूर्यसे लेकर एक एक करके घटावे जहांतक घटे घटाते जाना जिसका गुणकांक न घटे उससे समय कहना वह आगे कहते हैं ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

आरदिवाकरशेषेदिवसाःपक्षाश्चभृगुशशिनोः ॥ गुर्ववशेषे मासौ ऋतवःसौम्येशनैश्चरेऽब्दाःस्युः॥४०॥आधानेऽथप्राप्तौगमनागमनेपराजयेविजये॥रिपुनाशेवाकालं पृच्छायां निश्चितं ब्रूयात्४१॥

क्रमसे जो सूर्य वा मंगलका गुणक न घटे तो उतने दिन, शुक्र चंद्र-मास पक्ष बृहस्पतिसे महीने, बुधसे ऋतु, शनिसे वर्ष जानने. आधानके प्रसव वा धनादिप्राप्ति तथा गमन आगमन जय पराजय, शत्रुनाशादि कार्यको इस प्रकार समय निश्चय करके कहना ॥ ४० ॥ ४१ ॥

अकचटतपयशवर्गारविकुजसितसौम्यजीवसौराणाम् ॥ चंद्रस्य चनिर्दिष्टास्तैः स्युः प्रथमोद्भवैर्वर्णैः ॥ ४२ ॥ ज्ञात्वा तस्माल्लग्नं

विज्ञायशुभाशुभंचवदेत् ॥ वर्गादिमध्यांत्यैर्वर्णैः प्रश्नोद्भवैर्विषमराशिः ॥ ४३ ॥ लग्नाज्ञानेप्रवदेत्पृच्छायुग्मंकुजज्ञजीवानाम् । सितरविजयोश्चनैकंरविशशिनोरेकराशित्वात् ॥ ४४ ॥ तस्मात्प्रागवदेत्पृच्छासमयेशुभाशुभंसर्वम्॥कालस्य च विज्ञाना देतच्चिन्त्यं बहुप्रश्ने ॥ ४५ ॥

अवर्गका स्वामी सूर्य एवं क का मंगल, च का शुक्र; ट का बुध, त का बृहस्पति प का शनि य का चंद्रमा, श काभी चंद्रमा ये वर्गके स्वामी हैं जहां लग्नज्ञान न होसके वा ६ । ३ आदि बहुत प्रश्न एक ही लग्नसे हों तो वर्गेशसे लग्न उस प्रकार लेना कि, प्रश्नसे प्रथमाक्षर वर्गके जो स्वामी हैं उनकी राशिलग्न जानना. उस लग्नसे उक्तप्रकार योगादि विचारके शुभाशुभ फल कहना. प्रत्येक ग्रहकी २ । २ राशि हैं इनमें विषमराशि जानना जैसे मंगल वर्गेश हो तो मेष समझना. चंद्रमाकी एकही है वह वही जानना. जहां बहुत प्रश्न हों तो प्रथम प्रश्नमें प्रश्नाक्षरके प्रथम वर्ण दूसरेमें अंत्यवर्णसे लग्न जानना तथा मंगल बुध बृहस्पतिके राशि लग्न ज्ञात हो तो दो प्रश्न जानना शुक्र शनिसे अनेक और सूर्य चन्द्रमासे एक राशि होनेसे एकही प्रश्न जानना बहुत प्रश्नोंमें इस प्रकार लग्नसे शुभाशुभ फल तथा वर्गेश ग्रहके गुणकसे पूर्वोक्त क्रमसे विचारकर सभी कहना ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

प्रश्नस्तुज्ञाने ॥

स्वांशे विलग्नेयदिवात्रिकोणेस्वांशस्थितःपश्यतिधातुचिंताम् ॥ परांशकस्थश्चकरोतिजीवंमूलंपरांशोपगतः परांशम् ॥ ४६ ॥

मुष्टि वा मूकप्रश्नमें जो लग्नेश वा चन्द्रमा अपने अंशपर वा लग्नमें यद्वा त्रिकोण ९ । ५ में हो अथवा और किसीस्थानमें हो किंतु अपने अंशमें होकर लग्नको देखे तो धातुचिंता तथा शत्रु वा समांशकमें होकर लग्नचन्द्रमाको देखे तो जीवचिंता और परांशकमें बैठकर परांशके ग्रहों

को देखे वा लग्नेश चंद्रमा परांशके हों लग्नमें कोई ग्रह परांशकी हो तो मूलवस्तु संबंध प्रश्न कहना ॥ ४६ ॥

धातुर्मूलंजीवमिवमित्योजराशौयुग्मेविद्यादेतदेवप्रतीपम् ॥
लग्नेयोंऽशस्तत्क्रमाद्गुण्यएवसंक्षेपोऽयंविस्तरात्ते प्रभेदाः ॥४७॥

विषम राशि लग्नमें हो तो प्रथम नवांशमें धातु दूसरेमें मूल तीसरमें जीव चौथेमें धातु पांचवेंमें मूल छठेंमें जीव सातवेंमें धातु आठवेंमें मूल नववेंमें जीव चिंता कहनी, जो समराशि लग्नमें हो तो विपरीत जैसे १। ४। ७ में जीव २। ५। ८ में मूल ३। ६। ९ में धातुचिंता कहना ॥ ४७ ॥

बलिनौकेन्द्रोपगतौरविभौमौधातुकरौप्रस्ने ॥
बुधसौरी मूलकरौ शशिगुरुशुक्राः स्मृता जीवाः ॥ ४८ ॥

जो सूर्य मंगल बलवान् और केंन्द्रगत हो तो धातु; बुध, शनि हों तो मूल चन्द्रमा बृहपति शुक्र हों तो प्रश्नमें जीवचिंता जाननी ॥ ४८ ॥

मेषालिसिंहलग्नेकुजार्कयुक्तेनिरीक्षितेऽप्यथवा ॥
धातोश्चिंतांप्रवदेद्युगघटकन्यागतैर्लग्नैः ॥ ४९ ॥
बुधरविजयुतैर्मूलंवृषतुलाहरिमीनचापकर्कटकैः ॥
चन्द्रगुरुशुक्रयुतैर्दृष्टैर्जीवोविनिर्देश्यः ॥ ५० ॥

लग्नमें १। ८। ५ राशि हों और मंगल वा सूर्यसे युक्त वा दृष्ट हों तो धातु तथा ३। ११। ६। राशि बुध शनियुक्त हों तो मूल और २ ७। ५। १२। ९। ४ राशि चन्द्रमा बृहस्पति शुक्रसे युक्त दृष्ट हो तो जीवप्रश्न कहना ॥ ४९ ॥ ५० ॥

भावप्रश्नज्ञानम् ।

लग्नलाभपयोः प्राणीतयोर्यद्भावगः शशी ॥ तस्य भावस्य या चिंताप्रष्टुः साहृदिवर्तते ॥५१॥ एवंबलाधिकाच्चचद्राल्लग्ननाथोयतःस्थितः ॥ दैवज्ञेन विनिर्णेयः प्रश्नस्तद्भावसंभवः ॥ ५२ ॥

लग्नेश वा लाभेशमें जो बलवान् हो अथवा इनके अंशेशोंसे जितने

भावमें चंद्रमा हो उस भावसंबंध प्रश्न जानना जिस भावमें जो विचार चाहिये वह प्रथम कहा गया है, ऐसेही बलाधिक चन्द्रमासे लग्नेश जित नेमें हो उसके संबंधी प्रश्न पूछनेवालेके हृदयमें ज्योतिषी जानकर आद्य विचार करना ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

आत्मसमंलग्नगतैस्तृतीयगैर्भ्रातरः सुतंसुतगैः ॥ मातावाभगिनी वाचतुर्थगैः शत्रुगैः शत्रुः॥५३॥जायासप्तमसंस्थैर्नवमेधर्माश्रितो गुरुर्दशमे ॥ स्वांशः पतिमित्रशत्रुषुतथैववाच्यंबलयुतेषु ॥५४॥

सर्वोत्तम बलीग्रह वा तत्काल लग्नका नवांशेश लग्नमें हो तो अपने शरीरसंबंधी तीसरा हो तो भ्रातृसंबंधी एवं पंचममें पुत्रसंबंधी, चतुर्थमें माता बहिनके विषय, छठा हो तो शत्रुसंबंधी, सप्तममें स्त्रीसंबंधी, नवममें धर्मसंबंधी, दशममें गुरु वा राजसंबंधी प्रश्न कहना, बली तथा ग्रहका बल लग्नका अंशेश मित्र राशिमें हो तो मित्रसंबंधी. शत्रुराशिमें हो तो शत्रुसंबंधी जानना इतनोंमें जो बलवान् हो उससे प्रश्न कहना ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

चरलग्ने चरभागे मध्याद्भ्रष्टे प्रवासिचिंतास्यात् ॥
भ्रष्टः सप्तमभवनात्पुनर्निवृत्ती यदि न वक्री ॥ ५५ ॥

पूर्वोक्त ग्रह चरराशि चरनवांशकमें दशम स्थानसे ऊपर १० । ११। १२ में हो तो प्रवासिसंबंधी प्रश्न कहना तथा चरराशि नवमांशमें सप्तमाधिक ७ । ८ । ९ में हो तो उसकी निवृत्तिके (लौटने) विषयमें जानना यदि वहवक्री न हो जो वक्री हो तो उक्तसे विपरीत जानना ॥ ५५ ॥

अस्तेरविसितवक्रैः परजायां स्वां गुरौ बुधे वेश्याम् ॥
चंद्रे च वयःशशिवत प्रवदेत्सौरेऽन्त्यजातीयाम ॥ ५६ ॥

सप्तम स्थानमें सूर्य शुक्र वा मंगल बली हो तो परस्त्री बृहस्पति हो तो अपनी स्त्री बुध हो तो वेश्या चन्द्रमा हो तो वेश्या तत्काल चन्द्रमाके सदृश अवस्था कहना और शनि हो तो हीन जाति स्त्री प्रष्टाके मनमें चिंतित है ॥ ५६ ॥

कुमारिकांबालशशीबुधश्चवृद्धांशनिः सूर्यगुरूप्रसूताम् ॥
स्त्रीकर्कशांभौमसितौ च धत्तएवं वयः स्यात्पुरुषेषुचैवम् ॥५७॥

बाल चन्द्रमा वा बुध हो तो कुमारी कन्या, शनिसे वृद्ध स्त्री सूर्य तथा बृहस्पतिसे प्रसूतवती, मंगल शुक्रसे कठोर स्वभावकी स्त्री प्रश्नसंबन्धी कहनी तथा पुरुषकी अवस्थादिभी ऐसेही विचारसे कहनी ॥ ५७ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां संज्ञाप्रकरणम् ॥ १ ॥

यह प्रकरण समस्त आर्याछंदमें है ।

प्रथमलग्नभावप्रश्न कहते हैं ।

भूतंभवद्भविष्यन्ममकिं कथयेतिजातपृच्छायाम् ॥ लग्नपतेः शशिनोवाबलमन्वेष्यंबलाभावे ॥ १ ॥ दृष्ट्वानवांशकबलंशुभदृग्योगंचसर्वकार्येषु ॥ प्रष्टुः शुभमादेश्यंविपरीतंव्यत्ययादेव ॥ २ ॥

जो कोई पूछे कि मेरा भूत वा भविष्य क्या हुआ वा होगा तो इस प्रश्नमें लग्नेश तथा चन्द्रमाका बल देखना. जो ये बली न हों तो नवांश बल देखना बलाधिक्य और शुभग्रह दृष्टि योगसे प्रष्टाके समस्त कार्योंमें शुभ इससे विपरीत हो तो अशुभ कहना ॥ १ ॥ २ ॥

लग्नेशोमूसरिफो यस्मात्तस्मादतीतमाख्येयम् ॥
येनयुतस्तस्माद्भवदेष्यंयेनेक्ष्यते तस्मात् ॥ ३ ॥

लग्नेशका जिस ग्रहसे मूसरिफ हो उसके अनुसार भूत कहना जैसे मूसरिफ होकर ईसराफ होगया हो तो कार्य होगया और इत्थशाल हो तो कार्य होता है कहना और दृष्टिसे होनेवाला कहना. इत्थशालोंके भेद पहिले कहदिये हैं ॥ ३ ॥

यदिलग्नेलग्नपतिः सौम्ययुतोवाविलोकितःसौम्यैः ॥
तत्प्रष्टुर्व्याकुलताशरीरदोषा विनश्यंति ॥ ४ ॥

जो लग्नेश लग्नमें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो प्रष्टाके मनकी व्याकुलता और शरीरके समस्त दोष नाश होते हैं ॥ ४ ॥

पापोयदिलग्नपतिस्तदाकलिर्व्याधिधननाशाः ॥
सोम्येनिर्वृतिबुद्धिर्द्रव्याप्तिः सौख्यमतुलं च॥ ५ ॥

जो लग्नेश पापग्रह हों वा लग्नमें पाप हो तो कलह रोग धनहानि हो, जो शुभग्रह हो तो बुद्धि निर्मल धनलाभ और अतुल सुख मिलै ॥ ५ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नीलकण्ठीभाषाटीकायां लग्नभावप्रश्ननिरूपणम्॥१॥

अथ द्वितीयभावफलम् ।

धनलाभस्यप्रश्नेलग्नेशेनेंदुनाथधननाथौ ॥
कुरुतो यदीत्थशलंशुभयुतिदृग्भ्यांभवेल्लाभः ॥ ६ ॥

धनलाभप्रश्नमें लग्नेशसे चन्द्रराशि तथा धनभावेश इत्थशाल करें शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट भी हो तो धनलाभ होगा ॥ ६ ॥

क्रूरग्रहैर्धनस्थैर्दूरेलाभोऽन्यदप्यशुभम् ॥
क्रूरमुथशिलेधनेशेप्रष्टाम्रियतेऽथवाविलग्नेशे ॥ ७ ॥

जो पापग्रह धनस्थानमें हो तो लाभ बहुत कालमें हो और कुछ अशुभ भी होवे धनेश वा लग्नेश पापसे इत्थशाली हो तो प्रष्टा अरिष्ट पावे ॥ ७ ॥

धनधनपेयथेत्थशालोमंदगतिर्यत्रभावानाम् ॥
तनुधनसहजादीनांप्रष्टुस्तद्वारतोलाभः ॥ ८ ॥

धनेश मंदगामी तनु धनसहजेशादिकोंमेंसे जिससे इत्थशाली हो उस भाव संबंधी जनके द्वारा धनलाभ होवे ॥ ८ ॥

अनुष्टु०-प्रश्ने चतुर्थाधिपतिस्तत्रस्थोवावलोकते ॥
अवश्यंवर्त्ततेतत्रधनंचंद्रेऽथवावदेत् ॥ ९ ॥

स्थापित वा चौरादि धनकी भ्रांतिमें चतुर्थेश चतुर्थभावमें हो वा उसे देखे अथवा चन्द्रमा चतुर्थ हो तो धन अवश्य तहां होगा यह कहना ॥९॥

वित्तेशंधनगेबंधौवास्तितत्रधनंबहु ॥
पापेतुर्यगतेद्रव्यंस्थितंतूर्णंनलभ्यते॥ १० ॥

धनेश धनभावमें चतुर्थ हो तो प्रश्नस्थानमें बहुत धन है. जो पापग्रह भी चतुर्थ हो तो धन तो है किंतु शीघ्र नहीं मिले ॥ १० ॥

भौमेसप्ताष्टराशिस्थेधनमन्यत्रनाप्यते ॥ लग्नेतमोरविच्छिद्रेत-
दाद्रव्यंनलभ्यते ॥ सप्ताष्टदशपातालेधनदौचन्द्रमोगुरू ॥११॥

जो मंगल सप्तम वा अष्टम हो तो धन और स्थानमें है नहीं मिलेगा, जो लग्नमें राहु अष्टम सूर्य हो तो द्रव्य नहीं मिले, ७।८।१०।४ स्थानोंमें चन्द्रमा और बृहस्पति हों तो चिंतित धन देते हैं ॥ ११ ॥

लग्नेश्वरेद्यूनगतेविलग्नेजायेश्वरेनष्टधनस्यलाभः ॥
जायेशलग्नाधिपतीत्थशालेद्यूनेविनष्टंधनमेतिमर्त्यः ॥ १२ ॥

लग्नेश सप्तम सप्तमेश लग्नमें हो वा लग्नेश सप्तमेशका इत्थशाल हो तो नष्ट वा विस्मृत धन प्रष्टा पावे ॥ १२ ॥

लग्नेशजायाधिपतीत्थशालेलग्नेश्वरंयच्छतितस्करोऽर्थम् ॥
सूर्येविलग्नेऽस्तमितेशशांकेनलभ्यतेयद्रविणंविनष्टम् ॥ १३ ॥

लग्नेश सप्तमेशका इत्थशाल हो तो चोर आपही धन देवेगा, जो सूर्य लग्नमें चन्द्रमा सप्तममें हो तो नष्टधन न मिले ॥ १३ ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशालेचौरः स्वमादायपुरात्पलायते ॥
चन्द्रेऽस्तपेचार्ककरप्रविष्टेतल्लभ्यतेनष्टधनंसतस्करम् ॥१४॥

दशमेश और लग्नेश इत्थशाली हों तो चोर धन लेकर नगरसे भाग गया चन्द्रमा और सप्तमेश अस्तंगत हों तो धनसहित चोर पकडा जायगा ॥ १४ ॥

अस्तेश्वरेकेंद्रगतेऽस्तिचौरस्तत्रैवनान्यत्रपुराद्विनिर्गतः ॥
धर्मेशदुश्चिक्यपतीत्थशालेजायेश्वरेऽन्यत्रगतः सचौरः ॥ १५ ॥

सप्तमेश केंद्रमें हो तो चोर तहांही है नगरमें अन्यत्र नहीं गया, नवमेश तृतीयेशसे इत्थशाली सप्तमेश हो तो अन्यत्र चलागया ॥ १५ ॥

कर्मेशलग्नाधिपतीत्थशालेतल्लभ्यतेराजकुलाच्चचौर्यम् ॥
त्रिधर्मपद्यूनपतीत्थशालेस्तनष्टेशाद्गुमेतिमर्ति ॥ १६ ॥

दशमेश लग्नेशका इत्थशाल हो तो राजकुलसे चोर पकडा जावे; तृतीय नवमके स्वामी सप्तमेशसे इत्थशाली हों तो और देशमें पकडा जावेगा १६॥

शुभेत्थशालेहिमगौविलग्नेखस्थेऽथवानष्टधनस्यलाभः ॥
सुस्नेहदृष्टचारविणाशुभेनदृष्टेविलग्नेहिमगौचलाभः ॥ १७ ॥

चन्द्रमा शुभग्रहसे इत्थशाली लग्न वा दशममें हो तो नष्ट धन मिले; जो लग्नगत चन्द्रको सूर्य तथा शुभग्रह मित्रदृष्टिसे देखें तौभी वही फल कहना ॥ १७ ॥

स्थिरोदयेस्थिरांशेवावर्गोत्तमगतोऽपिवा ॥
स्थितंतत्रैवतद्द्रव्यंस्वकीयेनैवचोरितम् ॥ १८ ॥

लग्नमें स्थिर राशि वा स्थिर नवांश अथवा वर्गोत्तमांश हो तो वह धन वहीं है किन्तु अपनेही मनुष्यने चोरी करी ॥ १८ ॥

आदिमध्यावसानेषुद्रेष्काणेषुविलग्नतः ॥
द्वारदेशेऽथवामध्येगृहान्तेचवदेद्धनम् ॥ १९ ॥

लग्नमें प्रथम द्रेष्काण हो तो घरके द्वारसमीप वस्तु है, मध्य द्रेष्काण हो तो घरके बीचमें और तीसरा द्रेष्काण हो तो घरके पीछे होगा ॥ १९ ॥

पतितधनस्यप्रश्नेमिथोगृहस्थौविलग्नसप्तशौ ॥
यदिमुथशिलंतयोःस्यात्तदाशुतत्रैववदंतिधनम् ॥ २० ॥

नष्ट द्रव्यके प्रश्नमें लग्नेश सप्तम सप्तमेश लग्नमें वा इनका मुथशिल हो तो वह धन वहां ही है शीघ्र मिलेगा ॥ २० ॥

नष्टंक्वदिशिप्राप्यंपृच्छायांलग्नगेविधौप्राच्याम् ॥
खस्थानेयाम्यायामस्तेवारुण्यांवाभुव्युदीच्याम् ॥ २१ ॥

नष्टवस्तु कहां मिलेगी ऐसे प्रश्नमें चन्द्रमा लग्नका हो तो पूर्वदिशामें दशम हो तो दक्षिण, सप्तम हो तो पश्चिम, चतुर्थ हो तो उत्तरमें मिलेगी॥ २१॥

यदिनेंदुःकेन्द्रगतश्चत्वारिंशांशकैश्चपंचयुतैः ॥
भागोदिक्क्रमउक्तोवह्न्यवनीवायुवारिराशौवा ॥ २२ ॥

जो चन्द्रमा केन्द्रमें न हो तो चन्द्रस्थित अंशकसे ४५ वें अंशमें जो

राशि है उसकी जो दिशा वा उपदिशा अथवा अग्नि, पृथ्वी, वायु, जलमेंसे जो उस राशिका तत्त्व है उसमें नष्ट द्रव्य कहना ॥ २२ ॥

नष्टहृतवित्तलब्धेः पृच्छायांचौरसप्तमंततोलाभः ॥
हिबुकंद्रव्यस्थानंलग्नंचन्द्रश्चधननाथः ॥ २३ ॥

नष्ट वा चोरित धनलाभ प्रश्नमें सप्तम स्थानसे चोर, चतुर्थसे उसकी प्राप्ति, लग्नसे द्रव्य और चन्द्रमा धनका स्वामी जानना ॥ २३ ॥

लग्नेशोऽस्तेऽस्तपतिनाचेन्मुथशिलीततोलाभः ॥
यद्यष्टेशोलग्नेतदास्वयंतस्करोऽर्पयति ॥ २४ ॥

लग्नेश सप्तममें जो सप्तमेशसे मुथशिली हो तो हृतद्रव्यका लाभ होवे. जो अष्टमेश लग्नमें हो तो चोर आप ही धन देदेवे ॥ २४ ॥

रविरश्मिगेधनेशेवास्तमितेतस्करस्यलाभः स्यात् ॥
लग्नेदशमपत्योर्मुथशिलतः प्राप्यतेऽर्थवाँश्चौरः ॥
लग्नेशदृष्टयभावेचौरः सहमात्रयायाति ॥ २५ ॥

धनेश सूर्यके साथ वा अस्तंगत ही हो तो चोर पकडा जावे, लग्नेश दशमेशका इत्थशाल हो तो धनसहित चोर मिले जो लग्नेशकी दृष्टि सप्तमपर न हो तो चोर धनसहित आवेगा ॥ २५ ॥

अस्ताधिपतौदग्धेरविरश्मिगतेऽथलभ्यतेचौरः ॥
लग्नप्रकृतेत्थशालेराजभयाद्धनमिदंस्वयं दत्ते ॥ २६ ॥

सप्तमेश दग्ध वा अस्तंगत हो तो चोर पकडा जावे, लग्नेशसे सप्तमेश इत्थशाली हो तो राजाके भयसे चोर आपही धन देदेवे ॥ २६ ॥

लग्नास्तपयोर्नस्याद्यदिदृष्टिर्लग्नपस्तथाविकलः ॥
तत्तस्करः स्वहस्ताद्ददातिचौर्यंहिराजकुले ॥ २७ ॥

लग्नेश सप्तमेशकी दृष्टि न हो तो तथा लग्नेश कलाहीन हो तो चोर अपने हाथसे राजसभामें चोरीका धन देदेवे ॥ २७ ॥

लग्नपमध्यपयोगेराजकुलंप्राप्यलभ्यतेचौर्यम् ॥
रंध्रंचोरस्य धनंधनपेतत्राथसप्तमे नाप्तिः ॥ २८ ॥

लग्नेश दशमेश साथही हों तो राजद्वारसे चोरी मिले. अष्टमस्थान चोरका धन होता है धनेश इसमें वा सप्तम हो तो धन न मिले ॥२८॥

रंध्रपतौ धनपस्य तु मुथशिलयोगेतुप्राप्यतेवित्तम् ॥
रंध्रपतौदशमपतेर्मुथशिलयोगे चौरपक्षकृद्भूपः ॥ २९ ॥

अष्टमेश धनेशका इत्थशाल हो तो धन मिले अष्टमेश दशमेशका मुथशिल हो तो राजा चोरका पक्षपात करे ॥ २९ ॥

चौरस्थानज्ञानम् ।

चौरस्थानप्रश्नेलग्नेरविशशिदृशास्वगृहचौरः ॥
अनयोरेकदृशागृहसमीपवर्त्तीवसत्येषः ॥ ३० ॥

चौर कहां है ऐसे प्रश्नमें लग्नपर सूर्य चंद्रमाकी दृष्टि हो तो प्रष्टाके घरहीमें और इनमेंसे एककी दृष्टि हो तो पडौसमें रहता है ॥ ३० ॥

लग्नस्थेलग्नपतावस्तपयुक्तेचगृहगतश्चौरः ॥
अस्ताधिपतावंत्येसहजेवास्त्वीयभृत्योऽयम् ॥ ३१ ॥

लग्नेश लग्नमें सप्तमेशयुक्त हो तो चोर प्रष्टाके घरहीमें रहता है, जो सप्तमेश बारहवां वा तीसरा हो तो चौर अपना ही नौकर है ॥ ३१ ॥

अस्तेशेतुंगस्थेस्वगृहेवातस्करः प्रसिद्धः स्यात्॥लग्नदशमास्तभावाः क्रमेणवीक्ष्याःस्वतुंगभवनादौ॥३२॥यःखेटःस्याद्बलवान्सज्ञेयस्तस्करस्यबली॥लग्नादिषु योग्रहः स्वोच्चादिबलीसयज्जातिः॥एवंयोगंतुविनाद्यूनेशस्यैवबलमभिग्राह्यम्॥३३॥

सप्तमेश उच्चमें वा स्वगृहमें हो तो वह चोर नामी है कहना तथा १ । १० । ७ भाव क्रमसे देखने इनमें जो कोई उच्चादि बली हो वह चोरका बल जानना और उनके अनुसार फल कहना जब ये योग हों तो सप्तमही केवल लेना, बली ग्रहकी जातिरूपवाला चोर होगा वा चोरकी सहाय करेगा ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

इत्थंचौरज्ञानेचौरः सूर्येगृहेश्वरस्यपिता ॥ चंद्रेमाताशुक्रेभार्या मंदेसुतोभवेन्नीचे॥३४॥ जीवेगृहप्रधानंभौमेपुत्रोऽथवा भ्राता । ज्ञेस्वजनो मित्रंवाज्ञात्वेत्थंपुण्यसहममादेश्यम् ॥ ३५ ॥

उक्त प्रकारोंसे चोर जाननेके और ज्ञान है कि वह योगकर्त्ता सूर्य हो तो उस घरके स्वामीका पिता चोर है एवं चन्द्रमासे माता, शुक्रसे स्त्री, शनिसे पुत्र वा दास, बृहस्पतिसे घरका श्रेष्ठ, मंगलसे पुत्र भाई, बुधसे मित्र होगा ऐसा जानकर पुण्यसहम देखना ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

तस्मिन्क्रूरादृष्टेपुरानचौरोऽस्तपेपुरापि स्यात् ॥
अस्तेशान्मूसरिफेभौमेचौरःपुरापिनिगृहीतः ॥ ३६ ॥

पुण्यसहम क्रूरदृष्ट न हो तो यह पहिले चोर नहीं था, सप्तमेश पाप दृष्ट हो तो पहिले भी चोर था, सप्तमेशसे मंगलका मूसरीफ हो तो यह चोर पहिले भी चोरीमें पकडा गया था ॥ ३६ ॥

सप्तमगे रविपुत्रे चंद्रदृशा तस्करोहिपाखंडी ॥
जीवोविलोक्यलोकभौमेखातनतालकंभक्त्वा ॥ ३७ ॥

शनि सप्तम चंद्रदृष्ट हो तो चोर पाखंडी होगा. बृहस्पति उसे देखे तो चोर लोकविदित होवे, सप्तम मंगल चन्द्रदृष्ट हो तो कुम्हल ताला जंजीर आदि तोडकर चोरने चोरी करी है ॥ ३७ ॥

प्रतिकुंचिकयापहृतंसितेऽतिथिर्ज्ञेप्रपंचकरः ॥ चौरस्यवयोज्ञानेसिते युवाज्ञेशिशुर्गुरौमध्यः॥तरुणोभौमेमंदेवृद्धोऽर्केस्यादतिस्थविरः॥३८॥

सप्तममें शुक्र चंद्रदृष्ट हो तो दूसरी कूंची (चाबी) से खोलकर चोरी भई तथा बुध हो तो अपूर्व मनुष्य प्रपंची चोर है और चोरकी अवस्थाके ज्ञानमें शुक्रसे युवा, बुधसे बालक, बृहस्पतिसे मध्य अवस्था, मंगलसे तरुण, शनिसे बूढा, सूर्यसे अतिबूढा जानना ॥ ३८ ॥

तनुनभसोःस्वमंदिरेस्मरभूम्योर्भूमिलाभयोर्मध्यम् ॥
चरतिरवौनवमध्यमवृद्धवयोऽतीतकाः क्रमशः ॥ ३९ ॥

सूर्य १।१० स्थानके बीच अपनी राशिमें हो तो नया जवान ७।४ स्थानोंके बीच स्वराशिका हो तो मध्यमावस्था ४।११ के बीच हो तो बूढा, इतनी अवस्था क्रमसे व्यतीत जाननी ॥ ३९ ॥

नष्टस्थाने प्रश्ने तुर्ये भूम्यग्निवायुजलमध्यात् ॥
योभवतिराशिरस्मात्स्थानंज्ञेयं गतधनस्य ॥ ४० ॥

चोरीके द्रव्यस्थानके प्रश्नमें चतुर्थ स्थानमें भूमि वायु जलमेंसे जिस तत्त्वकी राशि हो उसका विशेष स्थान कहना ॥ ४० ॥

अथ चतुर्थगृहे तुर्येश्वरोऽथ यःस्याद्ग्रहस्ततो ज्ञेयम् ॥
मंदेमलिनस्थानेचंद्रेऽम्बुनिगीष्पतौसुराराामे ॥ ४१ ॥
भौमे वह्निसमीपे रवौ गृहाधीश्वरासनस्थाने ॥
तल्पे शुक्रे सौम्ये पुस्तकवित्तान्नयानपार्श्वे च ॥ ४२ ॥

चतुर्थमें चतुर्थेश वा जो ग्रह बली हो उससे चोरी द्रव्यका स्थान कहना जैसे शनिसे मैलास्थान चंद्रमासे जलाशय वा हाथ पैर धोनेके स्थान, बृहस्पतिसे देवसमीप वा बगीचा, मंगलसे अग्निसमीप, सूर्यसे गृहपतिके बैठनेक स्थान, शुक्रसे शयनस्थान, बुधसे पुस्तक धन अन्न वा डोली आदि सवारीके समीप कहना ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

चौरोऽयमथनवेतिक्रूरेंद्वोर्मुथशिलेचचौरःस्यात ॥
सौम्यशशिमुथशिलेखलुनभवतिचौरःप्रवक्तव्यम् ॥ ४३ ॥

यह चौर है वा नहीं ऐसे प्रश्नमें चंद्रमा पापग्रहसे मुथशिली हो तो चोर होगा. जो शुभसे मुथशिली हो तो चोर नहीं है कहना ॥ ४३ ॥

किमनेनतस्करत्वंकदापिविहितंनवेतिपृच्छायाम् ॥
लग्नपशशिनोरकस्मादपिमूसरिफेऽस्तपेविहितम् ॥ ४४ ॥

इसने कभी चोरी करी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश वा चंद्रमासे सप्तमेश मूसरिफी हो तो पहिले भी चोर है ॥ ४४ ॥

चोरःस्त्रीपुरुषोवापृच्छायामस्तपेस्त्रियोराशौ ॥
स्त्रीखटेस्त्रीदृष्टेचौरःस्त्रीव्यत्ययात्पुरुषः ॥ ४५ ॥

चोर स्त्री वा पुरुष कौन होगा ऐसे प्रश्नमें सप्तमेश स्त्रीराशिमें और स्त्रीग्रह वा स्त्रीग्रहदृष्ट हो तो चोर स्त्री होगी जो पुरुष राशिमें सप्तमेश पुरुषदृष्ट हो तो पुरुष चोर होगा ॥ ४५ ॥

लग्नेशे नवमांशतो वयःप्रमाणं जायते ज्ञयः ॥
चौरोऽयमिहानंतशास्त्रं कथितोऽयमुद्देशः ॥ ४६ ॥

लग्न वा लग्नेशके नवांशवशसे चोरकी अवस्थाका प्रमाण जातिरंग आदि और द्रेष्काणसे उसका रूप कहना. शेष विचारको शास्त्र अनंत है यह बुद्धिमानोंको उद्देशमात्र कहा है ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां नील० प्रश्नतंत्रभाषाटीकायांधनभावप्रश्ननि०॥२॥

अथ तृतीयभावप्रश्नः ।

सहजपतिर्यदि सहजं पश्यतिचेद्वयं शुभैर्दृष्टम् ॥
तद्भ्रातरो गतरुजः स्वस्थाः क्रूरेक्षिते वामम् ॥ १ ॥

तृतीयेश तृतीय भावको देखे तथा तृतीयभाव और तृतीयेशको शुभग्रह देखें तो भाई सुखी सावधान और पापदृष्टि योगसे रोगी वा अस्वस्थ कहना १॥

यदि सहजपतिःषष्ठेतत्पतिना मुथशिलेऽथतन्मांद्यम् ॥
षष्ठेशे सहजस्थे सहजपतौ क्रूरित वापि ॥
सूर्यस्य रश्मिसंस्थे भयावहं प्रष्टुरादेश्यम् ॥ २ ॥

तृतीयेश छठा वा आठवां होकर षष्ठेशसे इत्थशाली हो तो भाई मांदे कहने, वा षष्ठेश तीसरा वा तृतीयेश पापयुक्त हो तो भी यही फल है, जो अस्तंगत हो तो प्रष्टाको भय देता है ॥ २ ॥

षष्ठाष्टमभावेशौ यद्भावेशेनेत्थशालिनौ स्याताम् ॥
पीडां तस्य प्रवदेत्षष्ठाष्टमभावगे वापि ॥ ३ ॥

छठे आठवें भावके स्वामी जिस भावेशके साथ इत्थशाली हो वा जिस भावमें हों अथवा जिस भावका स्वामी ६ । ८ स्थानमें हो उस भावसंबंधी पीडा कहनी ॥ ३ ॥

एवं सर्वेऽपि यथा पित्रोस्तुर्ये सुतानां च ॥
पञ्चमभावे भृत्यचतुष्पदस्त्रियाःसुहृदकः सप्तमे ॥ ४ ॥

ऐसे सभी भावोंमें विचार करना जैसे चतुर्थेश षष्ठेशसे वा अष्टमेशका इत्थशाल हो यद्वा इन भावोंके स्वामी, चतुर्थ वा चतुर्थेश इन भावोंमें हो तो माता पिताको पीडा होवे; ऐसा पंचम भावसे पुत्रोंको सप्तमसे भृत्य, स्त्री चतुपष्पद इत्यादि जानना ॥ ४ ॥

अथ क्रयविक्रयौ ग्रन्थान्तरे ।

अनु०—क्रेता लग्नपतिर्ज्ञेयो विक्रेतार्थपतिःस्मृतः ॥
गृह्णाम्यहमिदंवस्तु प्रस्न एवं विधे सति ॥ ५ ॥
बलशालि विलग्नंचेद्गृह्यतेतत्क्रयाणकम् ॥
तस्मात्क्रयाणकाल्लाभःप्रष्टुर्भवति निश्चितम् ॥ ६ ॥

मैं यह सौदा करता हूं इसमें लाभ हानि क्या होगी ऐसे प्रश्नमें लेनेवाला लग्नेश बेचनेवाला लाभेश होता है, इनके बलाबलसे विचार कहना जैसे लग्न लग्नेश बलवान् हो तो यह द्रव्य लेना इसमें प्रष्टाको निश्चय लाभ होगा ॥ ५ ॥ ६ ॥

विक्रीणाम्यमुके वस्तु प्रश्न एवं विधसति ॥
आयस्थाने बलवति विक्रेतव्यं क्रयाणकम् ॥ ७ ॥

मैं यह वस्तु बेंचता हूं कैसा होगा ऐसे प्रश्नमें आयस्थान वा तत्स्थान वा तत्स्वामी बलवान् हो तो इस विक्रयमें लाभ अन्यथा हानि होगी॥७॥

इति श्रीमहीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां तृतीयभावप्रश्ननिरूप० ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थस्थानप्रश्नः ।

लग्नपतीन्दुचतुर्थपतिमुथशिलमथवागृहे गमनम् ॥
प्रष्टुःपृथ्वीलाभदमसौम्यदृग्योगतो नैव ॥ १ ॥

लग्नेश चन्द्रमा और चतुर्थेश परस्पर इत्थशाली वा एकही स्थानमें हो तो प्रष्टाको भूमिलाभ होवे पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो लाभ नहीं होगा, विशेष बलाबलसे फल कहना ॥ १ ॥

यदि पृच्छति कृषिको मे क्षेत्राल्लाभो भवेन्नवा ॥
लग्नं कृषिकस्तुर्यं भूमिर्द्यूनं च कृषिस्तरुर्दशमम् ॥ २ ॥

खेतीवाला जो पूछे कि मेरी खेतीसे लाभ होगा वा नहीं तो लग्न कृषि कर्त्ता चतुर्थ भूमि सप्तम कृषि दशम अन्न वृक्षादि होते हैं इन भावोंके बलाबल निरूपण करके उक्त कामोंमें शुभाशुभ कहना ॥ २ ॥

लग्नेक्रूरोपगते स्याच्चौरोपद्रवस्तुकृषिकर्त्तुः ॥
वक्रातिचारवर्ज्येक्रूरे चौरस्यकृषिलाभः ॥ ३ ॥

लग्नमें पापग्रह हों तो कृषिकर्त्ताको चौरादि उपद्रव होंगे वा नहीं तो जो वह पापग्रह वक्री वा अतिचारी न हो तो चौरसे फिरभी लाभ होवे ॥ ३ ॥

लग्नस्थे शुभखेटेसाफल्यंकर्षकस्य कृषितः स्यात् ॥
तुर्येच क्रूरगते त्यक्त्वा भूमिं प्रयात्येषः ॥ ४ ॥

लग्नमें शुभग्रह हों तो खेतीवालेको खेती में अच्छा लाभ होगा जो चौथा पापग्रह हो तो समयपर खेती छोडकर भाग जायगा ॥ ४ ॥

द्युने च शुभोपगते शुभं कृषेस्त्वन्यथा तु विपरीतम् ॥
दशमे दशमपतौ वा शुभयुतदृष्टे शुभा वृक्षाः ॥ ५ ॥

सप्तम स्थानमें शुभग्रह हो तो कृषि अच्छी होगी पापग्रह हो तो अन्नादि अच्छा नहीं लगेगा तथा दशमेश दशममें शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो वृक्ष अन्न आदि अच्छे होंगे ॥ ५ ॥

भूभाटकपृच्छायां लग्नं प्रष्टा च भाटकं द्यूने ॥
तस्योत्पत्तिर्दशमे तथावसानं चतुर्थे स्यात् ॥ ६ ॥

भूमिसंबंधी महसूल किराया किस्त आदिके प्रश्नमें लग्नसे प्रष्टा सप्तमसे किराया उसकी उत्पत्ति दशमसे और उसका परिणाम वा क्षय चतुर्थ स्थानसे विचारके कहना ॥ ६ ॥

लग्नस्य लग्नपस्य च शुभयोगेशुभमशोभनंवामे ॥
द्यूनेक्रूरोपगते यस्मादपि भाटकस्ततोऽनर्थः ॥ ७ ॥

लग्न तथा लग्नेश शुभग्रह युक्त दृष्ट हों तो भाडाविषयक समस्त शुभ

पापग्रहयोग दृष्टि हो तो सर्व अशुभ फल जानना, जो सप्तममें भी पाप-ग्रहही हों तो भाडामें किसी प्रकार अनर्थ होगा ॥ ७ ॥

दशमेक्रूरोपगते नोत्पत्तिर्बहुतराभवेत्प्रष्टुः ॥
क्रूरार्दितेतु तुर्येस्यादवसाने शुभंनास्य ॥ ८ ॥

दशमस्थानमें पापग्रह योग दृष्टि हो तो प्रष्टाको भाडा बहुत न मिले, चतुर्थ स्थानमें पाप हो तो भाडेका परिणाम कारखाना डूब जायगा ॥ ८ ॥

ग्रन्थांतरे नौकाप्रश्नः ।

नौर्लाभदास्यान्ममनेतिप्रश्ने केंद्रेशुभाश्चेदितरेषुपापाः ॥
बलोज्झिताक्षेमजयार्थदानौ भावीतिवाच्यं विदुषा विमृश्य॥९॥

नाव (जहाज) आदिके काममें लाभ होगा या नहीं ऐसे प्रश्नमें केंद्रोंमें बलवान् शुभग्रह अन्यस्थानोंमें निर्बल पापग्रह हो तो नाव लाभ देगी. विशेष तारतम्यसे विद्वानोंने विचार करके फल कहना ॥ ९ ॥

लग्नाधिपेवक्रिणिचास्यनाथेव्यावृत्यनौरेतिच मार्गतःस्यात्॥
चेत्सौम्यदृष्टःकुशलेन पापैर्दृष्टस्तदावस्तुविनेति वाच्यम्॥१०॥

लग्नेश वक्रगति और उसके स्थानका स्वामी वा चतुर्थेश शुभयुक्त दृष्ट हों तो नाव मार्गसे कुशलपूर्वक हट आवेगी; जो पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो वस्तु विनाही लौट आवे ॥ १० ॥

विलग्नरंध्राधिपतीस्वगेहेप्रवेक्ष्यतश्चेद्व्यवहारलाभः ॥
यदाष्टमेसौम्यखगाबलाढ्यास्तदातरीर्लाभसुखप्रदास्यात्॥११॥

लग्नेश और अष्टमेश अपने २ राशिमें हों वा अपने भावोंको देखें तो नावव्यवहारमें लाभ होवे. जो बलवान् शुभग्रह अष्टम हो तो नाव लाभ और सुख देगी ॥ ११ ॥

कुशलायातिपृच्छायांमृत्युयोगेसमागते ॥
तदानौरेतिशीघ्रेणलाभाद्यंचान्ययोगतः ॥ १२ ॥

नाव कुशलसे आवेगी, ऐसे प्रश्नमें जो मृत्यु फल देनेवाला योग प्रश्न लग्नमें हो तो नाव शीघ्र अपने स्थानमें आवेगी जो कोई अरिष्टदायक

योग हो तो लाभ अच्छा होगा, जो और काममें बुरे योग हैं उनमेंसे कोई भी हो सो यहां शुभदायक है ॥ १२ ॥

लग्नेशंचंद्रनाथंवाचंद्रंवामृत्युपोयदि ॥ तदायानस्यवक्तव्यंनिश्चितंमज्जनंबुधैः ॥ तावुभौसप्तमस्थौचेज्जलेवापतितां वदेत् ॥ १३ ॥

लग्नेश वा चंद्रराशीश वा चंद्रमाको अष्टमेश देखे वा युक्त हो विशेषतः इत्थशाली हो तो नाव द्रव्यसहित डूबजायगी ऐसा निश्चय कहना, जो वे दोनहूं सप्तमस्थानमें हो तौभी नावका द्रव्य डूब जायगा नाव मात्र बचेगी कहना ॥ १३ ॥

लग्नचंद्रपतीक्रूरदृष्टयान्योन्यंयदीक्षितौ ॥
तदापोतजनानांचमिथःकलहमादिशेत् ॥ १४ ॥

लग्नेश और चन्द्रमा परस्पर शत्रुदृष्टिसे देखें तो नाववाले मनुष्योंका परस्पर कलह होवे ॥ १४ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां चतुर्थभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमस्थानप्रश्नः ।

यदिपृच्छेतस्याः स्त्रियोभवेन्मेप्रजानवाकाचित् ॥
लग्नेशेंद्रोःसुतपतिनामुथशिलभावप्रसूतिःस्यात् ॥ १ ॥

जो प्रष्टा पूछे, कि मेरी स्त्री प्रसूत होगी वा नहीं तो लग्नेश चंद्रमा पंचमेश परस्पर इत्थशाली हों तो संतति होगी ॥ १ ॥

यदिसुतपतिर्विलग्नेलग्नपचंद्रौसुतेऽथवास्याताम् ॥
सत्वरितमेववाच्यासविलंबंनक्तयोगेन ॥ २ ॥

जो पंचमेश लग्नमें वा लग्नेश और चंद्रमा पंचममें हो तो शीघ्र संतति होगी जो इनका नक्तयोग हो तो विलंबसे होगी ॥ २ ॥

द्विशरीरेचविलग्नेशुभयुतपुत्रेद्व्यपत्ययोगोऽस्ति ॥
यदिलग्नपपुत्रपतीपुंराशौतत्सुतोगर्भे ॥ ३ ॥

लग्नमें द्विस्वभाव राशि शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो गर्भमें दो अपत्य होंगे जो लग्नेश पुत्रेश पुरुषराशिमें हो तो गर्भमें पुत्र होगा स्त्रीराशिमें हों तो कन्या होगी ॥ ३ ॥

अथचन्द्रःपुंराशौपुंग्रहकृतमुथशिलस्तदापिसुतः ॥
अथवाविधुरपराह्णेसूर्यात्पृष्टेतदास्त्रीस्यात् ॥ ४ ॥

जो चंद्रमा पुरुषराशिमें पुरुष ग्रहसे युक्त वा मुथशिली हो तो गर्भमें पुत्र होगा अथवा चंद्रमा अपराह्ण समयका कृष्णपक्षका तथा सूर्यसे पीछे हो तो गर्भमें स्त्री होगी ॥ ४ ॥

होरास्वामीपुरुषः पुंराशौचेत्तथापिसुतगर्भः ॥
तुंगेंदुसौम्ययुक्तेगर्भेदीर्घायुःपुत्रसंभूतिः ॥ ५ ॥

लग्नेश पुरुषग्रह युक्त पुरुषराशिमें हो तो भी गर्भमें पुत्र होगा, जो उच्चका चंद्रमा शुभग्रहसे युक्त दृष्ट पंचम हो तो दीर्घायु पुत्र होगा ॥ ५ ॥

एषागर्भवतीकिल नवा प्रमाणं प्रयाति गर्भोऽयम् ॥
प्रश्नेलग्नपशशिनोः सुतस्तयोर्गर्भवत्येव ॥ ६ ॥

जो प्रश्न हो कि यह स्त्री गर्भवती है या नहीं तो प्रश्नमें लग्नेश और चंद्रमा पंचम हो वा उसे देखे तो गर्भवती है ॥ ६ ॥

यद्येतयोर्मुथशिलंकेंद्रेसुतपेनगर्भिणीतदपि ॥
आपोक्लीमेत्थशालादर्नाक्षणाल्लग्नपुत्रयोर्नैवम् ॥ ७ ॥

जो लग्नेश और चंद्रमा केंद्रके मुथशिल हो तो भी गर्भिणी है जो इत्थशाल आपोक्लिममें हो यद्वा लग्नेश पुत्रभाव वा पुत्रेश परस्पर न देखें तो गर्भवती नहीं है ॥ ७ ॥

चरलग्नेक्रूरेंद्वोर्मुथशिलभावे विनश्यतिहिगर्भः ॥
लग्नशशिनोस्तत्पतितेतत्रस्थेवक्रमुत्थाशिलेऽपितथा ॥ ८ ॥

चरलग्नमें पापग्रह चंद्रमासे मुथशिली हो तो गर्भ नष्ट हो जायगा लग्नेश तथा चंद्रमाका नीचादिपतित वा वक्री ग्रहसे मुथशिली हो तो गर्भ नष्ट होगा ॥ ८ ॥

जीवितमरणप्रश्नेबालानामंत्यपेशुभैर्दृष्टे ॥
केंद्रस्थे सितपक्षे शुभयुक्तेऽत्ये विधौ जीवेत् ॥ ९ ॥

बालकके जीवित और मरणप्रश्नमें जो व्ययेश केंद्रमें शुभग्रहदृष्ट हो तथा शुक्लपक्षका चंद्रमा शुभयुक्त बारहवां हो तो बालक बचेगा ॥ ९ ॥

क्रूरैश्चेदंत्यपतिर्दग्धश्चापोक्लिमेयुतः क्रूरैः ॥
दृष्टश्चजातमात्रो म्रियतेबालोऽथवागर्भे ॥ १० ॥

जो व्ययेश पापग्रह दग्ध तथा आपोक्लिम स्थानमें पापयुक्त दृष्ट हो तो बालक जन्ममें वा गर्भहीमें मरजावे ॥ १० ॥

प्रसवज्ञानप्रश्नेभुक्तांल्लग्नांशकान् परित्यज्य ॥
भोग्याद्विचिंत्यशेषाननुमित्येवंवदेद्दिवसान् ॥ ११ ॥

प्रसवदिन ज्ञान प्रश्नमें लग्नके भुक्तांशकोंके तुल्य गर्भके भुक्त मास भोग्यांशोंसे शेष दिन अनुमान करके कहना ॥ ११ ॥

लग्नाद्यतमेस्थाने शुक्रस्तावद्वदेन्मासम् ॥
यदिधर्माद्दूर्ध्वस्थस्तद्वदेत्पंचमस्थानात् ॥ १२ ॥

लग्नेश शुक्र जितने स्थानमें हो उतने महीनेका गर्भ है कहना जो नवम स्थानसे ऊपर शुक्र हो तो पंचम भावसे शुक्रपर्यंत भाव गिनके गर्भ मास कहना ॥ १२ ॥

लग्नांतर्दिनराशिर्दिवाग्रहो लग्नपश्चदिनराशौ ॥
तद्दिवसे जन्म स्याद्विपरीते व्यत्ययश्चैषाम् ॥ १३ ॥

जो लग्न दिवाबली और लग्नेश भी दिवाबली राशिमें हों तो दिनमें और ये रात्रिमें बली हों तो रात्रिमें जन्म होगा ॥ १३ ॥

तत्कालेद्विरसांशश्चन्द्रमसस्तत्समेचन्द्रे ॥
गर्भस्यप्रसवः स्यादनुपातः शास्त्रतः कार्यः ॥ १४ ॥

प्रश्न वा आधानकालमें चन्द्रमा जिस द्वादशांशमें हो उसीके तुल्य-राशिस्थ चन्द्रमामें नवम वा दशम महीनेमें जन्म होगा इसका अनुपात

अन्य शास्त्रोंमें विशेष प्रकट कहा है, बृहज्जातक महीधरीभाषामें भी विशेष विस्तार है ॥ १४ ॥

अस्मिन्वर्षेऽपत्यंभविताविलग्नपंचमाधीशौ ॥
भजतो यदीत्थशालंतत्रैवाब्दे भवेन्नूनम् ॥ १५ ॥

इस सालमें मेरे संतान होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें जो लग्नेश पंचमेश इत्थशाली हों तो निश्चय संतान होगी. ईसराफसे न होगी ॥ १५ ॥

यदिवा मिथोगृहगतौस्यातामेतौचसंततिस्तदपि ॥
वाच्या तस्मिन्वर्षे शुभयोगादन्यथा न पुनः ॥ १६ ॥

अथवा लग्नेश पंचमेश एकही स्थानमें वा एककी राशिमें दूसरा दूसरेकी राशिमें एक हो तथा शुभयुक्त हो तो संतान होगी. इतनेमें कोई भी योग न हो तो संतान नहीं होगी ॥ १६ ॥

सूताप्रसूतयुवतिज्ञानेसुतपोऽथषष्ठपः सूर्यात् ॥ निर्गत्योदयमायात्ततः प्रसूतेचनारीयम् ॥ अथजीवभौमशुक्राआकाशउदयिनस्तथाप्येवम् ॥ १७ ॥

यह स्त्री प्रसववती होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें पंचमेश वा षष्ठेश सूर्यके साथसे उदय होगया हो अथवा बृहस्पति मंगल शुक्र दशम स्थानमें हों तो प्रसूति होगी ॥ १७ ॥

ग्रन्थांतरे ।

लग्नेश्वरेणाथनिशाकरेणयदीत्थशालं कुरुते सुतेशः ॥
शुभः शुभैः संयुतईक्षितः स्यात्सत्संततिंप्रष्टुरसौविदध्यात् ॥ १८ ॥

जो पंचमेश लग्नेश वा चन्द्रमासे इत्थशाल करे तथा पंचमेश शुभग्रह हो शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट भी हो तो प्रष्टाको संतति देता है ॥ १८ ॥

पुंस्त्रीग्रहाः पुत्रगृहंविलग्नात्पश्यंतियावंतइहातिवीर्याः ॥
तत्संख्यकाःस्युस्तनयाश्चकन्याःशुभेशयोगात्सुतभांशतुल्याः ॥ १९ ॥

जितने पुरुष ग्रह अतिबली होकर पंचम भावको देखें उतने पुत्र तथा जितने स्त्रीग्रह अतिबली होकर देखें उतनी कन्या होंगी वा पंचममें जितने

भुक्त नवांशक हों उतने होंगे किंतु ये संख्या पूर्वोक्त इत्थशाल हुयेमें और स्वस्वामी शुभयुक्त पंचम होनेमें होती हैं ॥ १९ ॥

लग्नेशपुत्राधिपतीपरस्परंनपश्यतश्चेदुदयंचपंचमम् ॥
पापेत्थशालौसुतलग्नपौचप्रष्टुस्तदासंततिनास्तितां वदेत् २०॥

लग्नेश और पंचमेश परस्पर न देखें तथा लग्न और पंचमको भी न देखें वा लग्नेश पंचमेश पापेत्थशाली हों तो संतति नहीं है कहना ॥ २० ॥

पुत्रालयेसिंहवृषालिकन्याः प्रश्नोदयाज्जन्मभतस्तथेंदोः ॥
अल्पप्रजःसंततिपृच्छकः स्यात्पापैः सुतर्क्षेसहितेक्षितेवा॥ २१॥

पंचमेश ५।२।८।६ राशि प्रश्न वा जन्मलग्न अथवा चन्द्रमासे हों तो प्रष्टाको अल्प संतान होगी, पापग्रहोंसे पंचमस्थान युक्त दृष्ट होनेमें भी यही फल है ॥ २१ ॥

स्वर्क्षस्थितौरन्ध्रगतौयमार्कौप्रष्टुःस्त्रियंसंदिशतश्चवंध्याम् ॥
छिद्रस्थितौचंद्रबुधौसदोषांवाकाकवन्ध्यांतनयाप्रसूतिम् ॥२२॥

अष्टम स्थानमें शनि सूर्य ५।१०।११ राशिमें हो तो प्रष्टाकी स्त्री वंध्या है जो चन्द्रमा बुध अष्टम हो तो उसपर किसी देवता भूतप्रेतादिका दोष है अथवा १ संतान होकर वंध्या होवे वा कन्याही होवे इसमें विशेष विचार यह है कि, उनमेंसे चन्द्रमा बली हो तो कन्या प्रजा होगी यदि उसपर पुरुष ग्रहकी दृष्टि हो तो काकवंध्या, जो बुध बली हो तो वंध्या होवे ॥२२॥

मृतप्रजाछिद्रगयोः सितेज्ययोर्गर्भस्रवाभूमिसुतेऽष्टमर्क्षे ॥
छिंद्रेश्वरेछिद्रगतेऽतिवीर्येपुष्पंनविंदत्यबलासुतप्रदम् ॥२३॥

जो शुक्र बृहस्पति अष्टम हों तो मृतप्रजा अर्थात् जितने संतान हों मरतेही रहें मंगल अष्टम हो तो गर्भ गलते रहें जो अष्टमेश अष्टम भावमें बलवान् हो तो पुत्र देनेवाला पुष्प (रज) भी उस स्त्रीका न होवे॥२३॥

शुक्रार्कयोरष्टमसंस्थयोर्वाक्रूरैर्धनांत्याष्टमराशिसंस्थैः॥
जाताःपुरस्तान्म्रियतेप्रजावैप्रष्टुर्नचाग्रेशुभसंततिःस्यात् ॥ २४॥

शुक्र सूर्य अष्टम हों तथा दूसरे और बारहवें आठवें पापग्रह हों तो सन्तान होतेही मर जाया करें, आगे भी शुभ सन्तति न होवे ॥ २४ ॥

रिःफेश्वरेकेन्द्रगतेचसौम्यैर्युतेक्षितेजीवतिबालकश्च ॥
आपूर्णमासेशुभयुक्तइंदौकेन्द्रेशिशुर्जीवतिदीर्घकालम् ॥ २५॥

व्ययेश शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट केन्द्रमें हो तो बालक बच जायगा शुक्ल पक्षका चन्द्रमा शुभयुक्त केन्द्रमें हो तो पुत्र दीर्घायु होगा ॥ २५ ॥

पंचमेशोऽथलग्नेशोविषमस्थानगौ यदा ॥
पुत्रजन्मप्रदौज्ञेयौ कन्यानां समराशिगौ ॥ २६ ॥

पुत्रवान् योग प्राप्त हुएमें विशेष विचार है कि पंचमेश वा लग्नेश विषम स्थानमें हो तो पुत्र और सम राशिमें हो तो कन्या देता है ॥ २६॥

युग्मराशिगते लग्ने यदा तत्र शुभग्रहाः ॥
गर्भेऽपत्यद्वयं वाच्यं दैवज्ञेन विपश्चिता ॥ २७ ॥

लग्न द्विस्वभाव राशि हो उसमें शुभग्रह हो तो चतुर ज्योतिषीने गर्भमें दो बालक कहने ॥ २७ ॥

विषमोपगतो लग्नाच्छनिः पुत्रसुखप्रदः ॥
समभेयोषितांजन्मविशेषोजातकोक्तिवत् ॥ २८ ॥

लग्नसे शनि विषम स्थानमें पुत्र और सममें कन्या देता है विशेष विचार जातकोक्त ही यहां भी जानना ॥ २८ ॥

विषमर्क्षे विषमनवांशसंस्थिता गुरुशशांकलग्नार्काः ॥
पुंजन्मकराः समभेषु योषितां नृराश्यंशाः ॥ २९ ॥

बृहस्पति चन्द्रमा लग्न और सूर्य विषम राशि विषम नवांशमें पुत्र और समराशि नवांश अर्थात् पुरुषराशी नवांशकोंमें कन्या देते हैं ॥ २९ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां ता० नी० भा० पञ्चमस्थानप्रश्ननिरूपणम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठस्थानप्रश्नः ।

रोगादयमुत्थास्यति नवेतिलग्नंभिषग्द्यूनम् ॥
व्याधिर्दशमं रोगीहिबुकंभेषजामिहाहुराचार्याः ॥ १ ॥

रोगी मनुष्य रोगसे आराम होगा वा नहीं, ऐसे प्रश्नमें लग्नसे वैद्य सप्तमसे रोग दशमसे रोगी चतुर्थसे औषधी आचार्य कहते हैं ॥ १ ॥

क्रूरार्दिते विलग्ने वैद्यान्नगुणास्तदौषधाद्रोगः ॥
वृद्धिमुपयाति दशमे क्रूरैर्निजबुद्धितोऽप्यगुणः ॥ २ ॥

लग्न पापाक्रांत हो तो वैद्यसे गुण न होवे उसकी औषधिसे रोग बढेगा दशममें पापग्रह हो तो अपनीही चूक (गलती) से रोग बढे ॥ २ ॥

अस्तेचक्रूरयुक्ते मांद्यान्मांद्यं तथौषधाद्बंधौ ॥
सौम्योपगतैरेतैररोगिता रोगिणो भवति ॥ ३ ॥

सप्तममें पाप ग्रह हों तो रोगमें रोग खडा होवे, चतुर्थमें हों तो औषधीसे रोग वृद्धि होवे. इन १ । १० । ७ । ४ स्थानोंमें शुभग्रह हों वा ये भाव बली हों तो नीरोगता होगी ॥ ३ ॥

लग्नेशेंद्वोः सौम्यैत्थशालतो रोगनाशनं वाच्यम् ॥
वक्रे तु तत्र खेटे भूयोऽपि गदः समुपयाति ॥ ४ ॥

लग्नेश तथा चन्द्रमाका शुभग्रहसे इत्थशाल हो तो रोगनाश होवे ईशराफ हो वा वक्रगति हो तो वार वार रोग उत्पन्न होवे ॥ ४ ॥

भूमिस्थे लग्ननाथेशशिमुथशिले भवेन्मृत्युः ॥
लग्नस्थेरंध्रपतौ लग्नपशशिनोर्विनाशेवा ॥ ५ ॥

लग्नेश चतुर्थ हो चन्द्रमाके साथ मुथशिली हो तो मृत्यु होवे, वा लग्नमें अष्टमेश और लग्नेश एवं चन्द्रमा अष्टम हों तो भी मृत्यु होवे ॥ ५ ॥

लग्नाधिपतिः सूर्यश्चंद्रः सप्तेशमुथशिलविधायी ॥
सप्तेशे षष्ठस्थे तन्मरणं रोगिणो वाच्यम् ॥ ६ ॥

लग्नेश चतुर्थ हो सूर्य तथा चन्द्रमा सप्तमेशसे मुथशिली हो वा सप्तमेश छठा हो तो रोगीकी मृत्यु होगी ऐसा कहना ॥ ६ ॥

रंध्रेशे न विनष्टे नास्तमिते नापि केन्द्रस्थे ॥
लग्नेशस्य मुथशिले मृत्युः स्याद्रोगपृच्छायाम् ॥ ७ ॥

अष्टमेश अस्त वा नष्ट बली होकर केंद्रमें हो लग्नेशसे मुथशिल करता हो तो रोगप्रश्नमें मृत्यु होगी कहना ॥ ७ ॥

अथवातयोश्च केन्द्रे मुथशिलतः क्रूरपीडितेमरणम् ॥
यदिकेन्द्रे क्रूरग्रहस्तदापिपीडाष्टमेशेऽपि ॥ ८ ॥

जो लग्नेश अष्टमेशका केंद्रमें मुथशिल हो क्रूर पीडितभी हो तो मृत्यु होवे जो केंद्रमें पापग्रह वा अष्टमेश हो तो रोगपीडा होवे ॥ ८ ॥

सूर्यद्वादशभागे प्रविष्टे लग्नेश्वरेऽप्येवम् ॥
तनुमृत्युभावनाथावन्योन्याश्रयगतौ मरणम् ॥ ९ ॥

लग्नेश सूर्यके द्वादशांशमें हो तो मृत्यु होवे वा लग्नेश अष्टम अष्टमेश लग्नमें वा परस्पर दृष्ट हों तौभी मृत्यु होवे ॥ ९ ॥

लग्ने चरे च रोगीक्षणेक्षणेस्यादरुक् सरुक्चापि ॥
द्विशरीरे पररोगः स्थिरेगदस्यैकरूपत्वम् ॥ १० ॥

लग्न चरराशि हो तो क्षणमें सुखी क्षणमें दुःखी होतारहे, द्विस्वभाव हो तो एक रोगसे दूसरा रोग होवे, स्थिर हो तो आद्य अंतमें एकही रोग रहे ॥ १० ॥

शशिनो वक्रमुथशिले स्थिररोगोमंदमुथशिलेपूर्वम् ॥
मूत्रनिरोधाद्रोगोत्पत्तिर्ज्ञेयाकृतप्रश्ने ॥ ११ ॥

चन्द्रमा वक्री ग्रहसे मुथशिली हो तो रोग स्थिर रहे, शनिसे मुथशिली हो तो अपूर्व रोग होने तथा मूत्रके बंद होनेसे रोगोत्पत्ति होवे ॥ ११ ॥

अथ पृच्छायाः पूर्वं सप्ताहानि च विलोक्यचत्वारि ॥
यदि तेषु शशांकरवी शुभयुतदृष्टौसदाशस्तम् ॥ १२ ॥

प्रश्नके पहिले ७ या ४ दिनमें सूर्य चन्द्रमा शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हों तो रोगीको शुभ होगा ॥ १२ ॥

मंदोऽयमथनवेति प्रश्नेलग्नेश्वरोऽथचंद्रो वा ॥
षष्ठेशमुथशिलीस्यादस्तमितोवातदामंदः ॥ १३ ॥

यह रोगी होगा वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश वा चन्द्रमा षष्ठेशसे मुथशिली हो वा अस्तंगत हो तो रोगी होगा ॥ १३ ॥

स्वामिभृत्यचतुष्पदप्रश्ने ।

ईशोऽन्यो ममभवितानवेतिलग्नेश्वरेऽस्ययदिकेन्द्रे ॥
नोभवतिमुथशिलंषष्ठांत्यपतिभ्यां तदानान्यः ॥ १४ ॥

मेरा और स्वामी होगा या नहीं अर्थात् और जगह नौकरी लगेगी वा नहीं, ऐसे प्रश्नमें जो लग्नेशका केंद्रमें षष्ठेश तथा व्ययेशसे मुथशिल न हो तो और स्वामी नहीं होगा ॥ १४ ॥

वक्रीवान्येनसमंलग्नपतिः सहजनवमसंस्थेन ॥
कुरुते यदीत्थशालं तदान्यनाथो भवेत्प्रष्टुः ॥ १५ ॥

जो लग्नेश वक्री और किसी तृतीयनवमस्थानस्थ ग्रहसे इत्थशाली हो तो और स्वामी होगा ॥ १५ ॥

लग्नपतौकेन्द्रस्थे रिपुदृष्ट्याक्रूरवीक्षितेसुखपे ॥
रविरश्मिगतेऽथभवेद्यावज्जीवंनचान्यपतिः ॥ १६ ॥

लग्नेश केन्द्रमें हो तथा चतुर्थेश पर पापग्रहकी शत्रुदृष्टि हो एवं लग्नेश अस्त हो तो जीवितपर्यंत और पति नहीं होगा ॥ १६ ॥

अयमीशोभद्रोमे पृच्छायां लग्नपस्य कंबूले ॥
स्वामीसएवभव्योद्यूनेशस्यचशुभोऽन्येशः ॥ १७ ॥

यही स्वामी अच्छा होगा वा अन्य ऐसे प्रश्नमें लग्नेश शुभग्रहसे कंबूली हो तो उसी स्वामीसे शुभ होगा, जो सप्तमेशका कम्बूल शुभग्रहसे हो तो अन्य स्वामीसे शुभ होगा ॥ १७ ॥

गृहभूमिस्थानानां चलनप्रश्ने पुरोक्त एवविधिः ॥
सम्यग्विचार्यवाच्यं शुभमशुभं पृच्छतः स्वधिया ॥ १८ ॥

गृहभूमि जगहके स्थिर रहने वा चलायमान होनेमें भी ऐसा ही विचार अच्छे प्रकार करके अपनी बुद्धिसे शुभाशुभ प्रष्टाको कहना ॥ १८ ॥

भृत्यचतुष्पदलाभप्रश्नेलग्नेशशीतगूषष्ठे ॥
षष्ठेशमुथशिलो वा लग्नषष्ठेश्वरोऽथतल्लाभः ॥ १९ ॥

भृत्य तथा चौपायेके लाभमें लग्नेश एवं चन्द्रमा छठे हों वा षष्ठेशसे मुथशिली हों अथवा षष्ठेश लग्नम हो तो उनका लाभ होगा ॥ १९ ॥

भृत्यस्यवाहनस्यचयद्वाप्रश्नेचलग्नलग्नपती ॥
अर्थीदातासप्तमसप्तपौतद्वलात्प्राप्तिः ॥ २० ॥

भृत्य और सवारीके प्रश्नमें लग्न और लग्नेश लेनेवाले सप्तम और सप्तमेश देनेवालेमें, इनके बलाबलसे प्राप्त अप्राप्ति कहनी जैसे लग्नेशका सप्तमेशसे सप्तमेशका लग्नेशसे, वा लग्नेश सप्तमेशका परस्पर मुथशिल वा संबंध हो तो भृत्य वाहनकी प्राप्ति, इनके ईसराफ वा असंबंधसे अप्राप्ति होगी ॥ २० ॥

ग्रन्थांतरे कलहः ।

क्रूरःखचरोलग्ने विवादपृच्छासु जयतिविवादंतम् ॥
सर्वावस्थासुपरंनीचेऽस्तेचजयतिनोद्विषतः ॥ २१ ॥

विवादप्रश्नमें क्रूरग्रह लग्नमें बलवान् हो तो विवादमें प्रष्टा जीतेगा जो नीच वा अस्तंगत हो तो विवादमें शत्रुसे जीत नहीं सकेगा ॥ २१ ॥

लग्नद्यूनेतुयदापरस्परंक्रूरयोर्झकटदृष्टी ॥
विवदेत्तद्वादियुगं तच्छुरिकाभ्यांप्रहरतितदैवम् ॥ २२ ॥

लग्न तथा सप्तममें क्रूरग्रह शत्रुदृष्टिदृष्ट होनेमें वादी प्रतिवादी परस्पर विवादमें छूरी आदि चलाय बैठेंगे ॥ २२ ॥

लग्नद्यूनेचयदिक्रूरः खचरोविवादिनोनतदा ॥
कलहनिवृत्तिः काले जयतिहिबलवान्गनबलंतु ॥ २३ ॥

लग्नमें तथा सप्तममें पापग्रह हों तो लडनेवालोंका झगडा निवृत्त नहीं होवे इनमें जो बलवान् हो तो वह निर्बलको दाव लेता है यहां लग्न प्रष्टा सप्तम प्रतिवादी जानना ॥ २३ ॥

लग्नेशः सुतगः सौम्यः केंद्रेसंधिर्नचान्यथा ॥
लग्नद्यूनेशषष्ठेशारित्वेऽप्यन्योन्यविग्रहः ॥ २४ ॥

पंचममें लग्नेश और केंद्रोंमें शुभग्रह हो तो वादी प्रतिवादियोंका मेल होगा अन्यथा न होगा लग्न सप्तम छठे भावोंके स्वामी परस्पर तत्काल वा नैसर्गिक शत्रु हों तो कलह बढेगा ॥ २४ ॥

गृहमागतोनयदासौकिंबद्धः किमथवाहतः प्रश्ने ॥
मूर्तौक्रूरोयदिसनिहतोबद्धोऽथ वा पुरुषः॥ २५ ॥

कलही वा कोई अन्य घरमें नहीं आया, मारागया वा कहीं बंधनमें पड गया, ऐसे प्रश्न लग्नमें पापग्रह हो तो मारागया वा बंधनमें पडगया २५॥

त्रिकोणचतुरस्रास्तस्थितः पापग्रहो यदि ॥
ग्रहैर्निरीक्षितः पापैर्नूनंबंधनमादिशेत् ॥ २६ ॥

पापग्रह ९।५। ८।७में हों तथा लग्नेशको भी पापग्रह देखे तो निश्चय बंधन होगया कहना ॥ २६ ॥

सप्तमगोऽष्टमगोवाचेत्क्रूरस्तद्धतोऽपिवाबद्धः ॥
मूर्तौचसप्तमेवायद्वालग्नेष्टऽमंऽपि भवेत् ॥ २७ ॥

सप्तम वा अष्टम पापग्रह हों तो हत वा बद्ध कहना और लग्नम वा सप्तममें तथा अष्टममें पापग्रह उगपत हों तौ भी वही फल है ॥ २७ ॥

बद्धमोक्षे ।

बद्धोऽस्तितत्किंभवतीतिप्रश्नं विमुच्यतेऽसौखलुमृत्युयोगे ॥
कदाविमुंचेदितिपृच्छ्यमानेशुभंकदाभाविचतैर्मृतिः स्यात २८॥

बँधा हुआ मनुष्य कैसा होगा कब छूटेगा, ऐसे प्रश्नमें जो मृत्युदायक योग कोई भी हो तो बंधनसे छूट जायगा. उक्त योगका परिणाम समय जब हो तब छूटनेका समय कहना, दीर्घायु योग हो तो नहीं छूटेगा वा बंधनहीमें मरजायगा ॥ २८

मुक्तिप्रश्नेयदा केंद्रेकेंद्रेशाःस्युर्नमोक्षदाः॥तस्मिन्वर्षेऽथलग्नेशः पतितःकेंद्रगेनच ॥ २९ ॥ संबंधेप्सुःसचेत्क्रूरोमृतीशः स्यात्त-दामृतिः ॥ लग्नेशोऽस्तमितेऽबुस्थेकुजदृष्टेतदामृतिः ॥ ३० ॥

बद्धमोक्ष प्रश्नमें केंद्रेश केंद्रोंमें हों तो बंधनसे न छूटे, जो केंद्रगत पतित ग्रहसे संबंधी लग्नेश हो तो इसी वर्षमें छूटेगा और अष्टमेश क्रूर लग्नेश क्रूर, अस्तंगत हो चतुर्थमें क्रूरसे संबंधी हों तथा मंगलसे दृष्ट हों तो मृत्यु होवे ॥ २९ ॥ ३० ॥

चन्द्रश्चांबुगपापेनमृत्युनाथेनयोगकृत् ॥
तदागुप्त्यांमृतिश्चंद्रःकेंद्रेमंदयुगीक्षितः ॥ ३१ ॥

अष्टमेश पापग्रह चतुर्थ होकर चन्द्रमासे युक्त वा संबंधी इत्थशाली हो वा केंद्रगत चन्द्रमा शनिसे युक्त दृष्ट हो तो कैदहीमें मृत्यु होवे ॥ ३१ ॥

दीर्घपीडाथभौमेनयुग्दृष्टौबंधताडने ॥
दृश्यार्द्धेलग्नपश्चेत्स्याद्व्ययपेनेत्थशालवान् ॥ ३२ ॥

केंद्रगत चन्द्रमा मंगलसे युक्त वा दृष्ट हो तथा लग्नेशके दृश्यार्धमें व्ययेशसे इत्थशाली हो तो बंधनमें होगा और ताडन हो (बेत कुर्रा आदिभी लगें) ॥ ३२ ॥

पलायते तदा बद्धो व्ययगेलग्नगेऽपि वा ॥
तृतीयनवमस्वामीव्ययगोलग्नपेन च ।
यदीत्थशालयोगेप्सुस्तदापि च पलायते ॥ ३३ ॥

लग्नेश व्ययभावमें हो तो बद्ध मनुष्य भाग जावे अथवा ३।९ भावोंका स्वामी बारहवां होकर लग्नेशसे इत्थशाल चाहता हो तो भी भाग जायगा ॥ ३३ ॥

दृश्यार्द्धेह्युपचारेण चन्द्रोमुथशिलस्तदा ॥
बंधमोक्षस्त्रिधर्मेशःसग्रहःशीघ्रमोक्षकृत् ॥ ३४ ॥

लग्नेशके दृश्यार्धमें चन्द्रमा मुथशिली हो तो शीघ्र बद्धमोक्ष करता है तथा तृतीयेश वा नवमेशसेभी चंद्रमा मुथशिली हो तो शीघ्र बद्धमोक्ष करता है ॥ ३४ ॥

पतितेंदुस्त्रिधर्मस्थग्रहसंबंधकृत्तदा ॥
केंद्रस्थस्त्रिभवेशेनयोगेप्सुश्चेत्तदाचिरात् ॥ ३५ ॥

तीसरे वा नवम स्थानगत ग्रहसे क्षीण चन्द्रमा संबंधी हो ३ वा ११ भावका स्वामी जो केंद्रमें हो उसको मिलना चाहता हो तो बंधनसे शीघ्रही छूट जावे ॥ ३५ ॥

यावच्छुक्रोबलीलग्नेतावत्कर्त्ता बलाधिकः ॥ ३६ ॥
अस्तंगते तनौ शुक्रे बद्धमोक्षादिसंभवः ॥
म्रियंते येन योगेनतेनयोगेनमुच्यते ॥ ३७ ॥

शुक्र लग्नमें हो तो वह शुक्र गोचरमें जबलौं उस राशिमें रहे इतनेही बीच छूट जावे जो शुक्र लग्नमें अस्तंगत हो तो बद्धमोक्ष होना संभव है वा जिस योगसे मृत्यु होती है उससे बद्ध भी मोक्ष होता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

मेषे तुले च शीघ्रं स्यात्कर्के नक्रे सकष्टता ॥
स्थिरे चिराद्द्विदेहस्थे मोक्षो मध्यमकालता ॥ ३८ ॥

लग्नमें शुक्र १।७ का हो तो शीघ्र तथा ४।१० का हो तो कष्टसे स्थिर राशिका हो तो बहुत दिनोंमें द्विस्वभावका हो तो मध्यकालमें छूटे शुक्र न हो तो लग्नहीसे यह फल कहना ॥ ३८ ॥

रोगिप्रश्ने विशेषः ।

विलग्नेषष्ठपः पापो जन्मराशिं निरीक्षते ॥
रोगिणस्तस्य मरणं निश्चयेनवदेद्बुधः ॥ ३९ ॥

षष्ठेश पापग्रह लग्नमें होकर जन्मराशिको देखे तो रोगीकी मृत्यु निश्चय पंडितने कहनी ॥ ३९ ॥

चतुर्थाष्टमगेचन्द्रेपापमध्यगतेऽपि वा ॥
मृतिःस्याद्बलसंयुक्तेसौम्यदृष्ट्याचिरात्सुखम् ॥ ४० ॥

चन्द्रमा ४ वा ८ में हो तथा पापग्रहोंके बीच हो तो रोगीकी मृत्यु होवे जो उसे बली शुभग्रह देखें तो शीघ्र सुख होजावे ॥ ४० ॥

विधौ लग्ने स्मरे भानौ रोगी याति यमालयम् ॥
प्रश्ने क्रूरग्रहे लग्ने रोगवृद्धिश्चिकित्सकात् ॥ ४१ ॥

चन्द्रमा लग्नमें सूर्य सप्तम हो तो रोगी यमालय पहुंचे जो प्रश्नमें पापग्रह लग्नमें हो तो वैद्यसे रोग बढे ॥ ४१ ॥

तथा लग्नगते सौम्ये वैद्योक्तममृतं वचः ॥
लग्नंवैद्योद्युनंव्याधिःखंरोगी तुर्यमौषधम ॥ ४२ ॥

जो लग्नमें शुभग्रह हो तो वैद्यका वचन अमृततुल्य होवे. लग्नसे वैद्य सप्तमसे रोग दशमसे रोगी चतुर्थसे औषधी जाननी ॥ ४२ ॥

रोगिणोभिषजोर्मैत्रीमैत्रेभेषजरोगयोः ॥
व्याधेरुपशमोवाच्यःप्रकोपःशात्रवेतयोः ॥ ४३ ॥

रोगी और वैद्य अर्थात् दशमेश लग्नेशकी तथा औषधी और रोग अर्थात् ४ । ७ भावोंके स्वामी परस्पर मित्र हों वा अन्योन्य इत्थशाली हों तो रोग शांत होवे, जो उक्तग्रहोंकी परस्पर शत्रुता वा ईसराफ हो तो रोग औरभी कोपको प्राप्त होगा ॥ ४३ ॥

लग्ननाथे च सबले केंद्रसंस्थे शुभग्रहे ॥
उच्चगे वा त्रिकोणे वा रोगी जीवति निश्चयम् ॥ ४४ ॥

लग्नेश बलवान् हो केंद्रमें शुभग्रह उच्चका हो अथवा त्रिकोणमें हो तो निश्चय रोगसे बचजायगा ॥ ४४ ॥

एकःशुभो बली लग्ने त्रायते रोगपीडितम् ॥
सौम्याधर्मारिलाभस्थास्तृतीयस्था गदापहाः ॥ ४५ ॥

एकभी बलवान् शुभग्रह लग्नमें हो तो रोगीकी रक्षा करता है, शुभग्रह ९ । ६ । ११ । ३ स्थानोंमें हो तो रोग नाश करते हैं ॥ ४५ ॥

देवदोषज्ञानम् ।

वह्न्यंकद्वादशे षष्ठे लग्नात्पापग्रहो यदि ॥
हतो गदैर्जलैश्शस्त्रैस्तस्य दोषःकुलोद्भवः ॥ ४६ ॥

रोगीके वा संततिबाधादिमें देवदोष ज्ञानमें लग्नसे ३ । ९ । १२ । ६ स्थानोंमें जो पापग्रह हों तो रोगी वा जलशस्त्रादिसे पीडितको अपने कुलपूजित देवताका दोष कहना. उसके पूजनसे नीरोग होगा ॥ ४६ ॥

देवस्यमेषगविपितृपक्षआकाशदेव्यामिथुनेऽथकर्के॥ स्याच्छा-
किनी क्षेत्रपतिस्तुसिंहेस्त्रियांकुलार्हंचतुलेतुमातुः ॥ ४७ ॥
नागस्त्वलौयक्षपतिर्धनुष्येनक्रेऽबुदेव्यास्तुघटेतुयक्षी ॥ झष-
कुलोपासितदैवतस्यदोषंभवेद्धर्मबहिष्कृताय ॥ ४८ ॥

जो मनुष्य धर्मी नहीं है उन्हें ये दोष लगते हैं कि मेष लग्न प्रश्नका हो तो अपना इष्ट देवताका एवं वृषसे पितरोंका, मिथुनसे आकाशदेवी मातृका परीआदियोंका, कर्कसे शाकिनी डाकिनी आदि, सिंहसे भूमिपाल देवता, कन्यासे कुलपूजित देवता, तुलासे मातुलपक्षका देवता, वृश्चिकसे नाग देवता, धनसे यक्षपति महादेव नारसिंह भैरव आदि, मकरसे जल-देवी, कुंभसे यक्षिणी, पिशाच आदि, मीनसे कुलदेवताका दोष जानना ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

प्रेताश्चराहो पितरः सुरेज्येचंद्रेऽबुदेव्यास्तपनेऽपिदेव्यः ॥
स्वगोत्रदेव्यश्चशनौबुधेच भवंति भूताव्ययरंध्रसंस्थे ॥ ४९ ॥

राहु ८ । १२ । स्थानोंमें हो तो प्रेतदोष, तथा बृहस्पति हो तो पितरोंका, चंद्रमा हो तो जलदेवी, सूर्य हो तो देवी, शनि बुधसे अपने कुलकी पूज्य देवीका कहना ॥ ४९ ॥

शाकिन्यआरेभृगुजेऽबुदेव्योगृह्णंतिमर्त्यंविमुखंमुकुंदात् ॥
स्वर्क्षोच्चगेवीर्ययुतेचसाध्याश्चंद्रेचनीचेविबलेनसाध्याः ॥ ५० ॥

मंगल ८ । १२ में हो तो शाकिनी डाकिनी और शुक्र हो तो जल-देवीका दोष होवे, जो मनुष्य ईश्वरसे विमुख हैं उनको ये दोष होत हैं उक्त ग्रह जिससे ज्ञात भया वह यदि अपनी राशि वा उच्चादिमें हो तो उपायोंसे दोष साध्य होगा. जो चन्द्रमा बृहस्पति निर्बल हों तो असाध्य जानना ॥ ५० ॥

केंद्रस्थैर्बलिभिःपापैरसाध्यादेवतागणाः ॥
सौम्यग्रहैश्चकेंद्रस्थैःसाध्यामंत्रस्तवार्चनैः ॥ ५१ ॥

केंद्रमें बलवान् पापग्रह हों तो वे देवता असाध्य और शुभग्रह केंद्रमें हों तो मंत्र स्तोत्र पूजनादिसे साध्य जानना ॥ ५१ ॥

कंटकाष्टत्रिकोणस्थाः शुभाउपचयेशशी ॥
लग्ने च शुभसंदृष्टे रोगी रोगाद्विमुच्यते ॥ ५२ ॥

केंद्र त्रिकोण और अष्टममें शुभग्रह तथा चंद्रमा उपचयमें हों और लग्नको शुभग्रह देखें तो रोगी रोगसे छूटे ॥ ५३ ॥

इति महीधरकृतायां नीलकंठीभाषाटीकायां षष्ठभावप्रश्ननिरूपणम् ॥६॥

अथ सप्तमस्थानप्रश्नः ।

स्त्रीलाभस्यप्रश्नेस्मराधिपेलग्नपेनशशिनावा ॥
कृतमुथशिलेयुवत्याअयाचितायाभवेल्लाभः ॥ १ ॥

स्त्रीलाभके प्रश्नमें सप्तमेशका लग्नेश वा चंद्रमासे इत्थशाल हो तो स्त्री विना मांगेभी मिले ॥ १ ॥

यदिलग्नपोविधुर्वाद्यूनेतदयाचितांस्त्रियंलभते ॥
लग्नेशान्मूसरिफेचंद्रेऽस्तपमुथशिले स्वयंलाभः ॥ २ ॥

जो लग्नेश वा बलवान् चंद्रमा सप्तम हो तथा लग्नेशका सप्तम भावसे मूसरीफ और चंद्रमाका सप्तमेशसे मुथशिल हो तौभी विनाही प्रयास स्त्री लाभ होवे ॥ २ ॥

येन समंमुथशिलं तत्र विनष्टे च पापयुतदृष्टे ॥
निकटीभूतं तदा किल विनश्यति स्त्रीगतं कार्यम् ॥ ३ ॥

जिसके साथ मुथशिल हो तो वह नष्ट वा पापयुक्त वा दृष्ट हो तथा सप्तममें नष्टबली वा पापग्रह हो तो स्त्रीप्राप्तिसंबंधकार्य समीप भी आय गया हो तौभी नष्ट होजायगा ॥ ३ ॥

पापेऽत्ररंध्रनाथे स्त्रीजातेरवविघटते कार्यम्॥सहजपतौ भ्रातृभ्य-स्तुर्यैशे पितृभ्य एव नान्येभ्यः ॥ सौम्यकृतयुक्तिदृग्भ्यां पूर्वोक्तस्थानतः शुभं वाच्यम् ॥ ४ ॥

सप्तममें पापग्रह वा अष्टमेश हो तो स्त्रीसंबंधी कार्य, तृतीयेशसे संबंध हो तो भाइयोंसे, चतुर्थेशसे हो तो पितासे ऐसे और जिस भावेशका संबंध हो उसके द्वारा कार्यहानि होवे जो सप्तम वा सप्तमेशपर शुभग्रहका योग वा दृष्ट हो तो उक्त संबंधीवान्से स्त्री प्राप्ति होवे ॥ ४ ॥

जामित्रधनोपचयोपगतःशशी जीववीक्षितः ॥
कुरुते स्त्रीलाभं पापयुतो वापि तन्नाशम् ॥ ५ ॥

सप्तम द्वितीय और उपचय ३ । ६ । १० । ११ । स्थानोंमें चंद्रमा जो बृहस्पतिसे दृष्ट हो तो स्त्रीलाभ, पापयुक्त दृष्ट हो तो स्त्रीहानि करता है ॥ ५ ॥

दुश्चिक्यतनयसप्तमलाभगतः शशीविलग्नर्क्षात् ॥
गुरुरविसौम्यैर्दृष्टोविवाहदःस्यात्तथा सौम्याः ॥ ६ ॥

लग्नसे चंद्रमा ३ । ५ । ७ । ११ स्थानमें बृहस्पति सूर्य बुधसे दृष्ट हो तो विवाह देता है तथा शुभग्रह भी ऐसे होनेमें यही फल देते है ॥ ६ ॥

केंद्रत्रिकोणसंस्थाः सप्तमभवनंशुभग्रहस्ययदि ॥
शय्यायां लभतेऽसौ पापर्क्षे विगतरूपा च ॥ ७ ॥

केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ और सप्तममें शुभग्रहकी राशि तथा शुभग्रह हो तो शय्यामें स्त्रीप्राप्ति होवे, परराशि उक्त स्थानमें हो तो मिले तो सही परंतु कुरूपा मिले ॥ ७ ॥

अथ स्त्रीस्नेहः ।

प्रीतिस्थानप्रश्नेस्मरपतिलग्नेशमुथशिलेस्नेहः ॥
सङ्गकटकःशत्रुदृशाशशिकंबूलेतुसापिशुभा ॥ ८ ॥

स्त्रीकी प्रीतिके प्रश्नमें सप्तमेश लग्नेशका मुथशिल हो तो उससे प्रीति शत्रुदृष्टि उनकी हो तो उससे कलह और चंद्रमा कंबूल भी करता हो तो स्त्री सरल स्वभाव होगी ॥ ८ ॥

यदि मंदो लग्नेशः केंद्रे च स्यात्तदा बली प्रष्टा ॥
अस्तेश्वरे च मंदे केंद्रेप्रतिवादिनोऽस्ति बलम् ॥ ९ ॥

जो लग्नेश और शनि केंद्रमें हों तो स्त्रीविवादमें पूछनेवाला बलीरहेगा जो सप्तमेश और शनि केंद्रमें हो तो बली रहेगा ॥ ९ ॥

उभयोरेकस्थितयोर्ज्ञातव्यासझकटकंतयोः प्रीतिः ॥
सूर्येनशुभंविबलेनरस्य शुक्रे तयोर्द्वितययोः ॥ १० ॥

लग्नेश सप्तमेश पापयुत एकही स्थानमें हों तो स्त्री पुरुष लडाई उपरान्त प्रीतिमान् होंगे जो सूर्य युक्त हों तो कलहमात्र होगा निर्बल उक्त योगकर्त्ता हों तो दोनहूं रुष्टही रहेंगे ॥ १० ॥

रुष्टागमने ।

ममगृहिणीरुष्टापुनरेष्यतिवाथभूम्यधःस्थरवौ ॥
भूपरिगतेचशुक्रेनैतिपुनर्वक्रितेऽभ्येति ॥ ११ ॥

मेरी स्त्री रुष्ट होकर गयी फिर आवेगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश चतुर्थ-पर्यंत सूर्य वा शुक्र हो तो नहीं आवेगी, शुक्र वक्री हो तो आवेगी, लग्नसे चतुर्थपर्यंत स्त्रीके हर्षस्थान हैं, चतुर्थसे सप्तमपर्यंत पुरुषके हर्षस्थान, इनमें स्त्री पुरुष ग्रहोंके वशसे फल कहना ॥ ११ ॥

सूर्यान्निर्गतशुक्रे वक्रेऽपिसमेतिचान्यथा रुष्टा ॥
क्षीणेंदौबहुदिवसैःपूर्णविधौचद्रुतमुपैति ॥ १२ ॥

शुक्र समीपही उदय भया हो अथवा वक्र हो तो रुष्ट स्त्री आपही लौट आवेगी, जो क्षीण चंद्रमा इससे संबंध करे तो बहुत दिनोंमें, पूर्ण चंद्रमा संबंध करे तौ शीघ्रही आवेगी ॥ १२ ॥

अथ कन्यापरीक्षा ।

एषा कुमारिका किल निर्दोषा किं नवेति पृच्छायाम् ॥
लग्ने स्थिरे स्थिरर्क्षेलग्नपशशिनोश्च निर्दोषा ॥ १३ ॥

यह कन्या निर्दोष होगी वा कैसी इस प्रश्नमें लग्न तथा लग्नेश और चन्द्रमा स्थिर राशियोंमें हो तो निर्दोष होगी ॥ १३ ॥

चरराशिगतैरेतैरियंकुमार्यपिचजातदोषा स्यात् ॥
द्विशरीरस्थेचंद्रेचरलग्नेस्वल्पदोषा स्यात् ॥ १४ ॥

जो लग्न लग्नेश और चन्द्रमा चरराशिमें हो तो कन्या सदोषा और चंद्रमा द्विशरीर राशिमें लग्न चरराशिमें हो तो अल्पदोषा होगी ॥ १४ ॥

शनिभौमावेकर्क्षेस्थिरवर्जेतत्परेणगुप्तमियम् ॥
रमिताशनिचंद्रमसोर्लग्नगयोः प्रकटमुपभुक्ता ॥ १५ ॥

जो शनि मंगल एक स्थानमें स्थिरराशिवर्जित हों तो यह कन्या किसीने गुप्त रमण की है, जो शनि चंद्रमा लग्नमें हों तो प्रगट भोगी है ॥ १५ ॥

यदिभौमशनीकेंद्रेविधुदृष्टौवृश्चिकेऽथशुक्रः स्यात् ॥
तद्द्रेष्काणेऽथ तदा निर्भ्रांतं जातदोषैषा ॥ १६ ॥

जो मंगल शनि केंद्रमें चन्द्रमासे दृष्ट हों अथवा शुक्र वृश्चिकका वा वृश्चिक द्रेष्काणमें हो तो निस्संदेह सदोषा होगी ॥ १६ ॥

अथ प्रसूतिज्ञानम् ।

एषा किल प्रसूतासिते घटे ज्ञे हरौ च नो सूता ॥
अनयोरलिवृषगतयोः सूता नारी परिज्ञेया ॥ १७ ॥

यह स्त्री प्रसूती हुई वा नहीं ऐसे प्रश्नमें जो शुक्र कुंभका वा बुध सिंहका हो तो प्रसूती नहीं भई, जो शुक्र वृश्चिकका वा बुध वृषका हो तो प्रसूती भई है जाननी ॥ १७ ॥

भौमबुधशुक्रचंद्राद्विशरीरेचापवर्जितेचेत्स्युः ॥
अग्रेऽस्तितत्प्रसूतिश्चापेनाग्रेनपृष्ठतःसूता ॥ १८ ॥

मंगल बुध शुक्र और चन्द्रमा धनरहित द्विस्वभाव राशियोंमें हो तो प्रसूती आगे होगई धनका हो तो प्रसूति हुई न होगी ॥ १८ ॥

क्रूरश्चेच्चरराशौपरतः सूतास्थिरेतुनिजपत्युः ॥
मिश्रेतुमिश्रमूह्यंजातकसंदेहपृच्छायाम् ॥ १९ ॥

प्रसूतीके संदेहमें लग्नेश वा पंचमेश पापग्रह चरराशिमें हो तो परपुरुषसे स्थिर राशिमें हो तो अपने पतिसे प्रसूति होगी. लग्नेश वा पंचमेश पापग्रहसे मुथशिली हो तो भी परपुरुषसे जानना, मिश्रित हो तो व्यभिचारिणी कहना शुभग्रह योग दृष्टि वा मुथशिलसे अपने पतिसे गर्भ जानना ॥ १९ ॥

अथ पातिव्रत्यपरीक्षा ।

कुटिलसतीयमथवेतिलग्नपतिश्चंद्रमाश्चभौमेन ॥
एकांशेमुथशिलकृत्तथैकभवनेभजत्यन्यम् ॥ २० ॥

यह स्त्री पतिव्रता होगी वा नहीं, इस प्रश्नमें लग्नेश तथा चन्द्रमासे मंगल एकांश समीप मुथशिली हो तो परपुरुषरता होगी ॥ २० ॥

यदिनिजगृहगोभौमस्तदान्यदेशं प्रयाति जारकृते ॥
रविणेतिमुथशिलेसत्युपभुक्ताराजपुरुषेण ॥ २१ ॥

जो लग्नेश चंद्रमासे मुथशिली मंगल अपनी राशिमें हो तो जारके साथ परदेश चली जायगी, जो सूर्यसे मुथशिली उनका हो तो स्त्री राजकीय पुरुषने रमी है ॥ २१ ॥

सौम्येनलेखकवणिङ्निजभेशुक्रेणयोषयैवस्त्री ॥
एतैर्योगैरसतीविपरीतेसुचरितेतिविज्ञेयम् ॥ २२ ॥

पूर्वोक्त प्रकार मंगल बुधसे इत्थशाली हो तो लिखनेवालेसे वा बनियेसे रमी, जो शुक्रसे हो तो स्त्री समान पुरुषने भोगी है ॥ २२ ॥

लग्नपतिनाथशशिना मूसरिफे भूसुते भवेज्जारः ॥
त्यक्तःपुनर्गुरुदृशा पुत्रभयाद्रविदृशा च राजभयात् ॥२३॥

लग्नेश वा चंद्रमासे मंगलका मूसरिफ हो तो जाररता होवे जो उसपर बृहस्पतिकी दृष्टिभी हो तो पुत्रके भयसे सूर्यकी दृष्टि हो तो राजभयसे जारका त्याग करे ॥ २३ ॥

सितदृष्ट्यापरनारीभयात्सितज्ञैकराशिगतदृष्ट्या ॥
जारस्यस्थविरत्वाल्लज्जित्वात्यजतिजारंसा ॥ २४ ॥

जो उक्त मंगलपर शुक्रकी दृष्टि हो तो जारके स्त्रीके भयसे स्त्री जारको त्यागे. जो शुक्र बुधकी एकराशि दृष्टि हो तो जारके बूढे होनेसे लज्जा मानकर स्त्री जारको छोड देवे ॥ २४ ॥

ग्रन्थांतरे सुरतप्रश्नाः ।

शुभेत्थशालेहिमगौचतुष्टयेसौख्यातिरेकःसविलासहासः ॥
क्रूरेत्थशालेहिमगौसरोषःक्रूरान्वितेभूत्कलहोनृवध्वोः ॥२५॥

चन्द्रमा केंद्रमें शुभग्रहसे इत्थशाली हो तो संभोग विलासहासादि-युक्त और पापग्रहसे इत्थशाली हो तो कोपसहित होवे. जो चन्द्रमा पापयुक्त हो तो स्त्री पुरुष कलही होवें ॥ २५ ॥

पीडाथवासीत्सुरतेयुवत्यारजोयथास्तर्क्षमुपैतितद्वत् ॥
लग्नेसुरेज्येभृगुजेकलत्रेतुर्येहिमांशौसविलासहासः ॥ २६ ॥

जो पापग्रह सप्तम हो तो सुरतमें स्त्रीको क्लेश रजोदोषादि पीडासे होवे, लग्नमें बृहस्पति सप्तम शुक्र चतुर्थ चन्द्रमा हो तो सुरत विलासहाससे होवे, जैसा सप्तम स्थान हो उसके अनुसार सुरत कहना ॥ २६ ॥

शुभग्रहोत्थेचकंबूलयोगेयुतोरजःपुष्पसुगंधियुक्तम् ॥
स्वर्क्षोच्चगेहर्म्यरतं निगद्यंस्थितेद्विदेहेवनितास्वकीया ॥२७॥

शुभग्रहोंका कंबूल योग लग्नेश वा सप्तमेशसे हो तो रजपुष्पकी सुगंधि युक्त पाप कंबूलसे दुर्गंध होगा, उक्त ग्रह स्वराशि वा उच्चमें हो तो अच्छे घरमें अन्यथा सामान्य स्थानमें तथा नीचादिमें होनेसे मार्ग ऊपर कंट-कादि प्राय स्थानमें सुरत हो, तथा द्विस्वभाव राशिमें हो तो अपनी स्त्रीसे स्थिर हों तो वैश्यादिसे संभोग कहना ॥ २७ ॥

चरोदयेसारमतेपरस्त्रीकेंद्रेशनौसासरजादिवारतिम् ॥
निशोदयेरात्रिखगेचरात्रौदिवानिशंतद्विदलेचखेटयोः॥२८॥

चरराशि लग्नमें हो तो परस्त्रीसे भोग होवे, शनि केंद्रमें हो तो रजो-वतीसे होवे, लग्न दिवाबली हो तो दिनमें रात्रिबली हो तो रात्रिमें और संध्याबलीसे संध्या कालमें द्विस्वभावसे दिन तथा रात्रिमेंभी सुरत कहना ॥ २८ ॥

इति श्रीमहीधर० नी० प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां सप्तमभावप्रश्ननिरूपणम् ॥७॥

अथाष्टमस्थानप्रश्नः ।

नृपसंग्रामप्रश्नेविलग्नलग्नेशसंस्थितात्खेटात् ॥
शशिमूसरिफात्प्रष्टास्तास्तपसंस्थेंदुमुथशिलाच्छत्रुः ॥ १ ॥

राजाके संग्रामप्रश्नमें लग्न तथा लग्नेश प्राप्त ग्रहसे चंद्रमाके मूसरिफादि होनेमें और सप्तम सप्तमेशके चन्द्र मुथशिसे शत्रुका जय पराजय कहना लग्न लग्नेश संबंधी शुभयोगमें अपनी जय सप्तम सप्तमेश संबंधीसे शत्रु-जय इत्यादि ॥ १ ॥

अथवाशनिकुजजीवाःशीघ्रेभ्योबलयुताऽपरिचराः ॥
बुधसितचंद्रास्तेभ्यश्चदुर्बलाधश्चराध्वसंचिंत्याः ॥ २ ॥

अथवा शनि मंगल बृहस्पति बलवान् अधिकांश तथा बुध शुक्र चन्द्रमा उनसे हीनबली अल्पांश हों अर्थात् "शीघ्रोल्पभागे घनभागमंदे" इत्यादि इत्थशाल हो तो शत्रुसे जय इससे विपरीत ईसराफ हो तो शत्रुकी जय होगी ॥ २ ॥

लग्नपतावस्तपतेः षट्त्रिदृशोऽथमुथशिले द्वयोः स्नेहः ॥
वर्गद्वयमध्याधः पतितः सोऽन्येन बद्धः स्यात् ॥ ३ ॥

लग्नेश सप्तमेशकी द्रेष्काण दृष्टिसे मुथशिली हो तो अन्योन्य स्नेह हो जावे, जो छठे वा बारहवें हों तो शत्रुको कोई अन्य बांध लेवे ॥ ३ ॥

वर्गद्वयाधिपानांमूसरिफेऽस्तंगतेनरणदैर्घ्यम् ॥
लग्नस्वामिनिमंदेकंबूलऽपरिगे जयः प्रष्टुः ॥ ४ ॥

योद्धा प्रतियोद्धाके वर्गस्वामी मूसरिफी तथा अस्तंगत हो तो दीर्घ रण नहीं होगा, लग्नेश मंद अधिकांश और सप्तमेश शीघ्र स्वल्पांश कंबूली हो तो प्रष्टाकी जय होवे ॥ ४ ॥

एवंगुणेतुतस्मिन्विप्रविनष्टेऽस्तपतितनीचस्थे ॥
केंद्रेऽस्तेवास्तपतौप्रष्टुर्हानिः प्रवक्तव्या ॥ ५ ॥

जो मंदग्रह अधिकांश शीघ्र अल्पांश चन्द्रमासे मुथशिली अस्तंगत नीचगत हो, वा सप्तमेश केंद्रमें इसी प्रकार अस्त वा नीचगत हो तो रणमें प्रष्टाकी हानि कहनी ॥ ५ ॥

लग्नादधः शुभेसत्युपरिचमंदेशुभः सहायः स्यात् ॥
लग्नपतौरंध्रस्थेरंध्रपमुथशिलेहतिः प्रष्टुः ॥ ६ ॥

लग्नके अधः अर्थात् दशमसे लग्नपर्यंत शुभग्रह और लग्नसे ऊपर १ से ४ स्थान पर्यंत शनि हो तो युद्धमें सहाय अच्छा मिलेगा. जो लग्नेश अष्टममें हो वा अष्टमेशसे मुथशिली हो तो प्रष्टा हारेगा ॥ ६ ॥

लग्नेशेधनसंस्थेधनेशकृतमुथशिलेरिपोर्नाशः ॥
लग्नेशदशमपत्योर्मुथशिलतः पृच्छकस्यजयोवीर्ये ॥ ७ ॥

लग्नेश धनस्थानमें, धनेशसे मुथशिली हो तो शत्रुनाश होवे, लग्नेश दशमेशका मुथशिल हो बलीभी हो तो शत्रुसे जय होवे ॥ ७ ॥

तुर्यास्तपयोरेवं शत्रोर्योगे जयो ज्ञेयः ॥
उभयवर्गेऽपि केंद्रेतत्पतिकृतमुथशिलेबलंज्ञेयम् ॥ ८ ॥

सप्तमेश चतुर्थेशका मुथशिल हो वा योग हो तो शत्रुकी जय हो, दोनोंके वर्गस्वामीमें जो केंद्रमें स्थानेशसे मुथशिली हो उसका पक्ष बलवान् रहेगा ॥ ८ ॥

चरराशौ सबलत्वं जित्वा प्रांते विनाशस्तु ॥
लग्नपतावंत्यस्थे प्रष्टा नश्यति परास्तपे षष्ठे ॥ ९ ॥

जिसका वर्गेश चरराशिमें बलवान् हो वह प्रथम शत्रुको जीतकर आपभी क्षय हो जायगा, जो लग्नेश बारहवां हो तो प्रष्टा नष्ट होगा. जो सप्तमेश छठा हो तो शत्रुनाश होगा ॥ ९ ॥

खपतौ लग्ने प्रष्टुस्तुर्येशेऽस्ते रिपोः सहायबलम् ॥
यन्मुथशिलौ रवींदू तस्य बलं मूसरिफे हानिः ॥ १० ॥

दशमेश लग्नमें वा चतुर्थेश छठा हो तो शत्रुकी सेना अपनी सहाय करे, सूर्य चन्द्रमा मुथशिली वा मूसरिफी जिसके वर्गेशसे हों उसकी सेनाकी हानि होवे ॥ १० ॥

परचक्रागमपृच्छा ग्रंथांतरे ।

मार्गान्निवर्त्तते शत्रुः पापैः शत्रुगृहाश्रितैः ॥
चतुर्थगैरपि प्राप्तः शत्रुर्भग्नो निवर्त्तते ॥ ११ ॥

शत्रुके आगमप्रश्नमें पापग्रह छठे हों तो शत्रु मार्गसे हट जावेगा जो

चतुर्थमें पापग्रह हो तो शत्रु पहुंचभी गया हो तो भी भागकर हट जायगा ॥ ११ ॥

झषालिकुंभकर्कटा रसातले यदा स्थिताः ॥
रिपोः पराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायते ॥ १२ ॥

चतुर्थ स्थानमें १२ । ८ । ११ । ४ राशि हों तो शत्रुकी हार होवे और चतुष्पदों सहित वा उनकी सवारीमें भाग जावे ॥ १२ ॥

मेषधनुः सिंहवृषायद्युदयस्थाभवंति हिबुकेवा ॥
शत्रोर्निवर्त्तनकराग्रहयुक्तावावियुक्तावा ॥ १३ ॥

लग्न वा चतुर्थमें १ । ९ । ५ । २ राशि ग्रहसहित वा रहित हों तो शत्रु लौट जावे ॥ १३ ॥

नागच्छतिपरचक्रंयदार्कचंद्रौचतुर्थभवनस्थौ ॥
गुरुबुधशुक्राहिबुकेयदा तदा शीघ्रमायाति ॥ १४ ॥

जो सूर्य चन्द्रमा चतुर्थ हों तो शत्रु सेना नहीं आवेगी, जो बृहस्पति बुध शुक्र चतुर्थ हों तो शत्रुसेना शीघ्रही आवेगी ॥ १४ ॥

स्थिरोदयेजीवशनैश्चरेस्थिते गमागमौनैववदेत्तुपृच्छतः ॥
त्रिपंचषष्ठारिपुसंगमायपापाश्चतुर्थाविनिवर्त्तनाय ॥ १५ ॥

स्थिर राशि लग्नमें बृहस्पति और शनि हों तो गमन तथा आगमन भी प्रष्टाको न होगा कहना, पापग्रह ३ । ५ । ६ । स्थानोंमें हों तो शत्रुसे संगम होगा, चतुर्थमें पाप हों तो शत्रु हट जायगा ॥ १५ ॥

दशमोदयसप्तमगाः सौम्यानगराधिपस्यविजयकराः ॥
आरार्किज्ञगुरुसिताः प्रभंगदा विजयदा नवमे ॥ १६ ॥

शुभ ग्रह १० । १ । ७ स्थानोंमें नगरेशकी जय करते हैं और नवममें मंगल शनि उसकी हार और बुध बृहस्पति शुक्र जीत करते हैं ॥ १६ ॥

उदयर्क्षाच्चन्द्रर्क्षंभवतिचयावद्दिनैश्चतावद्भिः ॥
आगमनंस्याच्छत्रोर्यदिमध्येनग्रहःकश्चित् ॥ १७ ॥

लग्नसे चन्द्रमा जितने राशिपर हो उतने दिनोंमें शत्रु आवे यदि उनके बीचमें कोई ग्रह न हों ॥ १७ ॥

जयपराजये ।

दैत्येज्यवाचस्पतिसोमपुत्रैरेकर्क्षगैर्लग्नगतैर्बलाढ्यैः ॥
द्वाभ्यामथेज्येभृगुजेऽथलग्नेहन्याद्रणेयायिनृपंपुरेशः ॥१८॥

शुक्र बृहस्पति और बुध एक राशिमें हों विशेषतः बलवान् वा लग्नगत दोनहूं हों वा बृहस्पति शुक्रमें एकभी हो तो जानेवाला राजाको पुर वा किलेमें बैठा राजा जीते ॥ १८ ॥

सूर्येंदुभौमार्कजसैंहिकेयैः सर्वैश्चतुर्भिस्त्रिभिरेवलग्नगैः ॥
हन्यात्तदास्थायिनमाशुयायीद्यूनस्थितैर्यायिनृपंपुरेशः ॥१९॥

सूर्य चन्द्रमा मंगल शनि राहु सभी वा इनमेंसे चार वा तीन लग्नमें हों तो अपने स्थानस्थित राजाको गमन करनेवाला राजा मारे जो उक्त ग्रह सप्तम हों तो स्थानस्थित राजा गमन करनेवालेको मारे ॥ १९ ॥

शुक्रेज्यशीतांशुबुधाःसुरेज्यैःसर्वैस्त्रिभिर्द्यूनगतैर्बलाढ्यैः ॥
हन्याद्रणेस्थायिनमाशुयायीसुखास्पदस्थैश्चशुभैःसुसंधिः ॥२०॥

शुक्र बृहस्पति चन्द्रमा बुध सभी बृहस्पतिसहित उक्तोंमेंसे तीन शुभग्रह बलवान् तथा सप्तममें हो तो जानेवाला स्थानस्थ राजाको रणमें मारे, जो उक्त ग्रह चतुर्थ हो तो शीघ्र मिलाप होजावे ॥ २० ॥

कुजेत्थशालेहिमगौविलग्नबन्धौचमृत्युर्युधिनागरस्य ॥
भौमेत्थशालेचविधौकलत्रेबन्धंमृतिंवालभतेऽत्रयायी ॥ २१ ॥

चन्द्रमा लग्न वा चतुर्थमें मंगलसे इत्थशाली हो तो युद्धमें स्थायी राजाकी मृत्यु होवे, जो ऐसेही चन्द्रमा सप्तम हो तो यायी राजाकी मृत्यु वा बंधन होवे, स्थायी अपने किलामें बैठा है यायी दूसरेपर जाता ये संज्ञा हैं ॥ २१ ॥

लग्नेशजामित्रपयोश्चमध्येभवेद्ग्रहोयः स्वगृहोच्चसंस्थः ॥
तद्वर्गमर्त्यान्नृपयोश्चसंधिर्ज्ञेयोबुधेलेखकपंडिताभ्याम् ॥ २२ ॥

लग्नेश सप्तमशेसे जो ग्रह स्वगृह वा उच्चमें हो तो उसके पक्षमें मनुष्योंसे संधि (मैत्री) करावेगा, यदि बुध स्वगृहोच्चमें हो तो लेखक या

पंडितोंके द्वारा मैत्री होवे, "वर्ग सू० चं० राजा, मं० सेनापति, बुध युवराज बृ० शु० मन्त्री, श० दास" ये जानने ॥ २२ ॥

क्रूरेकलत्रेह्युदयेशुभग्रहोयच्छेद्धनंयायिनृपायनागरः ॥
विपर्ययाद्यायिनृपःपुरेश्वरंदुर्गाद्धिनिष्कास्यददातिवास्पदम् २३॥

सप्तममें पापग्रह लग्नमें शुभग्रह हो तो यायी राजाको स्थायी राजा धनदेके शांत करावे, जो लग्नमें पापग्रह सप्तममें शुभग्रह हों तो यायीराजा स्थायीको किलासे निकालकर फिर स्थान देवे ॥ २३ ॥

रवीत्थशालेशशिजसुगुप्ताश्चराभवेयुश्चकुजेसराफात् ॥
ग्रहाच्छशांकेनयतश्चतस्मिन्येयेऽन्यवेषाश्चभवंतिचाराः ॥२४॥

बुध सूर्यसे इत्थशाली हो तो चार पुरुष जासूस अतिगूढ रहें जो बुधसे मंगलका ईसराफ हो चन्द्रमासे पापयुक्त भी हो तो वे और वेष रक्खें ॥ २४ ॥

दुर्गप्रश्ने ।

प्रश्ने विलग्ने क्रूरे वा दुर्गभंगो न जायते ॥
विशेषतोभूमिपुत्रे राहौ वा मूर्तिगे सति ॥ २५ ॥

प्रश्नलग्नमें पापग्रह हों विशेषतः मंगल वा राहु हो तो किला नहीं टूटेगा २५

सप्तमेसिंहिकासूनुर्दुर्गंशीघ्रेणलभ्यते ॥ जामित्रोदयगेक्रूरे रिष्फगेलग्ननायके ॥ २६ ॥ द्वितीयेवाष्टमेषष्ठेतदादुर्गं नलभ्यते ॥ सक्रूरोलग्नपोवक्रीयुद्धदःकेंद्रसंस्थितः ॥ २७ ॥

सप्तममें राहु हो तो किला शीघ्र लिया जायगा, जो सप्तम तथा लग्नमें पापग्रह और लग्नेश बारहवां हो यद्वा २ । ६ । ८ में हो तो किला नहीं लिया जायगा जो लग्न लग्नेश वक्री और पापयुक्त केन्द्रमें हो तो युद्ध ही होवे ॥ २६ ॥ २७ ॥

षष्ठाधिपेद्यूनगते पापे वा युद्धमादिशेत् ॥
पृच्छायांकेंद्रगैःक्रूरैःकोटदुर्गेवयोनृणाम् ॥ २८ ॥

षष्ठेश सप्तममें वा पापग्रह सप्तम हो तो युद्ध होवे, तथा प्रश्न लग्नसे केंद्रोंमें पापग्रह हों तो किलामें मनुष्य मारे जावें ॥ २८ ॥

भौमाष्टमेशावेकत्रददेतेनिधनंनृणाम् ॥
स्वायपुत्रस्थितेजीवेकोटमध्येभयंनहि ॥ २९ ॥

मंगल तथा अष्टमेश एकही भावमें हो तो प्रष्टाकी सेनामें बहुत मनुष्य मरेंगे २ । ११ । ५ । भावमें बृहस्पति हो तो किलामें भय न होगा२९

शनौभौमेचकेंद्रस्थेबहूनांवधबंधनम् ॥ ३० ॥

शनि मंगल केंद्रमें हों तो बहुत मनुष्य मारे जायँगे तथा बाँधेजायँगे

लग्नगतोयदिपापःपापेनयुतेक्षितोजयेद्वात्र ॥
लग्नात्पूर्वापरगौपापौयुद्धंतदाघोरम् ॥ ३१ ॥

लग्नमें पापग्रह पापहींसे युक्त वा दृष्ट हों अथवा दूसरे बारहवें पापग्रह हों तो घोर युद्ध होगा ॥ ३१ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां प्रश्नतंत्रभाषाटीकायामष्टमभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ८ ॥

अथ नवमभावप्रश्नः ।

ममगमनंभवितानवेतिलग्नेश्वरेऽथवाचंद्रे ॥
नवमेशमुथशिलेसतिनवमेवास्याद्ध्रुवंगमनम् ॥ १ ॥

मेरा गमन होगा वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश वा चंद्रमासे नवमेशका मुथशिल हो वा लग्नेश नवम हो तो गमन होगा ॥ १ ॥

लग्नस्थेनवमपतौलग्नाधिपमुथशिलंचसंचारात् ॥
रहितौयातिपुनर्नानवमदृशावर्जिते योगे ॥ २ ॥

नवमेश लग्नमें लग्नेशसे मुथशिली हो तो चलता फिरता रहे जो लग्नेश वा नवमेशकी नवमस्थानमें दृष्टि न हो तो गमन भी न होवे ॥ २ ॥

लग्नपतौकेंद्रस्थेसहजेशमुथशिलेचविक्रूरे ॥
गमनंस्यादस्मिन्वाकेंद्रेक्रूरेचनास्तिगतिः ॥ ३ ॥

लग्नेश केंद्रमें तृतीयेशसे मुथशिली निष्पाप हो तो गमन होवे, जो केंद्रोंमें क्रूरग्रह हों तो गमन नहीं होगा ॥ ३ ॥

अस्तेक्रूरेचयत्कार्येनिर्यातिविघ्नमतएव ॥
आकाशस्थेपापेराजकुलाज्ज्येष्ठतोनिजाद्वापि ॥ ४ ॥

जो सप्तम स्थानमें पापग्रह हों तो जिस कार्यके लिये गमन करे उसमें विघ्न होवे जो दशममें पापग्रह हों तो राजकुलसे वा अपने ज्येष्ठसे वा अपनेहीसे विघ्न होवे ॥

नवमेशेमुथशिलगेलग्नाधीशेनपापरिपुदृष्टे ॥
गमनेऽवसानतःस्यात्प्रष्टुःकष्टंक्षयोऽर्थस्य ॥ ५ ॥

लग्नेशसे नवमेशका मुथशिल हो किंतु पापयुत और शुक्रदृष्ट हो तो गमन तो होवे किंतु अंतमें कष्ट और धन हानि होवे ॥ ५ ॥

लग्नेशेनवमेशेमुथशिलकृतिरंध्रसप्तमेकष्टम् ॥
उदितेऽस्मिन्वायायाद्विनिःसृतिः स्यात्सुखकरःपंथाः॥६॥

जो लग्नेश नवमेशका मुथशिल सप्तम वा अष्टमस्थानमें हो तो गमनमें कष्ट होवे, जो वह अस्तसे उदय होगया हो तो सुखकारी होगा ॥ ६ ॥

लग्नान्मार्गानुभवोव्योम्नःकार्यंस्मराद्गतिस्थानम् ॥
भूमेः कार्यं परिणतिरेवं लग्नेशरीरसुखम् ॥ ७ ॥

लग्न जैसा दीर्घ वा ह्रस्व हो वैसाही मार्ग कहना, तथा दशमसे कार्य, सप्तमसे गात. चतुर्थसे गमनका परिणाम, और लग्नसे शरीरसुख जैसे इनका बलाबल तथा स्वभावादि संज्ञाप्रकरणोक्त हों वैसेही इनके लक्षण कहे॥७॥

दशमेशुभेचसिद्धिःकार्यस्यास्तेप्रयातियत्स्थाने ॥
तत्र शुभं च चतुर्थेपरिणामः सुंदरः कार्ये ॥ ८ ॥

दशममें शुभग्रह हों तो कार्यसिद्धि, सप्तमें हों तो गमन सुखसे चतुर्थ हों तो कार्यका परिणाम शुभ होगा ॥ ८ ॥

लग्नेशं शशिनं वा यः क्रूरस्तुदतितत्रमनुजर्क्षे ॥
मनुजत्रिराशिकेवातदाभयंद्विपदतोगंतुः ॥ ९ ॥

लग्नेश वा चंद्रमाको जो पापग्रह पीडित करें वह पुरुषादि वा पुरुष द्रेष्काणमें हो तो गमनवालेको दो पैरवालेसे भय होवे ॥ ९ ॥

जलराशौवारिभयंचतुष्पदर्क्षे तथाश्वादेः ॥
घटचापेद्रुमकंटकभयंहरौव्याघ्रसिंहादेः ॥ १० ॥

जो उक्तग्रह जलराशिमें हो तो जलसे, चतुष्पदराशिमें हो तो चतुष्पद घोडा आदिसे, धन कुंभका हो तो वृक्ष कंटकादिसे, सिंहका हो तो व्याघ्र सिंहादिसे भय होवे ॥ १० ॥

नगरप्रवेशतोऽस्मान्फलमस्ति न वा प्रवेशलग्नमिह ॥
तस्मिन्धनपे वक्रे नो रहणं कार्यसिद्धिर्वा ॥ ११ ॥

उक्त जो फल हैं ये नगरसे गमन और पुनः नगर प्रवेशपर्यंत हैं, धनेश वक्री हो तो स्थित न होवे वा कार्य साधन न होवे ॥ ११ ॥

अतिचारितबहुदिवसंरहणंनोकार्यसिद्धिरीषदपि ॥
नवमतृतीयगेऽस्मिन्कार्यंकृत्वाशुनिजपुरं याति ॥ १२ ॥

जो धनेश अतिचारी हो तो बहुत दिन सफरमें रहना पडे कार्य सिद्धि भी न होवे जो धनेश नवम वा तृतीय स्थानमें हो तो कार्य करके शीघ्र अपने नगरमें आवेगा ॥ १२ ॥

लग्ने कर्मण्याये धनपयुते शोभनं ज्ञेयम् ॥
सक्रूरसप्तमस्थे पथि विघ्नाञ्झकटकश्चतुर्थस्थे ॥ १३ ॥

लग्न दशम वा ग्यारहवें नवमेश धनेश युक्त हों तो यात्रा शुभ होगी जो धनेश वा नवमेश पापयुक्त सप्तममें हों तो मार्गमें विघ्न तथा चतुर्थमें सपाप हों तो कलह होवे ॥ १३ ॥

ग्रंथांतरपांथागमनम् ।

आगमनेपृच्छायांलग्नेशलग्नमध्यसंस्थेन ॥
कृतमुथशिलेसमेतिहिसुखमस्ततुरीयगेकष्टात् ॥ १४ ॥

पथिकके आगमन प्रश्नमें लग्नेशसे लग्नस्थित ग्रह इत्थशाली हो तो वह सुखसे तथा ४ । ७ स्थानमें हो तो कष्टसे आवेगा ॥ १४ ॥

स्थानाच्चलितप्रश्नेलग्नपतौसहजनवमगृहसंस्थे ॥
लग्नस्थेनमुथशिलेपंथानंवहतिपथिकोऽयम् ॥ १५ ॥

स्थानसे मार्गको चला वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश ३ वा ९ स्थानमें होकर लग्नस्थ किसी ग्रहसे मुथशिली हो तो पांथ मार्गमें है ॥ १५ ॥

रंध्रेऽथधनेतस्मिन्नाकाशसंस्थेनमुथशिलेऽप्येवम् ॥
केंद्रस्थितेत्थशाललग्नेक्षणवर्ज्यमेतिनकदापि ॥ १६ ॥

लग्नेश अष्टम वा धनस्थानमें होकर दशमस्थ किसी ग्रहसे मुथशिली हो तो भी माग चलता है कहना. केंद्रमें दशमेशसे इत्थशाली हो तोभी यही फल है जो लग्नेश लग्नको न देखे तो पांथ नही आवेगा कहना १६॥

लग्नाधिपतौवक्रेलग्नंपश्यत्यमुत्रचंद्रेवा ॥
वक्रगमुथशिलेसतिसमेतिपथिकःसुखंशीघ्रम् ॥ १७ ॥

लग्नेश वक्र होकर लग्नको देखे अथवा चन्द्रमा वक्री ग्रहसे मुथशिली हो तो पथिक शीघ्र आवेगा ॥ १७ ॥

अंत्यस्थितलग्नपतौशशिनाकृतमुथशिलेद्रुतमुपैति ॥
लग्नाद्वापिचतुर्थाच्छुभाद्द्वितीयतृतीयगावापि ॥ १८ ॥

लग्नेश बारहवां चंद्रमासे मुथशिली तो पांथ शीघ्र आवेगा लग्नसे चतुर्थसे दूसरे तीसरे शुभग्रह हों तोभी शीघ्र आवेगा ॥ १८ ॥

कथयंतिनष्टलाभंप्रवासिनश्चागमंत्वरितम् ॥ १९ ॥

इन दो योगोंमें प्रवासीका शीघ्र आगमन तथा नष्टवस्तुका शीघ्र लाभ होता है पथिकका आगमन वा रोधके योग नष्टद्रव्यके लाभालाभमें भी मिलते हैं ॥ १९ ॥

शुभेषष्ठेऽथजामित्रेवाक्पतिः कंटके स्थितः ॥
पथिकागमनं ब्रूते सिते ज्ञे वा त्रिकोणगे ॥ २० ॥

शुभ छठा सातवां हो तथा बृहस्पति केन्द्रमें हो अथवा शुक्र वा बुध त्रिकोण ९ । ५ में हो तो पथिक शीघ्र आवेगा ॥ २० ॥

षष्ठोदये पापदृष्टे शुभदृग्वर्जिते बुधः ॥
लग्नात्षष्ठे यदा पापा यातुश्च निधनं वदेत् ॥ २१ ॥

षष्ठ तथा लग्नस्थानमें पापग्रहोंकी दृष्टि हो शुभग्रहोंकी न हो तथा लग्नसे छठे स्थानमें पापग्रह हों तो पंडितने जानेवालेकी मृत्यु कहनी ॥ २१ ॥

यदा क्रूरास्तृतीयस्था देशाद्देशांतरं गतः ॥
चौरेणैव हृतस्वश्च पथिकः केंद्रगा यदि ॥ २२ ॥

जो पापग्रह तीसरे हो तो पथिक एक देशसे दूसरे देशको चलागया जो सभी केन्द्रोंमें पापग्रह हों तो उसे चोरोंने लूट लिया ॥ २२ ॥

पापैः षष्ठत्रिलाभस्थैः कंटकस्थैः शुभग्रहैः ॥
प्रवासी सुखमायाति दूरस्थोऽपि सुनिश्चितम् ॥ २३ ॥

पापग्रह ६ । ३ । ११ में और शुभग्रह केन्द्रोंमें हों तो पथिक दूर भी हो तोभी निश्चय करके सुखपूर्वक घर आवेगा ॥ २३ ॥

चतुरस्रे त्रिकोणे वा पापगेहस्थितः शनिः ॥
पापदृष्टिश्च नियतं बंधनं यातुरादिशेत् ॥ २४ ॥

कन्द्र वा त्रिकोणोंमें पापग्रह तथा पापराशिमें पापदृष्ट शनि हो तो अवश्य पथिक बन्धनमें पडगया है ॥ २४ ॥

शुभयुक्ते स्थिरे लग्ने स्थिरो बंधश्चरेऽन्यथा ॥
द्वितनौ सौम्यसंयुक्ते बंधमोक्षौ क्रमेण तु ॥ २५ ॥

स्थिर लग्न शुभयुक्त उक्तयोगोंमें हो तो बंधन स्थिर होगा. चरलग्न हो तो नाममात्र और द्विस्वभाव हो तो बन्धनसे छूटगया है ॥ २५ ॥

पापास्त्रिकोणजामित्रे विलग्ने पृष्ठकोदये ॥
शत्रुभिर्वीक्ष्यमाणे च यातुः कष्टं वदेत्सुधीः ॥ २६ ॥

त्रिकोण तथा सप्तममें पापग्रह और लग्न पृष्ठोदय हो शत्रुसे देखा भी जावे तो पांथको बुद्धिमान्ने कष्ट कहना ॥ २६ ॥

मार्गस्थानगतैः सौम्यैर्मार्गे तस्य शुभं वदेत् ॥
क्रूरैर्दुःखं विलग्नस्थैः पापैः क्लेशमवाप्नुयात् ॥ २७ ॥

मार्गस्थानमें शुभग्रह हों तो पांथको मार्ग सुखकारी और पाप हों तो दुःखकारी होगा, तथा लग्नमें पाप हों तो पांथको क्लेश होगा ॥ २७ ॥

चरलग्ने चरांशे वा चतुर्थे चंद्रमाः स्थितः ॥
प्रवासी सुखमायाति कृतकार्यश्च वेश्मनि ॥ २८ ॥

चरराशि लग्नमें तथा चरराशि चरांशकमें चन्द्रमा चौथा हो तो प्रवासी कार्य करके सुखसे अपने घर शीघ्र आवेगा ॥ २८ ॥

कंटकैः सौम्यसंयुक्तैः पापग्रहविवर्जितैः ॥
प्रवासी सुखमायाति निधनस्थे निशाकरे ॥ २९ ॥

केंद्रोंमें शुभग्रह हों पापग्रह न हों अथवा चन्द्रमा अष्टम हो तो प्रवासी सुखसे घरमें आवेगा ॥ २९ ॥

गमागमौ तु न स्यातां योगे दुरुधराकृतः ॥
शुभैः शुभकृतो रोधः पापैस्तस्करतो भयम् ॥ ३० ॥

जो दुरुधरा योग अर्थात् चन्द्रमासे दूसरे बारहवें भी कोई ग्रह हों तो गमन तथा आगमनभी न होवे, जो यह योग शुभग्रहोंसे हो तो शुभ कार्यमें अटकाव पापोंसे चोर आदिसे हानियें होवें ॥ ३० ॥

गमागमौ तु न स्यातां स्थिरराशौ विलग्नगे ॥
न रोगोपशमो नाशो द्रव्याणां न पराभवः ॥ ३१ ॥

स्थिर राशि लग्नमें हो तो गमन, रोग, शांति वा वृद्धि और हार जीत द्रव्य नाश वा लाभ कोईभी शुभ एवं अशुभ न होवे ॥ ३१ ॥

विपरीतं चरे वाच्यं फलं मिश्रं द्विमूर्तिषु ॥
स्थिरवत्प्रथमे खंडे परार्द्धे चरराशिवत् ॥ ३२ ॥

चरराशि लग्नमें हो तो पूर्वोक्त फल विपरीत जानना जो द्विस्वभाव हो तो पूर्वार्द्धमें चरराशिके और उत्तरार्द्धमें स्थिरके तुल्य फल कहना॥ ३२॥

प्रवासी सुखमायाति गुरुशुक्रौ त्रिवित्तगौ॥
चतुर्थस्थानगावेतौ शीघ्रमायाति कार्यकृत् ॥ ३३ ॥

बृहस्पति शुक्र तीसरे वा दूसरे हों तो प्रवासी सुखसे आवेगा जो यही चतुर्थमें हों तो कार्य करके शीघ्रही आवेगा ॥ ३३ ॥

इंदुःसप्तमगो लग्नात्पथिकं वक्ति मार्गगम् ॥
मार्गाधिपश्च राश्यर्द्धात्परभागे व्यवस्थितः ॥ ३४ ॥

चन्द्रमा लग्नसे सप्तम हो तो प्रवासी मार्गमें है कहना, मार्गस्थान ९ का स्वामी राशिके उत्तरार्द्धमें हो तो भी यही फल कहना ॥ ३४ ॥

शुक्रार्कजीवसौम्यानामेकोऽपिस्याद्यदायगः ॥
तदाऽऽशुगमनं ब्रूते प्रष्टुर्न गमनं व्यये ॥ ३५ ॥

शुक्र सूर्य बृहस्पति बुधमेंसे एक भी ग्यारहवां हो तो प्रवासी शीघ्र आवे जो बारहवां हो तो गमागम नहीं होंगे ॥ ३५ ॥

लग्नाद्यावतिथे स्थाने बली खेटो व्यवस्थितः ॥
ब्रूयात्तावतिथे मासे पथिकस्य निवर्त्तनम् ॥ ३६ ॥

लग्नसे जितने स्थानमें बलाधिक ग्रह हों उतनी संख्याके महीनोंमें प्रवासी लौटेगा यहां मास स्थानमें दिन वा वर्ष बुद्धिसे देशकाल देखके कहना ॥ ३६ ॥

एवं कालं चरांशस्थे द्विगुणं च स्थिरांशके ॥
द्विस्वभावांशगे खेटे त्रिगुणं चिंतयेत्सुधीः ॥ ३७ ॥

यह बली ग्रह चरांशकमें हो तो वह समयही ठीक है जो स्थिरांशकमें हो तो द्विगुण द्विस्वभावमें हो तो त्रिगुण समय कहना ॥ ३७ ॥

यातुर्विलग्नाज्जामित्रभवनाधिपतिर्यदा ॥
करोति वक्रमावृत्तेः कालं तं ब्रुवते परे ॥ ३८ ॥

गमन करनेवालोंको गमन वा प्रश्न लग्नसे सप्तमेश जब वक्र होवे तब हटनेका समय कहना यह किसीका मत है ॥ ३८ ॥

चतुर्थे दशमे वापि यदि सौम्यग्रहो भवेत् ॥
तदा न गमनं क्रूरस्तत्रस्थैर्गमनं भवेत् ॥ ३९ ॥

चतुर्थ वा दशममें शुभग्रह हो तो गमन न होवे पाप हो तो गमन होता है ॥ ३९ ॥

लग्नाद्वा लग्ननाथाद्वा यत्संख्याः क्रूरखेचराः ॥
नवमे द्वादशे वापि तत्संख्याः स्युरुपद्रवाः ॥ ४० ॥

लग्न वा लग्नेश नवम वा बारहवें स्थानमें जितने पापग्रह हों उतने उपद्रव गमनमें होवेंगे कहना ॥ ४० ॥

लग्नाद्वा लग्ननाथाद्वा यावंतः सौम्यखेचराः ॥
मार्गेतत्रोदयावाच्याःस्थानेस्थानेविचक्षणैः ॥ ४१ ॥

लग्न वा लग्नेशसे जितने शुभग्रह नवम हों उतने स्थानोंमें पांथका उदय, हर्ष होगा यह विद्वानोंने विचारसे कहना ॥ ४१ ॥

क्रूरयुक्तेक्षितो मंदः शुभदृग्योगवर्जितः ॥
धर्मस्थस्तनुते व्याधिं प्रोषितस्याष्टगो मृतिम् ॥ ४२ ॥

नवम स्थानमें शनि पापग्रहयुक्त दृष्ट हो शुभग्रहकी दृष्टि वा योगरहित हो तो पथिकको व्याधि और अष्टममें हो तो मृत्यु होवे ॥ ४२ ॥

जामित्रस्य शुभोत्थे याता नायांति दुरुधरायोगे ॥
मित्रस्वामिनिषेधात्पापोत्थे शत्रुरुक्चौरात् ॥ ४३ ॥

सप्तममें शुभग्रहोंसे दुरुधरा योग हो तो जानेवाला मित्र अथवा स्वामीके मना करनेसे फिर आवे नहीं जो पापोंसे हो तो शत्रु वा रोग और चौरसे मृत्यु वा मृत्युतुल्य कष्ट पावे ॥ ४३ ॥

चंद्रार्कयोश्छिद्रगयोर्यमेनसंदृष्टयोःस्यात्पथिशस्त्रभीतिः ॥
रंध्रेसितेज्ञेचसुखाप्तिरारेमंदेभयंपापयुगीक्षितेऽध्वनि ॥ ४४ ॥

चन्द्रमा सूर्य अष्टम हो शनि उन्हें देखे तो मार्गमें शस्त्रभय होवे, अष्टम स्थानमें शुक्र बुध हों तो सुख मिले, मंगल शनि पापयुक्त वा दृष्ट अष्टम हों तो मार्गमें भय होवे ॥ ४४ ॥

दूरस्थजिवितमृतप्रश्ने ।

लग्नेश्वरे शीतकरेऽथषष्ठे तुर्येऽष्टमेवाप्यतिनीचगे वा ॥
अस्तंगतेच्छिद्रपतीत्थशालेयुक्तेऽशुभैर्दूरगतोमृतःस्यात् ॥ ४५ ॥

प्रवासी जीवित है वा मरगया ऐसे प्रश्नमें लग्नेश तथा चंद्रमा छठे हों अथवा चतुर्थ अष्टममें अतिनीचराशिस्थ अस्तंगत हों और अष्टमेशसे इत्थशाली और पापयुक्त हों तो प्रवासी दूर पहुँचकर मरगया होगा ॥ ४५ ॥

भूमेरधःस्थेनचवक्रगेनयदीत्थशालंकुरुतेशशांकः ॥
सौम्यैरदृष्टेमरणंप्रकुर्याद्दूरस्थितस्यापिविदेशगस्य ॥ ४६ ॥

लग्नसे चतुर्थके वीच स्थित किसी ग्रहसे चंद्रमा इत्थशाल करे तथा शुभ-ग्रह उसे न देखें तो दूरदेशस्थकी मृत्यु होती है ॥ ४६ ॥

सौम्यैःषष्ठांत्यरंध्रस्थैर्विबलैश्च शुभेक्षितैः ॥
पापयुक्तौशशांकार्कौतदादूरस्थितोमृतः ॥ ४७ ॥

शुभग्रह ६ । ८ । १२ । स्थानोंमें निर्बल शुभग्रहोंसे दृष्ट तथा पापग्रहसे युक्त हों और सूर्य चंद्रमा पापयुक्त हो तो दूरस्थित जन मरगया है॥४७॥

पृष्ठोदयेपापयुतेत्रिकोणकेंद्राष्टषष्ठोपगतैश्चपापैः ॥
सौम्यैरदृष्टैःपरदेशसंस्थोमृतोगदार्त्तोनवमेचसूर्ये ॥ ४८ ॥

पृष्ठोदय १ । २ । ४ । ९ राशिमें पपग्रह त्रिकोण केंद्र अष्टम स्थानमें हों शुभग्रह उन्हें न देखें तो परदेशमें रोगी मरगया है, जो नवम सूर्य हो तोभी यही फल कहना ॥ ४८ ॥

तुर्योपरिस्थेनखगेनचंद्रमायदीत्थशालंकुरुतेशुभेक्षितः ॥
सौम्यैर्युतोवापरदेशसंस्थितःसुखीचजीवेत्पथिसौख्यमेति॥४९॥

चतुर्थसे सप्तमके भीतर किसी ग्रहसे चंद्रमा इत्थशाल करे शुभग्रहसे दृष्ट वा युक्तभी होतो परदेशवाला सुखी जीताजागताहै मार्गमेंभीं सुखसे आवेगा४९॥

इति श्रीमहीधर कृ० ता० नी० भा० नवमस्थानप्रश्न नि० ॥ ९ ॥

अथ दशमस्थानप्रश्नः ।

राज्याप्तिप्रश्नलग्नेलग्नेशेशशिनिवानभःपतिना ॥
कृतमुथशिलेवरदृशाराज्यंरूपक्रमाद्भवति ॥ १ ॥

राज्यलाभ प्रश्नमें लग्नेश वा चंद्रमा दशमेशसे मुथशिली हो मित्रदृष्टि भी हो तो कुलानुमान राज्य सुख मिले ॥ १ ॥

अन्योन्यभवनगमनात्क्रूराभावेऽर्थचिंतितप्राप्तिः ॥
लग्नेशेनान्येनचसौम्येनांबरस्थमुथशिलेऽप्येवम् ॥ २ ॥

लग्नेश दशममें दशमेश लग्नमें पापरहित हों तो चिंतित राज्य सुख मिले तथा लग्नेशसे किसी दशमस्थ शुभग्रहका मुथशिल हो तौभी यही फल होगा ॥ २ ॥

मंदग्रहे बलवतिक्रूरवियुक्तो यदा शशी विबलः ॥
मंदेबलिनिभ्रमणाद्राज्यप्राप्तिर्भवेत्प्रष्टुः ॥ ३ ॥

योगकर्त्ताओंमें मन्दगतिग्रह बलवान् पापरहित चंद्रमा भी निर्बल हो शनि बलवान् हो तो भ्रमणसे प्रश्नवालेको राज्यसुख मिले ॥ ३ ॥

लग्नाधिपतौस्वगृहेलाभोराज्यस्यतुंगगेभौमे ॥
लग्नांबराधिपौयदिकंबूलीकेंद्रगेंदुमुथशिलतः ॥ ४ ॥

अपनी राशिमें लग्नेश और अपने उच्च में मंगल हो तो राज्यलाभ होवे. जो लग्नेश और दशमेश मुथाशिली केंद्रमें चंद्रमासे कंबूली हों तो वही फल कहना ॥ ४ ॥

उत्तमराज्यप्राप्तिःस्वर्क्षोच्चइंदुतोविपुला ॥
यत्रर्क्षे लग्नेशस्तत्पतिरशुभगृहे तदा कार्यम् ॥ ५ ॥
न स्यादस्ते कष्टाद्दशमद्दशाकटुकताकार्ये ॥
राज्यप्राप्तौसत्यांयदिपृच्छतिकोऽपिपरिणतिंचतदा ॥ ६ ॥

लग्नेश दशमेशके इत्थशालमें चंद्रमा स्वराशि वा उच्चगत कंबूली अर्थात् उत्तमोत्तम कंबूल हो तो राज्यप्राप्ति उत्तम और बहुत होवे जिस राशिमें लग्नेश है उसका स्वामी अशुभ राशिमें हो तो राज्यसंबंधी कार्य न होवे जो वह अस्तंगत हो तो कष्टसे होगा जो शत्रुदृष्टिसे दृष्ट हो तो कार्यमें कोई प्रकार कडवाई आवेगी ॥ ५ ॥ ६ ॥

लग्नंशरीरकार्यंगृहकर्मास्तंनभश्चराज्यार्थम् ॥
लाभोमित्रस्यार्थंचतुर्थकंकर्मणोवसतये च ॥ ७ ॥

जो कोई राज्यकृत्यप्राप्ति हुयेमें उसका परिणाम पूँछे तो लग्नसे शरीर कार्य, सप्तमसे गृहकार्य, दशमसे राज्यकृत्य लाभसे लाभ, चतुर्थसे तथा मित्र संबंधी कार्य और दशमसे निवासके विषयमेंभी विचार करना ॥ ७ ॥

द्रव्यंधनायसहजंभृत्येभ्योरिपुश्चवैरिभ्यः ॥
एतैःशुभैःशुभंस्यादशुभैर्वामंचसर्वकार्याणाम् ॥ ८ ॥

दूसरे भावसे धन कार्य, तीसरेसे भृत्य, छठेसे वैरी संबंधी कार्य विचारना

यदि इनपै शुभग्रह हों वा इनके स्वामी बली हों तो यथोक्त कार्य शुभ अन्यथा अशुभ होगा ॥ ८ ॥

वित्तस्वामिनिभौमेऽनौचित्येपारदारिकेव्ययकृत् ॥
जीवे धर्मायरिपौगुरुपूजायैसितेविलासाय ॥ ९ ॥

धनेश मंगल लग्नेशसे मुथशिली हो तो अनुचितकर्मोंमें तथा परस्त्रीसं-बंधी व्यय करे धनेश बृहस्पति हों तो धर्ममें, शत्रुमें, सूर्य हो तो गुरु ब्राह्मणकी पूजामें, शुक्र हो तो बिलासादि सुखमें धनव्यय होवे ॥ ९ ॥

वाणिज्यायज्ञेपुनरिंदौमुथशिलिनिचान्यथान्यार्थम् ॥
लग्नपतौपतितस्थेविबलेराज्यात्ययस्तुकंबूले ॥
कोऽपिगुणःस्यात्पापाक्रांतैरशुभंच्युतोभवति ॥ १० ॥

जो उक्त प्रकार बुध हो तो वाणिज्यमें धनव्यय होवे चन्द्रमा मुथ-शिली भी हो तोभी व्यापारमें व्यय होवे जो मुथशिली लग्नेशसे न हो तो अन्यके लिये वाणिज्य करे तथा लग्नेश पतित स्थानमें तथा निर्बल हो तो कंबूलीमें कुछ गुणभी होताहै पापक्रांत हो तो राज्यनाशही होताहै १०

नरपतिसचिवस्नेहप्रश्नेकंबूलेलग्नसप्तमयोः ॥
मुथशिलयोःशुभदृष्ट्याशुभताराज्यमिथः स्नेहः ॥ ११ ॥

राजा और राजमंत्रीके स्नेहप्रश्नमें लग्नेश सप्तमेशका कंबूलसहित मुथ-शिल हो तो परस्पर स्नेह रहे शुभदृष्टिभी हो तो राज्यमेंभी शुभता रहे ११॥

राज्यंचरंस्थिरंवालग्नपगगनेशयोः सहयोः ॥
यद्येकोमंदःस्यात्केंद्रेतत्स्थितमथोऽन्यथावाच्यम् ॥ १२ ॥

यह राज्य चर वा स्थिर कैसा होगा ऐसे प्रश्नमें लग्नेश दशमेश साथ ही केन्द्रमें हों उनमेंसे एक मन्दगति उपलक्षणसे अल्पांश हो तो राज्य स्थिर होगा अन्यथा अस्थिर कहना ॥ १२ ॥

यदिवासवाममार्गेभूमेर्वाप्रच्युतिर्भवेत्पूर्वम् ॥
कंबूलेसतिलभतेशीघ्रमूसरीफेतुनपुनः ॥ १३ ॥

जो उक्तग्रह वक्री हो तो प्रथम राज्यकी हानि पीछे उन्नति होगी, कंबूली हो तो शीघ्र राज्यलाभ और मूसरीफ हो तो लाभ नहीं होवे ॥ १३ ॥

ग्रन्थांतरेस्वामिभृत्यप्रश्नः ।

शीर्षोदयेसौम्ययुतेक्षितेवासौम्यैर्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थैः ॥
तृतीयलाभारिगतैश्चपापैःसौख्यार्थलाभोनृपसेवकस्य॥ १४॥

स्वामी भृत्य प्रश्नमें शुभग्रह शीर्षोदय राशिमें शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट २।८।७ में और ३।११।६ स्थानोंमें पाप हों तो राजसेवीको सुख तथा धनलाभ होवे ॥ १४ ॥

लग्नाद्द्वितीयेमदनेऽष्टमर्क्षेवित्तक्षयंसंभ्रममार्तिमृत्युम् ।
कुर्वंतिपापाःक्रमशोनरेंद्राद्भृत्यस्यतस्मात्परिवर्जयेत्तम्॥ १५॥

लग्नसे दूसरे हों तो भृत्यका राजासे धनक्षय होवे. जो सप्तम हों तो संभ्रम और अष्टम हों तो मृत्यु होवे तस्मात् इन स्थानोंमें पाप हों तो स्वमिसेवा न करनी ॥ १५ ॥

लग्नाद्द्वितीयाष्टमसप्तमस्थाःपापाःप्रणाशंनृपभृत्ययोर्द्वयोः ॥
कुर्वंतितेष्वेवगताश्चसौम्याःकुर्युर्धनारोग्यसुखानिचोभयोः॥ १६॥

लग्नसे २।८। ७ स्थानोंमें पापग्रह स्वामी सेवक दोनहूंका नाश और शुभग्रह दोनहूंको धन अरोग्य और सुख करते हैं ॥ १६ ॥

शशांकसौम्यावुदयास्तभावौदृष्टौयुतौवासबलैर्नपापैः ॥
प्रष्टुस्तदास्तोहृदिपार्थिवस्यस्नेहप्रसादावकृपाप्रतीपात् १७॥

बलवान् चन्द्रमा और बलवान् शुभग्रह करके लग्न तथा सप्तमभाव देखा जाय और उक्त स्थानोंपर पापग्रहकी युति दृष्टि न हो तो प्रष्टाके लिये राजाके हृदयमें स्नेह तथा कृपा रहे, यही योग विपरीत भी है कि, शुभोंके स्थानमें पापग्रह हों तो विपरीत फल कहना ॥ १७ ॥

अन्यस्वामिप्रश्नः ।

षष्ठेश्वरेणव्ययपेनकेंद्रे यदीत्थशालंकुरुतेविलग्नपः ॥
प्रष्टुस्तदान्यः प्रभुरर्थदःस्यादतः प्रतीपंनभवेत्परःप्रभुः॥ १८॥

षष्ठेश वा व्ययेशसे जो केंद्रमें इत्थशाल लग्नेश करे तो प्रष्टाको स्वामी धन देनेवाला होगा, विपरीतमें अन्य प्रभु न होवे ॥ १८ ॥

लग्नेश्वरेस्वर्क्षगतेस्वतुंगेकेंद्रस्थितेशीतकरेत्थशाले ॥
शुभग्रहैर्दृष्टयुतेबलान्वितेप्रष्टुर्निजस्वाम्यमितार्थलाभः १९॥

लग्नेश अपनी राशि वा उच्चमें केन्द्रस्थित होकर चन्द्रमासे इत्थशाली हो तथा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट और बलवान् हो तो प्रष्टाको अपने ही स्वामीसे अगणित धन मिले ॥ १९ ॥

जायेश्वरेस्वोच्चनिजर्क्षसंस्थेकेंद्रस्थिते शीतकरेत्थशालगे ॥
शुभग्रहैर्दृष्टयुतेबलोत्कटैःप्रष्टुस्तदान्यप्रभुरर्थदोभवेत्॥२०॥

सप्तमेश अपनी राशि वा उच्चका केन्द्रगत चन्द्रमासे इत्थशाली हो तथा बलवान् शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो प्रष्टाको अन्य स्वामी धन देवे॥२०॥

इदंगृहंवाशुभमन्यदालयंस्थानंत्विदंवाशुभमन्यदेवमे ॥
ममात्रभद्रंगमनात्तुतत्रवापृष्टोदयेत्थंविधिनाविमृश्य ॥ २१॥

प्रष्टा पूँछे कि, मुझको यह घर शुभ होगा वा अन्य, तथा यह स्थान शुभ वा अन्य, और हमको यहां शुभ है या गमनमें वहां शुभ होगा इतने प्रश्नोंमें इतनेही भावोंसे कार्येश जानके इत्थशाल इसराफ आदि योगोंसे विचार करना ॥ २१ ॥

अथ स्वप्नप्रश्नः।

लग्नेऽर्के नृपतिं वह्निं शस्त्रं पश्यंति लोहितम् ॥
श्वेतं पुष्पं सितं वस्त्रं गंधं नारीं च शीतगौ॥ २२ ॥

लग्नमें सूर्य हो तो राजा, अग्नि, शस्त्र और लाल रंग देखे, चन्द्रमा हो तो श्वेत रंगके पुष्प, वस्त्र चंदन और स्त्री देखे ॥ २२ ॥

रक्तं मांसं प्रवालं च सुवर्णं धरणी सुते ॥
बुधे खेगमनं जीवे धनं बंधुसमागमम् ॥ २३ ॥

मंगल हो तो रुधिर मांस मूंगा सुवर्ण, बुध हो तो आकाश, पर्वतशृं-गादिमें गमन, बृहस्पतिसे धन तथा बंधुसंमेलन ॥ २३ ॥

जलावगाहनं शुक्रे शनौ तुंगावरोहणम् ॥
लग्नलग्नांशपवशात्स्वप्नो वाच्योऽथवा बुधैः ॥ २४ ॥

शुक्र हो तो जलक्रीडा शनि हो तो ऊंचे स्थानारोहण होवे अथवा लग्न तथा लग्ननवांशपतिसे पंडितोंने स्वप्न कहना ॥ २४ ॥

सर्वोत्तमबलाद्वापि खेटाद्बुद्ध्या विचिंतयेत् ॥
बलसाम्ये फलं मिश्रंदुःस्वप्नोनिर्बलैः खगैः ॥ २५ ॥

अथवा सर्वोत्तम बली ग्रहसे बुद्धिसे विचार करना जो बहुतोंका बल समान हो तो फल मिश्रित और निर्बलसे दुःस्वप्न होवे ॥ २५ ॥

रविलग्ने शशिदृष्टे रविशशिसमेतविलग्नाद्वा ॥
स्वप्नं दृष्टं प्रवदेत्प्रष्टुर्लग्नांतरात्कालः ॥ २६ ॥

सूर्य लग्नमें चन्द्रमासे दृष्ट हों वा सूर्य चंद्रमा लग्नमें हों तो स्वप्न देखा है और स्थानोंमें हो तो देखेगा कहना ॥ २६ ॥

अथाखेटकः ।

लग्नेशजामित्रपतीत्थशालसुस्नेहदृष्ट्याात्वनयोर्द्वयोश्च॥आखेटकः
स्यात्सफलोऽरिदृष्ट्यास्यान्निष्फलोवाल्पफलातिकष्टात् ॥ २७ ॥

लग्नेश सप्तमेशका इत्थशाल मित्रदृष्टिसे हो तौ आखेटक (शिकार) सफल होगी उनकी शत्रुदृष्टि हो तो निष्फल वा बहुत कष्टसे अल्पफली होवे ॥ २७ ॥

लग्नेश्वरेद्यूनगतेविलग्नेजायेश्वरेस्यान्मृगयाप्रसूता ॥
यामित्रनाथेहिबुकेनभःस्थेचाखेटकःस्वल्पतरोऽपिनस्यात् ॥२८॥

लग्नेश सप्तममें सप्तमेश लग्नमें हो तो शिकार बहुत मिले, जो सप्तमेश चतुर्थमें वा दशममें हो तो शिकार थोडाभी न होवे ॥ २८ ॥

ज्ञभौमौ सबलौ सिद्धिरस्तांशे मृगयाच्युतिः ॥
लग्नद्यूने तत्पती च हेतुस्तैर्जलजादिगैः ॥ २९ ॥

बुध मंगल बलवान् हों तो मृगयासिद्धि होवे जो वे सप्तम राश्यंशमें हों तो शिकार हाथसेछूटजावे; लग्न और सप्तम राशि वा उनके पति स्थल जलाकाश जैसी राशियोंमें वा जैसे स्वभावके हों वैसीही शिकारभी कहनी२९

क्रूराक्रांतानि यावंति मध्ये भानोंदुलग्नयोः ॥
तावंतःप्राणिनो वाच्या द्वित्रिघ्नाःस्वांशकादिषु ॥ ३० ॥

लग्न और चन्द्रमाके बीच जितनी राशि पापग्रहोंसे दबी हों उतने प्राणी शिकारमें मिलेंगे जो वे अपने अंश वा उच्च मित्रांशकोमें हों तो द्विगुण त्रिगुण और वर्गोत्तममें बहुतगुण कहना ॥ ३० ॥

अथ किंवदंती ।

श्रुतिस्तुलग्नेश्वरशीतगूदयैःशुभान्वितैः केंद्रगतैस्तुसत्या ॥
पापान्वितैःपापनिरीक्षितैश्च त्रिकस्थितैर्वाभवतीहमिथ्या ३१

लग्न,लग्नेश और चन्द्रमा शुभयुक्त केन्द्रगत हों तो जनश्रुति सच्ची और पापयुक्त दृष्ट वा त्रिक ६।८। १२ में हों तो मिथ्या कहनी, लोगोंमें अफ-वाह कहावतको जनश्रुति वा किंवदंती कहते हैं ॥ ३१ ॥

शुभदृग्योगतःसौम्यांवार्त्तासत्यांविनिर्दिशेत् ॥
पापदृग्योगतोदुष्टावार्त्तासत्येतिकीर्त्यते ॥
लग्नेश्वरेभादिवक्रेमिथ्यावार्त्ताभविष्यति ॥ ३२ ॥

लग्न लग्नेश और चन्द्रमापर शुभग्रहोंकी दृष्टि वा योग हो तो सौम्य वार्त्ता सत्य क्रूरवार्त्ता हो तो असत्य जानना. पापदृष्टि योगसे क्रूर वार्त्ता सत्य,सौम्यवार्त्ता हो तो असत्य जानना आर लग्नेश वक्र होनेवाला हो तो सभी वार्त्ता मिथ्या होंगे ॥ ३२ ॥

इति श्रीमही०नी० प्रश्नतंत्रभाषाटीकायां दशमभावप्रश्ननिरूपणम् ॥१०॥

अथ एकादशस्थानप्रश्नः ।

नृपतेर्गौरवलाभाशादिममस्यान्नवेतिपृच्छायाम् ॥
आयेशलग्नपत्योःस्नेहदृशामुथशिलेद्रुतभवति ॥ १ ॥

राजासे गौरव तथा धनादिलाभ मेरे होंगे वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लाभेश लग्नेशकी स्नेहदृष्टि इत्थशाल हो तो शीघ्र लाभ होगा ॥ १ ॥

रिपुदृष्ट्याबहुदिवसैःकेंद्रेचायेशचंद्रकंबूले ॥
वाच्यापूर्णैवाशाचरस्थिरद्विस्वभावगेस्वनामफलम् ॥ २ ॥

जो उनके परस्पर शत्रुदृष्टिसे इत्थशाल हो तो बहुत दिनोंमें लाभ होगा जो लग्नेश लाभेशका इत्थशाल केन्द्र वा लाभस्थानमें चन्द्रमाके कंबूल सहित हो तो आशा पूर्ण होगी कहना, परंतु वह जैसी राशिमें हो वैसा राशि नामसदृश फलभी देते हैं जैसे चरमें चर स्थिरमें स्थिर इत्यादि ॥ २ ॥

लाभेशे क्रूरहते भूत्वाशाशुप्रणाशमुपयाति ॥
क्रूरायुक्तेशुभयुज्याधिकारवशेनलघ्व्याशा ॥ ३ ॥

जो लाभेश अस्त वा पापपीडित हो तो आशा पूर्ण होकर फिर नष्ट होजावे, पापरहित शुभयुक्त हो तो अधिकारके सदृश लघु वा बृहत् आशापूर्ति कहनी ॥ ३ ॥

मित्रेण सहप्रीतिर्भविता लग्नेश्वरायपत्योश्च ॥
प्रियदृष्ट्या मुथशिलतः प्रीतिर्वान्योन्यगृहयानात् ॥ ४ ॥

मित्रसे प्रीति होगी वा नहीं ऐसे प्रश्नमें लग्नेश लाभेशकी मित्रदृष्टि मुथशिल हो अथवा लग्नेश लाभमें लाभेश लग्नमें हो तो प्रीति बढेगी ॥ ४ ॥

केंद्रस्थितयोरनयोर्मैत्री किल पूर्वजातैव ॥
पणफरगतौपुरस्तादापोक्लिमतोमहाप्रीतिः ॥ ५ ॥

लाभेश लग्नेश केन्द्रमें हो तो मैत्री उनकी पहिलेहीसे होरही है; जो पणफर २ । ५ । ८ । ११ में हों तो आगे होगी आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ में हों तो प्रीति बहुत बढेगी ॥ ५ ॥

गुप्तंकार्यमिदंमेसिद्ध्यतिलग्नेश्वरेऽथचन्द्रमसि ॥
शुभमुथशिलगेकेंद्रेतन्निकटेवाथसिद्धिःस्यात् ॥ ६ ॥

मेरा गुप्त कार्य सिद्ध होगा वा नहीं, ऐसे प्रश्नमें लग्नेश तथा चन्द्रमा शुभग्रहसे मुथशिली केंद्रमें वा उसके समीप हो तो गुप्त कार्य सिद्ध होगा॥६॥

ग्रन्थांतरे समर्घचिंता ।

मेषेवृषेचमिथुनेशुभयुक्तदृष्टेनग्रैष्मिकंतुसुलभंभवतिपृथिव्याम् ॥
सौम्यैर्धनुर्मृगघटेषुचशारदीयंकुर्यात्समर्घमशुभैःसहितोमहर्घम् ७

शुभग्रह युक्त दृष्ट १।२।३। राशि हों तो ग्रीष्म ऋतुकी फसल, और ९।१०।११। में हों तो शरद् ऋतुकी फसल अच्छी होगी लग्न लग्नेश और चंद्रमा शुभ युक्त दृष्ट हों तो सुकाल (समय अच्छा) होगा और अशुभग्रहोंसे युक्त हो तो महर्घता होवे ॥ ७ ॥

लग्नेबलाढ्येनिजनाथसौम्यैर्युक्तेक्षितेकेंद्रगतैःशुभैश्च ॥
सर्वैः समर्घंविबलैर्विलग्नकेंद्रेषुपापैःसकलंत्वनर्घम् ॥ ८ ॥

लग्न बलवान् स्वस्वामिशुभयुक्त दृष्ट हो केन्द्रोंमें शुभग्रह हों तो सुकाल जो लग्न निर्बल केंद्रोंमें पापग्रह हों तो अन्नका काल होवे इस भावमें लाभ विषयविचार विशेष है वह धनभावमें कहा है वही यहांभी जानना ॥८॥

इति महीο नीलकंठीभाο लाभभावप्रश्ननिरूपणम् ॥ ११ ॥

अथ द्वादशस्थानप्रश्नः ।

रिपुविग्रहपृच्छायां बलवति षष्ठे रिपुःसबलः ॥
द्वादशपे शुभदृष्टे बलवति वाच्यं शुभं प्रष्टुः ॥ १ ॥

शत्रुसे युद्धके प्रश्नमें छठा स्थान बलवान् हो तो शत्रु बलवान् होवे जो व्ययेश शुभदृष्ट तथा बलवान् हो तो प्रष्टाको शुभ होगा ॥ १ ॥

शुभयुतदृष्टसद्व्ययोऽशुभेक्षणयोगतोव्ययमनर्थात् ॥
एवं भावेष्वखिलेषूह्यं सदसत्फलं सुधिया ॥ २ ॥

व्ययेश शुभग्रहसे युक्त दृष्ट हो तो शुभकार्यमें पापयुक्त दृष्ट हो तो अशुभ कार्यमें अनर्थ व्यय होगा. इसी प्रकार सद्बुद्धिवालोंने समस्त भावोंका शुभाशुभ फल कहना ॥ २ ॥

अथ ग्रन्थांतरे भोजनचिंता ।

अटुको लवणस्तिक्तो मिश्रितो मधुरो रसः ॥
अम्लःकषायःकथिताःसूर्यादीनांक्रमाद्रसाः ॥ ३ ॥

सूर्यका कडवा चंद्रमाका सलौना मंगलका तीता बुधका मिश्रित बृहस्पतिका मीठा शुक्रका खट्टा शनिका कषाय (क्वाथ कांजिकादि) रस है ३

लग्नं पश्यति यःखेटस्तस्य यः कथितो रसः ॥
भोजनेऽसौ रसो वीर्यक्रमाद्वाच्याःपरे रसाः ॥ ४ ॥

जो ग्रह लग्नको देखे वा सबसे बलवान् जो ग्रह हो उसका जो रस है वह भोजन प्रश्नादिमें कहना ॥ ४ ॥

चंद्रस्य येन मुथशिलस्तस्य विशेषं वदेद्भुक्तौ ॥
भोजनविधौ विशेषं कथितं स्पष्टं द्वितीयतंत्रेऽस्य ॥ ५ ॥

चंद्रमा जिससे मुथशिली हो उसका रस भोजनमें विशेष कहना और भोजन प्रश्नका विचार विशेष स्पष्टतर इस ग्रंथ (नीलकंठीके दूसरे तंत्र) में कहा है ॥ ५ ॥

इति श्रीमही० नी० प्रश्नतंत्रभाषाटीकायांव्ययभावप्रश्ननिरूपणम्॥ १२॥

ग्रन्थांतरे विशेषेण समर्घादिचिंता ।

समर्घस्य विचारं तु ह्यादौ सर्वैर्विचार्यते ॥
तस्मान्मया विशेषोऽत्र कथ्यते शास्त्रचोदितः ॥ १ ॥

महर्घ समर्घका विचार पहिले सब लोग विचारते हैं तस्मात् विशेष विचार शास्त्रोक्त यहां कहा जाता है ॥ १ ॥

राकाकुहूशशपभास्वदजप्रवेशे लग्नेश्वराःशुभखगैर्युतवीक्षिताश्चेत् ॥ तद्वत्सरे जगति सौख्यमलं प्रकुर्युः पापार्दितागदनरेंद्रभयंप्रजानाम् ॥ २ ॥

जिस वर्षमें प्रथम पूर्णा प्रथम अमावास्याके प्रवेशकालके लग्नेश्वर तथा चन्द्रमाके प्रथम मेष प्रवेशकालके लग्नेश्वर और मेषार्क प्रवेश समयके लग्नेश्वर यदि शुभग्रह युक्त दृष्ट हो तो उस वर्षमें प्रजाको पूर्ण सुख होता है पापयुक्त दृष्ट हो तो रोग और राजाका भय होता है ॥ २ ॥

भानोर्मेषप्रवेशोदयभवनपतिःसद्ग्रहःस्वोच्चसंस्थःस्वर्क्षस्थोवापिकेंद्रेशुभगगनचरैर्दृष्टयुक्तोबलाढ्यः॥तस्मिन्वर्षेविदध्याज्जगतिशुभसुखंभूरिसस्यंसुवृष्टिः क्रूरः क्रूरार्दितोवादिशतिनृपभयं वप्रमन्नं महर्घम् ॥ ३ ॥

सूर्य मेषप्रवेश लग्नका वा प्रश्नलग्नका स्वामी शुभग्रह हो तथा उच्च वा स्वराशिका केंद्रमें शुभग्रहोंसे दृष्टयुक्त और बलवान् हो तो इस सालमें संसारमें संपूर्ण सौख्य शुभ अन्न बहुत उत्तम वर्षा होवे जो उक्त लग्नेश पापग्रह पापाक्रांत बलरहित हो तो राजभय अन्न थोडा भाव महँगा (अकरा) होवे ॥ ३ ॥

भानोरजप्रवेशेकेंद्रैस्तस्माच्छुभग्रहाक्रांतैः ॥
बलवद्भिःसौम्यैर्वानिरीक्षितैर्ग्रैष्मिकावृद्धिः ॥ ४ ॥

सूर्यके मेषप्रवेशमें वा प्रश्नलग्नमें केंद्रोंमें बलवान् शुभग्रह शुभदृष्ट हो तो ग्रीष्म ऋतुका अन्न बहुत होवे ॥ ४ ॥

अष्टमराशिगतेऽर्केगुरुशशिनोःकुंभसिंहसंस्थितयोः ॥
सिंहघटस्थितयोर्वानिष्पत्तिर्ग्रीष्मसस्यस्य ॥ ५ ॥

उक्त लग्नसे सूर्य अष्टम हो तथा बृहस्पति कुंभका चन्द्रमा सिंहका वा बृहस्पति सिंहका चंद्रमा कुंभका हो तो ग्रीष्मकी फसल अच्छी होवे ॥५॥

अर्कात्सितेद्वितीयेबुधेऽथवायुगपदेवसंस्थितयोः ॥
व्ययगतयोर्वातद्वन्निष्पत्तिरतीवगुरुदृष्ट्या ॥ ६ ॥

सूर्यसे शुक्र वा बुध अथवा दोनहूं दूसरे स्थानमें वा बारहवें अथवा दोनहूं स्थानोंमें हों बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो फसल अच्छी होवे ॥ ६ ॥

शुभमध्येलिनिसूर्याद्गुरुशशिनोःसप्तमेपरासंपत् ॥
अल्पाद्रिस्थेसवितरिगुरौद्वितीयेऽर्द्धनिष्पत्तिः ॥ ७ ॥

मेषार्क वा प्रश्नलग्नसे सूर्य शुभग्रहोंके बीच हो तथा सूर्यसे सप्तम बृहस्पति चंद्रमा हों तो फसल बहुत और सूर्य पाप शुभ दोनोंके मध्य हो तो अल्प तथा बृहस्पति भी दूसरा हो तो आधी फसल हाथ आवेगी ॥७॥

लाभहिबुकार्थयुक्तैःसूर्यादथवासितेंदुशशिपुत्रैः ॥
सस्यस्यपरासंपत्कर्मणिजीवेऽथवाचापे ॥ ८ ॥

प्रश्नलग्नसे वा सूर्यसे ११ । ४ । २ स्थानोंमें शुक्र चंद्रमा बुध हों तो अन्न अच्छे होवें धनका बृहस्पति दशम हो तो भी यही फल है ॥ ८ ॥

कुंभेगुरुर्गविशशीसूर्योऽलिमुखेकुजार्कजौमकरे ॥
निष्पत्तिरस्तिमहतीपश्चात्परचक्ररोगभयम् ॥ ९ ॥

कुम्भका बृहस्पति वृषका चंद्रमा वृश्चिकका सूर्य और मंगल शनि मकरके हों तो अन्न अच्छे हों परंतु पीछेसे परचक्र वा रोगोंका भय भी होवे ॥ ९ ॥

मध्येपापग्रहयोःसूर्यःसस्यंविनाशयत्यलिगः ॥
पापःसप्तमराशौजातंजातंविनाशयति ॥ १० ॥

वृश्चिकका सूर्य पापोंके बीच तथा सप्तममें पापग्रह हों तो हुए हुए भी अन्न नाश होजावे ॥ १० ॥

अर्थस्थानेक्रूरःसौम्यैरनीक्षितःप्रथमजातम् ॥
सस्यंनिहंतिपश्चादुप्तंनिष्पादयेद्व्यक्तम् ॥ ११ ॥

दूसरे स्थानमें पापग्रह शुभदृष्टिरहित हों तो पहिली बोई हुई खेती नाश हो दूसरे बारकी जुती हुईसे अन्न उत्पन्न होवे ॥ ११ ॥

जामित्रकेंद्रसंस्थौक्रूरौसूर्यस्यवृश्चिकस्थस्य ॥
सस्यविपत्तिंकुरुतःसौम्यैर्दृष्टेन सर्वत्र ॥ १२ ॥

सप्तम केन्द्रमें वृश्चिक सूर्यसे दो पापग्रह हों तो फसल नष्ट होवे जो शुभग्रहोंकी दृष्टि भी हो तो कहीं कहीं अच्छी भी होगी ॥ १२ ॥

वृश्चिकसंस्थादर्कात्सप्तमषष्ठोपगेयदा क्रूरे ॥
भवति तदानिष्पत्तिःसस्यानामर्घपरिहानिः ॥ १३ ॥

वृश्चिकके सूर्यसे ६ । ७ स्थानोंमें पापग्रह हों तो अन्न तो होगा परंतु भाव घटेगा ॥ १३ ॥

विधिनानेनैवरविवृषप्रवेशेशरत्समुत्थान्नम् ॥
विज्ञेयःसस्यानां नाशाय शिवाय वा तज्ज्ञैः ॥ १४ ॥

जो योग वृश्चिकके सूर्यसे कहे हैं वे तो ग्रीष्मकी फसलके हैं वैसेही वृषके सूर्यमें शरद्कीफसलका विचार शुभाशुभ करना ॥ १४ ॥

त्रिषुसेव्यादिषु सूर्यः सौम्यैर्युक्तोनिरंतरंविचरेत् ॥
ग्रैष्मिकसस्यंकुरुतसमर्घमुभयोपयोगं च ॥ १५ ॥

सूर्य।५।३।७राशियोंमें निरंतर शुभग्रहसे युक्तहीरहे तौ ग्रीष्मकी फसल बहुत होगी भावभी सस्ता होगा ॥ १५ ॥

कार्मुकमृगघटस्थः शारदसस्यस्यतद्वदेवरविः ॥
संग्रहकालेज्ञेयोविपर्ययः क्रूरदृग्योगात् ॥ १६ ॥

सूर्य ९ । १० । ११ राशियोंमें निरंतर शुभयुक्त रहे तो शरद्की फसल बहुत, भाव सस्ता होगा जो पापयुक्त दृष्ट रहे तो दोनहूंयोगोंमें अन्न अल्प भाव तेज होगा यह विचार विशेष संग्रहसमयमें करना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ वर्षाज्ञानम् ।

प्रश्नलग्नात्तोयराशिर्यदिलग्नात्तृतीयगः ॥
तोयसंज्ञो ग्रहस्तत्र भवत्येव जलप्रदः ॥ १७ ॥

प्रश्नलग्नमें जलराशि ४ । १० । ११ । १२ तीसरी तथा उसीमें जल संज्ञक ग्रह चन्द्रमा शुक्र हों तो वर्षा शीघ्र होगी ॥ १७ ॥

बुधशुक्रयोर्मध्यगतः सूर्यः स्याज्जलशोषकः ॥
तयोर्यदिसमीपस्थस्तदाबहुजलप्रदः ॥ १८ ॥

सूर्य बुध शुक्रके बीच हो तो जल सूखता है जो इनके समीपही हो तो बहुत जल देता है ॥ १८ ॥

अग्रे याति यदा भौमः पश्चाच्चलति भास्करः ॥
तत्र वृष्टिर्न विपुलाजायते नात्रसंशयः ॥ १९ ॥

मंगलके पीछे सूर्य हो तो वर्षा नाममात्र और आगे हो तो बहुत होतीहै १९

वर्षाप्रश्नेशशिन्यंभोराशिगे लग्नगेऽपिवा ॥
केंद्रगेवाशुक्लपक्षेचातिवृष्टिः शुभेक्षिते ॥ २० ॥

वर्षाप्रश्नमें चन्द्रमा जलराशिमें वा लग्नमें हो अथवा शुक्लपक्षका चंद्रमा जलराशिका केंद्रमें शुभदृष्ट हो तो अतिवृष्टि होवे ॥ २० ॥

अल्पवृष्टिः पापदृष्टे प्रावृट्काले विशेषतः ॥
चंद्रवद्भार्गवेसर्वमेवंविधगुणान्विते ॥ २१ ॥

उक्त चंद्रमापर पापदृष्टिभी होवे तो अल्पवृष्टि होवे वर्षाकालमें यह योग हो तो बहुत दिनोंमें वृष्टि होवे. ऐसेही शुक्रसे भी जानना ॥ २१ ॥

प्रावृषींदुः सितात्सप्तराशिगः शुभवीक्षितः ॥
मंदात्त्रिकोणसप्तस्थोयदिवावृष्टिकृद्भवेत् ॥ २२ ॥

वर्षाकालमें चंद्रमा शुक्रसे सप्तममें शुभदृष्ट हो अथवा शनिसे त्रिकोण वा सप्तम हो तो वर्षा शीघ्र होवे ॥ २२ ॥

सद्योवृष्टिकरः शुक्रो यदा बुधसमीपगः ॥
तयोर्मध्यगते भानौ तदा वृष्टिविनाशनम् ॥ २३ ॥

जो शुक्र बुधके समीप हो तो तत्काल वृष्टि करे जो बुध शुक्रके बीच सूर्य हो तो वर्षाका नाश होवे ॥ २३ ॥

मघादिपंचधिष्ण्यस्थः पूर्वेस्वातिपरस्त्रये ॥
प्रवर्षणं भृगुःकुर्याद्विपरीतं न वर्षणम् ॥ २४ ॥

पूर्वोदयी शुक्र मघादि पांच नक्षत्रोंमें एक नक्षत्रसे दूसरेपर गमन करे तथा पश्चिमोदयी स्वातीसे तीनपर गमन करे तो वर्षा होवे. जो ऐसाही वक्रगती करे तो वर्षा न होवे ॥ २४ ॥

पुरतः पृष्ठतो भानोर्ग्रहा यदि समीपगाः ॥
तदा वृष्टिं प्रकुर्वंति न चेत्ते प्रतिलोमगाः ॥ २५ ॥

सूर्यके आगे और पीछे मार्गी ग्रह समीपही हों तो वर्षा करते हैं. कोई वक्री भी हो तो अवर्षण करते हैं ॥ २५ ॥

सौम्यमार्गगतः शुक्रो वृष्टिकृन्नतु याम्यगः ॥
उदयास्तेषु वृष्टिः स्याद्भानोरार्द्राप्रवेशने ॥ २६ ॥

सूर्यसे शुक्र उत्तरापथग हो तो वृद्धि; दक्षिणापथग हो तो अनावृष्टि करताहै तथा शुक्रके उदयास्तमें एवं आर्द्राप्रवेशमें भी वर्षा होती है॥२६॥

गुरोःसप्तमराशिस्थःप्रत्यग्रोभृगुजोयदा ॥
तदातिवर्षणंभूरिप्रावृट्कालेबलोज्झिते ॥ २७ ॥

वर्षाकालके प्रश्नमें बृहस्पतिके सप्तममें पूर्वोदयी शुक्र हो तो वर्षाकालमें अतिवृष्टि होवे ॥ २७ ॥

आसन्नं रविशशिनोःपरिवेषगतोत्तरा ॥
विद्युत्प्रपूर्णमण्डूकास्त्वनावृष्टिर्भवेत्तदा ॥ २८ ॥

सूर्य चन्द्रमाके समीप उत्तरसर परिवेष (सौंडल वा परिधि) तथा बिजुली वा बादलमें छोटी चमक हो मंडूक बोले तो अवर्षण होवे॥२८॥

नखैर्लिखंतोमार्जाराश्चावनिर्लोहिताभवेत् ॥
रथ्यायांसेतुबंधाःस्युर्बालानांवृष्टिहेतवः ॥ २९ ॥

मार्जार अपने नखोंसे भूमि वा काष्ठ आदि खोदे तथा भूमि रक्तवर्ण हो और मार्गमें बालक खेलसे पुल बांधें तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ २९ ॥

पिपीलिश्रेण्यावच्छिन्नासंयताबहवस्तदा ॥
द्रुमादिरोहःसर्पाणांप्रतींदुर्वृष्टिसूचकाः ॥ ३० ॥

पिपीलिका (छोटी मकोडी) बहुत इकट्ठी एक पंक्तिसे चलें तथा सर्प वृक्षोंमें चढें और आकाशमें चन्द्रमाका प्रतिबिंबसा दीखे तो वृष्टि होती है ॥ ३० ॥

उदयास्तमये काले विवर्णोऽर्कोऽथवाशशी ॥
मधुवर्णोऽतिवायुश्चेदतिवृष्टिर्भवेत्तदा ॥ ३१ ॥

उदय तथा अस्तसमयमें सूर्य वा चन्द्रमा वर्णरहित यद्वा शहद समान रंगके हों और अतिवायु चले तो वर्षा होवे॥ ३१ ॥

आर्द्रद्रव्यंस्पृशतियदिवावारितत्संज्ञकंवा ।
तोयासन्नोभवतियदिवातोयकार्योन्मुखो वा ॥
प्रष्टावाच्यःसलिलमचिरादस्तिनिःसंशयेन ।
पृच्छाकालेसलिलमितिवाश्रूयतेयत्रशब्दः ॥ ३२ ॥

जो प्रश्नसमयमें प्रष्टा गीली वस्तु वा जल और जलसम्बन्धी वस्तुको स्पर्श करे अथवा जलके समीप पूछे अथवा जलसंबंधी कार्य करता हो तथा प्रश्नकालमें जलका शब्द जलका नाम सुना जावे तो निस्सन्देह शीघ्र वर्षा होवे ॥ ३२ ॥

विरसमुदकंगोनेत्राभंवियद्विमलादिशोवियतिविकृतं काकां-
डाभंयदाचभवेन्नभः ॥ पवनविगमःश्रूयंतेवैझषाःस्थलगामि-
नोरसनमसकृन्मण्डूकानांजलागमहेतवः ॥ ३३ ॥

जलका रस स्वाद जाता रहे गौके नेत्र समान, आकाश हो दिशा निर्मल हों तथा कौवेके अंडेकासा रंग आकाश हो वायु शब्दवान् होवे वायु गरम चले मछली स्थलमें आवे सुना जावे और मेण्डक बोलें तो शीघ्र वर्षा होवे ॥ ३३ ॥

गिरयोऽजनवर्णसन्निभायदिवावाष्पनिरुद्धकंदराः ॥
कृकवाकविलोचनोपमाः परिवेषाः शशिनश्चवृष्टिदाः ॥ ३४ ॥

पर्वत श्यामरंग दीखें यद्वा कन्दरामें जल टपकके भर जावे कृकवाक पक्षीके नेत्र सदृश परिवेष चन्द्रमापर हों तो शीघ्र वर्षा होती है ॥ ३४ ॥

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकालेसमागमेमंडलसंक्रमे च ॥
पक्षक्षयेतीक्ष्णकरायनांतेवृष्टिंगतेऽर्केनियतेन चार्द्राम् ॥ ३५ ॥

विशेषतः ग्रहोंके उदय और अस्त समयमें तथा उनके संक्रममें पक्ष-क्षयमें सूर्यके अयन चलनेमें आर्द्रा प्रवेशमें वर्षा होती है ॥ ३५ ॥

समागमेपततिजलंज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्चसंगमे ॥
यमारयोःपवनहुताशजंभयंह्यदृष्टयोःसहितयोश्चसद्ग्रहैः ॥ ३६ ॥

बुध शुक्र तथा बुध बृहस्पति और बृहस्पति शुक्रके एक राशिमें प्राप्त होनेसे वर्षा होती है, शनि मंगलके साथ होनेमें जो शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न हों तो वायु तथा अग्निका भय होता है ॥ ३६ ॥

अथ सस्यनिष्पत्तिः ।

दिशिकस्यांभवेत्सस्यनिष्पत्तिःक्वचसानहि ।
कस्यदेशस्यभंगोहिक्वदिशिक्वचतन्नहि ॥ ३७ ॥

किस दिशामें सुकाल कहां अन्नकाल और किसका भंग किसकी वृद्धि होगी ऐसे प्रश्नमें ॥ ३७ ॥

चतुर्णामपि केन्द्राणां मध्ये यत्र शुभग्रहः ॥
तस्यां च सस्यनिष्पत्तिः स्वास्थ्यं चैव भविष्यति ॥ ३८ ॥

प्रश्नलग्न वा जगत् लग्न अर्थात् मेषार्कसामायिक लग्नसे जिस केन्द्रमें शुभ ग्रह वा जिसका स्वामी बली हो उसके अनुसार दिशामें अन्न बहुत होगा, रोगादि उपद्रवभी नहीं होवेंगे, जहां पाप वा स्वामी निर्बल हो वहां उसके

अनुसार दुर्भिक्ष रोगादि होंगे, लग्नसे पूर्व चतुर्थसे दक्षिण सप्तमसे पश्चिम दशमसे उत्तर जानना ॥ ३८ ॥

यस्यांदिशिशनिः पापैर्युतोवाप्यवलोकितः ॥
दिशितस्यांचह्यस्वास्थ्यंदुर्भिक्षंचभविष्यति ॥ ३९ ॥

जिस दिशामें शनि पापयुक्त वा पापदृष्ट हो उसमें रोगादि उपद्रव और दुर्भिक्षभी होंगे ॥ ३९ ॥

दिशियस्यांरविस्तत्रधान्यनाशोनृपाद्भवेत् ॥
यत्रापिमंगलस्तत्रधान्यनाशोऽग्निभीस्तथा ॥ ४० ॥

जिस दिशामें सूर्य पापयुत दृष्ट हा तहां राजासे अन्नका नाश होवे, जहां वैसाही मंगल हों तहां अन्नका नाश और अग्निभयभी होवे ॥ ४० ॥

यस्यांदिशिशुभाः खेटाः समस्तबलशालिनः ॥
निष्पन्नासैवविज्ञेयासस्यस्वास्थ्यंचतत्रहि ॥ ४१ ॥

जिस दिशामें शुभग्रह समस्त बलयुक्त हों तहां सब अन्न अच्छे होंगे और स्वास्थ भी अच्छा रहेगा, बलहीन शुभग्रहोंसे अनिष्ट बलवान् पापोंसे कुछ प्रकार शुभ और मिश्रितमें मिश्रफल कहना ॥ ४१ ॥

केन्द्रेषु सर्वतः पापाः समस्तबलसंयुताः ॥
देशस्तदाविनष्टोऽसौज्ञातव्यः शास्त्रकोविदैः ॥ ४२ ॥

सभी केंद्रोंमें पाप बलसहित हों तो सभी देश नष्टप्राय हाग विशेष शास्त्रज्ञोंने उनका बलाबल और संबंधादि विचारके कहना ॥ ४२ ॥

समर्घं वा महर्घं वा वस्तु मे कथयामुकम् ॥
पृच्छायां येन खेटेन शुभत्वं प्रतिपाद्यते ॥ ४३ ॥
खेटोऽसौ यावतो मासांस्तस्य लग्नस्य सौम्यताम् ॥
विधत्ते तावतो मासान्समर्घं ब्रुवते बुधाः ॥ ४४ ॥

सुकाल वा अकाल कौन २ अन्नका कब २ होगा ऐसे प्रश्नमें जिस ग्रहसे पूर्वोक्त क्रममें उस अन्नादिके नाम राशिसे शुभता पाई है, वह जितने महीनोंमें दूसरी राशिको प्राप्त हो सकता है उतने महीनोंपर्यंत समर्घ रहेगा पंडित ऐसा विचारते हैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

अथासावशुभं चिंत्यं कियद्भिर्वासरैरयम् ॥
सौम्यभावं विलग्नस्थं विधास्यति विनिश्चितम् ॥ ४५ ॥
ज्ञातव्या दिवसा मासामासैस्तावद्भिरस्य च ॥
महर्घता वस्तुनो हि प्रतिपाद्याविचक्षणैः ॥ ४६ ॥

जब कोई अशुभके शुभ होनेका समय पूँछे तो लग्नमें जितनी संख्या सौम्य भाव उन्हें निश्चय करके दिन वा महीने जहां जैसा संभव हो बुद्धिसे विचार करके समर्थ विद्वानोंने कहना ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

अधिष्ठातुर्बलं ज्ञेयं लग्ने स्वामिविवर्जिते ॥
बलहीने त्वधिष्ठाय ततः स्वामिबलेबलम् ॥ ४७ ॥

जिस कार्य वा वस्तुका जो अधिष्ठाता है, उसके लिये उसीका बल प्रथम जानकर उससे बलानुसार हानि वृद्धि कहनी, लग्नमें अधिष्ठाता ग्रह बली होता है यदि लग्नेश बलहीन हो, जो अधिष्ठाता बलहीन हो तो सदा लग्नेशका बल देखना अधिष्ठाता आगे कहते हैं ॥ ४७ ॥

रविस्तुमुक्तामणिहेमताम्रक्षौमास्त्रवर्मपरदारकाणाम् ॥
मुक्तेक्षुशंखद्रववस्तुरूप्यक्षितीश्वराणांलवणस्यचेन्दुः ॥ ४८ ॥
मसूरताम्राकणधातुशस्त्रप्रवालकानामधिपः कुजः स्यात् ॥
सुगन्धवस्त्रद्विदलान्नपक्षिहरिन्मणीनांप्रभुरिन्दुजःस्यात् ॥ ४९ ॥
सिद्धार्थगोधूमयवैक्षवानांसर्वाब्जिकर्पूरगवांगुरुश्च ॥
स्नेहाथकाश्वान्नविचित्रवस्त्ररूप्यांबुजानांस्फटिकस्यशुक्रः ॥
ऊर्णेभनीलीबलचर्मकृष्णवस्त्रायसां वै महिषस्यचार्किः ॥ ५० ॥

वस्तुओंके अधिष्ठाता मोती, चुन्नी, सुवर्ण, तांबा, रेशम, अस्त्र, शस्त्र, कवच, परस्त्री आदिका स्वामी सूर्य, मोती, ईख, शंख, रसकी वस्तु, नारियल, आम आदि और चांदी, राजे, लवण इनका स्वामी चंद्रमा मसूर, तांबा, सिंगरफ, हरताल आदि धातु, वस्त्र, मूंगेका अधिष्ठाता मंगल. सुगंधि द्रव्य, वस्त्र, द्विदल, अन्न, पक्षी, पन्ना इनका बुध. राई, सरसों राडा आदि और गेहूं, जौ, ईखका विकार और भिस, सिंघाडे, कसेरू आदि जलो-

त्पन्न वस्तु तथा कर्पूरका बृहस्पति. इतर फुलेल आदि सुगंधित वस्तुका और अन्न, विचित्र वस्त्र, चांदी, जलज वस्तु,स्फटिकका शुक्र.ऊन, पशमीना, नील, चर्मजात, कृष्णवस्त्र, लोहा, भैंस आदिकोंका अधिष्ठाता शनि है. विशेष ग्रहस्वभावतुल्य बुद्धिबलसे जानना ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां ताजिकनीलकंठीप्रश्नतंत्रभाषाटीकायां समर्घानर्घवृष्टिसुभिक्षादिप्रश्ननिरूपणम् ।

विज्ञापनम् ।

श्रीनीलकंठःशरदांफोलत्तरंप्रश्नाख्यतंत्रंयदकारिपूर्वम्॥तत्सांप्रतं पूर्णतरंनलभ्यते ह्यावश्यदंप्रश्नफलंहिमन्ये ॥१॥ तस्मादिदंभूरिगुणं सुसंग्रहंसर्वोपकाराय महीधरेण॥ शास्त्रांतरीयंसहभाषयामयाद्विजन्मनाकारिकृतंहिपूर्वैः ॥ २ ॥ श्रीकीर्तिशाहनृपतेः खलु राज्यवेशेद्विग्राब्धिशून्यनवसंमित १८०८शालिवाहे॥ गढवालदेशटिहरीनगरे बृहत्कसज्जातकस्यविवृतेः शुभभाषयांते ॥३॥ तंत्राणांत्रितयस्यपाठ सरलाश्रीनीलकण्ठद्याःकृताभाषायन्ममचापलंकिमपितत्सन्तःक्षमध्वंबुधाः॥बालानांसुखबोधसंततिकरींज्योतिषफलद्योतिनींलोकानामुपकारिणींसुविशदांकुर्वंतुमाहीधरीम् ॥ ४ ॥ छिद्रान्वेषणतत्पराः परकृतेर्विध्वंसकादूषकामात्सर्येणपरार्थनाशनपरादुर्बुद्धयोमानिनः॥ सत्कार्येशिथिलाः कुकर्मसुखिनो निंदंतु नंदंतु वा मेकृत्यंसुकृतंपरोपकृतयेकुर्वंतुदुर्मत्सराः ॥ ५ ॥ चन्द्राक्षिवस्विन्दु १८२१ शकेतु भाद्रेशुक्लेनवम्यां च गुरावशोधीत् ॥ अनेकसंलेखवशादशुद्धांमाहीधरींरामभरोसशर्मा ॥ ६ ॥

विज्ञापनम् ।

श्रीनीलकंठ दैवज्ञने वर्षफल दो तंत्रोंके उपरान्त जो प्रश्नतंत्र बनाया था वह इस समयमें संपूर्ण नहीं मिलता और प्रश्नविद्या प्रत्यक्षफल है तथा यहां जातकमें बृहज्जातक ताजिकमें नीलकण्ठी सर्व साधारणके अर्थ भाषा

होगई तो प्रश्नभी अवश्य होना चाहिये ॥ १ ॥ इस कारण पूर्वाचार्योंका सुन्दर संगृहीत बहुत गुणवान् जिसमें सभी प्रकारके प्रश्न अनेकशास्त्रोक्त हैं सब पाठकोंके हितार्थ महीधरनामा ब्राह्मण जिला गढवाल राजधानी टीहरी निवासीने इसे भाषासहित करदिया ॥ २ ॥ श्रीमान् महाराजा टीहरी गढवालके अधीश श्री १०८ कीर्तिशाह साहब बहादुरके राज्यप्रवेश ९०४ द्विगुण अर्थात् १८०८ के शालमें बृहज्जातक भाषाटीका रचनाके उपरान्त उक्त नगरमें ॥ ३ ॥ नीलकंठी तीनहू तंत्रोंकी पाठ सरल(ज्योतिष)तारा विचार सम्बन्धी फलोंका स्फुरण करनेवाली नीलकंठीके अनभिज्ञों (बालकों) को सहजहीमें बोधरूप सन्तानोंकी सृष्टि उत्पन्न करनेवाली माहीधरी इस भाषाटीकाको सज्जन पुरुष पण्डित भले प्रकार प्रकाश करें तथा इसमें जो कुछ मेरी अनभिज्ञता एवं धृष्टता हो उसे क्षमा करें ॥ ४ ॥ और जो लोग पराये छिद्र (दूषण) ढूँढनेमें तत्पर हैं पराये किये सत्कर्मोंका नाश करनेवाले एवं मत्सरी (पराई भलाईसे विनाही आग जलभुन जानेसे पराये प्रयोजनको भंग करनेमें तत्पर, तथा शुभकृत्योंमे शिथिल अर्थात् जिनसे शुभकार्म अपने हाथसे कुछ नहीं होसकता प्रत्युत बुरे कामोंसे सुख माननेवाला "घमंडखोर" दुर्बुद्धि हैं वे मेरे परोपकारार्थ इस परिश्रमको देखकर निंदा करे अथवा आनंदित होकर प्रशंसा किया करते रहैं, किंतु जो विज्ञमहाशय निर्मत्सरी, पराये सुकृत्यसे आनंद माननेवाले एवं दुष्कृत्यसे चिंता करनेवाले हैं वे इस कृत्यको सुकृत करें ॥ ५ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना--

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.

[illegible]